“डॉ.कुँअर बेचैन के हिंदी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन”

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

साहित्य और ललित कला अभ्यास मंडळ अंतर्गत

पीएच्.डी.(हिंदी)

उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध–प्रबंध

शोध–छात्र

श्री. प्रदीप माणिक शिंदे

(रजि.नं.15712006086)

शोध–निर्देशक

प्रा.डॉ.राजेंद्र पिलोबा भोसले

श्री बालमुकुंद लोहिया संस्कृत और भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र,

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे.

अप्रैल 2019

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि **श्री. प्रदीप माणिक शिंदे,** ने टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे की पीएच.डी.उपाधि के लिए **"डॉ.कुँअर बेचैन के हिंदी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन"** यह शोध–प्रबंध मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है । इस शोध–प्रबंध में जो तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं । **प्रदीप माणिक शिंदे** के प्रस्तुत शोध कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ । में इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ ।

स्थान– पुसेगाँव

तिथि–

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ. राजेंद्र भोसले

एम.ए.,एम.फिल.,पीएच्.डी.(हिंदी)

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि **"डॉ.कुँअर बेचैन के हिंदी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन"** यह शोध–प्रबंध मेरी मौलिक कृति है, जो पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत की है । यह रचना इससे पहले टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे या अन्य किसी विश्वविद्यालय की पीएच्.डी.उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

स्थान–सातारा — शोध–छात्र

तिथि–

(श्री.प्रदीप माणिक शिंदे)

ऋण–निर्देश

आदरणीय डॉ.कुँअर बेचैन जी का अनमोल योगदान इस कार्य में रहा है । उन्होंने विषय के संबंधित जानकारी प्रदान करके मुझे प्रेरणा दी । भ्रमणध्वनि के माध्यम से मेरी जिज्ञासाओं का शमन करते रहे । मानवता, प्रेम और स्नेह करूणा की वे साक्षात मूर्ति मेरे लिए रहे है । मै उनके प्रति आभार मानता हूँ ।

प्रस्तुत शोध कार्य पुरा करने हेतु जिनके साहित्य रचनाओं की मुझे मदद हुई उन सभी विद्वान, समीक्षको, साहित्यकारों के प्रति मै सहृदय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

मेरे इस कार्य में मेरे मार्गदर्शक ने जिस प्रकार मार्गदर्शन किया वह सराहनीय है । प्रस्तुत शोध–प्रबंध के चयन से लेकर साहित्य सामग्री तथा लेखन पद्धति के विषय में अनमोल मार्गदर्शन करने वाले मेरे शोध निर्देशक डॉ.राजेंद्र भोसले, अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर, तथा कला व वाणिज्य महाविद्यालय, पुसेगाव ने मुझे समय –समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन करके यथायोग्य दिशा निर्देशन किया । अतः उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ । मा. डॉ.श्रीपाद भट, अध्यक्ष, साहित्य एवं ललित कला, विद्या शाखा, टिळक महाराष्ट्र विद्यापिठ, पुणे का मैं नितांत आभारी हूँ । आपके सहयोग बिना यह शोध कार्य संभव नहीं था ।

हमारे महाविद्यालय के कॉलेज विकास समिती के चेअरमन तथा समिती के सभी सदस्यों का मार्गदर्शन मेरे लिए उपयोगी रहा है । मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ ।

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, पाचवड के प्रधानाचार्य डॉ.राजीव बावधनकर, मेरे सहयोगी प्रा. तारू जी.एम., प्रा.देशमुख आर.के., डॉ.पिंजारी व्ही.जे., ग्रंथपाल सौ. पाटोळे एस.पी., प्रा.सुभाष वाघमारे, सौ.गायकवाड आर.डी., श्री.रामदास गायकवाड, इसके साथ–साथ हर समय मुझे मदद करने वाले डॉ.प्रशांत नलवडे, डॉ.एस.पी.शिंदे, प्रा.आर.एस.यादव, प्रा.बनसोडे जी.एस., डॉ.संतोष राजगुरू, प्राचार्य श्री. विनायक भोसले, श्री. शुध्दोधन काकडे, श्री. विशाल गायकवाड, प्रा.निर्मला माने, डॉ.भारत खिलारे, इनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

पूज्य पिता आदरणीय श्री.माणिकराव शिंदे जिन्होंने रयत शिक्षण संस्था के विविध शाखाओं मे प्रधानाचार्य के रूप में काम करके कर्मवीर भाऊराव पाटील आदर्श पर चलकर सामाजिक दायित्व निर्वाह करके सभी परिवार जन, रिश्तेदार और समाज का पथ ज्ञान से

प्रकाशित करते रहे है । मेरी पुजनीय माँ सौ. कुंता शिंदे हर समय मेरा ख्याल रखती है । ममतापूर्ण दूलार देती है । माँ और पिताजी ने अपार परिश्रम करके बेटों को इंजिनियर, प्राध्यापक बनाया । बेटियों को भी उच्चशिक्षा देकर इंजिनिअर और काबिल बनाया । मेरे ससुर स्व.चांगदेव गायकवाड की स्मृतियाँ मेरा पथ आलोकित करती है । आदरणीय सासू श्रीमती विदया गायकवाड जी ने भी मेरे इस काम में योगदान दिया है । मेरे प्रिय भाई प्रा.दीपक शिंदे, विभाग प्रमुख, गव्हर्मेंट पॉलिटेक्नीकल कॉलेज रत्नागिरी, श्री.रविंद्र शिंदे, इंजिनियर रेल विभाग पुणे, मेरी बड़ी बहन सौ.ज्योति लोंढे उच्च शिक्षा करके समाजसेविका के रूप में हर दम सभी को मदद करती है, छोटी बहन डॉ. शर्मिला श्रीमाळे, जी. एस. पी. एम. इंजिनिअरींग कॉलेज , पूणे इन सभी परिवार जनों ने मेरी अन्तर्मन की मूक भावनाओं को पढकर मुझे सदैव प्रेरित किया है । मेरे जिजाजी मा.उत्तेश्वर लोंढे, उपसंचालक, नगररचना विभाग मुंबई और मा.अनंत श्रीमाळे डीप्टी कमिशनर विक्रीकर विभाग, पुणे इन्होने सदैव सहयोग प्रदान किया यह कार्य उनके स्नेह का फल है । मेरी सहधर्मिणी श्रीमती राजश्री शिंदे के प्रति आभार कैसे प्रकट करूँ? उन्होंने घरेलू जिम्मेदारियों को संभालते हुए मुझे महत्वपूर्ण कार्य के लिए निरंतर प्रेरित किया है । समस्त पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुझे मुक्त रखकर सदा सहयोग दिया है । मेरे प्यारी बेटीयाँ तनिष्का और पृथा ने मेरे इस कार्य को अत्यंत सुखद बनाया उनके प्रति मैं स्नेहाभिभूत हूँ । इस शोध प्रबंध का टंकन कार्य कौशल के साथ तत्परता से करने वाली समृद्धी टाइपरायटींग के प्रोप्रा सौ.वैशाली कोरडे जी को बहुत धन्यवाद देता हूँ ।

'डॉ. कुँअर बेचैन के हिन्दी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन' एवं उनके व्यक्तित्व पर किया गया यह प्रयत्न यदि शोधार्थियों जिज्ञासूओं, काव्यप्रेमियों के लिए पथप्रदर्शक रहा तो मैं अपने कठोर परिश्रम एवं साधना को सार्थक समझूँगा । अन्य सभी के प्रति मै कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनका परोक्ष तथा अपरोक्ष सहयोग रहा है ।

स्थान : विनीत

तिथि : (श्री. शिंदे प्रदीप माणिक)

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक		अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
1		परिचय	1-6
		प्रस्तावना	
	1.1	विषय का चयन	
	1.2	शोध विषय का महत्व	
	1.3	शोध कार्य का उद्‌देश्य	
	1.4	चतुर्थ अध्याय : विश्लेषण तथा व्याख्या	
	1.5	पंचम अध्याय–निष्कर्ष और सिफारिशें	
	1.6	शोध प्रबंध की मौलिकता	
	1.7	अध्ययन की नई दिशाएँ	
2		संदर्भ साहित्य का पुनरावलोकन	7-13
	2.1	शोध अभिकल्प (प्ररचना) की आवश्यकताएँ	
	2.2	शोध अभिकल्प (प्ररचना) की विशेषताएँ	
	2. 3	सम्बधित साहित्य	
	2.4	प्रस्तुत अनुसंधान के लिए विविध–ग्रंथ सामग्री से प्राप्त अनुसंधान सम्बन्धि संदर्भ साहित्य का पुनरावलोकन	
		संदर्भ सूची	
3		अनुसंधान कार्यपद्‌धति	14-18
		प्रस्तावना	
	3.1	विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्‌धति	
	3.2	विवेचनात्मक अनुसंधान पद्‌धति	
	3.3	आलोचनात्मक अनुसंधान पद्‌धति	
	3.4	तुलनात्मक अनुसंधान पद्‌धति	
	3.5	मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्‌धति	
4		विश्लेषण तथा व्याख्या	19-320

	4.1	ग़ज़ल स्वरुप एवं विकास	
	4.2	डॉ. कुँअर बेचैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
	4.3	समकालीन हिंदी ग़ज़ल और कुँअर बेचैन	
	4.4	डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में सामाजिक बोध	
	4.5	डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में राजनीतिक तथा अन्यान्य बोध	
	4.6	डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के रूप में प्रेम निरूपण	
		संदर्भ सूची	
5		निष्कर्ष और सिफारिशें	321-332
		संदर्भ सूची	333-342

प्रथम अध्याय

परिचय

प्रस्तावना

ग़ज़ल अरबी–फारसी की देन रही है परंतु भारतवर्ष में यह विधा अत्यंत लोकप्रिय है । हिंदी साहित्य में हिंदी ग़ज़ल सशक्त विधा के रूप में गौरव प्राप्त कर चुकी है । ग़ज़ल रसपूर्ण काव्य शैली है जिसके सौंदर्य प्रभाव सभी स्तर के लोगों पर दिखाई देता है । ग़ज़ल जैसी विधा आज के कवि सम्मेलनों तक की शोभा बनी हुई है । वर्तमान युग में हिंदी ग़ज़ल आलाचकों, विद्‌वानों और लेखकों के लिए आलोचना और चर्चा का विषय बन गई है । ग़ज़ल का जन्म बाहर होकर भी भारतवर्ष में उसका पूर्ण पोषण हुआ दिखाई देता है । हिंदी ग़ज़ल उर्दू भाषा से आई है ।

आज की हिंदी ग़ज़ल में सर्वव्यापकता आई है । जिसके अंतर्गत राजनीतिक सांस्कृतिक, सामाजिक एवं अन्यान्य भाव बोध के दर्शन होते है । हिंदी ग़ज़ल अब प्रेम विषयों की अभिव्यक्ति ही नहीं रही है बल्कि सामाजिक समस्याओं को लेकर आधुनिक युग की विसंगतियों का चित्रण प्रस्तुत करती हैं । ग़ज़ल ने नई ऊर्जा के साथ अर्थवत्ता प्रदान की है । हिंदी ग़ज़ल में एक समृद्‌ध धारा निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है ।

1.1 विषय का चयन–

प्रेरणा एवं अनुसंधान के प्रति मुझे हमेशा कौतुहल रहा है । शिक्षा ग्रहण करते समय मुझे कविताओं में रूचि रही है । जब ग़ज़ल विधा का अध्ययन किया तब मुझे ग़ज़ल की पीडा और विरह ने आकर्षित किया । ग़ज़ल संग्रहों का अध्ययन किया अन्य समस्याओं ने मुझे प्रभावित किया । अरबी–फारसी से निकलकर हिंदी में स्थापित हो गई । हिन्दी में भी लोकप्रिय हो रही है क्योंकि ग़ज़ल समाज के करीब आ गई है ।

ग़ज़ल विधा में दुष्यंतकुमार सिद्‌धहस्त ग़ज़लकार है । परंतु डॉ. कुँअर बेचैन जी की हिंदी ग़ज़ल पढने पर उनके प्रभाव में आकर मुझे प्रतीत हुआ कि हिंदी ग़ज़ल को नई पृष्ठभूमि प्रदान करने वाले 'बेचैन' जी की ग़ज़लों पर अनुसंधान करना समुचित होगा इस सन्दर्भ में मैंने गुरूवर्य डॉ.राजेंद्र भोसले जी से विचार विमर्श किया । उन्होंने संशोधन के लिए मुझे प्रोत्साहित

कर प्रेरणा दी । चर्चा के पश्चात यह तय किया गया कि अनुसंधान के लिए'डॉ.कुँअर बेचैन के हिन्दी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन' यह शोध विषय रहेगा ।

1.2 शोध विषय का महत्व –

ग़ज़ल अत्यंत लोकप्रिय विधा है । ग़ज़ल शब्द मूल रूप में प्रचलित है । ग़ज़ल विधा अरबी – फारसी से उर्दू, उर्दू से हिन्दी और हिन्दी से मराठी तथा अन्य भाषाओं में लोकप्रिय बन गई है । हिन्दी से ग़ज़ल का विकास भारतेन्दु से लेकर आज तक चला आ रहा है । लेकिन आधुनिक हिंदी ग़ज़ल का विकसित रूप साठोत्तरी ग़ज़लों में परिलक्षित होता है । साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल परंपरा ने काव्य में रूप और कथ्यों के तेवर प्राप्त किए है । हिंदी कवि और गीतकारों ने ग़ज़ल लिखने की चेष्टा की है जिसमें वे सफल रहे है । ग़ज़ल में एक स्वतंत्र विधा है । हिन्दी की ग़ज़ले भारत की मिट्टी से जुडी हुई है । मूलत : ग़ज़ल काव्य बेहद खूबसूरत और शक्तिशाली विधा है । ग़ज़ल कम–से–कम शब्दों में बहुत बड़ा विचार प्रकट करती है । ग़ज़ल 'गागर में सागर' भर देता है । ग़ज़ल कभी प्रेमी के मन की पीडा बनी तो कभी सौन्दर्य गाथा की दीपक बनकर रही है । ग़ज़ल कभी रवि की किरणे बनकर आलोक प्रकाशित करती है । वह ज्योति की लौ बनकर स्नेह का प्रकाश फैलाती है । उसमें शमा और परवाने की तरह एकरूप और समर्पण भाव है । यह ग़ज़ल सदैव प्रदीप्त रहकर समाज को ज्ञान का आलोक देती रहेगी । ग़ज़ल के माणिक मोती के तरह अनमोल रहेंगे और माणिक रूपी कुतंल की शोभा बढाते रहेंगे । ग़ज़ल में नजाकत है, नफासत है ।

साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल परंपरा में डॉ.कुँअर बेचैन ने अपना महत्वपूर्ण स्थान निर्माण किया है । उन्होंने हिन्दी की पृष्ठभूमि पर ग़ज़ल को प्रभावशाली रूप प्रदान किया है । इनकी ग़ज़लों का अनुशीलन करने पर शोधकर्ता को मालूम हुआ कि ग़ज़लकार डॉ.कुँअर बेचैन ने ग़ज़लों द्वारा आमजन की यातना तथा दु:ख–दर्द को समाज के सामने अभिव्यक्त किया है । सर्वहारा वर्ग का शोषण करने वाले, शोषित वर्ग, भ्रष्टाचारी, धर्मान्ध–सांप्रदायिक प्रवृत्ति के लोगों पर व्यंग्य किया है । गरीबों–शोषितों के प्रति हमदर्दी जताई है । ग़ज़लों के माध्यम से अनैतिकता, मानवी मूल्यों का विघटन का पर्दाफाश करके नैतिकता, राष्ट्रप्रेम का उपदेश दिया है । व्यक्ति जीवन तथा समाज जीवन का अत्यंत व्यापक और उदार चिंतन उनकी ग़ज़लों में दृष्टिगोचर होता है । इस प्रकार कुँअर बेचैन के ग़ज़ल में सामाजिक संवेदना, पतनोन्मुख

सामाजिक व्यवस्था को वाणी देने का महत्वपूर्ण प्रयत्न किया है । समाज की वेदना को अपनी वेदना, समाज के दु:ख–दर्द को अपनाने वाले, उसके साथ एकरूप होकर अपनी ग़ज़लों में उस भाव को डॉ.कुँअर बेचैन जी ने अभिव्यक्त किया है । इसलिए इसी व्यापक चिंतन को शोधकर्ता के रूप में अपनी शोधक दृष्टि से इस शोध–प्रबंध के द्वारा समाज तक संप्रेषित करने का प्रयास किया है ।

1.3 शोध कार्य का उद्देश्य–

1) डॉ.कुँअर बेचैन के व्यक्तित्व और कृतित्व का शोधपरक मूल्यांकन करना ।
2) डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में व्यक्त समाजप्रबोध एवं समाज चिंतन का शोधपरक मूल्यांकन करना ।
3) डॉ.कुँअर बेचैन का हिन्दी ग़ज़ल परम्परा में क्या स्थान है ? इसका शोधपरक मूल्यांकन करना ।
4) डॉ.कुँअर बेचैन का राजनीतिक बोध एवं राजनीतिक चिंतन का शोधपरक मूल्यांकन करना ।
5) डॉ.कुँअर बेचैन ग़ज़लों में चित्रित लौकिक और अलौकिक प्रेमभिव्यक्ति का शोधपरक मूल्यांकन करना ।
6) डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों की समसामयिकता का शोधपरक मूल्यांकन करके महत्व विशद करना ।
7) डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों के शिल्प विधान का विश्लेषण करना ।

1.4 चतुर्थ अध्याय : विश्लेषण तथा व्याख्या

1.4.1'हिंदी ग़ज़ल का उदभव एवं विकास'

प्रस्तुत अध्याय का अंतर्गत ग़ज़ल का अर्थ एवं व्युत्पत्ति, विद्वानों की ग़ज़ल की परिभाषाएँ एवं उसके स्वरूप की व्यापकता का परिचय प्रस्तुत किया है । ग़ज़ल एक सशक्त विधा होने के कारण उसके अंग शेर, मिसरा, काफिया, रदीफ, मतला, मकता इन पर चर्चा की गई है । हिन्दी ग़ज़ल का परिचय, हिन्दी ग़ज़ल के विषय, हिंन्दी ग़ज़लों में जीवन दर्शन, ग़ज़ल का जनमानस में स्थान इन विषयों पर विचार मंथन किया गया है ।

1.4.2 डॉ.कुँअर बेचैन जी का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में डॉ.कुँअर बेचैन जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है । व्यक्तित्व के अन्तर्गत जन्म, बचपन, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, वैवाहिक जीवन, पुरस्कार एवं सम्मान आदि बातों को उजागर किया है । कृतित्व में ग़ज़ल–साहित्य, गीत– नवगीत, उपन्यास, समीक्षात्मक साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है ।

डॉ.कुँअर बेचैन बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है । इनके सभी विधाओं के विषय के अनुसार विवेचन प्रस्तुत किया है ।

1.4.3 समकालीन हिन्दी ग़ज़ल और कुँअर बेचैन

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत डॉ.कुँअर बेचैन के समकालीन ग़ज़ल – ग़ज़लकारों के योगदान को प्रकाशित किया है । हिन्दी ग़ज़ल को स्वतंत्र विधा और सशक्त विधा के वास्तविकता और सचाई का परिचय देने वाले ग़ज़लकारों का महत्त्व विशद किया है । समकालीन ग़ज़लकारों में बेचैन जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है । कुँअर बेचैन जी की ग़ज़ले समाजभिन्मुख होने के कारण उनका स्वतंत्र्य विश्लेषण और विवेचन प्रस्तुत किया है । समकालीन हिन्दी ग़ज़लो की अपनी विशेषताए है जैसे कि प्रेमपरकता, प्राकृतिक दृश्य, लोकप्रियता, संक्षिप्तता, उपदेश, दुःख–दर्द की अभिव्यक्ति, नैतिक प्रेरणा आदि ।

1.4.4 डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में सामाजिक बोध

प्रस्तुत अध्याय में डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लो में व्यक्त सामाजिक बोध का अध्ययन किया है । सामाजिक बोध जैसे सह–अस्तित्व की भावना, शांति में सहयोग, वर्तमान समाज, बदलती समाज मान्यताएँ, आज के समय में समाज की समस्याएँ, मानवी मूल्यों का विघटन, भय का वातावरण, बेइमानी, झूठ–फरेब, नारी शोषण, आतंकवाद आदि का अध्ययन किया है ।

1.4.5 डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लो में राजनीतिक तथा अन्यान्य बोध

प्रस्तुत अध्याय में डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों अभिव्यक्त राजनीतिक बोध का विश्लेषण किया है । बेचैन जी के ग़ज़लों में राजनीतिक बोध विशद किया है जैसे कि लोकतंत्र बनाम भिडतंत्र, स्वार्थी, दलबदलू, भ्रष्ट राजनेता, झूठ–फरेब, भ्रष्टाचार आदि का अध्ययन किया गया है ।

डॉ.कुँअर बेचैन जी ने राजनीतिक व्यंग्य किया है उसको उजागर करने का प्रयास किया है ।

1.4.6 डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के रूप में प्रेम निरूपण–

प्रस्तुत अध्याय में डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों मे प्रेम की अभिव्यक्ति सशक्त रूप से हुई है । प्रेमाभिव्यक्ति का अत्यंत सुक्ष्मता से विवेचन करने का प्रयास किया है । ग़ज़ल प्रेम अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम है । कुँअर बेचैन ने प्रेम के लौकिक और अलौकिक पक्ष को उद्घाटित किया है । श्रृंगार के संयोग और वियोग के मौलिक चित्रण प्रस्तुत किए है । विरहावस्था का चित्रण बेहत्तरीन किया है । इन सभी तथ्यों का अध्ययन किया है ।

1.5 पंचम अध्याय–निष्कर्ष और सिफारिशें –

समग्र अध्ययन के द्वारा निष्कर्ष और सिफारिशों को विशद किया है ।

1.6 शोध प्रबंध की मौलिकता–

1. प्रस्तुत शोध प्रबंध में 'डॉ.कुँअर बेचैन के हिंदी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन', जो अनुसंधान क्षेत्र में संपन्न हुआ है ।
2. डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों को स्वतंत्र रूप से अध्ययन करके इसका विश्लेषण किया है जो एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है ।
3. प्रस्तुत शोध प्रबंध में डॉ.कुँअर बेचैन जी के ग़ज़लों में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश ड़ालकर उसकी पीड़ा को उज़ागर किया है । इस दृष्टि से यह शोध प्रबंध महत्त्व रखता है ।
4. इस शोध प्रबंध में नगरों, महानगरों के आम आदमी के विविधता पूर्ण परिवर्तन के पड़ावों के दर्शन कराने में सहायता निभाता है । इस दृष्टि से यह शोध प्रबंध महत्त्व रखता है ।
5. इस शोध प्रबंध में साठोत्तरी ग़ज़लकारों में डॉ.कुँअर बेचैन का स्थान निर्धारित किया है । यह इस शोध प्रबंध की मौलिकता है ।

समकालीन विविध मूर्धन्य ग़ज़लकारों में डॉ.कुँअर बेचैन जी की ग़ज़लों में व्यक्त विविध आयाम जैसे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा प्रेमाभिव्यक्ति आदि का अध्ययन किया है ।

1.7 अध्ययन की नई दिशाएँ–

'डॉ.कुँअर बेचैन के हिंदी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन' विषय पर अनुसंधान करते समय कुछ नए विषयों की जानकारी प्राप्त हुई । इन विषयों पर शोधार्थी स्वतंत्र रूप से शोध कार्य भी कर सकते हैं।

1.डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़लो में गेयता और संगीतात्मकता ।

2. डॉ.कुँअर बेचैन के गीत–नवगीत साहित्य का अनुशीलन ।

3. डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़ल साहित्य में पौराणिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ ।

4. डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का शिल्प विधान।

5. डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में प्रतीक विधान ।

प्रत्येक शोध विषय की अपनी–अपनी सीमाएँ होती है । मेरा शोध कार्य इसके लिए अपवाद नहीं है । विषय स्वतंत्र शोध कार्य की इच्छा रखता है । अपेक्षा है कि भविष्य में आने वाले शोधार्थी उपर्युक्त विषयों पर अपना शोध–कार्य जारी रखेंगे ।

द्‌वितीय अध्याय

संदर्भ साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तावना–

शोध विषय से सम्बन्धित जो महत्वपूर्ण ज्ञान उपलब्ध हैं उसका आधार लेकर उसके आगे ज्ञान की खोज करना अथवा प्राप्त ज्ञान से नई परिस्थितियों में बदले हुए अर्थ तथा संदर्भ को उजागर करना है । अनुसंधान की नीव मजबूत करना ही सम्बन्धित साहित्य का संदर्भ लेना है । प्राप्त पाठ्य अंश का पठन करना, चिंतन करना और उसकी उपयोगिता ही सम्बधित साहित्य का आधार लेना है ।

अनुसंधान सम्बन्धी इसके पूर्व कोई अनुसंधान हुआ है ? उसमें से अलग कौनसे निष्कर्ष है ? कहाँ साम्य और अंतर है ? इसका प्रथम अध्ययन करना और उसका आधार लेकर और अधिक नई बाते खोजकर निकलना तथा पुराने निष्कर्षो से सम्बन्धित अनुसंधान करना है ।

Review का अर्थ

1) To Take over again

2) The general survey

3) A Criticism as review of new book

Review इस सम्बन्ध में Whitney ने अपने प्रसिद्‌ध ग्रंथ The elements of research इस ग्रंथ में स्पष्ट किया है–

The Review of the literature promoter a gather understanding of the problem and it's crucial and ensure the avoidance of unnecessarily it who provided competitive data on the base of which to evaluate and interpreter the significance of and finding in addition it contributes the scholarship of the investigator on experienced research would think of under standing a study without enquiry himself with contribution of the previous investgator"[1]

The part of research report provide a background or the development of present study and bring the red ear up to date good

research is based of the report given evidence of the investigator knowledge of field.[2]

2.1 शोध अभिकल्प (प्ररचना) की आवश्यकताएँ–

1. शोध–अभिकल्प का निर्माण करते समय पहली आवश्यकता इस बात की होती है कि शोध समस्या के बारे में स्पष्ट एवं विस्तृत ज्ञान शोधकर्ता को होना चाहिए।

2. शोधकर्ता को अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्यों की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए ।

3.शोधकर्ता को उन ढंगो एवं कार्य विधियों की विस्तृत जानकारी होनी चाहिए जिनका प्रयोग करते हुए शोध के लिए आवश्यक आकडों के संग्रह के मार्ग में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाएगा ।

4. इसमें अवलोकन विवरण तथा परिमापन के लिए उपयुक्त चरों का चयन करना चाहिए एवं इन्हें स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए ।

5. अध्ययन क्षेत्र एवं समग्र का उचित चयन होना चाहिए तथा इसे स्पष्ट रूप से परिभाषित किया करना चाहिए ।[3]

2.2 शोध अभिकल्प (प्ररचना) की विशेषताएँ–

1. इसका संबंध सामाजिक शोधों से होता है । अर्थात सामाजिक शोधों के दौरान शोध कार्य करने हेतु सामाजिक शोधों का निर्माण किया जाता है ।

2. शोधकर्ता की शोध की एक निश्चित दशा का बोध कराती है । शोध अभिकल्प शोध की एक रूपरेखा होती है । इसका निर्माण शोध कार्य प्रारंभ से पूर्व किया जाता है । इस तरह शोध अभिकल्प एक प्रकार का दिग्दर्शक होती है ।

3. इसकी रूपरेखा शोध कार्य आरंभ करने से पूर्व तैयार की जाती है । इस तरह यह शोध–कार्य को एक पूर्व आधार प्रदान करती है ।

4. शोध अभिकल्प न केवल मानवीय श्रम की बचत करती है बल्कि शोध कार्य को सीमि मितव्ययिता को दर्शाती है ।

5. शोध अभिकल्प शोध प्रक्रिया में आने वाली बाधा का समाधान करने में शोधकर्ता की सहायता करती है । इससे शोध के दौरान आने वाली कठिनाईयाँ दूर हो जाती है ।[4]

2.3 सम्बधित साहित्य–

अनुसंधान कार्य से सम्बधित विविध प्रकार के साहित्य को वर्गीकृत किया जाता है –

1. पाठ्यपुस्तके

2. संदर्भ पुस्तके

3.शब्दकोश

4. विश्वकोश

5. प्रकाशित प्रबंध

6. अप्रकाशित प्रबंध

7. साप्ताहिक पत्रिकाएँ

8. निर्देशिका

9. ग्रंथ सूची

10. जीवन वृत्तान्त

11. इन्टरनेट

12. लघु पुस्तिकाएँ

13. समाचार पत्र

2.4 प्रस्तुत अनुसंधान के लिए विविध–ग्रंथ सामग्री से प्राप्त अनुसंधान सम्बन्धि संदर्भ साहित्य का पुनरावलोकन–

2.4.1 डॉ.अभय खैरनार 'कुँअर बेचैन की ग़ज़ले संवेदना और शिल्प' प्रकाशित प्रबंध उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय जलगाँव–2011-12

इस शोध प्रबंध में डॉ.कुँअर बेचैन जी का जीवन और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत है । सामाजिक दशा का वर्णन किया है । ऊँच–नीच का भेदभाव, अविश्वास आदि सामाजिक संवेदनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

आर्थिक संवेदना में कालानुरूप शोषण का जो सिलसिला आज भी शुरू है, बडे पूँजीपति साधारण जनता का आर्थिक शोषण कर रहे है उसे अपने शोध प्रबंध से उजागर करने का प्रयास किया गया है ।

2.4.2 डॉ.अंजु भटनागर 'डॉ कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', प्रकाशित शोध प्रबंध, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ 2005-06

इस शोध प्रबंध में डॉ.कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीकों की खोज करने का प्रयास किया है । उनके गीतों में ऐतिहासिक पौराणिक प्रतीक, मनोवैज्ञानिक प्रतीक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रतीक, प्रकृतिक प्रतीक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक जो–जों प्रतीक है उसकों ढूँढकर सँजोने का कार्य किया है ।

2.4.3 डॉ.सुधीर पालीवाल 'सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ले', प्रकाशित शोधप्रबंध , एटा 2010

प्रस्तुत शोध प्रबंध में डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में गाव सौन्दर्य, कल्पना सौदर्य, बिम्ब सौदर्य, प्रतीक सौन्दर्य, भाषा सौन्दर्य, अलंकार सौन्दर्य पर प्रकाश डाला गया है ।

2.4.4 डॉ.रघुनाथ कश्यप, डॉ कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष', प्रकाशित शोधप्रबंध, उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव 2010-11

इस शोध प्रबंध के अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक नारी–विषयक, आर्थिक, साम्प्रदायिक सद्भाव, प्रेम विषयक साहित्यिक चिंतन दृष्टिगोचर होता है । इन्होंने संक्षेप में चिंतन के विविध आयामों को उजागर करने का प्रयास किया है । इन्होंने मूल्यों के विघटन, भ्रष्टाचार राजनीतिक विद्रुपताएँ आदि का विवेचन किया है ।

2.4.5 डॉ.मधु खराटे 'दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल' विद्या प्रकाशन, कानपुर

डॉ.मधु खराटे जी ने इस ग्रंथ में स्पष्ट किया है कि दुष्यंत कुमार से प्रेरणा प्राप्त कर समकालीन तथा परवर्ती कवियों ने भी ग़ज़ल लिखना आरंभ किया । जिनमें जहीर कुरेशी, नीरज, सूर्यभानु गुप्त, चंद्रसेन विराट, डॉ.कुँअर बेचैन, बालस्वरूप राही, शेरजंग गर्ग, ज्ञानप्रकाश विवेक, बेकल उत्साही, रोहिताश्व अस्थाना, गिरिराजशरण अग्रवाल, आदि

ग़ज़लकारों के ग़ज़लों में प्राप्त सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि चिंतन पक्ष को संक्षिप्त रूप में स्पष्ट किया है ।

2.4.6 डॉ.मधु खराटे 'हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकार' विद्या प्रकाशन, कानपुर 2012

इस ग्रंथ में दुष्यंतकुमार और शमशेर के बाद हिंदी ग़ज़ल के विकास में जिन ग़ज़लकारों ने योगदान दिया है उनके ग़ज़लो के चिंतन पक्ष को उजागर करने का सफल प्रयास किया है । इसमें कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में व्यक्त समसामयिक चिंतन के अंतर्गत समाज की समस्या, आधुनिक समाज में जीवन–मूल्यों का पतन, धोखेबाजी, शोषण आदि को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया है ।

2.4.7 डॉ.भावना 'कुँअर' साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर' अयन प्रकाशन, नई दिल्ली 2009

इस ग्रंथ में साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़लों में राजनीतिक परिस्थितिगत विद्रोह, आर्थिक परिस्थितीगत विद्रोह, धार्मिक और सांस्कृतिक विद्रोह, साहित्यिक परिस्थितिगत विद्रोह को उजागर किया है । जनता का दर्द उसकी तकलीफ, उसकी समस्याएँ सुनने वाला कोई नहीं है । इस स्थिति की देखकर हिन्दी ग़ज़ल राजघरानों से निकलकर जनता के समीप आ गई और उसकी तरफ से बोलने लगी । वह जनता के सुर में सुर मिलाकर जनता के समीप आ गई और उसकी तरफ से बोलने लगी वह जनता के सुर में सुर मिलाकर राजनेताओं पर व्यंग्य करने लगी है । इस ग्रंथ के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है । अन्य ग़ज़लकारों के साथ–साथ डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़लों पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है ।

'डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन' प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिंदी ग़ज़ल का उद्‌भव और विकास पर आधारित परिभाषाएँ, स्वरूप का परिचय दिया है । हिन्दी ग़ज़ल के विषय, जीवन दर्शन पर विचार मंथन किया है । डॉ.कुँअर बेचैन जी व्यक्तित्व और कृतित्व में जन्म, बचपन पारिवारिक जीवन, वैवाहिक जीवन, पुरस्कार, आदि का अध्ययन करते हुए ग़ज़ल साहित्य, गीत–नवगीत, उपन्यास, समिक्षात्मक साहित्य का परिचय दिया है । हिन्दी ग़ज़ल की परंपरा में कुँअर बेचैन के योगदान को स्पष्ट किया है । समकालिन ग़ज़लकारों में बेचैन का महत्वपूर्ण स्थान है । उसका स्वतंत्र सिलसिलेवार विवेचन किया है ।

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का सामाजिक बोध का विस्तार से अध्ययन किया है । वर्तमान परिवेश, मूल्यों का विघटन, बेईमानी, झूठ, नारी की समस्याएँ आदि का अध्ययन किया गया है । राजनीतिक समस्याओं का कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में प्रस्तुत किया है । भ्रष्ट राजनेता, भ्रष्टाचार , लोकतंत्र की हत्या, स्वार्थी नेता आदि पहलुओं का अध्ययन किया है । डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में प्रेम निरूपण है । लौकिक और अलौकिक पक्ष का वर्णन विस्तार से किया है । श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्ष उजागर किया है ।

संदर्भ सूची

1) Best T.W, ‘Research in Education’ New Delhi, Prentice Hall of India, 1996
2) Buch M.B.(ED) fourth survey of ‘Research in Education’ Vol. I New Delhi, Prentice Hall of India,1991.
3) डॉ.गणेश पाणेय, अरूणा पण्डिय ‘शोध प्रविधि’ राधा पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.स.2005 पृ.70, 71
4) डॉ.अभय खैरनार, ‘कुँअर बेचैन की ग़ज़ले संवेदना और शिल्प’ विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2012
5) डॉ.अंजु भटनागर, ‘डॉ कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उ.प्र.) 2007
6) डॉ.सुधीर पालीवाल, ‘सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ले’ अयन प्रकाशन , महरौली, नई दिल्ली 2010
7) डॉ.रघुनाथ कश्यप, ‘डॉ कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष’, विद्या प्रकाशन, कानपुर 2012
8) डॉ.मधु खराटे, ‘दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल’ विद्या प्रकाशन, कानपुर 2013
9) डॉ.मधु खराटे, ‘हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकार’ विद्या प्रकाशन, कानपुर 2012
10) डॉ.भावना, ‘कुँअर’ साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली 2009

तृतीय अध्याय

अनुसंधान कार्यपद्धति

प्रस्तावना –

कौन सा भी कार्य क्यूँ ना हो प्रथम उसकी दिशा सुनिश्चित करना आवश्यक होता है । विशिष्ट पद्धति के अनुसार अनुसंधान को कार्यान्वीत करना जरूरी है । तभी वह कार्य सफलता की और अग्रसर होता है । अनुसंधान कार्य में जो भी कार्य पद्धतियाँ है उसे अवलंबित करना पडता है । मेरा शोध विषय–'डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन' के लिए अनुसंधान की भिन्न–भिन्न अनुसंधान कार्यपद्धतियों का प्रयोग उचीत रहेगा । इस अनुसंधान में निम्न प्रकार की–कार्य विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति
2. विवेचनात्मक अनुसंधान पद्धति
3. आलोचनात्मक अनुसंधान पद्धति
4. तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति
5. मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति

3.1 विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति–

ग़ज़ल स्वरूप एवं विकास के अंतर्गत विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है । ग़ज़ल का मूल रूप अरबी में था । ग़ज़ल की यात्रा अरबी से शुरू होकर फारसी, उर्दू, हिंदी तक पहुँच गई है । आज के युग में अन्य प्रादेशिक भाषाओं में ग़ज़ल ने अपना स्थान प्राप्त किया है । ग़ज़ल शृंगारपरक और प्रेमपरक सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक विषयों को स्पर्श करती है ।

ग़ज़ल का स्वरूप और विकास निरंतर बढता जा रहा है इसका विश्लेषण इस शोध में किया गया है । ग़ज़ल में प्रेम भावना है और हदय को छू लेने की क्षमता है । आज के युग में मनुष्य की अनुभूति, यातना, दर्द, छटपटाहट को वाणी देने का काम ग़ज़ल कर रही है । हिंदी साहित्य में ग़ज़ल का उद्‌भव और विकास कैसे हुआ है इसका विश्लेषण किया गया है जैसे–

भारतेन्दु पूर्व युग, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, साठोत्तरी युग में राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का विश्लेषण किया गया है । अरबी भाषा में उपजी ग़ज़ल फारसी, तुर्की हिंदी से होते हुए पुरे विश्व में फैल गई है ।

ग़ज़ल के अनेक अर्थ प्रतीत होते है जिसका साधारण अर्थ औरत से बातें करना है । बार–बार बातचीत करना है । ग़ज़ल में गागर में सागर भरने की क्षमता है । गागर में सागर कैसे? इसकी अर्थवत्ता प्रकट करने के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया है । हमें ग़ज़ल में शेर, काफिया, मकता आदि अंग दिखाई देते है । शेर में दो पंक्तियाँ होती है । इसमें अर्थपूर्णता एवं स्वयंपूर्णता होती है । ग़ज़ल की निर्मिती कैसे हुइ है इसका सिलसिलेवार विश्लेषण विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति के अनुसार किया है ।

3.2 विवेचनात्मक अनुसंधान पद्धति–

डॉ.कुँअर बेचैन जी का जीवन परिचय, में जन्म, बचपन, परिवार, शिक्षा , नोकरी, आर्थिक परिस्थिति, वैवाहिक जीवन, खानपान, आचार–विचार, पुरस्कार आदि का अध्ययन करते समय विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया है । विदेश यात्रा, मार्गदर्शक, कुशल संपादक और उनका कृतित्व का विवेचन हुआ है । डॉ.कुँअर बेचैन के गीत तथा नवगीत संग्रह, ग़ज़ल साहित्य, कविता संग्रह, उपन्यास, समीक्षात्मक ग्रंथ का अध्ययन भी विवेवनात्मक पद्धति से किया है ।

3.3 आलोचनत्मक अनुसंधान पद्धति

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में राजनीतिक और सामाजिक बोध का अध्ययन आलोचनात्मक पद्धति से किया है । बदलती समाज मान्यताएँ, समस्याएँ, शोषण, स्वार्थ, धोखेबाजी पर व्यंग्य कसा है । प्रस्तुत अध्याय का आलोचनात्मक पद्धति से अध्ययन किया है।

3.4 तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति

समकालिन हिन्दी ग़ज़ल और कुँअर बेचैन, हिन्दी ग़ज़ल और ग़ज़लकार, समकालिन हिन्दी ग़ज़लों की विशेषताएँ, समकालिन ग़ज़लकार और डॉ.कुँअर बेचैन, इसमें उनके ग़ज़लों का महत्व आदि का अध्ययन तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति से किया गया है ।

3.5 मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के रूप में प्रेम निरूपण किया है । प्रेम के अभिव्यक्ति प्रभावी माध्यम ग़ज़ल है । ग़ज़ल में लौकिक प्रेम का वर्णन है । इसमें संयोग और वियोग दोनो पक्ष आए है । संयोग और वियोग में नायक और नायिका के मनोदशा का वर्णन हुआ है । अलौकिक प्रेम में आत्मा और परमात्मा का अध्यात्मिक वर्णन हुआ है । प्रस्तुत अध्याय का मनोवैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन किया है ।

यहाँ पाँच पद्धतियों का उपयोग अनुसंधान के लिए हुआ है । इन पद्धतियों के माध्यम से अनुसंधान कार्य पूर्ण किया है । अपितु निम्न संदर्भ ग्रंथों का अनुसंधान की दृष्टि से महत्व है जिसका अध्ययन किया है –

1. अनूप वशिष्ठ, 'हिंदी ग़ज़ल का स्वरुप और महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्र.सं. 2006
2. डॉ.अभय खैरनार, 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लें संवेदना और शिल्प', विद्या प्रकाशन कानपुर प्र.स.2012
3. अनिल 'असिम' के काव्यसंग्रह 'मरूथल में झील' की कुँअर बेचैन कृत भूमिका से उद्धृत प्रथम संस्करण, 1 जुलाई 1995
4. डॉ. अनिलकुमार शर्मा, 'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल डी.गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र.स.2009
5. डॉ.अनंतराम मिश्र,संपा., 'अनंत', 'विराट विमर्श' लोकवाणी संस्थान, दिल्ली, प्र.स.2004
6. डॉ. आर.पी. भोसले, 'कुसुम अंसल के हिंदी साहित्य में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर प्र.स.2012
7. डॉ.एस.गंभीर, 'साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना', विदयाविहार प्रकाशन, गाँधीनगर, कानपुर, प्र.स.1992
8. डॉ. अंजनी कुमार दुबे, 'समकालिन कविता के विविध आयाम',–पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली प्र.स.1996

9. डॉ. अंजु भटनागर, 'डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2007
10. डॉ.कुँअर भावना, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2000
11. गिरिराजशरण अग्रवाल, संपा., 'हिंदी की सर्वश्रेष्ठग़ज़लें', डायमंड पाकेट बुक्स,नई दिल्ली,प्र.सं.1982
12. डॉ.गिरीश ज. त्रिवेदी, 'दुष्यंत कुमार व्यक्तित्व एवं कृतित्व', शान्ति प्रकाशन, दिल्ली,प्र.स.२००३
13. गोपालदास सक्सेना 'नीरज', 'नीरज की पाती', हिंदी पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली, प्र.सं.1992
14. चानन गोविंदपुरी, 'ग़ज़ल : एक अध्ययन', सी.आर. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्र.स., 1980
15. चंद्रसेन विराट , 'हमने कठिण समय देखा है', दिशा प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.२००२
16. डॉ. जयराम सुर्यवंशी, 'हिंदी गज़ल : अंतिम दशक', सारंग प्रकाशन, सारनाथ वाराणसी, प्र.स.2017
17. जानकीप्रसाद शर्मा, 'उर्दू साहित्य की परंपरा', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं: 2001
18. डॉ.जे.पी.गंगवार,'हिंदी कविता में ग़ज़ल : संवेदना और शिल्प', प्रकाश बुक डिपो, बरेली प्र.स.1991
19. दुर्गेश नन्दिनी, 'भारतीय काव्यशास्त्र में हिंदी ग़ज़ल की संकल्पना', क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी,नई दिल्ली, प्र.सं.2006
20. दुष्यंन्तकुमार, 'सारिका' स्मृति अंक, नई दिल्ली, पृ.36मई 1976
21. निश्तर खानकाही, 'ग़ज़ल और उसका व्याकरण', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.सं.1999
22. डॉ.नगेन्द्र, 'बिचार और विवेचन', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्र.स.1949
23. डॉ.मधु खराटे, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल' विद्या प्रकाशन, कानपुर,प्र.स.2011

24. डॉ.रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, ‘जयशंकर प्रसाद वस्तु और कला’, नेशनेल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.स.1968

25. डॉ.यतिंद्र तिवारी, संपा., ‘नवे दशक की हिंदी कविता’, साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.1989

26. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, संपा.,‘नवीनतम हिंदी ग़ज़ले’, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, प्र.स.1989

27. डॉ.रोहिताश्व अस्थाना,संपा.,‘बहुरंगी हिन्दी ग़ज़ले’, सुनील साहित्य सदन, दिल्ली, प्र.स.1993

28. डॉ.विद्याशंकर राय, ‘आधुनिक हिंदी उपन्यांस और अजनबीपन’, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, प्र.स 1985

29.डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, ‘हिंदी ग़ज़ल संदर्भ और सार्थकता’, गिरनार प्रकाशन, गुजरात, प्र.स.1998

30. डॉ.शेरजंग गर्ग –‘ग़ज़ले ही ग़ज़लें’, सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स. 1977

31. डॉ. सरदार मुजावर(संपा), ‘हिंदी ग़ज़ल : ग़ज़लकारों की नजरों में’, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2001

32. डॉ.श्यामसुंदरदास, ‘कबीर ग्रंथावली’,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स.2009

33. डॉ. साएमा बानो, ‘समकालीन हिंदी ग़ज़ल’ पहचान और कला प्रकाशन, वाराणसी, प्र.स.2013

34. ज्ञानप्रकाश विवेक, ‘हिन्दी गज़ल की विकास यात्रा’, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला, प्र.सं.2010

इस प्रकार उपर्युक्त सदंर्भ साधनों का अध्ययन करके ’डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन’ इस विषय पर अनुसंधान कार्य पूर्ण किया है ।

चतुर्थ अध्याय

विश्लेषण तथा व्याख्या

4.1 ग़ज़ल स्वरुप एवं विकास

प्रस्तावना :–

'ग़ज़ल' का मूल रूप अरबी में दिखाई देता है। वह परंपरा से जन–जीवन से जुडती गई है। प्रारंभ से 'ग़ज़ल' को शासकों का आश्रय मिला है। प्रारंभ में अधिकतर अंश शृंगार परक और प्रेमपरक होता था। कसीदा नामक काव्य–प्रकार प्रसिद्ध था। उसके प्रारंभ के चार पंक्तियों को तश्बीब कहा जाता था। आगे चलकर फारसी कवियों तश्बीब को 'ग़ज़ल' नाम सम्बोधित किया लेकिन उर्दू कवियों ने 'ग़ज़ल' की परंपरा को विकसित करके एक सशक्त विधा के रुप में सामने लाया है। ग़ज़ल ने अब पुरे विश्व में अपना अस्तित्व निर्माण किया है। भारत में भी ग़ज़ल की एक परंपरा नजर आती है। तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरों ने ग़ज़ल साहित्य का सृजन किया है। उसके उपरांत कबीर और समकालीन कवियों ने उस परंपरा को आगे बढाने का काम किया है। तद्उपरांत भारतेंदु से लेकर आज तक यह ग़ज़ल यात्रा सुदीर्घ रुप से विकसित हो रही है। इस संदर्भ में **रोहिताश्व अस्थाना** का कहना है, "हिंदी में ग़ज़ल की इस परंपरा का श्रीगणेश तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरों, कबीर और उनके समकालीन कवियों द्वारा स्फुट रुप में हुआ। अमीर खुसरों की अनेक ग़ज़लों का रंग हिंदी ग़ज़ल में विहित हिंदी की संभावनाओं को स्पष्ट करता है। कालांतर में भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र से लेकर निराला, शमशेर और दुष्यंत तक हिंदी की सुदीर्घ परंपरा का विकास हुआ।"[1] आज अनेक ग़ज़लकार अपने लेखनी के माध्यम से धूम मचा रहे हैं। उर्दू ग़ज़ल और हिंदी ग़ज़ल एक–दुसरे के समीप होने के बावजूद कथ्य और शिल्प की दृष्टि से अलग महत्त्व रखते है। आज भारतीय ग़ज़लकारों ने हर एक पहलु को लेकर, ग़ज़ल का सृजन किया है। उन्होंने वर्तमान काल के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थिति को लेकर कलम चलाई है। आधुनिक काल में मनुष्य का जीवन किस प्रकार से चक्रव्यूह में फसा है। उसे वाणी देने का कार्य ग़ज़लकारों ने किया है। उनके ग़ज़ल में कठीण शब्दावली का प्रयोग न होकर दैनंदिन बोलचाल की हिंदी का प्रयोग हुआ है।

आज ग़ज़लकार ने मनुष्य के वैयक्तिक अनुभूतियों के साथ–साथ समाज की विसंगतियों, विद्रुपताओं, दुःख–दर्द, असमानता, अन्याय, भ्रष्टाचार आदि को वाणी दी है। उनके ग़ज़लों के पीछे गहरी संवेदना छुपी हुई है। वे समाज और मनुष्य का गंभीरता से अध्ययन कर ग़ज़ल के माध्यम से दिशा देने का काम कर रहे है। हिंदी ग़ज़लकारों ने परंपरागत मान्यताओं और विषयों को तिलांजली देकर आधुनिक जीवन और मनुष्य से जुडने का काम किया है। इस संदर्भ में **रोहिताश्व अस्थाना** का कहना है, ‘‘प्रसन्नता का विषय है कि हिंदी के ग़ज़लकार भारतीय परिवेश से चुनकर ही नई उपमाओं, नए बिंबो एवं नए प्रतीकों का प्रयोग कर रहे है। आधुनिक हिंदी ग़ज़लों में साकी, शराब और मयखाने के स्थान पर गंगाजल में धुले तुलसी के पत्ते, पीपल की छांव, नीम के दर्द और आम आदमी की धूप से तपती संगमरवरी देह पर अमृत की भांति चमकते हुए स्वेद–कणों का उल्लेख मिलता है, जो न केवल हिंदी ग़ज़ल की संभावनाओं को रेखांकित करता है, अपितु उसके स्वर्णिम भविष्य को भी रुपायित करता है।’’[2] यहाँ ग़ज़ल साहित्य के प्रति गंभीरतापूर्वक चिंतन किया जा रहा है। जो समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और इस पीढी को सही रास्ता दिखाया जा रहा हैं। परिणाम स्वरुप हिंदी ग़ज़ल की लोकप्रियता दिन–ब–दिन बढती जा रही है। आज ग़ज़ल एक शाश्वत और सशक्त विधा के रुप में विकसित हो रही है और उसका स्वर्णिम भविष्य बनता हुआ नजर आ रहा है। इस संदर्भ **रोहिताश्व अस्थाना** का कहना है, ‘‘हिंदी ग़ज़ल को नया आयाम प्रदान करने के लिए संकल्पित और समर्पित रचनाधर्मियों की एक लंबी सूची इसकी सशक्त संभावनाओं एवं स्वर्णिम भविष्य के मंगल विहान की उद्‍घोषणा करती है। इतना ही नहीं, हिंदी ग़ज़ल, नई कविता, अकविता, अगीत आदि सामायिक आंदोलनों की भाँति अस्थायी न रहकर हिंदी साहित्य में एक शाश्वत विधा का रुप ग्रहण करती जा रही है।’’[3] हिंदी ग़ज़ल की संभावनाओं एवं उसके भविष्य का इससे बढकर प्रमाण और क्या होगा? इस प्रकार ग़ज़ल स्वरुप और विकास निरंतर बढता जा रहा है।

4.1.1 ग़ज़ल का अर्थ –

‘ग़ज़ल’ अरबी भाषा की एक प्रसिद्ध विधा के रुप में विकसित हो रही हैं। अब उसका विकास पुरे विश्व में हो गया है। ‘ग़ज़ल’ शब्द के अनेक अर्थ विशद हुए है। **दुर्गेश**

नंदिनी– "'ग़ज़ल' शब्द अरबी से निर्मित है,जिसका अर्थ है– औरत से बातें करना या अपने महबूब से बातें करना। फारसी में इसका अर्थ 'मृगनयनी' बताया है।"[4] फारसी में यह बात भी प्रसिद्ध है कि 'वाजनान गुफ्तगू करदन।' आज ग़ज़ल ने पुरे विश्व में अपना अस्तित्व निर्माण किया है। भारत में भी ग़ज़ल की विरासत देखने को मिलती है। ग़ज़ल में श्रृंगारिक और प्रेम भावना से अधिक्य के जनसामान्य को आकर्षित करने में यशस्वी हो गई है। गज़ल का साधारणतः अर्थ– 'प्रेमिका' से वार्तालाप करना है। इसका केंद्रीय विषय प्रेम होता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि 'ग़ज़ल' शब्द 'गजाल' से बना है। जिसका अर्थ 'मृग' है। लेकिन अनेक विद्वान इससे सहमत नहीं है। **डॉ. रोहिताश्व अस्थाना** का मानना है, "कुछ विद्वान ग़ज़ल का संबंध अरबी के ही अन्य शब्द 'गजाल' से मानते हैं। जिसका अर्थ है – मृग। अतः यह हो सकता है कि हिरन जैसे नेत्रों वाली सुन्दरियों के सम्बन्ध में लिखी गई छन्दोमय प्रेम कविताएँ ही ग़ज़ल की संज्ञा से अभिहित की जाने लगी है। परंतु ग़ज़ल का व्युत्पत्ति विषयक गजाल या मृग से जोडना समीचीन नहीं प्रतीत होता क्योंकि भारत में मृग के नेत्र सुन्दरता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अवश्य ही दिखाई देते है जब कि अरब या ईरान में नरगिसी नेत्र को महत्त्व दिया जाता है, अंतः यह तथ्य भ्रांतिपूर्ण प्रतीत होता है।"[5] गज़ल के बारें में और एक मत पर भी विचार होता है। अरबी भाषा में 'कसीदा' नामक एक काव्य की विधा प्रसिद्ध है। वह एक चार पंक्ति का प्रणयगीत होता है। इन पंक्तियों को 'तश्बीब' कहते है। सांस्कृतिक लेन–देन के दौरान इस अरबी विधा का प्रभाव ईरान के कवियों पर हो रहा हैं । परिणामस्वरुप फारसी कवियों ने इसे अपना कर अपने अनुभूति को व्यक्त करने का माध्यम बनाया। इस संदर्भ में **डॉ. विनय वाईकर** का कहना है, "अरबी भाषा में 'कसीदा' नामक एक काव्य विधा है। कसीदा से पहले एक छोटा–सा दो या चार पंक्तियों का प्रणयगीत कहने की परम्परा थी। इन पंक्तियों को तश्बीब कहा जाता था। अरब लोगों ने इस्लाम को कबूल किया और ईरान पर कब्जा किया। लडाई के बाद सांस्कृतिक लेन–देन में अरबों का कसीदा ईरान गया है और देखते–देखते फारसी कवियों में खूब मशहूर हुआ। फारसी कवि जो सौंदर्यपासक थे, विद्वान थे, अनुभवी थे और जीवन के हर पहलू को परखते थे, 'कसीदा' के 'तश्बीब' पर फिदा हो गए। उन्होंने 'तश्बीब' को एक अलग काव्य–विधा माना और अपने प्रतिभा से समृद्ध

बनाया। इसी काव्य–विधा को आज हम लोग 'ग़ज़ल' नाम से पुकारते है।"[6] एक किंवदंती के अनुसार 'ग़ज़ल' नामक व्यक्ति था। उसने पूरी जिंदगी हुस्न और इश्क में बिता दी थी। वह अपनी बातें कलात्मक ढंग से व्यक्त करता था। इस कारण 'ग़ज़ल' नाम उसके अनुसार तैयार हो गया है। इस संदर्भ में **सूर्यप्रकाश शर्मा** कहते है, "एक किंवदंती के अनुसार अरब में 'ग़ज़ल' नाम का एक आदमी था जिसने अपनी सारी उम्र इश्क करने में बिता दी, उसके बारें में यह प्रचलित है कि वह हमेशा इश्क और हुस्न की बातें ही किया करता था और अपनी बातों को कलात्मक ढंग से कहने में उस्ताद था। कम–से–कम शब्दों में अधिक प्रभाव उत्पन्न करने हेतु वह शेर कहता था इसी आधार पर सम्भवतः इश्क और हुस्न का जिक्र करने वाली कविता को ग़ज़ल की संज्ञा दी जाने लगी।"[7] इस प्रकार ग़ज़ल के अनेक व्युत्पत्तिगत अर्थ विशद होते हैं ।

4.1.1.1 गज़ल की परिभाषा –

ग़ज़ल के माध्यम से चुनिंदे शब्दों के माध्यम से ग़ज़लकार अभिव्यक्ति देता है। इसमें कम शब्दों में अधिक बताने का सामर्थ्य है। साथ ही संगीत का साथ मिलने पर ग़ज़ल अधिक निखर जाती है। इस कारण वह लोकरंजन का सशक्त माध्यम बन गया है। ग़ज़ल को परिभाषित करने का प्रयास अनेक विद्‌वानों, शब्दकोंशो द्‌वारा हो गया है। अतः ग़ज़ल की परिभाषा जानने के लिए निम्नलिखित परिभाषा का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

4.1.1.2 विद्‌वानों के मत –

रुद्र काशिकेय के अनुसार,"ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ बार–बार बातचीत करना है।"[8] मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली कहते है, "जहां तक ग़ज़ल की मूल प्रकृति का संबंध है, उसका विषय प्रेम के अतिरिक्त कुछ और नहीं।"[9]

श्री फिराक गोरखपुरी का कहना है, "ग़ज़ल असंबद्‌ध कविता है। ग़ज़ल का मिजाज मूलतः समर्पणवादी होता है।"[10] **पंडीत रामनरेश त्रिपाठी** के अनुसार, "ग़ज़ल का अर्थ जवानी का हाल बयान करना अथवा माशूक की संगति और इश्क का जिक्र करना। ग़ज़ल में प्रेम के भिन्न–भिन्न भावों के शेर लाने का नियम रखा गया है। किसी शेर में आशिक अपनी मनोवेदना

प्रकट करता है, जिससे माशूक पर उसका कुछ प्रभाव पडे। किसी शेर में वह माशूक की वफा और जफा का जिक्र करता है और किसी में रकीब की शिकायत करता है। मतलब यह कि जिन बातों के कहने से माशूक के प्रसन्न होने या और कोई खास नतीजा मिलने की आशा होती है वहीं बाते ग़ज़ल में आती है।''[11] **डॉ. नगेंद्र** का मत है, ''ग़ज़ल उर्दू का सर्वाधिक प्रसिद्ध और सरस भेद है। उसका स्थायी भाव प्रेम है, जिसमें रहस्यानुभूति, मस्ती, रिन्दी, धार्मिक विद्रोह आदि भावनाएं संचारी रुप में ओतप्रोत रहती है। विषय के अनुरुप उसका एक विशिष्ट काव्यरुप भी है, जो मतला, मकता, गिरह, काफिया और रदीफ में परिबद्ध रहता है।''[12]

श्री. चानन गोविंदपुरी का मानना है, ''ग़ज़ल उर्दू कविता का सर्वश्रेष्ठ अनूठा और सशक्त काव्यरुप है। इसका जन्म फारसी भाषा में हुआ, फिर उर्दू वालों ने इसको अपनाया और इसने हमारे देश में आकर अपने रचनात्मक स्वरुप के शिखर बिन्दुओं को छुआ।''[13] डॉ. नरेश के अनुसार, ''ग़ज़ल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है। ग़ज़ल की असली कसौटी भावोत्पादकता मानी जाती है।''[14] **डॉ. नरेंद्र वशिष्ठ** का मत है, ''ग़ज़ल का मूल क्षेत्र नारी विषयक भावों से संबंधित है। दरअसल गजलगोई का अधिकतर संबंध विरहजन्य व्यथा से रहा है। अंतः इसमें हृदय को छू लेने की क्षमता को बहुत उंचा गुण माना जाता है।''[15] **कवि नीरज** का मानना है, ''वो काव्य की रसमय विधा जो सूक्ष्म हो और जो संकेतों की भाषा में बोलती हो।''[16]

ग़ज़लकार **गिरिराजशरण अग्रवाल** का मानना है, ''ग़ज़ल की कला संक्षेप में चिन्तन, विचार,तथा भावना के मिश्रण की कला है।''[17] **डॉ. वशिष्ठ अनूप** का कहना है, ''ग़ज़ल उर्दू–हिन्दी शायरी की सबसे सशक्त और लोकप्रिय काव्य विधा है जो अपने जन्म के समय से प्रेम और सौदंर्य से वाबस्ता थी। आज यह पूरी तरह भारतीय संस्कृति और साहित्य के रंग में रंगकर जमाने के साथ कदम मिलाकर चल रही है। उसकी दुनियाँ आज बहुत बडी हो चुकी है। ग़ज़ल के दामन में आज हर रंग के फूल हैं और हर फूल की खुशबू है। मिट्‌टी की सोंधी गंध है किन्तु इसमें जहरीले काँटे भी है। दहकते अंगारे भी है। जनजीवन की व्यथा कथा और

आँसू भी है। इसमें कृष्ण की बंशी की धुन, मद और शिव के डमरु का स्वर तीव्र है। इसमें काम के बाण विरल और राम के बाण अधिक है।"[18]

चन्द्रसेन विराट का मानना है, "ग़ज़ल एक ऐसी छन्दोबद्ध काव्य रचना विधा है जिसमें कवि को हर शेर में विभिन्न कथ्य प्रतिपादित करने की छूट है तथापि संपूर्ण काव्य रचना में एक विविष्ट छन्द विधान का अनुशासन पालित है एवं एक सांस्कृतिक भावमयी, संप्रेषणयुक्त रसासिक्त भाव व्यंजना अनुस्यूत है।"[19]

अरुण कुमार का मत है, "ग़ज़ल दर्द की दरकती हुई जमीन से उपजी आँसुओं की तरलता में स्नात वह श्रेष्ठतम काव्य विधा है, जो अपनी स्थूलता एवं लौकिकता में जितनी ही धरती से संपृक्त एवं भौतिक है, अपनी सूक्ष्मता एवं अलौकिकता में उतनी ही उर्ध्वमुखी एवं आकाशगामी भावों को दर्द की चाशनी में सराबोर कर कम से कम शब्दों में अत्यंत सूक्तिपरक ढंग से शिल्पगत नक्काशी एवं चुस्ती के साथ कह देना ही अच्छी की सार्थकता है। यह दर्द व्यष्टिगत भी होता है और समष्टिगत भी। भावनाओं के फैलाव को छन्दगत अनुशासन के ढाँचे में ढालकर व्यष्टि के दर्द को समष्टि के दर्द से जोड देना ही इस मोहक कला की विशेषता है, ग़ज़ल कविता की सूक्तिमय शैली है।"[20] **रोहिताश्व अस्थाना** कहते है, "ग़ज़ल वह गेयात्मक काव्य विधा है जिसमें प्रेम की विभिन्न दशाओं के शब्द चित्र शेरों के माध्यम से प्रस्तुत कर प्रेम की क्रीडा–विडा एवं कोमल अनुभूतियों के स्वर हों अथवा सामाजिक, राजनीतिक एवं हास्य व्यंगात्मक भावभूमि पर आम आदमी के मानस में दबी पीडा व छटपटाहट को वाणी दी गयी हो और जो विषयवस्तु की दृष्टि से व्यापक होते हुए भी संक्षिप्तता एवं प्रभावोत्पादकता के गुणों से युक्त हो।"[21] उपर्युक्त परिभाषा से ग़ज़ल का अर्थ विशद होते हुए भी नवज़ागरण, नवचेतना का संदेश देने का प्रयास होता हैं ।

बृहत हिंदी कोश में लिखा है, "फारसी उर्दू में मुक्तक काव्य का एक भेद जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है।"[22] **उर्दू–हिंदी शब्दकोश** में कहा है, "प्रेमिका से वार्तालाप उर्दू–फारसी कविता का एक प्रकार विशेष जिसमें प्रायः 5 से 11 शेर होते है। सारे शेर एक ही रदीफ और काफिए में होते हैं और हर शेर का मज्मून अलग होता है, पहला शेर 'मतला'

कहलाता है जिसके दोनों मिसरे सानुप्रास होते है, और अन्तिम शेर 'मक्ता' होता है जिसमें शायर अपना उपनाम लाता है।"[23]

'नालंदा विशाल शब्दसागर' के अनुसार, "फारसी और उर्दू में शृंगार रस की कविता।"[24] **'उर्दू– मराठी शब्दकोश'** के अनुसार, "प्रियतमेशी प्रीतीच्या व जवानीच्या गोष्टी बोलणे, प्रेम पात्राशी गुजगोष्टी करणे व खेळणे उर्दू–फारसी कवितेचा एक प्रकार"[25] अर्थात प्रियसी के साथ प्यार और जवानी की बातें करना, गुफ्तगू करना और खेलना। उर्दू–फारसी कविता का एक प्रकार **'हिंदी साहित्य कोश'** में कहा है, "गजल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है। ग़ज़ल का शाब्दीक अर्थ है– नारियों के प्रेम की बातें करना।"[26]

'A dictonary of literary terms' में कहा है, "An Arabic word for love making, it has come to denote a love-song or love-Poem."[27]

'Princetion Encyclopedia of peotry and Poetics के अनुसार, "Name given to a lyric in eastern literature, especially Arabic, Persion, Turkish, Urdu and Pasnto, from the 8th C. Onward, such a poem whose thems is generally love and wine, often mystically understood, Varies in lenth from 5 to 12couplets all upon the same rhyme. The post shings his name in the final couplet."[28] The shorter oxford English Dictonary esa में लिखा है, "A species of oriented lyric Poetry, usually erotic, having a limited number or versesand a recurrent rhyme."[29]

अतः स्पष्ट है कि ग़ज़ल की मूल प्रकृति हमें प्रेम और शृंगार नजर आता है। उसमें हमें संक्षिप्तता नजर आती है। उसने अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण किया है। इसमें प्रेम के साथ–साथ दर्द, वेदना और विरह की अभिव्यक्ति होती है। इसमें गागर में सागर भरने की क्षमता है। आज ग़ज़ल ने परंपरागत परिधि को तोडकर व्यापक रुप धारण कर लिया है। आज ग़ज़ल के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक आदि क्षेत्र की वास्तविकता को अभिव्यक्त किया जाता है। साथ ही मनुष्य की अनुभूति, दर्द, पीडा, छटपटाहट आदि को वाणी देने का काम ग़ज़लकार कर रहे है। हर एक शब्दकोश और विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रकट किए है।

ग़ज़ल में समर्पणवादी प्रवृत्ति नजर आती है। इसमें प्रियकर–प्रेमिका की मनोदशा को प्रकट किया जाता है। इसके माध्यम से लौकिक और अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की जाती है। ग़ज़ल का साधारण अर्थ बातचीत करना माना जाता है। इस प्रकार ग़ज़ल की परिभाषा पर विचार हो गया है।

4.1.3 ग़ज़ल के अंग –

. गज़ल के अंगो का अध्ययन करने के पश्चात ज्ञात होता है कि ग़ज़ल के शेर, काफिया, रदीफ, मतला, मकता, तखल्लुस, जमीन, बहर आदि अंग है। इस सम्बन्धी विस्तार से विवेचन करने का प्रयास किया जा रहा हैं ।

4.1.3.1 शेर –

'शेर' शब्द की उपज अरबी भाषा से है। अरबी भाषा में इसका अर्थ विशद किया है कि समझ लेना, जानना, अनुसंधान करना। इसमें दो पंक्तियाँ होती है। शेर के बारें में **शून्य पालनपुरी** का कहना है, "शेर यानी इरादे के साथ लिखी गई समाप प्रासयुक्त चोटदार वाणी।"[30] शेर का ग़ज़ल में विशेष महत्त्व होता है। शेर के बिना ग़ज़ल नहीं बन सकती है। शेर के प्रथम पंक्ति को उलां मिसरा कहा जाता है तो दूसरे पंक्ति को सानी मिसरा। यह दो पंक्तियाँ एक–दूसरे पर निर्भर रहती है। दोन्हों के सम्यक नियोजन से अर्थपूर्ण शेर की निर्मिती होती है। उदाहरण तौर पर मृदुला अरुण के 'ये सफर बाकी है' ग़ज़ल की पंक्तियाँ देखेंगे –

"बीच सागर में किसी इक बूँद– सा खो जाइए,
अब तो जी करता है जैसे गुमशुदा हो जाइए।
कल न जाने किन पहाडों में बनानी हो सडक,
है मिली गर छाँव तो कुछ देर को सो जाइए।
आने वाली पीढियाँ आयेंगी इस बगिया के फल,
इसमें कुछ आदर्श, कुछ जज्बात भी बो जाइए।
जुल्म जब करते हैं ये कहते हैं वो हर मर्तबा,
यह भी कोई बात है हर बात पर से रो जाइए।
अँधेरी गलियाँ नगर सुनसान, चेहरे अजनबी,

घर से तो निकले है लेकिन अब किधर को जाइए।"[31]

कहने का तात्पर्य है कि शेर में गागर में सागर भरने की क्षमता होती है। ग़ज़ल का प्रत्येक शेर अपने आप में स्वयंपूर्ण होता है। जो उसके भाव दिल को छूते हैं। शेरों के माध्यम से 'ग़ज़ल' को पूर्णत्व आता है। 'ग़ज़ल' में साधारणतः शेरों की संख्या कम से कम पाँच और ज्यादा से ज्यादा सत्रह मानी जाती है। लेकिन अब इसकी संख्या कम–अधिक हो रही है। इसमें कोई खास पाबंदी नहीं रही है।

4.1.3.2 काफिया –

. ग़ज़ल में काफिया का स्थान महत्त्वपूर्ण है। काफिया का अरबी भाषा में अर्थ विशद किया है कि शेर के अंत में आने वाला शब्द। काफिया के बगैर ग़ज़ल की निर्मिती नहीं हो सकती है। अरबी भाषा के 'कफ़ू' शब्द से काफिया शब्द की उत्पत्ति हो गई है। कवि–कर्म का परिचय 'काफियों' के प्रयोग से होता है। प्रयत्नपूर्वक तैयार किए काफिए और स्वाभाविक रुप से तैयार काफिए में हमें अंतर दिखाई देता हैं। प्रयत्नपूर्वक काफिए का प्रयोग करने ग़ज़ल नहीं लगती है। स्वाभाविक रुप से तैयार हो गई काफियों वाली ग़ज़ल होती है। काफिए पर अधिकार पाने के लिए अनुभव और अध्ययन की आवश्यकता होती है। ग़ज़ल के शेरों में रदीफ से पहले काफिया आता है, जो अन्त्यानुप्रास शब्द के रुप आते हैं और उसका प्रयोग तुक मिलाने के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। फिराक गोरखपुरी के 'गुले नग्मा' ग़ज़ल से काफिया का उदाहरण देखेंगे।

"बहुत पहले से उन कदमों की आहट जान लेते हैं।
तुझे ऐ जिन्दगी हम दूर से पहचान लेते हैं।
तबीयत अपनी घबराती है जब सुनसान रातों में
हम ऐसे में तेरी यादों की चादर तान लेते हैं।
तुझे घाटा न होने देंगे कारोबार उल्फत में
हम अपने सर तेरा ऐ दोस्त हर नुकसान लेते है।
फिराक अक्सर बदलकर भेस मिलता है कोई काफिर
कभी हम जान लेते है, कभी पहचान लेते है।"[32]

उपर्युक्त ग़ज़ल से ज्ञात होता है कि जान, पहचान, सुनसान, तान, नुकसान, पहचान काफिए दिखाई देते हैं। काफिए के माध्यम से कवि की परख होती है। इससे कवि का भाषा–कौशल्य, विचार, अनुभूति और शिल्पगत ज्ञान का पता चलता है। अंतः स्पष्ट है कि ग़ज़ल के निर्मिती में एक मुख्य अंग के रुप में काफिया भूमिका निभाता है।

4.1.3.3 रदीफ –

उर्दू–हिंदी शब्दकोश में रदीफ का अर्थ बताया गया है कि –"पीछे चलने वाली।"[33] इसका एक अर्थ अनुगामी बताया जाता है। साधारणतः घुडसवार में पीछे बैठने वाले व्यक्ति का रदीफ नाम से संम्बोधित किया जाता था। ग़ज़ल के प्रत्येक शेर में काफिये के पीछे रदीफ आ जाता है और प्रत्येक शेर में अपनी जगह पर स्थिर रह जाता है। वह कभी बदलता नहीं है। अंतः स्पष्ट है कि ग़ज़ल के शेरों के अंत में रदीफ आ जाता है और उसकी पुनरावृत्ती होती रहती है। वह सदैव स्थायी रहता है। अरबी शब्द 'रद्द' से 'रदीफ' शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है। जिसका अर्थ होता है, लौटना फिर से आना। रदीफ को ग़ज़ल से निकाल दिया जाए तो शेर बेजान बन सकता है। ग़ज़ल में रदीफ का प्रयोग बडी समझदारी के साथ करना पडता है। हमें रदीफ दो प्रकार की दिखाई देती है, 1. स्वतंत्र रदीफ 2. मिश्रित रदीफ।

4.1.3.3.1.स्वतंत्र रदीफ –

जो काफिये के शब्द के साथ संयुक्त हुए बिना शेर के अंत में स्वतंत्र अस्तित्व दिखाता है, उसे स्वतंत्र रदीफ कहा जाता है। उदा.

"जब से पछुआँ चली बह गया आदमी
आदमी अब कहाँ रह गया आदमी।"[34]

इस शेर के दोन्हों पंक्तियों के अंत में 'गया आदमी' स्वतंत्र अस्तित्व दिखाता है। अतः वहाँ स्वतंत्र रदीफ है।

4. 1.3.3.2. मिश्रित रदीफ –

जो काफिए के शब्द के साथ संयुक्त होकर उसका अभिन्न अंग बनकर रह जाता है, उसे मिश्रित रदीफ कहा जाता है।

"अगर ये जिंदगी है जिन्दगी से हम तो बाज आये

अन्धेंरे तो अन्धेंरे थे उजालों तक ने भरमाये।"[35]

इस पंक्तियों में रदीफ काफिये में घुल–मिल गया है। इन पंक्तियों में 'आ', 'मा' काफिया है तो 'ये' रदीफ है। रदीफ शेर में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह न होने पर शेर का संतुलन बिगड जाएगा और शेर अर्थहीन बन जाएगा।

4.1.3.4 मतला –

'मतला' का अर्थ माना जाता है– 'उदय'। ग़ज़ल का उदय मतले से ही होता है। मतले के पहले पंक्ति में जो रदीफ, काफिया होता है, वह दूसरे पंक्ति में दिखाई देता है। मतले के संदर्भ में ग़ज़लकार कुँअर बैचेन जी का कहना है, "ग़ज़ल का सबसे पहला शेर जिसकी दोनों ही पंक्तियों में काफियों का निर्वाह होता है तथा दोनों पंक्तियों में समान रदीफ आता है वो मतला कहलाता है।"[36] मतला एक ग़ज़ल में अनेक भी हो सकते है और एक भी। कभी–कभी पूरी ग़ज़ल मतले में कही जाती है। ग़ज़ल में पहले शेर को मतला और दूसरे शेरों को 'हुस्ने–मतला' कहते है। 'मतला' शब्द की उत्पत्ति 'मत्लअ' इस अरबी शब्द सेवनी है और मल्तअ की उत्पत्ति तुलुअ से मानी जाती है। जिसका अर्थ उदय होना, आरंभ होना है। मतला का ग़ज़ल में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मतले का ग़ज़ल में महत्व विशद करते हुए **फिराक गोरखपुरी** कहते है, "मतला ग़ज़ल या कसीदे के शुरु के उस शेर या एकाधिक शेरों को कहते है जिनमें रदीफ–काफिया एक ही होता है। मतला किसी ग़ज़ल में एक भी हो सकता है और कभी–कभी पूरी की पूरी ग़ज़ल मतलों में ही कह दी जाती है। आमतौर पर ग़ज़ल के कुल शेरों का चौथा या पाँचवा भाग मतलों का होता है। इस अनुपात में ग़ज़ल देखने सुनने में अच्छी लगती है। फिर भी काव्यशास्त्र के अनुसार ग़ज़ल में मतला न होना कोई दोष नहीं है। कसीदों में एक नहीं विभिन्न अवसरों पर कई मतलों की आवश्यकता पडती है और उन्हें छोडा नही जा सकता।"[37] अतः स्पष्ट है कि ग़ज़ल का पहला शेर मतला होता है। इसके दोनों पंक्तियों में समान काफिया और रदीफ होते है। ग़ज़ल में एक या अधिक मतला हो सकते हैं। मतला का एक उदाहरण निम्नलिखित है –

"किस कदर अलगाव का खंजर कटीला हो गया,
जातियाँ बँटने लगीं, घर–घर कबीला हो गया।"[38]

4.1.3.5 मकता –

'मकता' शब्द अरबी है। जिसका अर्थ होता है– 'कटा हुआ।' मकता इस बात की और संकेत करता है कि ग़ज़ल समाप्त हो रही है। अंतः मकता ग़ज़ल का अंतिम शेर होता है। मकते के शेर में कवि अपना 'उपनाम' रखता है, लेकिन उपनाम रखना कोई अनिवार्य शर्त नहीं होती है। इस संदर्भ में **डॉ. अर्शद जमाल** का कहना है, ''ग़ज़ल के आखिरी शेर को जिसमें शायर का नाम अथवा उपनाम हो उसे मकता कहते हैं। अगर नाम न हो तो उसे केवल ग़ज़ल का 'आखिरी शेर' ही कहा जाता है।''[39]

अरबी शब्द फत्त से मकता शब्द बना है। जिसका अर्थ अंतिम स्थल होता है। इस मकते में अर्थ गांभीर्य और विषय का निचोड होता है। यहाँ मकते का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

''हम कहाँ के दाना थे किन हुनर में थकता थे

बेसबब हुआ गालिब दुश्मन आसमाँ अपना।''[40]

अतः स्पष्ट है कि ग़ज़ल के अंगों के बगैर ग़ज़ल नहीं बनती है। ग़ज़ल में शेर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें गागर में सागर भरने का अनलोम अर्थ दिया है। काफिया शेर के अंत में आता है कि काफिया के बगैर ग़ज़ल की निर्मिती नहीं हो सकती है। रदीफ काफिये के पीछे आता है। वह शेर में अपनी जगह पर स्थिर रहता है। ग़ज़ल का सबसे पहला शेर मतला होता है। मकता ग़ज़ल का अंतिम शेर होता है। इसप्रकार इन अंगों से ग़ज़ल की निर्मिती होती है ।

4.1.4 फारसी साहित्य में ग़ज़ल –

. गज़ल का मूल हमें अरब में दिखाई देता है। अरबीं लोगों ने परंपरा से विस्तारवादी भूमिका अपनाई है। ईरान पर अरबों ने लम्बे समय तक शासन किया था। परिणामस्वरुप ईरान और अरब में सांस्कृतिक लेन–देन से साहित्य भी प्रभावित होता रहा। तत्कालीन काल में कसीदों का समाज पर अधिक प्रभाव था। ग़ज़ल साहित्य को पनपने के लिए अरबों से अधिक ईरानी लोगों ने योगदान दिया। इस कारण अवसर मिलने पर ग़ज़ल फारसी में अधिक समृद्ध बन गई। साथ ही तत्कालीन बादशाहों ने ग़ज़ल को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। फारसी में ग़ज़ल का आरंभ नवीं शताब्दी के अंत में माना जाता है। प्रारंभ में फारसी ग़ज़लों

का विषय प्रेम, सौंदर्य और मदिरा था लेकिन आगे चलकर फारसी ग़ज़लों ने व्यापक रुप धारण कर लिया। उसमें मनुष्य जीवन का दुःख, वेदना, भाव को अभिव्यक्त किया जाने लगा। इस संदर्भ में **डॉ. सायमा बानो** का कहना है, ‘‘फारसी में ग़ज़ल परंपरा के विधिवत आरम्भ का श्रेय नवीं शताब्दी के अन्त के रौदकी समरकदी को दिया जाता है। फारसी साहित्य में ग़ज़लों की आरम्भिक स्थिति अब भी विवादास्पद है। अपने आरम्भिक दौर में फारसी ग़ज़लें प्रेम , सौंदर्य और मदिरा तक सीमित थीं। आगे इन फारसी कवियों ने ग़ज़ल में सौंदर्य की ज्योति जलाई और प्रेम का राग छेडा। धीरे–धीरे इस स्थूल प्रेम ने विलासिता का रुप धारण कर लिया। ग़ज़ल के पथभ्रष्ट होते कदमों को आगे सूफियों ने राह दिखाई और अब प्रेम का केंद्र स्त्री शरीर न होकर परम ज्योतिर्मान परमात्मा हो गया। धीरे–धीरे इश्क–मजाजी, इश्क–हकीकी में बदल गया। इस प्रेम में विरह की व्याकुलता की प्रधानता ने ग़ज़लों के विषयक्षेत्र का विस्तार कर दिया। इस प्रकार ग़ज़लों ने जीवन की द्वंद्वात्मक अनुभूतियों का साक्षात्कार करना आरम्भ कर दिया। ग़ज़लों में प्रेम और मस्ती के साथ दुःख और वेदना भी समाने लगी। ग़ज़ल के महान उन्नायक सादी शिराजी के यहाँ आते–आते ग़ज़ल अपने पूर्ण यौवन को प्राप्त कर चुकी थी।’’[41] इससें स्पष्ट है कि फारसी ग़ज़ल का प्रारंभ नवीं शताब्दी के अंत में हो गया। आरंम्भ में फारसी ग़ज़ल का विषय सौंदर्य, प्रेम आदि था। लेकिन आगे चलकर उसने व्यापक रुप धारण कर लिया। वह लौकिक–अलौकिक प्रेम के साथ–साथ मनुष्य के संवेदना तक अभिव्यक्ति देने लगी। फारसी गजल को समृद्ध करने का प्रयास सादी शिराजी, वाहिदी, रुमी, दकीकी, कमाल, निजामी, शेखसादी आदि शायरों को जाता है। फारसी ग़ज़लों में अधिकतर अलौकिक प्रेम को महत्त्व दिया गया है। इसमें ईश्वर–प्रेम ,भक्ति एवं संसार की नश्वरता को वाणी दी गई है। फारसी ग़ज़लों में अलौकिक प्रेम अधिकता, ईश्वर से मिलने की ललक दिखाई देती है। यह शायर ईश्वर को प्रियकर मानते है। प्रसिद्ध कवि सादी शीराजी अपना दिल प्रेमी को दे बैठते है। वह प्रेमी ईश्वर है। वह अपने प्रेमी के सुंदरता का वर्णन करते हुए कहते है

‘‘दूस्तां मनअ कुनंदम कि चरा दिव बतू दादम
बायद अव्वल बतू मुफ्तन कि चुनी खूब चराई।’’[42]

फारसी ग़ज़लकारों ने जिस प्रकार अलौकिक प्रेम का चित्रण किया है, उसी प्रकार लौकिक प्रेम का भी चित्रण किया है। इन ग़ज़लकारों ने अपने ग़ज़ल में सौंदर्य और प्रेम को महत्त्व दिया है। मौलाना हाली अपने प्रियतम का भी चित्रण करते है। उसकी नशीली आँखो का वर्णन करते है। उनका कहना है कि प्रियतम की नशीली आँखो को देखकर बिना पिए ही नशा हो जाता है और वे अपना होश खो बैठते है। इस संदर्भ में उनका निम्नलिखित शेर महत्वपूर्ण है –

''कैफीयत – चश्म उसकी मुझे याद है सौदा
सागर की मिरे हाथ से लेना कि चला में।''[43]

फारसी ग़ज़लकारों ने जीवन के विविध पहलुओं से ग़ज़ल को जोड दिया है। वे अपने ग़ज़ल के माध्यम से सामाजिक चेतना लाना चाहते है। वे परंपरागत गलत धारणाओं को तिलांजली देकर नई उमंग लाना चाहते है। वे मुफ्त जीवन के हिमायती है। इस संदर्भ में **साहिर लुधियानवी** का कहना है –

''भडका रहे हैं आग लब–नग्मागर से हम,
खामोश क्या रहेंगे जमाने के डर से हम।
कुछ और बढ गए जो अंधेरे तो क्या हुआ,
मायूस तो नहीं है तलू–ए–सहर से हम।।
ले दे के अपने पास फकत इक नजर तो है,
क्यों देखें जिंदगी को किसी की नजर से हम।।
माना कि इस जमीं को न गुलजार कर सके,
कुछ बार कम तो कर गए, गुजरे जिधर से हम।।''[44]

अतः स्पष्ट है कि फारसी ग़ज़लकारों ने जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी कलम चलाई हैं। प्रारंभ में उनका दृष्टिकोण प्रेम और सौंदर्य तक सीमित था, पर आगे चलकर लौकिक–अलौकिक प्रेम के साथ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर ग़ज़ल का निर्माण किया है।

4.1.5 उर्दू साहित्य में ग़ज़ल –

. ग़ज़ल का मूल हमें अरब में नजर आता है। उसे भारत में आने के लिए लंम्बा रास्तां मापना पडा। गजल अरब से ईरान और ईरान से भारत में आ गई। जब ग़ज़ल भारत में आ गई, तब उर्दू भाषा धीर–धीरे अपना अस्तित्व निर्माण कर रही थी। वैसे देखा जाए तो ग़ज़ल को जनमानस से जोडने का काम उर्दू ने किया है। आज ग़ज़ल के बगैर उर्दू और उर्दू के बगैर ग़ज़ल की कल्पना नहीं की जा सकती है। दोन्हों एक–दूसरे पर पूरी तरह से निर्भर हो गए हैं। कहना गलत न होगा कि ग़ज़ल का बीजांकरण अरबी–फारसी में हो गया और उसका उन्नयन, पल्लवन और विकास करने का काम उर्दू भाषा द्वारा हो गया है। अरबी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल की शुरुआत की थी, पर उसका स्वरुप का निर्माण नहीं कर सके। फारसी ग़ज़ले सौंदर्य, प्रेम और मदिरा तक ही सीमित रही । पवित्र प्रेम का निरुपण करने वाली फारसी ग़ज़ले कालांतर से विलासिनता की ओर बढने लगी। जिससे ग़ज़ल में अश्लीलता का प्रवेश हो गया। इससे चिंतित होकर सूफी संप्रदाय ने ग़ज़ल को सही दिशा देने का काम किया। इस संदर्भ में **निश्तर खानकाही** कहते है, ‘‘सूफी समुदाय के हाथ में आते ही ग़ज़ल एक और रास्ते की तरफ मुड गई। यह रास्ता था अध्यात्म या रुहानियत का अध्यात्म से जुडते ही ग़ज़ल के संबोधन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। अब ग़ज़ल के शेरों में इश्क मजाजी के स्थान पर इश्क हकीकी की चर्चा होने लगीं। इश्क मजाजी (सांसारिक प्रेम) इश्क हकीकी (अलौकिक प्रेम), की ओर मुड गया। अब ग़ज़ल की गूँज बादशाहों के दरबारों से निकलकर सूफी–संतों की दरगाहों में सुनाई देने लगी। इस तरह ग़ज़ल का क्षेत्र और अधिक विस्तृत हुआ।’’[45] ग़ज़ल ईरान से होते हुए भारत में आ गई। उर्दू भाषा का जन्म भारत में हो गया। इसकारण उर्दू– ग़ज़ल का उद्‌भव भारत में हो गया है। उर्दू– ग़ज़ल के प्रथम ग़ज़लकार अमीर खुसरों को माना जाता है। उन्होंने उर्दू और हिंदी दोन्हों भाषाओं में ग़ज़ल लिखी है। उर्दू ग़ज़ल का उद्‌भव और विकास दक्षिण भारत में अधिक हो गया था। इसका कारण है कि तत्कालीन बादशाहा ग़ज़लकारों को सहारा देते थे और स्वयं ग़ज़ल करते थे। दक्षिण के ग़ज़लकारों ने विरह वर्णन बडे प्रभावी ढंग से किया है। कबीर का एक शेर पेश है –

"न पल बिछुडे पिया हमसे, न हम बिछुडे पिया से

उन्हीं से नेह लगी है, हमन को बेकरारी क्या।"[46]

उर्दू ग़ज़ल का जनक वली को माना जाता है। वह औरंगजेब के समय दक्षिण से उत्तर की ओर आया। उसने अपने ग़ज़ल के माध्यम से तत्कालीन परिवेश और समाज का गहराई से अध्ययन किया और अपने ग़ज़ल के माध्यम से वाणी देने का काम किया है। वली ने उर्दू ग़ज़ल के विकास में योगदान दिया है। इस संदर्भ में **जानकी प्रसाद शर्मा** का कहना है, "वली की शायरी सत्रहवीं–अट्टारहवीं शताब्दी के दौरान की साझी संस्कृति की एक झाँकी प्रस्तुत करती है। उनकी शायरी से एक साथ हिंदी और उर्दू भाषा एवं काव्य के विकास को समझने में मद्द ली जा सकती है। जहाँ तक उर्दू शायरी की बात है उन्हें इसमें एक युग प्रवर्तक की हैसियत प्राप्त है। आज भी वे हमें अपनी जनपदीय शक्तियों को पहचान ने की प्रेरणा देते है।"[47] इसके उपरांत 18 वी शताब्दीं के अंत में अनेक उर्दू शायर सामने आ गए। इस कडी में गालिब का नाम विशेष रुप से लिया जाता है। उनके ग़ज़ल में स्वच्छता नजर आती है। गालिब का एक शेर प्रस्तुत है –

"गालिब हमें न छेड कि फिर जोश–ए–अश्क से

बैठे हैं हम तहय्य–ए–तूफाँ लिए हुए।"[48]

गालिब के उपरांत अनेक शायरों ने उर्दू ग़ज़ल के विकास में योगदान दिया है। बीसवीं शताब्दी में अनेक ग़ज़लकारों ने व्यष्टि और समष्टि को विषय बनाकर ग़ज़लों का सृजन किया है। उन्होंने सामाजिक विषमता, समाज की समस्याएँ, मानवीय संवेदना, प्रेम एवं अध्यात्म को लेकर ग़ज़लों का निर्माण किया है। आम आदमी की दयनीय स्थिति को लेकर ग़ज़लकारों ने ग़ज़लों का निर्माण किया है। यहाँ आम आदमी की भयावह स्थिति को उजागर करते हुए **देवेंद्रकुमार आर्य** कहते है –

"अब इसी तरह वो रोटी का पता देता है,

भूख के गाँव में इक चूल्हा जला देता है।"[49]

वर्तमान में अनेक ग़ज़लकार सामने आ रहे है। उन्होंने परंपरागत ग़ज़ल की मान्यताओं को नकार कर नए विषयों को सामने लाया है। उनकी ग़ज़ले आज जनमानस की आवाज बन

गई है। आज वे मनुष्य के अंतर्मन छूकर आज तक न कहीं भावना को वाणी दे रहे है। वे प्रेम, सौंदर्य के साथ–साथ आम आदमी का दुःख, वेदना की पहल कर रहे है और मानवतावाद को अपनाने पर बल दे रहे है। इस विषय के संदर्भ में **प्रदीप चौबे** कहते है –

"खुद से बातें कर सकें ऐसा,
घर में इक कोना जरुरी है।
आदमी का दुःख समझने को,
आदमी होना जरुरी है।"[50]

इसप्रकार आज आम आदमी के दुःख, वेदना को लेकर भी ग़ज़ल लिखी जा रही है। अंतः स्पष्ट है कि प्रारंभिक उर्दू ग़ज़ले शृंगारिक भावनाओं को व्यक्त करते थे। लेकिन आज वह वर्तन, परिस्थिति, व्यष्टि और समष्टि को वास्तविक रुप में अभिव्यक्त कर रही है। उर्दू ग़ज़ल अपनी यात्रा में विभिन्न माहौल से गुजरती हुएँ सतत विकास की राह पर अग्रसर है।

4.1.6 हिंदी साहित्य में ग़ज़ल –

भारत में अनेक शतकों से हिंदी ग़ज़ल का रुप दिखाई देता है। हिंदी ग़ज़ल कथ्य की दृष्टि से बिल्कुल अलग है। आज हिंदी ग़ज़ल महफिल से बाहर निकलकर जनता के जागृति का एक माध्यम बन गई है। वह जनता की समस्याओं को वाणी देकर समाधान ढूढने का प्रयास कर रही है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के पूर्व हिंदी ग़ज़ल स्फुट रुप में मिलती है। हिंदी के पहले ग़ज़लकार के रुप में अमीर खुसरो हमारे सामने आते हैं। उसके उपरांत हिंदी ग़ज़ल ने अनेक उतार–चढाव पार करके आज वह आम आदमी की आवाज बन गई है। हिंदी साहित्य में ग़ज़ल के विकास देखने के लिए और अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नलिखित कालक्रम में विभक्त किया गया है –

1. भारतेंदु पूर्व युग
2. भारतेंदु युग
3. द्विवेदी युग
4. छायावादी युग
5. प्रगतिवादी युग

6. प्रयोगवादी युग

7. साठोत्तरी युग

4.1.6.1. भारतेंदु पूर्व युग –

हिंदी ग़ज़ल की परंपरा की शुरुआत करने का कार्य अमीर खुसरों द्वारा हुआ है। खुसरों ने उर्दू–फारसी मिश्रित हिंदी में ग़ज़ल की शुरुआत की है। हिंदी के प्रति अगाध आस्था रखते थे। उन्होंने आगे के ग़ज़लकारों को दिशा देने काम किया है। उनके द्वारा लिखित हिंदी की ग़ज़ल निम्नलिखित है–

"जब यार देखा नैन भर दिल की गई चिंता उतर
ऐसा नहीं कोई अजब राखे, उसे समझाय कर
जब आँख से ओझल भया तडपन लगा मेरा जिया
हक्का इलाहि क्या किया, आँसू चले भर लाय कर
तू तो हमारा यार है, तुझ पर हमारा प्यार है,
तुझ दोस्ती बिसियार है, एक शब मिलों तु आय कर
जाना तलब तेरी करु, दीगर तलब किसकी करुँ
तेरी जो चिंता दिल धरुँ, एक दिन मिलों तु आय कर
मेरे जो मन तु ने लिया, तु उठा गम को दिया
तु ने मुझे ऐसा किया, जैसा पतंगा आग पर
खुसरों कहै बातों गजब, दिल में न लावे कुछ अजब
कुदरत खुदा की है, जब जिव दिया गुल लाय कर।"[51]

अमीर खुसरों के उपरांत ग़ज़ल की परंपरा को आगे बढाने का प्रयास **कबीर** ने किया है। उन्होंने अपनी ग़ज़लों में जन–सामान्य की बोलचाल की भाषा को अपनाकर अनेक विषयों को वाणी दी है। उसमें गुरु भक्ति को महत्त्व, अलौकिक भक्ति, अद्‌वैतवाद, अहम का त्याग, पाखंडता का विरोध आदि गजलों के विषय हैं। उनके ग़ज़ल का एक उदाहरण दृष्टव्य है –

"हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या?
रहे आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या?
जो बिछुडे हैं पियारे से, भटकते दर–ब–दर फिरते

हमारा यार है हममें, हमन को इंतजारी क्या?

न पल बिछुडे पिया हमसे न हम बिछुडे पियारे से,

उन्हों से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या?

कबीरा इश्क का मारा, हुई को दूर कर दिलसे,

जो चलना राह नाजूक है, हमन सिर बोझ भारी क्या?"[52]

कबीर के समकालीन **प्यारेलाल शोकी** थे। उन्होंने हिंदी ग़ज़ल को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। उन्होंने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों की कठोर आलोचना की है। उनकी ग़ज़ल का उदाहरण दृष्टिगोचर है –

"जिन प्रेम रस चाखा नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ,

जिन इश्क में सर ना दिया सो जग जिया तो क्या हुआ?

ताबीज औ तूमार में सारी उमर जाया किसी,

सीखे मगर हीले घने मुल्ला हुआ तो क्या हुआ ?

जोगी न संगम से बडा रंग लाल कपडे पहने के,

वाकिफ नहीं इस हाल से कपडा रंगा तो क्या हुआ ?

जिउ में नहीं पी का दरद बैठा मशायख होयकर,

मन की रहट फिरता नहीं सुमिरन किया तो क्या हुआ ?

जब इश्क के दरियाव में होता नहीं गरकाब ते,

गंगा, बनारस द्वारका पनघट फिरा तो क्या हुआ ?

मारम जगत का छोडकर दिल तन से तो खिलवत पकड़

शोकी पियारेलाल बिन सबसे मिला तो क्या हुआ ?"[53]

रीतिकाल में हिंदी ग़ज़ल को आगे बढाने का काम भारतेंदु के पिताजी गिरधरदास ने किया है। उनके ग़ज़ल का एक उदाहरण दृष्टव्य है –

"हम भी उस बेपीर के आशिक हैं कहलाने लगे

आह हम मजनूँ–खुमारी में गिने जाने लगे।"[54]

अंतः स्पष्ट है कि हिंदी ग़ज़ल का बीजारोपण आदिकाल में हो गया। हिंदी के प्रथम ग़ज़लकार अमीर खुसरों है। उसके उपरांत कबीर, प्यारेलाल शोकी, गिरधरदास आदि ने हिंदी ग़ज़ल को आगे बढाया है। उन्होंने अलौकिक प्रेम पाखंडता का विरोध, अहम का त्याग, गुरुमहिमा आदि को विषय बनाकर गजल का सृजन किया है।

4.1.6.2. भारतेंदु युग –

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अनेक विधाओं में साहित्य का सृजन किया है। उन्होंने रसा इस उपनाम से ग़ज़लें लिखी हैं। उनकी ग़ज़लों में दार्शनिकता, व्यंग्यात्मकता के साथ–साथ प्रेम परक और सामाजिक यथार्थपरक विषय नजर आते हैं। उनके ग़ज़ल में दिल को चीरकर रख देने की ताकत थी। उनकी ग़ज़ल का एक उदाहरण दृष्टव्य है –

"हिला देंगे अभी ए संगेदिल तेरे कलेजे को,
हमारी आतिशबाणी से पत्थर भी पिघलते है।"[55]

भारतेंदु युग के प्रतिनिधि रचनाकार पं. बदरी नारायण चौधरी, पं. प्रताप नारायण मिश्र, लाला भगवानदीन, माधव शुक्ल और गयाप्रसाद शुक्ल आदि कवियों ने भी ग़ज़लों का सृजन किया है। बदरीनारायण चौधरी ने अब्र उपनाम से ग़ज़लों का सृजन किया है। उनके ग़ज़लों में अलौकिक प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति पाई जाती है। उन्होंने अधिकतर शृंगारपरक और प्रेमपरक ग़ज़लों का सृजन किया है। उनके ग़ज़ल को एक उदाहरण परिलक्षित है –

"दिल को तो लूट लिया करते हैं,
मुझको बेचैन किया करते है।
क्या तरीका यह निकाला है नया,
जान दे दे के लिया करते है।"[56]

प्रतापनारायण मिश्र ने अनेक विधाओं में साहित्य लिखा है। उन्होंने ग़ज़ल साहित्य में भी योगदान दिया है। उन्होंने सामाजिक व्यंग्य को अपना विषय बनाया है। साथ ही अलौकिक प्रेम भक्ति को भी अपने ग़ज़ल का विषय बनाया है। उनकी भक्ति–भावना पर लिखी एक ग़ज़ल प्रस्तुत है –

"क्यों दीनानाथ मुझ पे तेरी दया नहीं,

आश्रित तेरा नहीं हूँ कि तेरी प्रजा नहीं।

करुणा करोंगे क्या मेंरे आँसू ही देखकर

जो का भी मेरे दुख तो तुझसे छिपा नहीं।

तु शरण न दोगे तो मैं जाऊँगा हाँ,

अच्छा हूँ या बुरा हूँ किसी और का नहीं।"[57]

अतः स्पष्ट है कि भारतेंदु तथा तत्कालीन ग़ज़लकारों ने अनेक विषयों को लेकर ग़ज़ल साहित्य के माध्यम से वाणी देने का प्रयास किया है । धीरे-धीरे ग़ज़ल साहित्य सशक्त बनता जा रहा है ।

4.1.6.3. द्विवेदी युग –

भारतेंदु युग के उपरांत हिंदी ग़ज़ल की विकास-यात्रा चलती रही। द्विवेदी युग में अयाोध्यासिंह उपाध्याय, नाथूराम शर्मा, लाला भगवानदीन, मैथिलीशरण गुप्त, नारायणप्रसाद, गयाप्रसाद शुक्ल, जगदंबाप्रसाद गुप्त, रामप्रसाद बिस्मिल, मुसाफिर कुँवर, सुखलाल आदि प्रमुख ग़ज़लकार है। अयोध्यासिंह उपाध्याय ने यथार्थपरक और व्यंग्यपरक ग़ज़लों को प्रधानता दी है। साथ ही ईश्वरीय प्रेम पर अपनी लेखनी चलाई है। **हरिऔंध** के ग़ज़ल का एक उदाहरण प्रस्तुत है –

"कौन है, है जिसे न प्यार राम,

राम के हम है, है हमारा राम।

तब वही पर खडा न मिला किसे

जब जहाँ पर गया पुकारा राम।"[58]

द्विवेदी युग के ग़ज़लकारों ने अनेक विषयों को लेकर ग़ज़लों का सृजन किया है । इन ग़ज़लकारों ने लौकिक प्रेम के साथ-साथ अलौकिक प्रेम को प्रधानता दी है। उन्होंने अंग्रेजों पर कठोर प्रहार करते हुए प्रेम से राष्ट्र को जगाने का प्रयास किया है। साथ ही आर्य समाज से प्रभावित होकर अनेक ग़ज़लकारों ने जागतिक यथार्थ को सामने लाया है। आर्य समाज से प्रेरित होकर लिखी मुसाफिर कुँवर सुखलाल की ग़ज़ल प्रस्तुत है –

“देखो तो स्वामी कैसा उपकार कर गया है,

भारत निवासियों को बेदाग कर गया है।

बेहोश, बेखबर हम सोए हुए पडे थे,

सबको जगा–जगाकर होशियार कर गया है।”[59]

4.1.6.4. छायावादी युग –

छायावादी कवियों ने अन्य विधाओं के साथ ग़ज़ल में योगदान दिया है। उसमें जयशंकर प्रसाद निराला, माखनलाल चतुर्वेदी आदि का नाम प्रधानता से लिया जाता है। उन्होंने सामाजिक जीवन की यथार्थता को अपने ग़ज़ल का विषय बनाया है। उसमें गरीबी, भूखमरी, शोषण आदि को विषय बनाकर ग़ज़ल का सृजन किया है। इसके अतिरिक्त लौकिक–अलौकिक प्रेम, राष्ट्रीय भावना, प्रकृति, प्रेम आदि को विषय बनाकर ग़ज़ल का निर्माण किया है। प्रसाद ने अपने ग़ज़लों में सौंदर्य और प्रेम भावना को अभिव्यक्त किया है। उनके ग़ज़लों में से प्रेम निरुपण का एक उदाहरण प्रस्तुत है,

“सरासर भूल करते हैं, उन्हें जो प्यार करते हैं।

बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं।।

उन्हें अवकाश ही इतना कहाँ है मुझसे मिलने का

किसी से पूछे लेते हैं वो नीचे देखते हरदम,

प्रफुल्लित वृक्ष की यह भूमि कुसुमागार करते है।

न इतना फूलिये तरुवर सुफल कोरी कली लेकर

बिना मकरंद के मधुकर नहीं गुंजार करते हैं।

प्रसाद उनको न भूलो तु तुम्हारा जो कि प्रेमी हो।

न सज्जन छोडते उसको जिसे स्वीकार करते हैं।”[60]

छायावादी साहित्यकार निराला का हिंदी को उन्नत बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने सामाजिक यथार्थ के साथ–साथ अध्यात्मिकता राष्ट्रीय–भावना आदि को विषय बनाकर गजलों का सृजन किया है। उनकी आर्थिक और सामाजिक विषमता की पैरवी करने वाली ग़ज़ल प्रस्तुत है,

"भेद कुल खुल जाय वह सूरत हमारे दिल में है।
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है।।
हार होंगे ह्रदय के खुलकर तभी गाने नये
हाथ में आ जायेगा, वह राज जो महफिल में है।
तर्स है यह देर से आँख गडी शृंगार में।
और दिखलायी पडेगी जो गुराई तिल में है।।
पेड टूटेंगे, हिलेंगे, जोर की आँधी चली,
हाथ मत डालों, हटाओं पैर, बिच्छु बिल में है।।
ताक पर हैं नमक–मिया, लोग बिगडे या बनें।
सीख क्या होगी पराई, जब पिसाई सिलमें हैं।।"[61]

इस प्रकार छायावादी कवियों ने ग़ज़ल के विकास में योगदान दिया है।

4.1.6.5. प्रगतिवादी युग –

छायावाद के उपरांत प्रगतिवादी युग का आरंभ हो जाता है। प्रगतिवादी ग़ज़लकार के रुप में रामेश्वर शुक्ल, बलबीर सिंह, बालस्वरुप राही, नरेंद्र शर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी, शिवपाल सिंह, जानकीवल्लभ शास्त्री, शंभुनाथ घोष, भगवतीचरण वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर आदि का नाम सामने आता है। उन्होंने अपने ग़ज़लों के माध्यम से शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त करके शोषक वर्ग के प्रति घृणा प्रकट की है। उन्होंने राष्ट्रप्रेम, जीवनमूल्य, सामाजिक चेतना आदि को विषय बनाया है। साथ ही प्रेम और शृंगार के साथ–साथ संगीतात्मकता पर बल दिया है। रामेश्वर शुक्ल अंचल ने अपने ग़ज़लों में स्त्री–पुरुष के संयोग और वियोग का वर्णन किया है। उन्होंने सामाजिक वास्तविकता को वाणी देने को काम किया है। अंचल ने तत्कालीन परिस्थिति को चित्रित करते हुए कहा है,

"आज उन्हीं के जलवे सायों को जीवित करते है,
स्याह अँधेरों की साजिश में दिन का जादू भरते हैं।
नाम इसी का है खुशहाली तो फिर भूख–गरीबी क्या
होकर भी आजाद हिरासात की हम ख्वाहिश करते हैं।"[62]

इस काल के प्रमुख ग़ज़लकार के रुप में बलबीर सिंह रंग का नाम लिया जाता है। उन्होंने तत्कालीन काल के सामाजिक यथार्थ को रेखांकित किया है। साथ ही शृंगार, सौंदर्य और प्रेम को अपने ग़ज़लों का विषय बनाया है। तत्कालीन वास्तविकता की पैरवी करने वाली उनकी एक ग़ज़ल प्रस्तुत है,

"प्यारी चाँदनी है तु कहाँ हो।

तुम्हारी यामिनी है तु कहाँ हो।।

समस्याएँ उलझती जा रही हैं।

नियति उन्मादिनी है तु कहाँ हो।।

अमृत के आचमन का अर्थ हो क्या।

तृष्णा बैसगिनी है तु कहाँ हो।।

तिरोहित हो रहा गतिरोध का तम।

प्रगति अनुगामिनी है तु कहा हो।।"[63]

प्रगतिवाद के एक ग़ज़लकार के रुप में बालस्वरुप राही भी प्रसिद्ध है। उनके एक ग़ज़ल का उदाहरण प्रस्तुत है,

"हम पर दुःख का पर्वत टूटा, तब हमने दो–चार कहे,

उस पे भला क्या बीती होंगी, जिसने शेर हजार कहे।"[64]

इस प्रकार प्रगतिवादी कवियों ने ग़ज़ल में योगदान दिया है।

4.1.6.6. प्रयोगवादी युग –

हिंदी ग़ज़ल के विकास यात्रा में प्रयोगवादी कवियों ने योगदान दिया है। प्रयोगवादी कवियों में शमशेर बहादूर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, त्रिलोचन शास्त्री आदि प्रमुख है। उन्होंने हर क्षेत्र में नवीनता का प्रयोग किया है। उनके ग़ज़लों में अतियथार्थ, बौद्धिकता, समष्टि – व्यष्टि का वास्तविक जीवन आदि को प्रधानता दी गई है। शमशेर बहादुर सिंह ने सौंदर्य और प्रेम को ग़ज़लों का विषय बनाया है। उनके ग़ज़लों में विरह वेदना स्फुट पडी है। इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"वही उम्र का एक पल कोई लाए,

तडपती हुई–सी ग़ज़ल कोई लाए।

हकीकत को लाए तखैमुल से बाहर,

मेरी मुश्कीलों का जो हल कोई लाएँ।

नजर तेरी दस्तुरे–फिरदौ लाई,

मेरी जिंदगी में अमल कोई लाए।"[65]

प्रयोगवादी साहित्यकार त्रिलोचन शास्त्री ने हिंदी ग़ज़लों का सृजन किया है। उनके ग़ज़लों का प्रमुख विषय प्रेम–भावना है। इसके साथ ही सामाजिक जीवन को लेकर भी ग़ज़लों का निर्माण किया है। उन्होंने तत्कालीन समाज की वास्तविकता को उजागर करने का प्रयास किया है। उसमें गरीबी, अनैतिकता, असभ्यता, घुटन, कुंठा, बेरोजगारी आदि प्रमुख विषय है। जीवन की विसंगति को लेकर उन्होंने ग़ज़लों का सृजन किया है। उनके एक ग़ज़ल का उदाहरण दृष्टव्य है,

"तडपता हूँ मगर मैं नाम तेरा ले कहाँ पाया,

कभी तेरे किनारे नाव अपनी खे कहाँ पाया।

जिन्हें अपना समझता था, समझ कर प्रीति करता था।

उन्हें प्रतिबिंब जैसे पंथ पर चलते कहाँ पाया।।"[66]

इसप्रकार प्रयोगवादी ग़ज़लकारों ने अपना योगदान दिया है।

4.1.6.7. साठोत्तरी युग –

हिंदी ग़ज़ल की विकास–यात्रा को साठोत्तरी ग़ज़लकारों ने आगे बढाया है। उनके ग़ज़ल में बडी गंभीरता गहनता और व्यापकता नजर आती है। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने वर्तमान काल के अनेक विषयों को वाणी देने का काम किया है। उसमें आतंकवाद, सांप्रदायिकता, विघटीत, नैतिक मूल्य, अलगाववाद, राजनीतिक विद्रूपता, भ्रष्टाचार, संवेदनहीनता, अमानवता, धार्मिक कट्टरता, सर्वहारा वर्ग आदि प्रमुख विषय है। इन ग़ज़लकारों में दुष्यंतकुमार, कुँअर बेचैन, चंद्रसेन विराट, गोपालदास नीरज आदि प्रमुख हैं। हिंदी ग़ज़ल को लोकप्रिय बनाने का श्रेय दुष्यंतकुमार को जाता है। उन्होंने अपने ग़ज़ल के माध्यम से समाज में क्रांति लाने का काम किया है। उन्होंने अपने अनुभूति और समाज की वास्तविकता को देखकर ग़ज़लों का निर्माण

किया है। साथ ही व्यष्टि और समष्टि के विसंगतियों को वाणी देकर सामाजिक चेतना निर्माण करने का कार्य किया है। उनके ग़ज़लों में सामाजिक क्रांति की पहल दिखाई देती है। उनकी एक ग़ज़ल प्रस्तुत है,

"हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
हर सडक पर, हर गली में, हर नगर हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनीं चाहिए।
सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।"[67]

साठोत्तरी ग़ज़लकारों में डॉ. कुँअर बेचैन का नाम प्रधानता से लिया जाता है। उन्होंने सामाजिक विषमता, अकेलापन, कुंठा, पीडा को वाणी दी है। इन्होंने शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त करके शोषण वर्ग के प्रति घृणा व्यक्त की है। सर्वहारा वर्ग की वास्तविकता को अभिव्यक्त करने का सुंदर प्रयास करते हुए उनके विचार दृष्टव्य होते है –

"कैसे बताएँ हम तुम्हें, क्या–क्या है रामफल,
आँसू के एक गाँव का, मुखिया है रामफल।
मारा है जिसको रोज महाजन के ब्याज ने,
बेबस–से एक गरीब का रुपिया है रामफल।
जिसको दबा के सो रहे हैं सर बडे–बडे
महलों के खानदान का तकिया है रामफल।"[68]

इन कडी के एक प्रमुख ग़ज़लकार के रुप में चंद्रसेन विराट प्रसिद्ध है। उन्होंने हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा को परिपक्व के रुप में आगे बढाया। इसलिए उन्हें मील के पत्थर के रुप में संम्बोधा जाता है। उन्होंने वर्तमान परिवेश को लेकर ग़ज़ल लिखी है। उसमें मानवीय और सामाजिक समस्या प्रमुख है। उनके ग़ज़ल का एक उदाहरण दृष्टव्य है,

"चाँद को देखा तो रोटी की याद जाग उठी,

पेट की भूख से राहत मिली तो प्यार करुँ।"[69]

इस काल के प्रमुख लोकप्रिय ग़ज़लकार गोपालदास नीरज है। उन्होंने अपने ग़ज़लों का प्रमुख विषय सांप्रदायिकता, आतंकवाद, अकेलापन, अलगाववाद, सामाजिक विषमता, राजनीतिक पतन,अनैतिकता, अमानवीयता, कुंठा, घुटन, पीडा आदि को बनाया हैं। उन्होंने अपने ग़ज़लों में व्यष्टि और समष्टि की समस्याओं को वाणी दीं है। उन्होंने अपने ग़ज़लों के माध्यम गलत धारणाओं को खारिज करके समाज को दिशा देने का काम किया है। उनकी सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी एक ग़ज़ल प्रस्तुत हैं,

"अब तो इक ऐसा वरक मेरा–मेरा ईमान हो,
इक तरफ गीता हो जिसमें इक तरफ कुरआन हो।
काश ऐंसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में,
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमजान हों।
मजहबी झगडे ये अपने–आप सब मिट जाएँगे,
और कुछ होकर नगर, इंसान बस इंसान हो।"[70]

अतः स्पष्ट है कि साठोत्तरी ग़ज़लकारों ने वर्तमान परिवेश को लेकर ग़ज़लों का सृजन किया है। उन्होंने राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को सामने लाया है। साथ व्यष्टि और समष्टि को समस्याओं को सामने लाया है। उसमें अमानवीयता, अनैतिकता, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, अकेलापन, सामाजिक विषमता आदि प्रमुख विषय है। उन्होंने ग़ज़ल धारणाओं पर चोट कर के समाज को दिशा देने का कार्य किया है।

निष्कर्ष –

. ग़ज़ल का मूल हमें अरबी में दिखाई देता है। ग़ज़ल के अनेक अर्थ बताए गए हैं। जिसका साधारणतः अर्थ, औरत सें या अपने महबूब से बातें करना है। ग़ज़ल की परिभाषा को अनेक विद्वानों ने अलग–अलग रूपों से रूपायित करने का प्रयास किया है। जिसका शाब्दिक अर्थ बार–बार बातचीत करना है। जिसमें प्रेमाभिव्यक्ति और समर्पण दिखाई देता है। इसमें गागर में सागर भरने की क्षमता होती है। हमें ग़ज़ल के शेर, काफिया, रदीफ, मतला, मकता आदि अंग दिखाई देते हैं। शेर में दो पंक्तियाँ होती है। इसमें अर्थपूर्णता एवं स्वयंपूर्णता होती है। काफिया का अर्थ है, शेर के अंत में आनेवाला शब्द। काफिया से ग़ज़लकार का भाषा –

कौशल्य, विचार, अनुभूति और शिल्पगत ज्ञान का पता चलता है। रदीफ का साधारणतः अर्थ है, पीछे चलने वाली। ग़ज़ल में प्रत्येक शेर में काफिये के पीछे रदीफ आ जाता है। इसके हमें स्वतंत्र रदीफ और मिश्रित रदीफ यह प्रकार दिखाई देते हैं। मतला का अर्थ है उदय। ग़ज़ल का सबसे प्रथम शेर को मतला कहते हैं। जिसमें दो पंक्तियाँ में काफिया और रदीफ आता है । मकता का अर्थ है, कटा हुआ। इससे संकेत दिया जाता है कि ग़ज़ल समाप्त हो रही हैं। इस प्रकार ग़ज़ल के अंगो द्वारा ही ग़ज़ल की निर्मिती होती हैं।

अरबी भाषा से उपजी ग़ज़ल फारसी, तुर्की, हिंदी से होते–होते पुरे विश्व में फैल गई हैं। अरबी लोंगो ने विस्तारवादी धोरण अपनाने पर सांस्कृतिक आयातित के रुप में अरबी से फारसी में आ गई। फारसी साहित्यकारों ने उसका स्वागत किया और वह ग़ज़ल से प्रभावित भी हो गए। इस.गज़ल परंपरा के महान उन्नायक सादी शिराजी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके अतिरिक्त वाहिदी, रुमी, दकीकी, कमाल, निजामी, शेख सादी आदि शायरों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी कलम चलाई है। प्रारंभ में उनका दृष्टिकोण प्रेम और सौंदर्य तक सीमित था, पर आगे चलकर लौकिक–अलौकिक प्रेम के साथ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर ग़ज़ल का निर्माण किया है। .

गज़ल अरब से फारसी और फारसी होकर उर्दू और हिंदी में प्रवेश कर चुकी है। ग़ज़ल को जनमानस से जोडने का काम उर्दू ने किया है। आज ग़ज़ल के बगैर उर्दू और उर्दू के बगैर ग़ज़ल की कल्पना नहीं की जा सकती है। ग़ज़ल के विकास में उर्दू का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उर्दू ग़ज़ल के प्रथम ग़ज़लकार वली माने जाते हैं। उनके अतिरिक्त गालिब का नाम प्रधानता से लिया जाता है। इन ग़ज़लकारों ने प्रारंभ में शृंगारिक भावनाओं को व्यक्त करने वाली ग़ज़ले लिखी हैं। लेकिन वर्तमानकाल में अनेक पहुलओं को लेकर ग़ज़ले लिखी जा रही है। आज उर्दू ग़ज़ल विभिन्न माहौल से गुजरती हुई निरंतर विकास की राह पर चल रही है। भारत में अनेक शतकों से हिंदी ग़ज़ल की परंपरा दिखाई देती है। हिंदी ग़ज़ल के प्रथम ग़ज़लकार अमीर खुसरों माने जाते हैं। उन्होंने हिंदी ग़ज़ल को दिशा देकर आगे बढाने का काम किया है। उनके उपरांत कबीर, प्यारेलाल शौंकी, गिरधरदास ने हिंदी ग़ज़ल के विकास–यात्रा में योगदान दिया है। उनके ग़ज़ल का साधारणतः विषय अलौकिक प्रेम , गुरुमहिमा, पाखंडता का विरोध, अहम् का त्याग आदि माना जाता है।

भारतेंदु युग में भारतेंदु के साथ–साथ पं. बदरीनारायण चौधरी, प्रतापनारायण मिश्र, लाला भगवानदीन, माधव शुक्ल, गयाप्रसाद शुक्ल आदि ने ग़ज़ल के विकास में योगदान दिया है। उन्होंने दार्शनिक, व्यंग्यात्मक, प्रेमपरक एवं सामाजिक यथार्थ को लेकर साहित्य का सृजन किया है। द्विवेदी युग में अयोध्यासिंह उपाध्याय, नाथूराम शर्मा, लाला भगवानदीन, मैथिलीशरण गुप्त, नारायण प्रसाद, गयाप्रसाद शुक्ल, जगदंबाप्रसाद मिश्र, आदि ने ग़ज़लों का निर्माण किया है। उन्होंने यथार्थ परक और व्यंग्य परक ग़ज़लों की निर्मिती की है। साथ ही ईश्वरीय प्रेम को भी विषय बनाया है।

छायावादी युग में ग़ज़ल का विकास हुआ है । उसमें जयशंकर प्रसाद, निराला, माखनलाल चतुर्वेदी आदि का नाम प्रधानता से लिया जाता है। उन्होंने लौकिक–अलौकिक प्रेम, राष्ट्रीय भावना, प्रकृति–चित्रण, सौंदर्य और प्रेम आदि को विषय बनाकर ग़ज़ल का सृजन किया है। प्रगतिवादी कवियों ने भी ग़ज़ल के विकास में योगदान दिया है। उसमें रामेश्वर शुक्ल, बलबीर सिंह, बालस्वरुप राही, नरेंद्र शर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी, शिवपाल सिंह, जानकीवल्लभ शास्त्री, शंभुनाथ घोष, भगवतीचरण वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर आदि का नाम सामने आता है। उन्होंने शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाकर शोषक वर्ग के प्रति घृणा व्यक्त की है। उन्होंने जीवनमूल्य, देशप्रेम , सामाजिक चेतना, क्रांति आदि को विषय बनाकर ग़ज़ल का सृजन किया है। प्रयोगवादी युग में शमशेर बहादुर सिंह गिरीजाकुमार माथुर त्रिलोचन शास्त्री आदि ने ग़ज़ल के विकास में योगदान दिया है। उन्होंने व्यष्टि, समष्टि, बौद्धिकता, कुंठा, घुटन, अकेलेपन, गरीबी, अनैतिकता, असभ्यता, बेरोजगारी आदि को लेकर ग़ज़लों का सृजन किया है। साठोत्तरी ग़ज़लकारों ने बडी गंभीरता, गहनता और व्यापकता से ग़ज़लों का सृजन किया है। इसमें दृष्यंतकुमार, डॉ. कुँअर बेचैन, चंद्रसेन विराट, गोपालदास नीरज आदि ने हिंदी ग़ज़ल को परिपक्व ढंग से अनेक विषयों को लेकर अभिव्यक्त किया है। उन्होंने आतंकवाद, सांप्रदायिकता, विघटीत नैतिक मूल्य, अलगाववाद, राजनीतिक विद्रूपता, भ्रष्टाचार, संवेदनहीनता, अमानवीयता, धार्मिक कट्ट्रता आदि विषयों को लेकर ग़ज़ल साहित्य को समृद्ध बनाने का प्रयास किया है । अतः स्पष्ट है कि ग़ज़ल की विकास–यात्रा सफल है और उसका भविष्य भी यशदायी, आनंदप्रद और समाज के प्रति योगदानप्रद होगा इसमें संदेह नहीं है।

4.2 डॉ. कुँअर बेचैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तावना —

व्यक्तित्व के स्तर पर यह परिलक्षित होता है कि डॉ. कुँअर बेचैन जी का व्यक्तित्त्व समकालिन ग़ज़लकारों से विलग और विलक्षण छवी लेकर स्थापित है । डॉ.कुँअर बेचैन जी व्यक्तिमत्त्व के अनेक पहलू नजर आते है जैसे कि उपन्यासकार, कहानीकार के साथ–साथ गीतकार के दर्शन होते है । पद्मश्री गोपालदास नीरज ने डॉ. कुँअर बेचैन जी को आम आदमी की जुबान का कवि कहा है । शिशुपाल सिंह जी ने कुँअर जी के साहित्यिक योगदान का उल्लेख किया है कि आपने गीत नवगीत, ग़ज़ल, दोहा और अन्य काव्य विधाओं मे सक्रिय लेखन के द्वारा अपनी विशिष्ट पहचान निर्माण करने सफल प्रयास किया है । इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन जी के विविध पहलू से युक्त व्यक्तिमत्त्व ने पाठक को अनुप्रणित और आंदोलित कर के प्रभावित किया है ।

4.2.1 डॉ. कुँअर बेचैन जी का जीवन परिचय –

किसी भी साहित्यकार का साहित्य पढने से पहले उसके व्यक्तित्व को जान लेना बहुत जरुरी हैं। क्योंकि उनके साहित्य पर व्यक्तित्व की छवी होती हैं। उसी तरह कुँअर बेचैन का व्यक्तित्व भी एक अलग आयाम को उजागर करता हैं। आपने अंतरिक और बाहय संघर्षों से जीवन को विविध रचनाओं से प्रकट किया है। आपके साहित्य में मनुष्य के जीवन के साथ मन को भी सूक्ष्मता से उजागर किया हैं। आपने गंभीर स्वभाव को कविताओं के माध्यम से स्पष्ट किया है। प्रस्तुत पंक्तियों से आपके स्वभाव की गूढता को कुछ हद तक समझ सकते हैं –

"कोई उस पेड़ से सीखे, मुसीबत मे खड़े रहना।
कि जिसने बाढ के पानी में भी सीखा अडे रहना।।"[71]

इस तरह से अपने जीवन में आने वाली मुसिबतों का सामना पेड़ की तरह किया हैं। जो नदी में आई बाढ़ से भी टकराने से तैयार है। ऐसे प्रसंगों से आपने जीवन में सकारात्मक दृष्टि अपने व्यक्तित्व का विकास किया है। जीवन की अनेक समस्याओं का सामना करके भी कुँअर बेचैन का व्यक्तित्व प्रखर और प्रभावात्मक रुप से उभरा हैं। इसी तरह से आपके साहित्य निर्माण में सुखों के साथ दुःखों का भी सहभाग सक्रिय रहा हैं।

4.2.1.1 जन्म –

डॉ. कुँअर बेचैन का जन्म 1 जुलाई 1942 में गंजो की उमरी नामक गाँव में हुआ । आपके माताजी का नाम गंगादेवी और पिताजी का नाम श्री नारायणदास सक्सेना था। कुँअर बेचैन के गाँव का नाम 'गंजो की उमरी' पडने के पिछे एक इतिहास है। यह मुरादाबाद जिले में उत्तरप्रदेश में हैं। इस गाँव की गंजो नाम की महिला सती गई थी। इसीलिए गंजों की उमरी के नाम से इस गाँव को जाना जाता है। कुँअर जी के जन्म से पहले उनके माता–पिता के बच्चे नहीं बचते थे किंतु कुँअर के बाद वह जिवित रहे हैं। इसलिए उनके पिताजी कुँअर को राजकुँअर कहते थे। इस बारे में कुँअर नारायण सक्सेना लिखते है– "जब यह नाम कुछ ठीक नहीं लगा, तब आपने अपने नाम के आगे बेचैन रख लिया तभी से वे कुँअर बेचैन हो गये।"[72] अर्थात कुँअर बेचैन के जन्म के बाद उनके माता–पिता के सपने साकार होने लगे और घर के लोगों को खुशी मिली थी।

4.2.1.2 बचपन –

डॉ. कुँअर बेचैन का बचपन आर्थिक कठिनाईयों में बीता था। आपके जन्म के कुछ दिनों के बाद ही एक दुर्घटना में पिताजी का स्वर्गवास हो गया। लेकिन परंपरा से आपका परिवार बहुत अमीर हुआ करता था। इस बारें मे मौसी कहती है– "डॉ. कुँअर बेचैन का जीवन अत्यंत कठिनाइयों में बीता यह सारी बाते डॉ.कुँअर बेचैन को उनकी सबसे छोटी मौसी ने बहुत पहले बतलाया था, कि वे अच्छे खासे संपन्न परिवार से थे । इनके पिता गाँव के पटवारी थे, श्री नारायणदास सक्सेना जी का यह पुश्तैनी व्यवसाय था और संपन्नता के कारणों से ही उनके रिश्तेदारों और पट्टीदारों से उनके स्वभाव से मेल नहीं खाता था । आपस में उनकी बनती नहीं थी । वे एक दुसरे से ईर्ष्याभाव रखते थे । इसी प्रकार की विषम परिस्थिति में इनका जन्म हुआ था ।"[73] इस तरह से कुँअर बेचैन बहुत संपन्न परिवार के थे। पिता की मृत्यु हुई थी तब कुँअर बेचैन तीन माह के थे, तभी एक दिन उनके घर में डाकू आ गए और कुँअर बेचैन के गले पर चाकू रखकर उन्हें मार डालने की धमकी देकर घर की वस्तुएँ चोरी करके चले गए थे। पिताजी के मृत्यु के कुछ ही दिन नहीं बीते की उनके घर में ड़ाका पडा उन डकैतों ने बालक कुँअर की गर्दन पर चाकू रखकर उन्हें मार ड़ालने की धमकी दी ।

कुँअर को उनकी माताजी के हाँथ सौंप दिया था । परंतु जमीन में गाडे हुए धन को लूटकर ले गए। वह कुल धन बाईस कलश चाँदी का रुपया और एक बडे कलश में सोने–चाँदी के गहने रखे हुए थे। ये सारी किंमती वस्तुएँ, गहने और सोने की गिन्नियाँ उनकी माँ ने बालक कुँअर को बचाने के लिए डकैतों को दे दी। इस तरह से कई दिनों तक इस हादसे को भूल नहीं पाया था और डकैतों ने दी हुई धमकी के साथ आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपना गाँव छोड़कर कुँअर की माँ अपने मायके बच्चे के साथ आकर रहने लगी। उस समय बालक कुँअर की आयु मात्र तीन माह की थी। कुँअर बेचैन के जन्म के बाद उनके घर में अनेक अनहोनी, अजीब घटनाएँ घटित हो गई। ऐसी ही और घटना से कुँअर बेचैन गुजरे हैं। डॉ. रघुनाथ कश्यप कहते हैं– ‘‘जब कुँअर दो वर्ष के थे, तभी अचानक एक व्यक्ति उन्हें उठाकर ले जाने लगा। लोग उसे पकड़ने के लिए लाठी लेकर दौडे तो उसने बच्चे को रेल्वे लाईन पर पटक कर उन्हें जान से मार देने की धमकी दी। यह उस समय की घटना है, जब उनके बहन की बिदाई हो रही थी।’’[74] अर्थात पिता की छत्रछाया से वंचित होने के बाद बालक कुँअर पर अनेक मुसिबतों का पहाड़ टूटने लगे थे। कुँअर बेचैन की माँ अपना मकान सिर्फ तीन सौ रुपये में बेचकर मायके आ गई लेकिन अपनी माँ से अनबन होने पर अपने बच्चों को लेकर ‘अमरोहा’ स्टेशन पर आ गई, उन्हें इस हालत में कुँअर के मौसा ने देखा और उन्हें लेकर मुरादाबाद आ गए । इस तरह से उनका बचपन बीता हुआ दिखाई देता है। कुँअर कुछ सात साल के थे, तब अचानक अती तिव्र ज्वर से उन्हें माताजी का भी स्वर्ग वास हो गया । बाद में बहन और बहनोई के साथ रहने लगे।

4.2.1.3 परिवार –

डॉ. कुँअर बेचैन के परिवार में सभी पुरुष पटवारी का काम किया करते थे। इसलिए लोग आपकी गली को पटवारी की गली कहते थे। वह एक संपन्न परिवार में जन्मे थे। कुँअर के जन्म से पहले उनके परिवार के शाही ठाठ हुआ करते थे। आपके घर में नौकर–चाकर हुआ करते थे। आपके आर्थिक स्थिति के बारें में कहते हुए डॉ. रघुनाथ कश्यप लिखते है– ‘‘पिताजी कहीं भी आते–जाते तो घोडे पर सँवार होकर ही आते जाते थे। उसी प्रकार यदी माताजी को कही आना–जाना होता तो वे पालकी में बैठकर जाती थी।’’[75] संपन्न एवं

खानदानी परिवार के थे। लेकिन उनके घर में सिर्फ चार लोग रहते थे कुँअर के पिताजी नारायणदास सक्सेना, माँ गंगादेवी सक्सेना और उनकी दो बहने आदि। इनके अमीरी और खानदानी शाही ठाठ के वजह उनके ही रिश्तेदार जलने लगे और इसी जलन और विश्वासघात की वजह से कुँअर बेचैन के पिताजी नारायण सक्सेना की मृत्यु हुई। पिताजी के मृत्यु पश्चात उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हुई दिखाई देती है।

4.2.1.4 शिक्षा –

डॉ. कुँअर बेचैन की प्राथमिक शिक्षा चंदौसी नामक गाँव की पाठशाला में हुई। उस समय उनकी आयु ढाई साल की थी। बालक कुँअर बेचैन जब तीसरी में गए तब आपकी माताजी का अल्पावधी बीमारी से स्वर्गवासी हुई । माँ के चले जाने के बाद उनकी बडी बहन से माँ का प्यार मिला लेकिन नियती को यह भी मंजूर नहीं था। कुँअर कुछ बडे होते ही आपकी बडी बहन भी उन्हें छोड़कर हमेशा–हमेशा के लिए दूर हो गई। उस समय आपकी आयु नौ साल की थी। अपनी शिक्षा के बारे में कुँअर बेचैन का मंतव्य है – "डॉ. कुँअर बेचैन की संपूर्ण शिक्षा एम.ए.,एम.कॉम चंदौसी में ही हुई। इन्होंने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से डॉ. जयचंद्र राय के मार्गदर्शन में 'प्रेमचन्दोत्तर कथा साहित्य में व्यंग्य' इस विषय पर पीएच.डी की उपाधि 1975 में प्राप्त की।"[76] प्रतिकुल परिस्थिति में भी अपने अपनी शिक्षा पूरी की । इस तरह एम.कॉम .के बाद एम.ए.(हिंदी) और पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की । अपनी परिस्थिति का बयान एक ग़ज़ल में करते हुए बेचैन लिखते हैं–

"महक कलियों में खुशबू फूल के प्यालों में कितनी है।
कोई समझे कि काँटो की चुभन डालों में कितनी है।।
मेरी मंजिल तो सबने देखली पर यह नहीं देखा।
जलन पाँवो के इन फूटे हुये छालों में कितनी है।।"[77]

इससे प्रतित होता है कि शिक्षा लेते समय आपको अनगिनत यातनाओं से गुजरना पड़ा । अलग– अलग समस्याओं के साथ सामना करते हुए शिक्षा–दीक्षा पुरी की है इसका प्रत्यय हमें यहाँ हो रहा है ।

4.2.1.5 नौकरी –

माँ और बहन की मृत्यु के पश्चात उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी। आपके घर में बडी बहन के पति श्री जंगबहादूर (जीजाजी) और कुँअर बेचैन दोनों ही रहते थे। घर में कोई स्त्री न होने के कारण खाना बनाने की समस्या निर्माण हो गई। आपके जीजाजी को भी खाना पकाना नहीं आता था। कुछ दिनों तक मकान मालकिन रोटियाँ बनाकर देती थी। लेकिन एक दिन वह भी गाँव (मायके) चली गई तो इन दोनों के खाने के लाले पड गए। तब कुँअर ने खुद अपने हाथों से रोटियाँ बनाई। "वे कोशिश करते रोटियाँ बीच में ही टूट जाती। कुँअर टुटे हुए टुकड़ो को ही तवे पर डाल देते थे। और इन टूटे हुए टुकड़ो को ही आग पर सेंक कर बिना किसी सब्जी के ही खाते रहे।"[78] अर्थात आप खुद अपने हाथों से रोटी बनाकर खाते थे। इसके स्वाद के बारें में एक ग़ज़ल में आप लिखते हैं–

"हजारों खुशबुयें दुनियाँ में है, पर इससे कमतर है।

किसी भूखे को जो सिंकती हुई रोटी से आती है।।"[79]

इस तरह से अपने खाना बनाना भी सीख लिया। आपके जीजाजी श्री जंगबहादुर नौकरी करते थे और कुँअर जी पढ़ाई के साथ घर संभालते थे।

एम.कॉम करने पर प्रतिमाह 90 रुपये की ग्रंथालय में नौकरी मिली । बाद में हिंदी में एम.ए. किया और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर 1965 मे एम.एम.एच. महाविद्यालय गाजियाबाद (उ.प्र) में प्रवक्ता के पद पर नियुक्ति हुई । अध्यापन का कार्य करते करते यहाँ पर आपने विभागाध्यक्ष का पद पर कुल पंद्रह साल तक योगदान दिया है ।

4.2.1.6 आर्थिक परिस्थिति –

कुँअर बेचैन के घर की आर्थिक स्थिती उनके जन्म के पूर्व बहुत ही अच्छी थी लेकिन कुँअर के जन्म के बाद तीन माह में ही उनके पिता जी स्वर्गवासी हुए । बाद में उनके घर को डकैतों ने लूटा और फिर उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही बिकट हो गई। बचपन के सात सालों में उन्होंने बहुत कुछ देखा था। माता–पिता के देहांत के बाद वह बहन प्रेमवती और बहनोई जंगबहादूर के साथ रहने लगे थे। आप दिनभर जो भी करते वह बहुत अच्छा करने की कोशिश करते। पढ़ने–लिखने में भी होशियार थे। लोग आपकी मिसाल देकर अपने बच्चों से

कहते देखो, "वह बिना माँ–बाप का बच्चा, रोटी भी बनाता है, चौका–बर्तन भी करता है, खूब खेलता भी है और फिर फर्स्ट आता है........और तुम?"[80] यहाँ परिस्थिति से किस तरह जूझना चाहिए इसका प्रत्यय आता है । बी.कॉम की पढ़ाई करते हुए आपने टयूशन लेकर अपना खर्चा उठाना चाहा और इसके लिए आपको सात घटों में पैदल जाकर टयूशन लेना पढता था। तब जाकर कहीं महिने में 70 रुपये मिलते थे। एम.कॉम. करते समय सोनीपत की एटलस कंपनी में अकाउंट सेक्शन में लिपिक पद पर नियुक्त हो गए । फिर एम.कॉम. की परीक्षा पास करने पर एस.एम. कॉलेज में ही क्लर्क का काम करने लगे । इसी कॉलेज आपने हिंदी में एम.ए. किया। बाद में बिसौली के इण्टर कॉलेज में पढ़ाने लगे। तभी एम.एम.एच. कॉलेज गाजियाबाद के हिंदी–विभाग में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हो गए। वहीं से आपका साहित्यिक विकास भी हुआ। अपनी अतीत की घटनाओं को याद करते हुए कुँअर बेचैन लिखते हैं –

"कभी जब पीछे मुडकर देखता हूँ,
कभी यादों से जुडकर देखता हूँ।
पता क्या हो यहीं नजदीक मंजिल,
जरा सा और उडकर देखता हूँ।
मिला फैलाव तो फँसता गया में,
जरा खुद में सिकुड कर देखता हूँ।
कुँअर मैं शायरी के कागजों पर,
लहू जैसा निचुडकर देखता हूँ।"[81]

इससे विशद होता है कि कभी–कभी व्यक्ति आगे बढने पर भी अतीत के पन्नों को पलटकर देखता है। अपने बिते हुए पलों को याद करके आगे बढने की कोशिश करता हैं। इस तरह से आपकी आर्थिक परिस्थिति परिलक्षित होती है। बाद में अपने फिर से अपनी परिस्थिति को सुधारा हैं।

4.2.1.7 वैवाहिक जीवन –

डॉ. कुँअर का विवाह 1965 में अलीगढ के श्री लक्ष्मण स्वरुप जौहरी की सुपुत्री संतोष कुमारी से हुआ था। विवाह के बाद डॉ. कुँअर बेचैन गाजियाबाद में आकर रहने लगे। आपको दो संतान हुए। आपके बेटे प्रगीत आज चार्टट अकौन्टेट है। बेटी वंदना का विवाह हो चुका है। वदंना के पति दिल्ली में इंजीनिअर है और दिल्ली में स्थित है। वंदना ने एम.ए. हिंदी और ड्रॉईंग पेंण्टीग दोनों किए है। दिल्ली में वह ड्राँईंग पढाती है। डॉ. कुँअर के बेटे ने एम.बी.ए, आई.सी.डब्लू.ए. किया है। डॉ. कुँअर अपनी पत्नी से अत्याधिक प्रेम करते है आप अपनी पत्नी के रिश्ते के बारे में कहते है –

"खनक उठती है टकराकर भी उनसे चुडीयाँ सारी
कडों से सीखिए रिश्ते निभाने की हुनर दारी।"[82]

अर्थात डॉ. कुँअर परिवार के प्रति प्रेम एवं आत्मीयता के दर्शन होते है। आप भूलना नहीं चाहते की उनकी संगीनी के रुप में संतोष ने उन्हें अनंत प्रेम और सुकून की जिंदगी दी है। आपकी उनकी प्रेरणा के रुप में दिखाई देती है।

'महावर इन्तजारों का' में आपने अपने प्रिय पत्नी के लिए लिखा है– त्याग, तपस्या, प्रेम और कर्तव्य निष्ठा की प्रति मूर्ति, जीवन संगिनी प्रिय संतोष के लिए ये पंक्तियाँ कहते हुए बहुत अच्छा लग रहा है–

"मैं क्यों न तुझे रोज चाव से पढूँ
तू मेरे घर में एक भजन की किताब है।"[83]

आपका पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन अंत्यत खुशहाल है। माँ सरस्वती और लक्ष्मी की कृपा दृष्टि उन पर असीम है। डाँ. कुँअर बेचैन का व्यक्तित्त्व संवेदनशील, भावूक, स्वाभिमानी व्यक्ति के रूप में प्रतीत होता है ।

4.2.1.8 शरीर सौष्ठव –

डॉ. कुँअर बेचैन शारीरिक दृष्टि से मध्यम और सुदृढ है। गेंहुआ रंग है। केश राशी अंत्यत विरल है। गंभीर चेहरे पर थोडी सी हास्य लहर और तिखी आँखें गहन अनुभवों को

दर्शाती है। शरीर स्वास्थ निरोगी है। उत्तम शरीर संपदा के कारण आज भी आपको कार्यमग्न रहने की प्रेरणा देता है।

4.2.1.9 वेशभूषा –

वेशभूषा व्यक्ति के व्यक्तित्व अनमोल भाग है। आपकी आर्थिक दुर्बलावस्था के कारण बाल्यावस्था और किशोरावस्था में ठिक तरह से कपडे मिलना मुश्किल था। एक जोडी कुर्ते, पजामें पर ही एक साल बिताते थे। लेकिन आज आपका पहनावा कुर्ते पजामा, जॅकेट, कोट टाई, शर्ट, पॅन्ट आदि कपडे पहनते है। लेकिन आपको कुर्ता, पजामा और जॅकेट अच्छे लगते हैं। वैसे तो आपको हर पोशाख भाता है। आपको साफ–सुथरे कपडे अधिक अच्छे लगते हैं।

4.2.1.10 खानपान –

आपका खान पान सिधा–सादा रहता था । खाने के बारें में अंत्यत संयमित है। आपको साधा खाना अधिक अच्छा लगता है। आपने पहली बार खाना पकाया तब कहते है–

"मनुष्य के जीवन में आहार का महत्त्व अधिक है। क्योंकि 'जैसा खायेगा अन्न वैसा बनेगा मन' इस उक्ति के आधार पर उन्होंने बताया की उनका जीवन कष्टमय तो बीता ही था। उन्होंने भोजन के लिए काफी दुःख उठाये। लेकिन उन्हें अपने उन सुखे–रुखे तवे पर सिंके टुकडों का वह स्वाद आज की पंचतारांकित हॉटेलों के लज्जतदार भोजन में नहीं मिलता।"[84] अर्थांत वह आज आपको सादा भोजन बहुत अच्छा लगता है।

4.2.1.11 आचार–विचार –

डॉ. कुँअर के पिताजी बचपन में ही गुजर गए थे। बचपन माता के आँचल तले गुजरा लेकिन माता के स्वर्गवास होने पर आपके बडे जीजाजी जंगबहादुर जीने आपका पालन पोषण किया। शिक्षा देकर बड़ी अच्छी तरह से पालन किया। आपकी पत्नी याने कुँअर के बहन के मृत्यु के बाद भी आप और आपके जीजाजी एकत्रित रहने लगे। इसलिए वह संस्कार और शिष्टाचार में पले बडे है। आपके विचार क्रांतिकारी और विद्रोही है। आपने अपने साहित्य के माध्यम से अन्याय एवं अत्याचार, कुरीतियों का विरोध किया है। आपका स्वभाव न्यायप्रिय, स्नेहप्रिय है। आज आपका स्थान लेखक एवं ग़ज़लकारों में उँचा है। आपका व्यक्तित्व इंद्रधनुषी बना हैं। डॉ. कुँअर बेचैन का जीवन बचपन से ही दुःख और पीड़ा से भरा है। परंतु

फिर भी आपने अपने ग़ज़लों, गीतों, कविताओं के माध्यम से हास्य व्यंग्य रुप से साहित्य लिखा है। आप विनोद कम मात्रा में करते है।

4.2.1.12 भावुक और करुणाशील –

प्रत्येक कवि का हृदय संवेदनशील होता है । डॉ. बेचैन ने बुध्दिपक्ष के साथ हृदय भी संवेदनशील होने के वजह से प्रतिभाशाली है। बचपन से आपने बहुत दुःख और पीड़ाएँ झेली है। भावनाओं का उद्रेक और करुणा पक्ष आपके व्यक्तित्व के प्रमुख अंग है। किसी भी मनुष्य के दुःख को देखकर आपके आँखों से आँसू बहने लगते है। लेकिन आपका व्यक्तित्व साहसी, निर्भिक और प्रखर है। आपने व्यक्ति का विरोध नहीं किया बल्कि कुरीति का विरोध किया है। अपनी कोई बात कहने से डरते नहीं है। वह सामान्य आदमी के हक और अधिकार के लिए अपना साहित्य लिखते हैं।

अतः निष्कर्ष के रुप में हम कह सकते है कि आपने अपने वैयक्तिक जीवन की अनेक घटनाओं को लेकर अपना साहित्य सृजन किया है। बचपन से लेकर आज तक जो संकट, दुःख, पीडाएँ, वेदना आपने सही है वही घटनाएँ संवेदना बनके साहित्य के माध्यम से दृष्टिगोचर हुई है। बाल्यावस्था में ही आपने अनेक संकटों के माध्यम से उजागर किया है। आपने अपना जीवन, अंतत्य बिकट अवस्था में बिताया है। अतीत के इन पन्नों की बड़ी सहजता से जीवित रखने के लिए ग़ज़ल, कविता और कहानियों के रुप में सृजित किया है।

डॉ. बेचैन एक संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रदान करने वाले व्यक्ति हैं। आप एक ग़ज़लकार, गीतकार, कहानीकार, उपन्यासकार और चित्रकला से सफल हो गए है। बहुआयामी व्यक्तित्व एवं संपन्न व्यक्तित्व के धनी है।

4.2.2.पुरस्कार और सम्मान एवं साहित्यिक परिवेश–

डॉ. कुँअर बेचैन को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

4.2.2.1 पुरस्कार –

1. अखिल भारतीय कादम्बिनी गीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार (1976) में मिला हैं।

2. अखिल भारतीय सारिका लघुकथा प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार (1977) में मिला हैं।

3. भीतर साँकल, बाहर साँकल(गीत–संग्रह) पर राष्ट्रीय आत्मा पुरस्कार मिला हैं।

4. हिंदी साहित्य अवार्ड का 25,000 रुपये का पुरस्कार मिला हैं।

5. साहित्य भूषण का 50,000 रुपये का हिंदी संस्थान लखनऊ, उ.प्र. द्वारा सन 2002 में पुरस्कार मिला हैं।

6. हिंदी गौरव सम्मान में आपको 2 लाख रुपये का उ.प्र. हिंदी संस्थान द्वारा उन्हें पुरस्कार मिला हैं।

4.2.2.2 सम्मान एवं उपाधियाँ –

1. महामहिम राष्ट्रपति श्री ग्यानी जैलसिंह द्वारा राष्ट्रपति भवन में 1982 को सम्मानित किया गया हैं।
2. महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति भवन में सम्मानित किया हैं।
3. हिंदी साहित्य संम्मेलन प्रयाग द्वारा 'कवि रत्न' की उपाधि प्राप्त की हैं।
4. 'भारत श्री' एवं 'साहित्य श्री' की उपाधि 1991 में मिली हैं।
5. 1980 में सांस्कृतिक परिषद हरदोई द्वारा सम्मानित किया गया हैं।
6. 1982 में भारतीय साहित्यकार मंच, पिलखुआ द्वारा सम्मानित किया गया हैं।
7. 1983 में अग्रवाल नवयुवक संघ, चंदौसी द्वारा सम्मान मिला हैं।
8. 1985 राष्ट्रीय मंच बरेली द्वारा सम्मान मिला हैं।
9. भारतीय स्टेट बँक, कर्मचारी ऐसोसिएशन, चंदौसी द्वारा 1986 में सम्मान मिला हैं ।
10. 1987 में टैगोर परिवार, जयपूर द्वारा सम्मान मिला हैं।
11. सुपथगा दिल्ली द्वारा 1990 में सम्मान मिला हैं।
12. सुमन्त सम्मान, ग्वालियर द्वारा 1991 में सम्मान मिला हैं।
13. सारस्वत सम्मान, सहारनपुर 1990 में सम्मानित किया।
14. आरम्भ सम्मान, ग्वालियर 1991 में सम्मान प्राप्त किया हैं।
15. राजस्थान साहित्य एकेदमी, जोधपूर में 1991 में सम्मानित किया हैं।
16. साहित्य प्रेमी मण्डल, शाहदरा, दिल्ली द्वारा 1992 में सम्मानित हैं।
17. श्री. कृष्णा विद्या सेवा पुरस्कार, दिल्ली द्वारा 1992 में सम्मान किया हैं।
18. रोटरी क्लब, गाजियाबाद द्वारा 1992 में सम्मान प्राप्त हुआ।
19. निराला उत्सव सम्मान, पालनपूर (हिमाचल प्रदेश) द्वारा 1992 में सम्मान मिला हैं।

20. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, हैदराबाद द्वारा 1992 में पुरस्कार मिला हैं।

21. स्वरांजलि, सीताराम अग्रवाल स्मृति न्यास, हापुड द्वारा 1993 में सम्मान मिला हैं।

22. अमरोहा के गौरव से 1993 में गौरव किया हैं।

23. दूरदर्शन ज्ञानदीप मण्डल, दिल्ली से 1993 में सम्मानित किया गया हैं।

24. ब्यावर एसोसिएशन, मद्रास द्वारा 1993 में सम्मानित किया गया हैं।

25. साहित्य प्रेमी मण्डल, मेरठ द्वारा 1991 में सम्मानित किया है।

26. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, सिरसा द्वारा 1994 में सम्मानित किया हैं।

27. स्वागत–सम्मान, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली से 1994 में सम्मान मिला।

28. जन चेतना मंच, अलीगढ़ में 1994 में सम्मान मिला।

29. शुभम पुरस्कार, गुलावटी द्वारा 1994 में सम्मान मिला।

30. जनकपुरी महोत्सव, आगरा द्वारा 1994 में सम्मान मिला।

31. रोटरी क्लब ऑफ गाजियाबाद (अन्तरांष्ट्रीय मण्डल) द्वारा 1994 में सम्मानित किया हैं।

32. साहित्य–जागृति परिषद, डिबाई व्दारा 1995 में सम्मानित किया हैं।

33. साहित्यलोक मेरठ द्वारा 1995 में सम्मान किया हैं।

34. दैनिक भास्कर एवार्ड, आगरा द्वारा 1995 में सम्मानित किया है।

35. भारत भारती, अलीग़ढ द्वारा 1995 में सम्मान मिला।

36. सर्वश्रेष्ठ कवि पुरस्कार रोटरी क्लब की ओर से गाजियाबाद में 1995 में मिला।

37. संस्कार भारती पश्चिमी विभाग की ओर से दिल्ली में 1996 में सम्मान मिला।

38. चित्रांशी, आगरा में 1996 में सम्मान मिला।

39. युग–प्रतिनिधि सम्मान 1997 में मिला।

40. चरक सम्मान 1997 में मिला।

41. बाबू महाराज सिंह सारस्वत सम्मान 2001 में मिला।

42. विभूति पुरस्कार 2002 में मिला।

43. स्व. सुरेन्द्र बहादुर सिन्हा स्मृति सम्मान 2002 में बरेली में मिला।

44. मानस मंच, कानपुर, पं.फूलचंद शर्मा स्मृति सम्मान 2003 में मिला।

45. वरिष्ठ नागरिक सम्मान, इनरव्हील क्लब, गाजियाबाद नॉर्थ की ओर से 2003-04 में मिला।

46. डॉ.शिव मंगल सिंह 'सुमन स्मृति सम्मान', साहित्य भारती उन्नाव की ओर से 2003 में मिला।

47. सुरुचि सम्मान, सुरुचि परिवार, गुरुग्राम, हरियाणा की ओर से 2003 में मिला।

48. शब्द–साधक, सम्मान प्रयास ट्रस्ट रोहतक की ओर से 2002 में मिला।

49. गीतांजलि सर्कल बर्मिधंन, यू.के. 1997 में मिला।

50. श्रीमती रंजना कृष्णा सम्मान, एम.एम.एच कॉलेज व्दारा सम्मानित किया।

4.2.2.3 विदेश यात्रा –

डॉ. कुँअर बेचैन ने अनेक देशों में साहित्यिक यात्राएँ की है, जिसमें मारीशस, रुस, इन्डोनेशिया, सिंगापुर, ओमान, अमेरिका, लंडन, कनाडा आदि। वहाँ जाने पर उन देशों के लागों के सामने अपने ग़ज़लों का पाठ किया है। वहाँ जाने पर विदेशी लोगों ने आपको सम्मानित किया हैं। इसमें मॉरिशस में 1984 तथा में 1990 में सम्मनित किया है। साथ ही ओमान के मस्कट नगर में सम्मान–1990 और अमेरिका के नगरों में 1993 में अनेक लोगों ने आपकों सम्मानित किया है। मारीशस में तो प्रधानमंत्री के हाथ से 'पत्थर की बाँसुरी' ग़ज़ल संग्रह का विमोचन किया था। अपने ग़ज़लों को विदेशी लोगों तक पहुँचाकर परिचित करना उनका उदद्देश्य था। डॉ. बेचैन के बारे में डाँ. अभय खैरनार कहते है– "उनकी विदेश यात्रा के बारे में बताना हो तो –सबसे पहले उन्होंने 1984 में मॉरीशस का दौरा किया। उसके बाद 1987 में रुस गये रुस में डॉ. कुँअर जी ने पाँच महानगरों में अपनी कविता का पाठ किया। 1990 में फिर से मारीशस बुलाये गये। 1993 में अमेरिका का दौरा किया। 1997 में फिरसे अमेरिका गये। 1997 में ही इंग्लैड और कॅनडा भी गये। उसके बाद ओमन भी गये। डॉ. कुँअर बेचैन को 1999 में इंग्लैड फिर से बुलाया गया। जनवरी 2003 में दुबई से भी बुलावा आया।"[85] अर्थात डॉ. बेचैन की लोकप्रियता और एक ग़ज़लकार के रुप में प्रसिद्धी पराकोटी

तक पहुँची हैं। वहाँ के लोगों ने आपको बहुत सराहा भी है। इस तरह डॉ. बेचैन अनेक शहरों में आना–जाना आम हो गया था। आप जहाँ भी जाते वहाँ प्रशंसनीय थे।

4.2.2.4 मार्गदर्शक –

उपन्यासकार, ग़ज़लकार, कहानीकार, गीतकार आदि अनेक गुणों से संपन्न डॉ. कुँअर बेचैन एक अच्छे अध्यापक एवं मार्गदर्शक भी है। आपने एम.फिल, पीएच.डी के शोध छात्राओं को मार्गदर्शन किया है। आपके पीएच.डी के चार शोध छात्र है और संजय शर्मा नामक अध्यापक डॉ. बेचैन के मार्गदर्शन मे शोधकार्य संपन्न किया है।

4.2.2.5 कुशल संपादक –

डॉ. कुँअर बेचैन एक सफल ग़ज़लकार, गीतकार और साहित्यकार रुप में दिखाई देते हैं। उसी तरह आपने अपने कृतियों पर भूमिकाएँ भी लिखी है। आपने त्रैमासिक पत्रिका ‘सुर–संकेत’ के संपादक है। भारतेंदु युग से लेकर आज तक के अनेक महान गीतकारों ने इसमें अपने कृतियाँ प्रकाशित की है। इस तरह से प्रतिभाशाली संपादक के रुप में दिखाई देते हैं।

4.2.3 डॉ. कुँअर बेचैन का कृतित्व –

डॉ. कुँअर के व्यक्तित्व की छाप उनके कृतित्व में भी दिखाई देती हैं। बचपन से ही एक होशियार खेलने–कुदने में प्रविण थे। उन्होंने नवीं कक्षा में ही कविताएँ लिखनी शुरु की थी। एक बार उनकी कविता देखकर अध्यापक ने संदेह की नजरों से देखा और तुलसीदास पर कविता लिखने के लिए कहा तब उन्होंने तुलसीदास पर कविता लिखने का साहस किया था।

“संवत् पंद्रह सौ चउअन में उत्पन्न हुए थे तु तुलसी।

श्री आत्माराम थे पिता तुम्हारे, माता का नाम था हुलसी।।”[86]

तबी श्री महेश्वरदयाल जी को विश्वास हुआ कि कुँअर ने जो कविता पत्रिका के लिए दी है, वह उन्हीं की रची हुई है। अर्थात स्कूल में ही कविताएँ पढ़ने के पश्चात उसी तरह कविताएँ लिखना उन्होंने शुरु किया था। गिरीधर कवि की कुंडलियाँ पढ़कर उन्होंने कुँडलियाँ बनाने की कोशिश की थीं। उन्होंने अनेक कुँडलियों का सृजन किया था। सन 1957 में लिखी कुँडलियों में एक कुँडली इस प्रकार है –

"रहे शिवाजी तु यहाँ, सब राजन के राज
आज लड़ाई की धुन के, रहे नगाडे बाज
रहे नगाडे बाज, सुन–सुन राजा डरि हैं।
खौंफ़ शिवा से खाँय, माँगत हैं अनुसरि हैं
कहें कुँअर कविराय, प्रज्ञा तु से है राजी
काम करै ना कोई, करिके रहे शिवाजी।"[87]

इस तरह से डॉ. कुँअर बेचैन ने अपने कविता और ग़ज़लों को लिखना शुरु किया था। ग़ज़ल के बारे में डॉ. कुँअर कहते है – "ग़ज़ल रेगिस्तान के प्यासे होठों पर उतरती हुई शीतल तरंग की उमंग है। ग़ज़ल घने अंधकार में टहलती हुई चिनगारी है। ग़ज़ल नींद से पहले का सपना है, और ग़ज़ल, जागरण के बाद का उल्लास है। ग़ज़ल, गुलाबी, पंखुडी पर बैठी हुई खुशबू का मौन स्पर्श है।"[88] अर्थात इस तरह से उन्हें अपनी ग़ज़ल लिखने में प्रेरणा मिलती रही है। गाजियाबाद आने के बाद डॉ. कुँअर का कृतित्व अधिक विकसित हो गया था। उनके गीतों और ग़ज़लों के चहिते बढ़ने लगे थे। वैसे तो बी.कॉम. में पढ़ते समय उन्होंने गीत लिखना आरंभ किया था।

"जितनी दूर नयन से सपना
जितनी दूर अधर से हँसना
बिछुए जितनी दूर कुँआरे पाँव से
उतनी दूर पिया तु मेरे गाँव से।"[89]

लोगों की चाहत उन्हें अधिका–अधिक साहित्य सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करने लगी थी। उसी समय चंदौसी में पक्के बाग स्थान पर कवि संम्मेलन और मुशायरा का आयोजन किया था, और देश अनेक बडे कवियों और शायरों को आमंत्रित किया था। तभी कुँअर बेचैन को भी आमंत्रित किया था। तब उन्होंने 'जितनी दूर नयन से सपना' यह गीत गाया। नीचे बैठे शायर और कवि मंत्रमुग्ध हो गए और आवक से देखते रहे। उनके गीतों के शब्दों का उतार–चढ़ाव और उनके भावों की अभिव्यक्ति सुनकर उन्हें देश के अनेक मंचो से आमंत्रित किया जाने लगा था। ग़ाजियाबाद आने के बाद उन्होंने इसी गीत को लेकर आकाशवाणी बाद में

दूरदर्शन तक पहुँच गए थे। बाद में इस गीत को संगीतकार रवींद्र जैन के संगीत निर्देश में 'कोख' फिल्म में हे लता के स्वरों में गाया गया था।

सन 1966 में देश में आकाल पढ़ने के बाद उन्होंने साप्ताहिक हिंन्दुस्तान नामक पत्रिका में आकाल पर कविता की थी। उस कविता को पढ़कर सैकड़ों पत्रों के माध्यम से उनकी लोगों ने प्रशंसा की थी। उस कविता की पंक्तियाँ इस तरह थी–

"पेटों में अन्न नहीं भूख। साहस के होंठ गए सूख।

खेतों के कोश हुए रोते। जीवन की रात कहाँ बीते।।"[90]

हजारों भूखे लोगों की भावनाओं को इस कविता के माध्यम से उजागर किया है। इस तरह उनकी पहली कविता कांदबनी नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। जिसका शीर्षक 'और मै लाचार पति निर्धन' था। आखिल भारतीय गीत–प्रतियोगिता में कुँअर बेचैन को प्रथम पुरस्कार मिला था। वह गीत इस प्रकार है –

"जिसे बनाया वृध्द पिता के श्रमजल ने
दादी की हँसुली ने, माँ की पायल ने
उस कच्चे घर की सच्ची दीवारों पर
मेरी टाई टँगने से कतराती है।"[91]

कुछ दिनों में यह गीत बहुत प्रसिद्ध हुआ और कुँअर बेचैन को भी प्रसिद्धी की बुलंदी पर पहुँचाया था। इतना ही नहीं प्रस्तुत गीत महाराष्ट्र बोर्ड के हिंदी पाठ्यक्रम में भी शामिल किया था। इसके साथ 'धर्मयुग' तथा 'नवनीत' मासिक पत्रिकाओं में भी उनके गीत प्रसिद्ध हो गए थे। उनकी कविताएँ, ग़ज़लें विभिन्न अखबारों में भी प्रकाशित हो गए थे। इनमें से दैनिक हिन्दुस्थान(दिल्ली), नवभारत टाइम्स, नई दुनिया (इंदौर), नवभारत (इंदौर), दैनिक जागरण (कानपुर), आज (बनारस), अमर उजाला (आगरा), राजस्थान पत्रिक (जयपुर), नव ज्योति (जयपुर), स्वदेश (भोपाल), अमृत बाजार पत्रिका (कलकत्ता), दैनिक ट्रिब्यून (चण्डीगढ़), पंजाब केसरी (जालंधर), चौथी दुनिया(इन्दौर) आदि पत्र–पत्रिकाओं में कुँअर बेचैन के कविताओं ने, गीतों ने, ग़ज़लों ने अपना अलग मुकाम हासिल किया है। डॉ. कुँअर बेचैन ग़ाजियाबाद आने के बाद अपने साहित्य को प्रकाशित किया है। डॉ. रघुनाथ कश्यप

उनके ग़ज़लों के बारे में लिखते हैं– “हिंदी ग़ज़ल यात्रा में दुष्यन्त कुमार के बाद यदि कोई है, तो डॉ. कुँअर का नाम सर्वोपरि माना जाता है। डॉ. कुँअर मूलतः गीतकार है, और नवगीत से वे ग़ज़ल की ओर आए उनका मत है कि – गीत की तरह ग़ज़ल के बारें में जितना भी कहा जाए वह कम है।”[92] अर्थांत हिंदी साहित्य जगत में ग़ज़ल के क्षेत्र में डॉ. कुँअर बेचैन ने महत्त्वपूर्ण मुकाम बनाया हैं। उनके गीत संग्रह या नवनीत संग्रह प्रथम प्रकाशित हुए हैं –

4.2.4. डॉ. कुँअर के गीत तथा नवगीत संग्रह –

4.2.4.1.. पिन बहुत सारे (नवगीत संग्रह) –

प्रस्तुत नवगीत सन 1972 में प्रकाशित हुआ है। स्वयं प्रकाशन, गाजियाबाद ने इसे प्रकाशित किया है। इस किताब में कुल 65 गीत हैं। इसके प्रत्येक गीतों में आक्रोश, मनुष्य की समस्याएँ, व्यंग्य, दिशा, बिंब और श्रृंगार, एकांत के साथ घुटन का चित्रण किया है। यह गीत प्रतीक, बिंब और छंदबद्ध शैली में लिखें हैं। उपरोक्त पुस्तक के कवर पन्ने के पीछे टिप्पणियाँ लिखने का काम श्री भवानीप्रसाद मिश्र, श्री सोहनलाल व्दिवेदी और श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने आदि ने किया हैं। यह संग्रह डॉ. कुँअर ने अपने जीजाजी जंगबहादुर को समर्पित किया हैं।

दोस्ती में फरेब करने वालों पर व्यंग्य करते हुए दोस्ती के नाम पर दिखावा करने वाले लोगों की मानसिकता को उजागर करते हुए डॉ. कुँअर कहते है–

“इस समय की मेज पर। रख्खी हुई जिंदगी है।

पिन–कुशन जैसी। दोस्ती का अर्थ, चुभना हो गया है।

और चुभने के लिए है, पिन बहुत सारे।”[93]

अपने इस नवगीत के माध्यम से डॉ. कुँअर बेचैन जी ने मनुष्य की मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक तथा सांस्कृतिक परिवेश को उजागर किया है। इस तरह से प्रस्तुत संग्रह से डॉ. कुँअर ने हिंदी साहित्य जगत में स्थान निर्माण किया है।

4.2.4. 2. भीतर साँकल बाहर साँकल –

प्रस्तुत गीत–संग्रह लेखक की दूसरी कृति है। सन 1978 में प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद से प्रकाशित किया है। इसमें कुल मिलाकर 68 गीत है और पाँच खण्डों में

विभाजीत हैं। प्रस्तुत गीतसंग्रह अपने माता–पिता को समर्पित किया है। इस नवगीत के संदर्भ में बनवीर प्रसाद शर्मा ने लिखा है– "प्रस्तुत संकलन में समाज के उस मध्यवर्ग के व्यक्ति की पीड़ा का दर्द है जो जीवन में बढ़ती हुई जड़ता से टूट गया है। इसमें मध्यवर्गीय व्यक्ति के परिवेश की जटिलता विषम स्थिति, मूल्य संक्रमण और उसकी कराहट है।"[94] अर्थात प्रस्तुत नवगीत संग्रह में मनुष्य के मध्यवर्गीय जीवन को उजागर किया है। जिस तरह सामाजिक और राजनीतिक परिवेश को उजागर करके उसमें जमी हुई सड़ांध को साफ करने की कोशिश की है। कहीं–कहीं पर तो अकेलेपन जीवन को उजागर किया है। इसमें मानसिक तनाव, उदासिनता, रिश्तों में दरारे आदि मध्यम वर्ग की समस्याओं को चित्रित करके स्वच्छन्दता छंद में उन्होंने गीतों को प्रस्तुत किया है। जैसे –

"जब कि हम कह रहे थे–
झुके झोपड़ों!
तु न ऐसे झुको, माथ ऊपर करो
एक बंदुक आई डराने लगी
और कहने लगी– हाथ ऊपर करो।"[95]

मध्यवर्ग के साथ निम्नवर्ग के हालातों पर भी प्रकाश डाला हैं। उनकी विषम परिस्थिति को उपने गीतों के माध्यम से प्रकट किया है।

शिल्प की दृष्टि से उनके गीतों में प्रतीक, बिम्ब व्यंग्य, अनुभूति और सजीव भाषा का प्रयोग किया है। इसलिए उनके गीतों की अनुभूति हृदय को स्पर्श करती है।–

जैसे – "शब्द के चेहरे
पुनः पीले हुए
गीत के रुमाल फिर
गीत हुए
दर्द के गीत की?
टेक भी दर्द है
दर्द ही अंतरा।"[96]

इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन का प्रस्तुत गीत–संग्रह उन्हें सशक्त गीतकार के रुप सफल बनाता हैं।

4.2.4. 3. उर्वशी हो तुम –

उपर्युक्त गीत–संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन का तीसरा संग्रह है। इसमें कुल–मिलाकर 81 ग़ीतों को संकलित किया हैं। डॉ. कुँअर बेचैन का यह गीत–संग्रह 1983 में प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद से प्रकाशित किया गया। इसमें ग्रामीण तथा महानगरीय परिवेश को उजागर किया हैं। परंतू प्रस्तुत गीत संग्रह के अधिकतम गीत प्रेम की महिमा को चित्रीत करते हैं। इसमें प्रेम की वेदना श्रृंगारिकता, संवेदना, उत्कंठा, अलौकिक प्रेम की अनुभूति को प्रकाशित किया है।

जैसे – "जितनी दूर नयन से सपना।

जितनी दूर अधर से हसना।।

छुए जितनी दूर कुँवारे पाँव से।

उतनी दूर पिया तु मेरे गाँव से।"[97]

इस तरह से एक प्रेमी की मानसिक उत्कंठा और प्रेमी के विरह को उजागर किया हैं। इस गीत ने डॉ. कुँअर बेचैन को गीतों के जगत में एक अलग स्थान स्थापित कर दिया हैं। प्रेम के साथ आध्यात्मिक चिंतन को भी परिलक्षित किया हैं। जीवन की वास्तविकता के उपर प्रकाश डालने का प्रयास उन्होंने निम्नलिखित गीत के माध्यम से किया है –

"न दीवारें रही मुझमें, न दीवारे रही तुम में।।

बनाकर एक हमने पुल, नयन में, स्वप्न–आँगन में।।

कि हमने भावमय मन में, बिठायी प्रीति की बुलबुल।।"[98]

मानवी मन की भावना, संवेदनाओं की अनुभूति को अपने गीतों के माध्यम से उजागर किया है। डॉ. कुँअर बेचैन ईश्वर के एकात्म भक्ति के साथ रहस्यानुभूति को भी परिलक्षित करते हैं।

जैसे "चाँदनी के साथ ही कोई विरह का गीत।

तू भी गुन गुना मन।"[99]

इस तरह से उन्होंने अपनी आत्मभिव्यक्ति को चित्रित किया हैं।

कवि ने 'नदी बोली समुन्दर से'गीत को तो अपनी आवाज में गाया हैं। उस गीत के साथ डॉ. कुँअर बेचैन के आवाज को भी लोगों ने सराहा है। उनके गीतों के बारें में बनवीर प्रसाद शर्मा लिखते है–"उनका गीत गाँव में ही जन्मा वहाँ की मिट्टी में खेला, तालाबों में झाँका, लिपे आँगनों, कच्ची दीवारों की सौंधी में महका, किन्तु गाँवो के परिदृश्यों से वह आकुल है।"[100]

गाँव की मिट्टी की सुंगध उनके गीतों से आती है और उसकी महक हिंदी साहित्य जगत में फैल रही है। इस तरह से उन्होंने अपने गीतों में जीवन के हर मोड को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं।

4.2.4.4. झुलसो मत मोर–पंख –

प्रस्तुत गीत संग्रह कुँअर बेचैन का चतुर्थ गीत संग्रह है। इसमें कुल–मिलाकर 62 गीतों को संकलित किया है। इसका प्रकाशन 1990 में प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद के द्वारा किया है। उपर्युक्त संग्रह में माँ के प्रति प्रेम और वात्सल्य के साथ धार्मिक भावनाओं का चित्रण किया है। इस गीत संग्रह में रिश्तों का महत्त्व क्या है, माता–पिता, भाई–बहन आदि का नाता वात्सल्य और प्रेम से किस तरह जकडा है इसका चित्रण गीतकार ने बडी मार्मिकता से किया है। माँ के बारे में डॉ. बेचैन कहते हैं –

"माँ!
तुम्हारे सजल आँचल ने
धूप से हमको बचाया है
चाँदनी का घर बनाया है।"[101]

पिता के बारे में वह कहते हैं –

"ओ पिता।
तु गीत हो घर के
और अनगित काम दफ्तर के।
छाव में हम रह रकें यो ही
धूप में तु रोज जलते हो

तु हमे विश्राम देने को

दूर कितनी दूर चलते हो।"[102]

माता–पिता की मातृत्व भावना को उजागर किया है। उनके रहते घर की हर ईंट प्यार और ममता से भरी रहती है। घर हर कोना रिश्तों से जोडा हुआ रहता है। घर में मधूर बाँसुरी के सुर सुनाई देते है। बेटियों के बारें में भी वह लिखते है–

"बेटियाँ–

शीतल हवाएँ हैं

जो पिता के घर

बहुत दिन तक नहीं रहती।"[103]

घर के हर रिश्तों की एहमियत यहाँ प्रस्तुत की है। इस तरह भावपूर्ण गीतों से पारिवारिक स्नेह का मिलाप यहाँ पर दिखाई देता हैं। कहीं–कहीं पर अध्यात्मिक भावनाएँ, मनोवैज्ञानिक संवेदनाओं का भी चित्रण हुआ है। मन की निराशा की दूर करने के लिए वे कहते है –

"झुलसो मत मोर पंख सतरंग बने रहो।

कैसी भी हवा चले लहरा कर झूमन हँसकर,

हर मौसम के माथे को चूमना मधुऋतु हो

चाहे ...... मधुऋतु न हो ।"[104]

जीवन हर मोड पे आनंदित रहने का संदेश गीतकार डॉ. कुँअर बेचैन देते हैं। सामाजिक और मानसिक वास्तव को अपने में दर्शाया है।

4.2.4.5. एक दीप चौमुखी –

प्रस्तुत गीत–संग्रह उपर्युक्त चार संग्रहो के गीतों का संकलित संग्रह तैय्यार हुआ है। इस संग्रह का प्रकाशन प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद से सन 1997 में किया है। इसमें 112 गीतों को संकलित किया है। इस गीत–संग्रह के बारें में लेखक का मंतव्य है – "मेरे जो चार गीत–संग्रह बहुत कम संख्या में शेष रह गए हैं। उधर स्नेही पाठकों के आग्रह का दबाव लगातार मुझ पर बढ़ता रहा कि मैं उन संग्रहों को दोबारा छपवाऊँ। किन्तु आज के समय में

पुस्तक प्रकाशन में जो व्यय आने लगा है और जिसके कारण पुस्तकों के मुल्य बढ़ाकर रखने पड़ रहे हैं तथा पाठकों को खरीदने में कठिनाई हो रही है, ऐसी परिस्थितियों में मैंने यह सोचा कि क्यों न चारों गीत–संग्रहों के कुछ प्रमुख गीत एक ही जिल्द में दे दिए जाएँ। इसी बाद को सोचते हुए यह संग्रह आपके हाथों में है।"[105] इस तरह से गीत–संग्रह प्रकाशित हुआ है।

इस संग्रह के गीतों में भावुकता, तुकबंदी बिम्ब, लय, छन्द, अलंकार और शैली में नए प्रयोगों को अपनाया हैं। उन्होंने शब्दों को आधार बनाकर अपनी बात को प्रभावी ढंग से कहा है। जीवन के सुख–दुःख भावनाओं की विविधता आदि को बडी मार्मिकता से उजागर किया है। प्रतीक के माध्याम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवेश को चित्रित किया है। प्रत्येक शब्द अलग भावना का अविष्कार करता है और प्रत्येक भावना शब्दों के माध्यम से परिलक्षित होती है।

कह सकते है कि जीवन के अनेक अनुभवों को, भावनाओं को, परिस्थिति को डॉ. कुँअर बेचैन ने अपने गीतों के माध्यम से उजागर किया है। हिंदी नवगीतों के इतिहास में उनका नाम अविस्मरणीय है। आगे और भी मुकाम हासिल करने के लिए उन्होंने गीतों के माध्यम ग़ज़ल तक का सफर तय किया हैं।

4.2.4.6. नदी पसीने की –

प्रस्तुत जनगीत छठवाँ संग्रह है। इसका प्रकाशन 2005 में अनुभव प्रकाशन, गाज़ियाबाद के द्वारा किया गया है। इसमें कुल 74 गीत संग्रहीत है। इसमें सामान्य मनुष्य की पीड़ा को उजागर किया है। इसलिए प्रस्तुत संग्रह को जनगीत संग्रह कहा गया है। इस संग्रह के बारें में डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है– "नदी पसींने की मेरी साहित्य यात्रा का बाईसवाँ सोपान है। इसमें पाँच–सात वे गीत है जो अपने पुराने संग्रहों से लिखे गए है, जो इस संग्रह के तेवर के है।"[106] अपने एक गीत में उन्होंने मेहनत और पसीने का महत्त्व समझाया है –

"मेहनत की कलाई है, पसीने की नदी में।
खुशबू सिमट आई है पसीने की नदी में।।"[107]

मनुष्य को अथक परिश्रम के उपरांत ही व्यक्ति को सुख एवं सफलता प्राप्त होती है । उसके मेहनत की पसीने से जीवन हराभरा हो सकता है। और वही उसका दोस्त है इस बारें में वह एक गीत में लिखते है–

"जिंदगी जैसे शिकन रुमाल की
एक नन्हीं सी लहर है ताल की
देखते ही देखते उड़ जायेगी
जिंदगी एक चिड़िया डाल की।
जिंदगी जैसे शिकन
जिंदगी चिंता है रोटी डाल की।
जिंदगी................ ।।"[108]

जीवन की लहरों की प्रगती के रास्ते पर ले जाने के लिए हौसला बढ़ाने का कार्य किया है।

4.2.4.7. दिन दिवंगत हुए –

प्रस्तुत गीत–संग्रह डॉ. बेचैन का सातवाँ संग्रह है। इसमें कुल–मिलाकर 102 गीतों को संकलित किया है। इसका प्रकाशन 2005 में हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर द्वारा किया है। इस संग्रह के गीतों के नीचे रचना तिथि भी दी है। यही इस संग्रह की प्रमुख विशेषता है। इस संग्रह में आत्मानुभूतियाँ को विभिन्न बिम्ब, प्रतीक आदि के माध्यम से गीतों के द्वारा सृजन किया है।

'दिन दिवंगत हुए' कुँअर बेचैन की गीतों में मार्मिकता, प्रभावोत्पदकता आदि के कारण ऐतिहासिक संग्रह हैं, जो हिंदी साहित्य जगत में अविस्मरणीय गीतों की पहचान करता है। इस गीत संग्रह में श्रृंगारिकता और मनोवैज्ञानिकता से सृजन किया है और पाठक पर इसका प्रभाव अधिक पड़ता है–

जैसे– "तू इतना प्यार न कर मुझसे
जो खुद से मिलने को तरसूँ।
जो प्यारी लगे सभी को ही

मै ऐसी कोई बात नहीं

हूँ मरुथल की सूखी रेती

मैं मेघ बनूँ औकात नहीं।।"[109]

डॉ. बेचैन के गीतों में रस आस्वाद, अनुराग आदि के साथ पाठक समाधान भी देता है। 'दिन दिवंगत हुए' इस गीत संग्रह में प्रेम की विविध अवस्थाओं का वर्णन किया है। आकर्षण और सौदर्य की अनुभूति भी इस संग्रह में हुई है। गीत, लय, नाद तथा संगीत की दृष्टि से ये संग्रह गेय पद मे लिखा है–

जैसे– "रोज आँसू बहे रोज आहत हुए।

रात घायल हुई, दिन दिवंगत हुए।।"[110]

अर्थांत जीवन में जो भी दुःख आए है उसे आत्माभिव्यक्ति के रुप में डॉ. कुँअर बेचैन गीतों के माध्यम से प्रकट किया है। शिल्प की दृष्टि प्रस्तुत गीत–संग्रह के गीत सार गर्भित सिद्‌ध होते हुए दिखाई देते है।

निष्कर्ष—

बेचैन जी के गीत श्रोताओं और पाठकों को प्रभावित करते है । आस्वाद से, अनुराग से, रस से, बोध से, सहजता है, मधुरता से पाठक और श्रोताओं को कृतज्ञ बना देने मे सक्षम है । डॉ.कुँअर बेचैन जी के सम्पूर्ण गीत संगितात्मकता, आरोह–अवरोह, गेयता, चारूता, रमणीयता का सुंदर दुग्ध शर्करा योग है । बेचैन जी का हर एक गीत स्वतंत्र विचार और विवेचना से सशक्त है । अभिव्यक्ति में सहजता है, गहराई और शक्ति भी है । 'पिन बहुत सारे' में जीव की सार्थकता, मानवीय संवेदना, रिश्तो में टुटते संबंध आदि का चित्रण किया है । 'भितर साँकल बाहर साँकल' में मानसिक उदासिनता, सामाजिक समस्याओं का वास्तविक चित्रण स्पष्ट किया है । 'उर्वशी हो तुम' में प्रेम के अन्तर्गत प्रेमी की उत्कंठा का चित्रण प्रस्तुत किया है । ईश्वर भक्ति में रहस्यानुभूति प्रतीत होती है । 'झुलसो मत मोरपंख' में मन की यातना, और प्रिय की प्रतीक्षा का वर्णन किया है । इसमें अध्यात्मिक संवेदना भाव दिखाई देता है । मातृत्व प्रेम तथा वात्सल्य प्रेम चित्रित है । 'एक दीप चौमुखी' में चार संग्रह के भावों को एकत्रित किया है । वैशिष्ठयपूर्ण गीत संग्रह है । 'नदी पसीने की' संग्रह में कुँअर बेचैनजी ने कहाँ है कि कडी मेहनत से ही जीवन सार्थक बनता है । इस संग्रह की विशेषता यह

है कि इन गीतों में जनवादी संवेदना परिलक्षित होती है । 'दिन दिवंगत हुए' इस गीत संग्रह में अपनी अनुभूतियों को प्रतीको और बिम्बो के माध्यम से व्यक्त किया है ।

इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपनी काव्य की अमूल्य निधि का परिचय दिया है । शिल्प और भाषा की दृष्टि से इनके गीत संग्रह अर्थ गर्भित है । जो पाठक और श्रोताओं को प्रभावित करते है ।

4.2.5 डॉ. कुँअर बेचैन का ग़ज़ल साहित्य –

डॉ. कुँअर बेचैन का योगदान हिंदी साहित्य की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है। गीत, कविता, उपन्यास आदि का सृजन करके उन्होंने अपना योगदान महत्वपूर्ण सिद्ध किया है। लेकिन सबसे अधिक उन्होंने ग़ज़ल साहित्य में अपना योगदान दिया हैं। अतः हम ग़ज़ल का अध्ययन करेंगे।

जिस तरह किसी व्यक्ति को कला का अविष्कार करने मे मन–मस्तिष्क आवश्यक है । उसी तरह डॉ. कुँअर बेचैन को जन्मजात कवि का मन और शायर का मस्तिष्क मिला है। इसलिए उनके ग़ज़ल हिंदी साहित्य जगत् में ही नहीं बल्कि देश में और देश के बाहर भी मशहूर हैं। उनके ग़ज़ल निम्नलिखित है–

4.2.5.1 शामियाने काँच के –

सन् 1983 में प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद के द्वारा प्रकाशित उपर्युक्त ग़ज़ल संग्रह हैं। यह ग़ज़ल संग्रह उन्होंने उनके जिजाजी श्री रामबहादुर सक्सेना को समर्पित किया है। इस ग़ज़ल संग्रह में कुल–मिलाकर उन्चास ग़ज़ले संग्रहित है। उनके सबसे चुनिंदा ग़ज़लों को यह संग्रह है। उन्होंने अपने ग़ज़ल के नीचे अपनी गजल लिखने की तिथि लिखी है। जैसे प्रथम गजल 15 अगस्त 1981 और आखरी गजल 8 फरवरी 1983 को लिखी गई है। इसमें सभी प्रकार के विषयों को लेकर गजल सृजन किया है।

डॉ. कुँअर बेचैन प्रस्तुत गजल संग्रह के बारे में पुस्तक की भूमिका में लिखते है – "श्री कन्हैयालाल नन्दन ने सारिका के एक अंक के संपादकीय में मेरे एक गीत की विवेचना करते हुए उसी गीत की एक पंक्ति को अपने संपादकीय का शीर्षक बनाकर जो सन्मान दिया उसी की प्रेरणा से मैंने प्रस्तुत संग्रह का नाम 'शामियाने काँच के' रखा है। उन्होंने संपादकीय

का शीर्षक रखा था, 'जिंदगी की कडी धूप' और 'काँच के शामियाने'।"[111] प्रस्तुत गजल–संग्रह में भूख और गरीबी, बीमारी आदि के बारे में डॉ. कुँअर बेचैन खुद कहते है – "मुहब्बत में बहाए जाने वाले आँसू और हृदय विदारक आहों को कथ्य बनाने के बजाय पेट के उस आग को कथ्य बनाया गया है जो वर्तमान अर्थव्यवस्था के रोटी के लिए जूझते हुए सही इन्सान को सिर से लेकर पैर तक जलाती जा रही है।"[112] रोटी के लिए जूझते इन्सान के बारे में लिखकर अपने ग़ज़ल को प्रस्तुत किया है।

शामियाने काँच के ग़ज़ल संग्रह उनका प्रथम ग़ज़ल संग्रह है। उन्होंने रोटी को लेकर ग़ज़ले लिखी है। गरीब जनता को पेट को आग से किस तरह से झूलसना पड़ रहा हैं। इसका मार्मिक वर्णन किया है। अपने ग़ज़लों के माध्यम से समाज में स्थित निम्नवर्ग का चित्रण उन्होंने इस प्रकार किया है–

"जरा सोचों कि मूँह तक रोटियाँ क्यों आ नही पायी
तुम्हारी ही कलाई से कहीं कुछ गड़बड़ी होगी
समय की अंतडी से खून टपकेगा नदी बनकर
नुकीली भूख जिस दिन सामने तनकर खड़ी होगी।"[113]

अर्थात इस संग्रह की ग़ज़लों में आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। आर्थिक विषमता की वज़ह से गरीब लोग खाने के लिए किस तरह तरस रहे है और एक दिन यही भूख ज्वालामुखी के रुप में भड़केगी तब समाज में आतंक फैलेगा। इसलिए आर्थिक विसंगतियों दूर करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने सामान्य आदमी की पीड़ाओं को ग़ज़लों के विषय बनायें है–

"अब आग के लिबास को ज्यादा न दाबिये ।
सुलगी हुई कपास को ज्यादा न दाबिये।।
पीने लगे ने खून भी आँसू के साथ–साथ।
यूँ आदमी की प्यास को ज्यादा न दाबिये।।"[114]

आज के समाज में प्रत्येक मनुष्य परेशानियों से घिरा हुआ दिखाई दे रहा है। आर्थिक परेशानियों से घिरा हुआ दिखाई दे रहा है। आर्थिक परेशानियों के कारण वह राह चलते

आदमी को लूट रहा है। भ्रष्टाचार और निराशा, सामाजिक पतन, वेदना, सामाजिक विसंगतियाँ, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थिति, प्रेमभाव आदि को लेकर प्रस्तुत ग़ज़ल–संग्रह के ग़ज़लों का निर्माण किया है। राजनीतिक लोगों पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने कहा हैं–

"इस वक्त अपने तेवर पुरे शबाब पर है।

सारे जहाँ से कह दो हम इंकलाब पर है।।"[115]

इस तरह शामियाने काँच के ग़ज़ल संग्रह में मनुष्य के मनोवैज्ञानिकता, वेदना, संवेदनाओं को परिलक्षित किया है।

4.2.5.2 महावर इन्तजारों का –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन का दूसरा ग़ज़ल संग्रह है। इसका प्रकाशन सन 1983 में गाज़ियाबाद के प्रगीत प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह को उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती संतोष कुँअर को समर्पित किया है। इस बारें में वह कहते है–

"मैं क्यों न पढूँ रोज नई चाह से तुझे

तू मेरे घर में एक भजन की किताब है।"[116]

उपर्युक्त ग़ज़ल संग्रह मे अठहत्तर ग़ज़ले संकलित है। प्रत्येक ग़ज़ल के नीचे रचना तिथि का भी उल्लेख किया है। इस ग़ज़ल –संग्रह में सामान्य मनुष्य की आंतरिक पीड़ाओं का उद्घाटन किया है। उसमें स्थित तनाव, निराशा, उदासीनता, चिंता आदि को उजागर किया है। दूसरी ओर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को परिलक्षित किया है। उनका यह सशक्त संग्रह है। प्रेम की पीड़ा को व्यक्त करते हुए डॉ. कुँअर बेचैन ने एक ग़ज़ल में लिखा है –

"हो सके तो दिल में मेरे डोलते रहिए जरा
हौले–हौले ही सही पर बोलते रहिए जरा
दूर तक गहरा अंधेरा और काली रात है
आप ही ऐसे में घूंघट खोलते रहिए जरा
यह फसैलापन, यह कडवाहट न पी जाए मुझसे
आप ही अब मुझमें अमृत घोलते रहिए जरा
खो गया हूँ आप में तो मिल भी जाऊँगा कभी

अपनी यादों में मुझे भी रोलते रहिए जरा

क्या पता कब लौट आएँ फिर वही रुठे चरण

इंतजारों का महावर घोलते रहि जरा।"[117]

अर्थांत अपने प्रेमी से मिलने की उत्कंठ इच्छा पर यहाँ ग़ज़लकार ने प्रकाश डाला है। प्रेमी की यादों को लेकर जीवन व्यतीत करता है। विरह पीड़ा से तड़पता रहता है। वह सही–गलत पहचान नहीं कर सकता है। जिस कारण दुःख हो रहा है, उसीको अपने सीने से लगाकर जीना चाहता है। वह अपने दर्द को छिपाकर अकेले में रोना चाहता है। क्योंकि यह दर्द सिर्फ उसका है। यहाँ तक कि उसके आँसू भी उसका साथ छोड़ देते हैं। इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन ने प्रेमी की विरह अवस्था का चित्रण बड़ी मार्मिक ढंग से किया है।

इस संग्रह में आम आदमी की भूख और उदासीनता का चित्रण किया है। मनुष्य की सामान्य से सामान्य समस्या को उजागर करने का प्रयास किया है। देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवेश का चित्रण किया है। तत्कालीन सत्ताधारियों का चित्रण करते हुए कहते है –

"जो वक्त की आँधी से खबरदार नहीं है।

कुछ और ही होंगे वो कलमकार नहीं है।।"[118]

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में डॉ. कुँअर बेचैन ने विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। अपनी पीडा को आम आदमी की पीड़ा में ढूँढने का प्रयास किया है। अपने जीवन के अनुभवों को ग़ज़लों के माध्यम से परिलक्षित किया है। इसमें मानवीय संवेदना के साथ प्यार और आत्मसम्मान को भी अभिव्यक्त किया है।

अंतः कह सकते हैं कि 'महावर' इंतजारों का यह ग़ज़ल संग्रह डॉ. बेचैन की सफलता की दूसरी सीढी है।

4.2.5.3 रस्सियाँ पानी की –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन का तीसरा ग़ज़ल संग्रह सन 1987 में प्रगीत प्रकाशन, गाज़ियाबाद से इसे प्रकाशित किया है। इस बारें में डॉ. बशीर बद्र लिखते हैं– "कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल के आर्ट और क्राफ्ट का एक स्कॉलर की तरह अध्ययन किया है।

ग़ज़ल की बहरें और तक्तीज करने के तरीकों को उन्होंने बड़ी मेहनत से समझा है और साथ ही संस्कृत तथा हिंदी के छन्दों और उर्दू ग़ज़ल की पुराणी बहरों को आपस में मिला जुलाकर उनमें से नई नरमगी तलाश करने की कोशिश की है। बड़ी बात यह है कि बहर तक्तीज करने और छंद को क्राफ्ट में उनकी ग़ज़ल की आत्मा सुबह की पहली किरण की तरह बेदाग रहती है।"[119] अर्थात हिंदी और संस्कृत के छन्दों को समझने की कोशिश की है और पाठक को इससे परिचित कराने पर इस संग्रह को श्री कृष्णबिहारी नूर तथा उनके जैसे अन्य शायरों, कवियों को समर्पित किया है उन्होंने प्रत्येक रचना तिथि के साथ ग़ज़ल के छंद को उद्धृत किया है। इसमें छंद और बहर में उर्दू के अनुसार दी गई है। उर्दू बहर के सूत्र को भी ग़ज़ल के नीचे दीया है। इस बारें में डॉ. कुँअर बेचैन ग़ज़ल के निवेदन में लिखते है – "इस संग्रह में एक वृध्दि और कर दी है कि प्रत्येक ग़ज़ल के नीचे उसकी बहर तथा उस बहर के लक्षण भी दे दिए गए हैं। मुझे आशा है कि जो लोग ग़ज़ल कह रहे हैं इससे ग़ज़ल की उर्दू बहरों को समझने में और भी सहायता मिलेगी।"[120] अर्थात ग़ज़ल के नीचे बहर और लक्षणों को दिया है। इस तरह से पाठक उर्दू बहरों को समझ सकता है।

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह शुरुआती छः ग़ज़लों को छोड़कर अन्य सभी ग़ज़ले सन 1983 से जनवरी 1987 तक सृजन की है। इस ग़ज़ल संग्रह के अंत में ग़ज़ल संरचना खण्ड में बहरों का वर्णन ग़ज़लो के माध्यम से किया गया है। अस्सी ग़ज़लो का संग्रह इस संग्रह में किया है।

उन्होंने प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह का नामकरण करते समय अतीत की घटनाओं को याद किया है। अपने अनुभवों को ग़ज़लो के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इस बारें में डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है – "ग़ज़ल भाषा के द्वारा की गई मानवता की पहारेदारी है, ग़ज़ल किसी तथ्य को भाव द्वारा समझाने का प्रयास है मनुष्य के अपराजित महात्म्य का अभिषेक है। अनुभव की पगडंडी और विचारों के चौरास्तों पर की गई शब्दों की पदयात्रा है।"[121] अर्थात ग़ज़ल संग्रह ग़ज़लें डॉ. कुँअर के भावों की अभिव्यक्ति है। ग़ज़लों में अतीत की यादें, दुःख, पीडा, आत्मनिवेदन, प्रेमीयों की प्रेम के प्रीत आदर, विरह, अनगिनत घटनाओं की यादें आदि का सृजन किया है।

जैसे – “आँसू की शक्ल में जो ये फुल झर रहे हैं
इनसे ही जिंदगी की जूड़े सँवर रहे हैं
नट की तरह गगन में अपना हुनर दिखाकर
पानी की रस्सियों में बादल उतर रहे हैं
वंशी हो जिस घटा के हाथों की, बिजलियों तुम
हम भी जिस घटा के हाथों की, बिजलियों तुम
हम भी उसी घटा के मादक अधार रहे है
पानी के बुलबुलों को आँसू न ‘कुँअर’ कहना
लहरों पै ये खुशी के अक्षर उभर रहे है।”[122]

4.2.5.4 पत्थर की बाँसुरी –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन का चौथा ग़ज़ल संग्रह है। अयन प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा सन 1990 में प्रकाशित किया है। इसकी प्रत्येक ग़ज़लों के नीचे क्रमबध्दता से रचना तिथि को दिया है। उन्होंने प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह प्रसिध्द नवगीतकार तथा पाठकों को समर्पित किया है। उनके लिए वह कहते है –

“फैलना है तुझे खुशबू–सा अगर दुनिया में
एक ही फूल की पँखुरी में सिमट चुपके से।”[123]

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में अडसठ ग़ज़लें संकलित है। कुछ ग़ज़ल संग्रह के बारें डॉ. कुँअर बेचैन का मंतव्य – “वह बाँसुरी तभी बनती है, जब उसके सीने में घाव को सहने की हिम्मत होगी, जब उसमें प्राण फूँके जायेंगे, जब ह्रदय की वेदना उससे उपर उठेगी, और उससे होकर गुजरेगी।”[124] मन में निर्माण होने वाले दुःखों की अभिव्यक्ति हुई है। जो पत्थर की तरह कठोरता से भरा है। इसलिए डॉ.कुँअर बेचैन ने पत्थर की बाँसुरी रखा है। समाज में स्थित दुःख पीड़ा रूढियों तथा शोषण, कुरीतियाँ, विद्रोह आदि को उजागर किया है। प्रेमभावना को चित्रित करते हुए कहते है –

“प्यार पूजा का थाल है लोगों।
जिंदगी का कमाल है लोगों।।

उसको तलवार क्यूँ बनाते हो।

प्यार तो एक ढाल है लोगों।।"[125]

जीवन में प्यार की लौकिकता को परिलक्षित किया है। इसमें प्रेम भावना की तरलता को उजागर किया है। अपने दुःख और यातनाओं को सहने की शक्ति मिलती है। ग़ज़लो का आधार बनाकर उन्होंने अपनी जीवन को गुजारा है। बचपन से उन्होंने दुःख को सहा है, उसीकी अभिव्यक्ति अपने ग़ज़लों के माध्यम से की हैं–

"कोई सपना अपना देखे भी जरुर।

ये नजर मेरी अगर जिंदा रही।।

पत्थरों ने उसको कुचला तो बहुत।

फूल की खुशबू मगर जिंदा रही।।

हम जिये भी जिये दो चार पल।

साँस यूँ तो उम्र भर जिंदा रही।।"[126]

अपने बचपन के अतीत को उन्होंने यादों में सजाकर ग़ज़लों के माध्यम से सृजन किया है। जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है।

4.2.5.5 दीवारों पर दस्तक –

उपर्युक्त ग़ज़ल संग्रह डॉ. कुँवर बेचैन को पाँचवा संग्रह है। यह ग़ज़ल संग्रह अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली से सन् 1992 में प्रकाशित हुआ हैं। इसमें कुल छियानबें ग़ज़ल संकलित है। इसमें भी रचना तिथि प्रत्येक ग़ज़ल को नीचे पायी जाती है। इस ग़ज़ल संग्रह में मनुष्य–मनुष्य बढ़ती नफरते, जातियवाद, भाषावाद, समाज की विविध समस्याएँ, मजहब के नामपर होते आतंक आदि सामाजिक परिस्थितियों को उजागर किया हैं। इस नफरत की दीवारों को तोडकर प्रेम भरे दरवाजों का निर्माण करना चाहते है। इसलिए कवि बेचैन चाहते हैं कि दिवारों पर बार–बार दस्तक ग़ज़ल संग्रह का नामकरण किया है। इस बारें में ग़ज़लकार लिखते हैं–

"दीवारों पर दस्तक देते रहियेगा।

दीवारों में दरवाजें बन जायेंगे।।"[127]

डॉ. बेचैन चाहते है समाज में जो दुश्मनी की लहर फैल रही हैं उसे मिटाकर समाज में एकता की एक कड़ी बन जाएगी तभी प्रत्येक समाज का हर व्यक्ति कहेगा–

"तेरे मेरे बीच चाहे कोई, कोई भी दीवार हो।

मेरी ख्वाहिश है, के उसमें कोई दरवाजा रहे।।"[128]

समाज में एकता स्थापित करने का प्रयास किया है। राजनीतिक, सामाजिक, प्रेम, निराशा, सामाजिक आतंक, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर प्रकाश डाला है।अपने देश में जातियवाद के नामपर आतंक निर्माण होता है। उसमें प्रेम और सचाई से परिवर्तन लाना चाहते है। इस बारे में ग़ज़लकार कहते है।

"जब भी उन तक सावन के घन जायेंगे।

सूखे जंगल भी मधुबन बन जायेंगे।।

सच्चा सोना उगलेगी मिट्टी उस दिन।

जब हम खुद भी मिट्टी में सन जायेंगे।।"[129]

डॉ. कुँअर बेचैन ने समाज फैल रहे भ्रष्टाचार और आतंक को परिलक्षित किया है। राजनीतिक समस्या को लेकर उन्होंने मनुष्य की पथ भ्रष्टता पर भी दृष्टिक्षेप किया है।डॉ. कुँअर बेचैन इस ग़ज़ल संग्रह के बारें मे लिखते है –डॉ. कुँअर बेचैन ही वह नाजुक किंतु साथ ही एक ऐसी मजबूत दस्तक है जो दीवारों में दरवाजे बनाने की शक्ति रखती है। हाँ, मानव प्रेम की इसी आकांक्षा, भरी मौन मुखर, मोहक, शब्दावली को तथा ऐसे ही सहज प्रेम के सरल व्यवहारों को मैं अपनी ग़ज़लें समर्पित करता हूँ। और इस संग्रह के माध्यम से सभी पाठकों के ह्रदयों तक इसी रूप में पहुँचाना चाहता हूँ।"[130]अर्थात ग़ज़लों के माध्यम से समाज में प्रेम की स्थापना करके पाठकों के ह्रदय तक पहुँचना चाहते हैं।

4.2.5.6 नाव बनता हुआ कागज –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह डॉ. बेचैन का छठवाँ ग़ज़ल संग्रह है। इसका प्रकाशन अयन प्रकाशन, नई दिल्ली से सन 1994 में प्रकाशित हुआ है। यह ग़ज़ल संग्रह उनकी बेटी वंदना और दामाद शरद को समर्पित किया है। इस ग़ज़ल के बारे में डॉ. कुँअर बेचैन का मंतव्य है – "मुझे लगता है उसके जीवन की घटनाएँ उसके सानिध्य में आए व्यक्ति उसके इर्द–गिर्द की

चीजें ये सभी अँगुलियों के स्पर्श ही है जो इस काग़ज को नाव बनाते चलते हैं ऐसी नाव जिसे कहीं बहना है, कहीं तैरना है और अंत में खुल जाना है – फिर बनाने के लिए।"[131]

व्यक्ति का जीवन काग़ज की नाव की तरह होता है। पानी में बहकर भी फिर से नाव बनने को तैयार हो जाती है और किनारों को छू लेना चाहते है। इस संग्रह में बासठ ग़जले है। इस ग़ज़लों की रचना तिथि, जनवरी 1991 से लेकर 11 अगस्त 1993 तक की है। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्रीय भावनाओं को परिलक्षित किया है। मनुष्य की फूट ड़ालने की भावना को लेकर एक ग़ज़ल में वह कहते है –

"फूल को खार बनाने पे तुली है, दुनियाँ।
सबको बीमार बनाने पे तुली है, दुनियाँ।।
मैं महकती हुई मिट्टी हूँ, किसी आँगन की।
मुझको दीवार बनाने पे तुली है दुनियाँ।।"[132]

फूट के कारण रिश्तों में दरारे पडने लगी है। इस प्रकार मानव की प्रवृत्ति को परिलक्षित किया है। राजनीतिक परिवेश को उजागर करते हुए कहते है –

"सिर्फ पत्थर ही नहीं देते किसी को ठोंकरें।
फूल न रोका मुझे तो फूल भी ठोकर लगा।।
इस रियासत के महल की इस कदर नीची छतें।
मैं उठा ही था कि उनके जाके मेरा सर लगा।।"[133]

राजनीति की गिरावट पर प्रकाश डालते हुए कहते है। राजनिति पत्थर ही नहीं फूल भी ठुकरा देते है। उसे देखने की इच्छा निर्माण नही होती है। आतंकवादीयों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"मेज पर रायफल है, चाकू हैं।
मेज से फूलदान गायब है।
खींच ली है सभी ने तलवारें।
और हाथों से म्यान गायब हैं।"[134]

आजकल आतंक इतना फैल रहा है कि मेज पर फूलदान के बजाय रायफल और चाकू है। नाव बनता हुआ काग़ज के द्वारा जीवन की अनेक घटनाओं को स्पष्ट किया है। इन्हीं घटनाओं ने उनके जीवन को अनेक मोड दिये हैं।

4.2.5.7 आग पर कंदील –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह सातवाँ है। सन् 1995 में अयन प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित किया है। इसमें कुल–मिलाकर अस्सी ग़ज़ले संकलित है। इस ग़ज़ल संग्रह को डॉ. कल्याण जिसे डॉ. कुँअर बेचैन दीदी कहते है और उनके पति डॉ. ब्रजमोहन स्वरुप शर्मा को समर्पित किया है। उन्होंने प्रथम पृष्ठ पर कहा है–

"ये है बलिहारी ज़माने की, किसे इल्जाम दें,

आग थी कंदील में, अब आग पर कंदील है।"[135]

प्रस्तुत गज़ल में अपने आंतरिक और बाहय रुपों को वर्णित किया है। जनवरी 1994 से दिसम्बर 1994 तक की ग़ज़ले रचि हुई है। इस संग्रह में जो कंदील है वह मनुष्य हृदय का प्रतीक है, जो प्रेम और स्नेह की आग से प्रज्वलित किया जायेगा। लेकिन आज कंदील सिर्फ देश और समाज का प्रतीक माना जाता है। डॉ. कुँअर बेचैन ने इस बारें कहते हैं – "कंदील लपटों में घिरा गया है। वह निरर्थक हो गया है। गृहस्वामिनी की दृष्टि में कौन है यह गृहस्वामिनी शायद इस गृहस्वामिनी का नाम घृणा है, शायद हिंसा है, शायद आक्रोश–मुद्रा है। यही तो जला रही है इस दुनिया के प्यारे कंदील को।"[136] अर्थात आज संपूर्ण देश आतंकवाद से घिरा है। बारुद भरे बादल आकाश में हैं। ऊपर आग है लेकिन नीचे संसार रुपी रंग–बिरंगी कंदील दिखाई देता है। जैसे –

"जेहन है, कंदील पग–पग पर नजर कंदील है।

जिंदगी में प्यार है तो हर सफर कंदील हैं।"[137]

अर्थात देश का हर व्यक्ति प्रेम और सौहार्दपूर्ण व्यवहार करे तो देश की प्रत्येक समस्या का समाधान हो जाएगा। यह संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन के भावनाओं की अभिव्यक्ति है। अपने देश को संदेश देना चाहते हैं कि देश में जो भ्रष्टाचार, आतंकवाद, खूनखराबा, आदि स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए प्रेम और आस्था की जरुरत है। देश को प्रेम की कडी में बांधकर

नफरत को मिटाने संदेश देते है। इस संग्रह की ग़ज़ले संवेदनशीलता और जीवन की अनुभूति को परिलक्षित करती हैं। आपसी संबंध टूटने की वेदना को भी उजागर किया है।

4.2.5.8 आंधियों में पेड़ –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह आठवाँ संग्रह है। इस संग्रह का प्रकाशन १९९६ में प्रगीत प्रकाशन, गाज़ियाबाद से किया गया है। इसमें कुल मिलाकर ४८ ग़ज़ले संकलित है। इन ग़ज़लों में रचना तिथि दी हुई है। परंतु रचना तिथियों का क्रम भिन्न–भिन्न है।

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में डॉ. कुँअर बेचैन ने एक पृष्ठ पर रेखाचित्र बनाकर उसे दुःख नाम दिया है। इसमें मनुष्य की विविध समस्याओं को उजागर किया हैं। इसका शीर्षक 'आधियों मे पेड' यह उनके जीवन की अभिव्यक्ति है । उन्होंने जीवन के अनेक संकटों को पार करके खड़े रहने की कोशिश की है। विविध ऋतुचक्रों में आपदाओं को सहते हुए जैसा पेड खड़ा रहता है उसी तरह डॉ. कुँअर बेचैन ने जीवन के तमाम सुख–दुःखों का सामना करके आपने जीवन को सफल बनाया है। इस बारें में ग़ज़लकार कहते है–

"जंगलों को आदमी से आज खतरे है बहुत।
शहर तो बसते गये पर घर ये उजडे हैं बहुत।।
सोचता हूँ अब परींदं घर बनायेंगे कहाँ।
अब के अंधी आधियों में पेड़ उजडे हैं बहुत।"[138]

समाज में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, भ्रष्टाचार आदि समस्याएँ देखकर भी लोग आँखो पर पट्टी बांधते है । समाज में बढती नफरत की भावना से वातावरण तनावपूर्ण बन जाता है। इसलिए लोगों में आपसी संबंधो में भी तनाव निर्माण हो रहा है। डॉ. कुँअर बेचैन ग़ज़ल में लिखते है –

"हर घडी काँटो के किस्से हर घडी चुभनों की बात।
अब तुम्हें कैसे बताएँ अपने ही गमलों की बात।।"[139]

आज समाज में उठने वाली आधियाँ अब हर घडी चूभने लगी है। इसी वज़ह से समाज में अनेक लोग त्रस्त हो गए है। हर जगह भ्रष्ट राजनीति और नेताओं से लोगों को धोखा मिल रहा है। इस बारे में ग़ज़लकार डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है –

"ये कालिख की जमातें क्या करेगी।

उजाला स्याह रातें क्या करेगी।।

घिरे है सब अँधेरी आँधियों में ।

ये कागज की कनाते क्या करेगी।।"[140]

राजनीति पर व्यंग्य करते हुए नेताओं की भ्रष्ट राजनिती को उजागर किया है। इस प्रकार से आँधियों के पेड ग़ज़ल संग्रह में अनेक घटनाओं, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याएँ, तत्कालिन समाज का वातावरण आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

4.2.5.9 आठ सुरों की बाँसुरी –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह उपर्युक्त आठ ग़ज़ल संग्रह के चुनिंदा ग़ज़लों का संकलन किया है। पाठकों की सुविधा के लिए यह ग़ज़ल संग्रह निर्माण किया है। इसका प्रकाशन 1997 में प्रगीत प्रकाशन प्रकाशन, गाज़ियाबाद उ.प्र. से किया है। इस बारे में डॉ. कुँअर बेचैन स्वयं लिखते है – "इन ग़ज़लों में आपको प्रेम , सौंदर्य, सामाजिक सेवा, सोच और फिक्र के साथ–साथ दर्शन की विविध मनोभूमियाँ भी मिलेगी।"[141] अर्थात समाज में प्रेम और स्नेह बनाए रखना और तत्कालीन स्थिति को उजागर करना ग़ज़लकार का उद्देश है।

4.2.5.10 आँगन की अलगनी –

डॉ. कुँअर बेचैन का दसवाँ ग़ज़ल संग्रह है। सन 1997 प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद (उ. प्र.) से प्रकाशित हुआ है। इसमें पचास ग़ज़लें संग्रहित है। इसमे 25 मार्च 1996 से 15 जुलाई 1996 तक रची रचनाओं को संकलित किया है। इसकी विशेषता यह है कि डॉ. कुँअर बेचैन जी के दोस्त एम.एन.एच कॉलेज के चित्रकला विभाग के प्रवक्ता प्रसिध्द चित्रकार डॉ. रत्नाकर ने इन ग़ज़लों के साथ चित्रों के द्वारा ग़ज़लों के अर्थ को स्पष्ट करनें का प्रयास किया है। प्रत्येक ग़ज़ल के नीचे रचना तिथि दी गई है।

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में विविध पहलू मिलते है। सुख–दुःख, प्रेम, रिश्ते, संवेदना, विरह आदि के साथ ग़ज़लकार ने स्वयं के अनुभूति को उजागर किया है। जैसे उन्होंने अपने सुख–दुःख और यातनाओं में समाज के अन्य लोगों की यातनाओं को भी चित्रित किया है।

जैसे– "मुद्दत से आज तक कभी इनकी नही बनी।

इस दिल में और दिमाग मे इतनी तन.तनी।।

सबकी है शख्सियत अलग जैसे कि रोशनी।

सूरज के साथ धूप है चंदा में चाँदनी।।"[142]

अर्थात प्रेम अनुभूति और अलौलिक प्रेम के आशय को परिलक्षित किया है। जिसमें रिश्तों का मिलाप नज़र आता है। इस वजह से व्यक्ति को आनंद मिलता है। इस संग्रह में महानगरों के साथ गाँव के रिश्तों का भी चित्रण किया है। आज के मानव की पीड़ा, त्रासदी, अपेक्षा भंग, शिकायत, व्यंग्य आदि के माध्यम से मनुष्य जीवन की विविध पहलुओं को उजागर किया है।

4.2.5.11 तो सुबह हो –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन का ग्यारहवाँ ग़ज़ल संग्रह है। इसका प्रकाशन 2001 में अमृत प्रकाशन, ग़ाजियाबाद के द्वारा किया है। यह संग्रह श्री.जगजीतसिंह को समर्पित किया है। जिन्होंने अपनी सुमधुर आवाज से लोगों के दिलों मे राज किया है। डॉ. बेचैन कहते है –

"करीब आये तो हमने यह भी जाना

मुहब्बत फासला भी चाहती है।।"[143]

मुहब्बत में विरह और फांसलो से और भी ग़हराई बन जाती है। 'तो सुबह हो' यह एक सवाल है और इसका जवाब हर व्यक्ति से अलग पाया जाता है। जैसे एक प्रेमी जो अपनी प्रेमिका याद में उसकी राह ताकता है वह कहेगा –

"सर रख के तीर याद में सो लूँ तो सुबह हो।"[144]

अर्थात हर व्यक्ति अपनी परिस्थिति के अनुसार इसका जवाब देना चाहेगा। इस संग्रह की प्रत्येक हिंदी की देवनागरी लिपि तथा उर्दू लिपि में लिखी गई। विभिन्न विषयों को लेकर लिखी गई है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए नई प्रेरणा देने वाले ग़ज़ल संग्रह है। अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। पाठकों कों संदेश देने के लिए वह कहते है –

"फकत क्या तेरी बातें हैं ग़ज़ल में।

जमाने भर की बाते है, ग़ज़ल मे।।

कभी बजती हुई शहनाईयाँ है।

कभी लौटी बारातें हैं ग़ज़ल में।"[145]

4.2.5.12 कोई आवाज देता है –

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन का बारहवाँ संग्रह है। इसका प्रकाशन साहित्य निकेतन बिजनौर द्वारा सन 2005 में हुआ है। इसमें कुल 144 ग़ज़लें संग्रहीत है। उनका यह नया ग़ज़ल संग्रह है। नए मूल्य, नए नीति तत्व, नए नियमों को लेकर इन ग़ज़लों की रचना की है।

'कोई आवाज देता है'। ग़ज़ल संग्रह कवि के मन में उठने वाले विचारों को दर्शाता है। बेचैन मन में निर्माण होने वाले विचार, अनगिनत घटनाएँ आदि को उजागर किया है। 'कोई आवाज देता है' यह विज्ञान और अध्यात्म को लेकर खोज करने वाली कला है। इस बारें में वह लिखते है –

"हकीकत ही बताता है, न अपना राज़ देता है।

मुझे मेरे ही अन्दर से कोई आवाज देता है।"[146]

कवि की बेचैन मन की मन की आवाज है। जिस में अंतर्मन उन्हें पुकारता है। इस संग्रह की ग़ज़लों में अध्यात्मिकता और प्रेम, सौंदर्य की अभिव्यक्ति हुई है।

4.2.5.13 आँधियों धीरे चलो –

डॉ. कुँअर बेचैन की यह रचना नवीनतम है। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से २००६ में प्रकाशित किया है। इसमें अध्यात्म, प्रेम, सौंदर्य एवं लोकमंगल की भावना यह मुख्य विषय है।

जैसे – "तुम्हारे दिल की चुभन भी जरुर कम होगी।

किसी के पाँव से काँटा निकाल कर देखो।।"[147]

अर्थात दुसरों के दुःखों को बदलकर अपने मन में सुख पाने की अभिलाषा रखी है। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यह संग्रह छन्दबद्ध, सामान्य भाषा, कल्पना, नए प्रतीक विधान, उपमाएँ, स्वाभाविक कथन से अंत्यत सफल हुआ हैं। 'आँधियों धीरे चलो' ग़ज़ल संग्रह पढने पर पाठक मंत्रमुग्ध हो जाता है। यही सबसे बड़ी सफलता ग़ज़लकार की मानी जाती हैं।

निष्कर्ष –

डॉ. कुँअर बेचैन जी के तेरह ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुए हैं । 'शामियाने काँच के' से 'आँधियों धीरे चलो' तक तेरह ग़ज़ल को, सामान्यजन की वेदना को, पीडा को, आह और कराह को प्रस्तुत करने का माध्यम बनाया है । ग़ज़ल साहित्य के संसार में डॉ. कुँअर बेचैन जी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है । लौकिक और अलौकिक प्रेम के परिप्रेक्ष्य में संवेदना पक्ष के अंतर्गत ग़ज़लों में प्रेम को अधिक स्थान दिया है । कुँअर बेचैन जी ने प्रेम संवेदना को जीवन की संजीवनी के रूप में चित्रित किया है । ग़ज़लों में राष्ट्रीय एकता एवं सामंजस्य को सशक्त रूप से प्रकट किया है । ग़ज़लों के माध्यम से धार्मिक प्रवृत्तियों के अंतर्गत अराजक तत्वों का पर्दाफाश किया है । नैतिक मूल्यों में जो बदलाव नजर आ रहा है उनकी अभिव्यक्ति ग़ज़लों द्वारा प्रस्तुत की है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने आर्थिक विषमताओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है । भारतीय समाज असमानताओं से भरा हुआ है । आर्थिक विषमता कैसी है उसका वर्णन ग़ज़ल के द्वारा किया है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने भारतीय लोकतंत्र, राजनीतिक विद्रुपताएँ, स्वार्थी तथा भ्रष्ट राजनीति आदि के माध्यम से भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है । आज युद्ध, आतंकवादी गतिविधियाँ देश की समस्या बन गई है । ग़ज़लकार ने ऐसी विषम परिस्थिति को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।

इस प्रकार डॉ.कुँअर बेचैन ग़ज़ल में व्यक्ति और समाज की अभिव्यक्ति हुई है । आशावाद और परिवर्तन की चाह मार्मिक रूप से प्रकट हुई है । आम आदमी का आक्रोश को व्यक्त कर दोषपूर्ण व्यवस्था को बदलने के लिए आम आदमी को जागृत करने का प्रयास किया है ।

4.2.6 डॉ. कुँअर बेचैन के कविता संग्रह –

4.2.6.1 नदी तु रुक क्यों गई –

यह कविता संग्रह डॉ. कुँअर बेचैन का प्रथम कविता संग्रह है, इसमें कुल–मिलाकर छब्बीस कविताएँ संग्रहित है। इसका प्रकाशन प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद सन 1996 हुआ है। इसमें प्रकाशित कविताएँ अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। अतीत की अनेक घटित घटनाओं को इन कविताओं में दर्शाया है। जिन्हें वे भूल नहीं सकते है। इस बारें मे डॉ. कुँअर बेचैन का मंतव्य है, –

“कविता में जब तक कवि का अनुभव शामिल नही होता। खाली शब्द जब रस से भरते है, विचार से भरते है, तब ही वे कविता बनाते है। इसलिए कवि और कविता दोनों एक रूप है।”[148] अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए कविताओं का सृजन किया है।

जैसे “तु मरहम देना
अपनी रिमझिम का
उन जलाशयों को, क्योंकि
दुनिया से सबसे ज्यादा धूप
उन्हें ही सहनी पडती है।
जो जलाशय है।”[149]

अर्थात इस कविता में मनुष्य की रूकी हुई प्रगति को परिलक्षित किया है। यहाँ पर कविताएँ कवि की भावनाओं को अभिव्यक्त करती है। इन कविताओं में भावनात्मकता और लयात्मकता भी दिखाई देती है।

4.2.6.2 शब्द–एक लालटेन –

प्रस्तुत संग्रह कवि का द्वितीय संग्रह है। इसका प्रकाशन सन 1996 में प्रगीत प्रकाशन,गाजियाबाद के द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कुल–मिलाकर 89 कविताओं का संग्रह है। इसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक–सांस्कृतिक और मनुष्य की संवेदनाओं को अपनी कविताओं के माध्यम से परिलक्षित किया है।

‘शब्द एक लालटेन’ अर्थात अंधकार को दूर करने वाला प्रकाश है । मनुष्य के हृदय में अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने प्रकाश याने लालटेन की आवश्यकता होती है। इसलिए इसे ‘शब्द एक लालटेन’ कहा है। इस बारें में एक कविता में वह कहते है –

“कविता ऐसा रास्ता है जिसके किनारों पर कितने ही भाव

कितने ही विचार शब्दों की लालटेन लेकर इसलिए खड़े रहते है कि कोई अंधेरे में न रह जाय...”[150]

इस संग्रह में सामाजिक, राजनितिक, पारिवारिक समस्या आदि के साथ भूख, गरीबी, बिमारी आदि का भी चित्रण किया है।

निष्कर्ष–

कविता कवि की भीतर की आवाज होती है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने कविता को भाव और विचार का सशक्त माध्यम माना है । 'नदी तुम रूक क्यों गई' इस काव्यसंग्रह में 'मानव' को नदी का प्रतीक मानकर उसके आहत होने का वर्णन किया है । मानव रूपी नदी आज आगे बढ नहीं पाती, उसकी प्रगति रूक गई है । इस संग्रह की कविताएँ मार्मिक घटनाओं का प्रकाशन करती है ।

'शब्द एक लालटेन' में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक; मानवीय संवेदनाओं के विविध आयामों को विशद करती है । अंधकार को दूर करने का काम लालटेन रूपी प्रकाश ही करता है । मानव के अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करना कवि का लक्ष्य है । प्रत्येक शब्द अमूल्य है, काव्यसंग्रह 'शब्द एक लालटेन' में प्रत्येक शब्द लालटेन के समान है ।

4.2.7 डॉ. कुँअर बेचैन का उपन्यास –

4.2.7.1 मरकत द्वीप की नीलमणि –

डॉ. बेचैन ने गीत, कविताएँ और ग़ज़ल लिखे है। लेकिन उन्होंने मरकत द्वीप की नीलमणि यह उपन्यास लिखकर गद्य विधा पर भी अपना अस्तित्व निर्माण किया है। यह उपन्यास सन 1996 में प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद के द्वारा प्रकाशित किया है। यह उपन्यास 108 पृष्ठों का है।

यह उपन्यास मानवीय मन की बदलती मानसिकता पर प्रकाश डालता है। मन अगर किसी व्यक्ति पर मर मिटता है। तो वह उसके प्रति आकर्षित हो जाता है। उस समय व्यक्ति के मन में जो स्थिति निर्माण होती है। उसे मार्मिक संवेदनशीलता से दर्शाया है। इस उपन्यास में एक कवि और उसकी प्रेमिका मणि की कहानी है। डॉ. बैचेन कहते है –"मणि इस वक्त मन हो रहा है कि तुम्हे मणि न कहकर ग़ज़ल के नाम से संबोधित करूँ। तु जानती ही हो मणि कि ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ प्रेमिका से बातचींत होता है। इस बहाने उस ईश्वर से भी बातचीत हो जाती है। जिसे हम बहुत प्यार करते है। सचमुच मणि, तुम ग़ज़ल हो ऐसी ग़ज़ल जो किसी भी परिभाषा में नहीं बाँधी जा सकती।"[151] अर्थात मनुष्य के मन में सृष्टि कें सभी रूप है और इसमें आत्मा – परमात्मा की अनुभूति होती है। प्रेम की महत्ता को दर्शाया है।

यह एक काल्पनिक उपन्यास है। इस उपन्यास में श्रृंगारिकता, गीतमय, अल्हाददायक भाषा, अध्यात्मिक प्रवृत्ति, सुख–दुःख, प्रेम की अभिलाषा आदि को उजागर किया है।

निष्कर्ष –

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने परमात्मा को नीलमणि के रूप में चित्रित किया है । कवि ने काल्पनिक प्रेमिका के द्वारा प्रशंसनात्मक संवाद का चित्रण प्रस्तुत किया है । उपन्यास में उस मन की संकल्पना की है, जो सदैव चंचल है कभी स्थिर नहीं रहता, कल्पना में ही सदैव मशगुल होता है । यह उपन्यास ज्ञानी और प्रेमी, भक्त और चिंतक का संवाद है ।

4.2.8 समीक्षात्मक ग्रंथ –

4.2.8.1 ग़ज़ल का व्याकरण –

प्रस्तुत गद्य साहित्य है। इसमें ग़ज़ल का व्याकरण दृष्टिगोचर होता है। सुक्ष्मता से अपने विचारों को व्यक्त किया है। ग़ज़ल का अर्थ, परिभाषा, बहर के नियम बहरों का हिंदी में नामकरन, अनुवाद और विवेचन आदि का सृजन किया है।

उपरोक्त किताब के बारे में डॉ. बैचेन का मंतव्य है – "जब किसी काव्य के क्षेत्र मे ग़ज़ल की बारिकियों से परिचित होना बहुत आवश्यक है। मुझे विभिन्न पुस्तकों से, अपने से बडे शायरों, गुरूओं, तथा अनुजों से ग़ज़ल की जो जानकारी मिली है। उसे नए–नए ग़ज़लकारों को देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। कुछ नई बातें भी जो मेरे भाव लोक और चिंतन प्रदेश से चलकर मेरे पास तक लाने का प्रयत्न किया है।"[152] अर्थात उर्दू की बहरों में संस्कृत के वर्ण, वृत्तों का और छन्दों का उपयोग किया है।

उपरोक्त रचनाओं से स्पष्ट होता है कि कवि सहृय और बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न है। मनुष्य मनोभावों को संवेदनशीलता के साथ सृजन करता है। अपने साहित्य से समाज में परिवर्तन लाना चाहता है।

निष्कर्ष –

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने 'ग़ज़ल का व्याकरण' नामक पुस्तक की रचना करके नव ग़ज़लकारों का पथप्रदर्शन किया है । इसमें ग़ज़ल के दृष्टिसे महत्वपूर्ण जानकारी, रचना

प्रक्रिया, बहरे आदि विद्‌यमान है । 'ग़ज़ल का व्याकरण' किताब से ग़ज़ल विधा निश्चित ही समृद्‌ध होगी ।

समन्वित निष्कर्ष–

'डॉ. कुँअर बेचैन के व्यक्तित्व और कृतित्व' का अध्ययन करने पर निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि उनके जीवन में बचपन से ही संकंटों ने दस्तक दिए है। अमीर घराने के एकलौते वारिस होने पर भी उन्होंने आर्थिक कठनाई का सामना किया है। जिस व्यक्ति ने दुःख देखा और भोगा है। उसके साहित्य में भी उसी की अभिव्यक्ति होती है। उनका नाम कुँअर है लेकिन हमेशा बेचैन रहे है। जीवन में कभी उन्हें चैन और विलास प्राप्त नहीं हुआ है। अपनी पीड़ा को समाज के लोगों में देखा है और दूसरे लोगों की दर्द को अपनें दर्द में महसूस किया है। बचपन में ही माता–पिता का साया सर से उठ गया था। बहन और जीजाजी के साथ उन्होंने पढाई की टयूशन और घर के सभी काम किए थे। फिर भी पढाई और खेलकूद में अग्रसर रहे है। 1947 में देश विघटन की बात का उनके मन पर ग़हरा असर हुआ। देश, समाज की घटनाएँ उन्हें साहित्य लिखने के लिए प्रेरित करने लगी उन्होंने देश के लोगों में प्रेम, आत्मीयता, भाईचारा निर्माण किया है। आज वे अपनें परिवार में सुखी जीवन बीता रहे है। पत्नी, पुत्र और पुत्री के साथ अतीत की दर्दभरी घटनाओं को कभी–कभी याद भी करते हैं।

डॉ. कुँअर बेचैन आज हिंदी साहित्य में एक ग़ज़लकार के रूप में इतने मशहूर हैं कि उनके गीत, कविताएँ और ग़ज़ले हिंदी फिल्म ज़ग़त में प्रसिद्‌ध हुए है। उन्हें अनेक देश, विदेश में सन्मानों से सम्मानित किया है। अनेक पुरस्कारों से पुरस्कारित किया है। उन्हें राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिंह और राष्ट्रपति श्री. डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्‌वारा सम्मानित किया है।

आज वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है और 'आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया' नामक संस्था के सदस्य रहे है। आज वे हिंदी साहित्य ज़ग़त के विद्‌वान माने जाते है। उन्होंने तेरह ग़ज़ल संग्रह, पाँच गीत संग्रह, दो कविता संग्रह और एक उपन्यास, साथ ही ग़ज़ल का व़्याकरण आदि रचनाएँ प्रकाशित की है। अपने ग़ज़लों के माध्यम से देश–विदेश में अपनी अलग पहचान बनाई है। ग़ज़लों के साथ ग़ज़ल का व्याकरण निर्माण करके नव ग़ज़लकारों का रास्ता सुलभ किया है। ग़ज़ल संग्रह के लिए देश–विदेश में अनेक सम्मान और पुरस्कार मिले

है। अनेक संस्थाओं का निर्माण करके देश में भाईचारा लाने का प्रयास किया है। साथ ही अनेक संस्था के वे सदस्य भी है। कोख, कसक, तांगे का घोडा आदि फिल्मों के गीत उन्होंने लिखे है। सूरसंकेत, त्रैमासिक पत्रिका के संपादक है। उनके ग़ज़लों में और अन्य साहित्य में सामान्य जनता की पीड़ा दुःख, दर्द आदि के साथ राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थिति को भी उजागर किया है। इसलिए उन्होंने सामान्य लोंगो में भी आत्मीयता प्राप्त की है। आपकी ग़ज़लें संवदेशील है ही, मार्मिक भी है और पाठकों के लिए प्रेरणादायी है।

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ल में व्यक्त सम्पूर्ण सामाजिक परिस्थिति पर विचार करने पर यह प्रतिपादीत होता है कि डॉ. बेचैन जी ने तत्कालिन समाज के परिवेश पर प्रकाश डालकर संवेदनाएँ प्रकट की है, साथ–साथ समाज की समस्याएँ उजागर कर वास्तविक सामाजिक परिवेश को विशद करते है । कुँअर बेचैन जी के विचारानुसार व्यक्ति को व्यक्ति से जोडना जरूरी बन गया है । समाज में आपसी रिश्तों से दरारे नजर आ रही है । बेचैन जी रिश्तों को जोडकर राष्ट्रीय एकात्मता को मजबूत करना चाहते है ।

इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन का व्यक्तित्व जितना मनमोहक, बहुआयामी है उतना ही आपका कृतित्व का संसार व्यापक और बहुआयामी है । अन्य विधाओं के साथ ही ग़ज़ल विधा के क्षेत्र में बेचैन की पहचान बन गई है । बेचैन जी के व्यक्तित्व में मानवता, स्नेह और प्रेम करूणा दृष्टिगोचर होती है । आपके ग़ज़ल संग्रहों में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, महानगरीय जीवन, देश विभाजन, प्रेम, प्रकृति चित्रण, आंतकवाद आदि समस्याओं को लेकर ग़ज़ल में अपने विचारों का मार्मिक रूप से चित्रण किया है । डॉ. कुँअर बेचैन जी के गीत संग्रह में अपनी काव्य की बहुमूल्य निधि का संपूर्ण परिचय देकर पाठक और श्रोता को मंत्रमुग्ध किया है । कविता संग्रह मे कविताएँ मानव की भावना तथा जीवन की घटनाओं का उजागर करती है । डॉ. कुँअर बेचैन एक सशक्त गीतकार ग़ज़लकार, उत्कृष्ठ साहित्यकार सेवंदनशील बहुआयामी प्रतिभा के धनी है और सहृदय वाले इंसान है।

4.3 समकालीन हिंदी ग़ज़ल और कुँअर बेचैन

प्रस्तावना –

हिंदी ग़ज़ल ने सन 1960 ई.के पश्चात महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । इस दौरान जो भी ग़ज़ल हिंदी में लिखी गई उसे 'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल' के नाम से अभिहित किया जाता है । आधुनिक युग के हिंदी ग़ज़लकारों ने व्यापकता के साथ वर्तमान जीवन शैली का वर्णन किया है । दु:ख, निराशा, अभाव, अवसाद के साथ अलगाववाद, संवेदनहीनता, सांप्रदायिकता, अमानवियता, आत्मकेंद्रीयता का चित्रण होने से हिंदी ग़ज़ल में सबसे अग्रीम पंक्ति में जिनका नाम लिया जाता है वह है दुष्यंत कुमार 'त्यागी' । दुष्यंत कुमार का प्रभाव तत्कालिन और परवर्ती कवियों पर रहा है । कवियों के ग़ज़ल विधा में योगदान के कारण ग़ज़ल की लोकप्रियता बढ़ रही है । हिन्दी ग़ज़ल अन्य विधाओं से अलग सर्वहारा वर्ग के अंतस की ओर अग्रसर होकर पथ का प्रतिनिधित्व कर रही है । ग़ज़ल के प्रत्येक शेर में अलग विचार निहीत होता है । अत: ग़ज़ल का वर्ण्य विषय विस्तृत और व्यापक है । हिन्दी ग़ज़लों में प्रेम के मर्मस्पर्शी चित्रण मिलते है । तो कही सत्ता एवं पूंजीपतियों द्वारा शोषित आमजन की पीडा की तीव्रानुभूति, कही जीवन–दर्शन को स्पष्ट करने वाले चिंतन – प्रधान तथ्य प्राप्त होते है । कुछ वर्षो से बाल साहित्य में ग़ज़ल ने जाल फैलाया है । बालग़ज़ल के नाम से बाल–साहित्य विकसित हो रहा है । शमशेर बहादुर सिंह एवं त्रिलोचन शास्त्री की ग़ज़लों का योगदान है । आज हिन्दी ग़ज़ल की लोकप्रियता बढ रही है । इसके मूल में दुष्यंत जी की प्रेरणा काम कर रही है । कथ्य और शिल्प की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल अपना अलग रंग बिखेरती है । आम आदमी की पीडा को वाणी देकर ग़ज़लकारों ने ग़ज़लों को जन–जन तक पहुँचाने का बहुमोल कार्य किया है । अपनी ग़जलों में सामाजिक राष्ट्रीय, प्रकृति– चित्रण एवं व्यंजना को वाणी देने की कोशिश की है । पति–पत्नी एवं प्रेमी–प्रेमिका के बीच होने वाली नोंक–झोंक से लेकर सत्ता के चाटुकार नेतागण, सरकारी अधिकारी, पाखंडी, ढोंगी नेता, गुंडावाद, महँगाई आदि पर ग़जलों के माध्यम से व्यंग्य किया है । हिन्दी गज़ल जन–चेतना से जुडी हुई है । हिंदी ग़ज़ल को हमारी संस्कृति, सभ्यता, और संघर्षशील जीवन से जोडने का काम ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल के द्वारा किया है । दुष्यंतकुमार और उनके समकालिन ग़जलकारों ने, अनुयायियों ने तथा

सहयोगियों ने आमजन की पीडा, दु:ख–दर्द, समस्याओं का निरूपण एवं प्रस्तुतीकरण सफलतापूर्वक किया है ।

4.3.1 समकालीन हिंदी ग़ज़ल की विशेषताएँ –

आधुनिक युग में हिन्दी काव्य बिधा के रूप में हिन्दी ग़ज़ल ने लोकप्रियता और सम्मान प्राप्त किया है । हिंदी ग़ज़ल को जनमानस में अनूठा स्थान मिला है । ग़ज़ल जन चेतना से जुड़ी हुई सफल विधा है । वर्तमान युग की हिन्दी ग़ज़ल आधुनिक जीवन के वास्तविकता से संघर्षरत एक श्रेष्ठ साहित्यिक अभिव्यक्ति है । सर्वहारा वर्ग से हिंदी ग़ज़ल जुड़ी हुई है । वह मानव जीवन की परिभाषा के रूप में अपनी सार्थकता सिद्ध कर रही है । जिसकी विशेषता निम्न प्रकार है –

4.3.1.1 प्रेमाभिव्यक्ति –

'ग़ज़ल' इस शब्द का अर्थ है – 'प्रेमिका से संवाद'। ग़ज़ल का काव्य रूप ऐसा है कि जिसका कथ्य प्रेम है । इसलिए ग़ज़ल को प्रेम की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता है । प्रेम की भावना अनन्यसाधारण और व्यापक है । **स्वामी रामतीर्थ** के मतानुसार, "सच्चा प्रेम सूर्य की तरह आत्मा के प्रकाश को फैलाता है । प्रेम का अर्थ है वास्तविक सौन्दर्य का दर्शन यह सत्य है कि जिसने कभी प्रेम नहीं किया उसे ईश्वर की प्राप्ति हो ही नहीं सकती ।"[153]

अल्लामा शिब्ली के अनुसार "गजल की तहरीक (प्रेरणा) इश्को–मुहब्बत के जज्बात से होती है । इसकी तरक्की की मंजील तसव्वुफ से शुरू होती है । इसकी तालीम की पहली अब्जद इश्को–मुहब्बत है ।"[154]

गज़लकारों ने ग़ज़ल में प्रेम भाव को व्यापक रूप से लिखित किया है । प्रेम के लौकिक और अलौकिक दोनो में प्रेम के महत्त्व को गज़लकारों ने ग़ज़ल के माध्यम से विशद किया है ।

4.3.1.2 कथ्य की व्यापकता –

कथ्य की दृष्टि से देखा जाए तो साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़लो में काफी व्यापकता परिलक्षित होती है । सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं अन्यान्य भावबोध के दर्शन होते है । हिंदी ग़ज़ल की संवेदनशीलता विकासोन्मुख रही है । ग़ज़ल प्रेम

की परिधी से बाहर निकली और सामाजिक पीड़ा, आधुनिक जीवन से संबंधित विसंगतियाँ, जटिलताएँ आदि ने ग़ज़ल का स्वरूप बदल कर नया रूप रंग दिया है । नई ऊर्जा का संचार होने से ग़ज़ल की लोकप्रियता दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है ।

4.3.1.3 संगीतात्मकता –

संगीत का मुख्य विषय स्वरों की साधना करना है । संगीत शब्दों से परे होता है, परंतु कविता संगीत के सुत्र में बाँधी जाती है और काव्य रसमय हो जाता है । प्रसिद्ध ग़ज़ल गायकों के कारण 'ग़ज़ल' की लोकप्रियता शिखर पर जा पहुँची है । कविता छंदबद्ध है और संगीत तालबद्ध होता है । दोनों का पारस्परिक संबंध है। दुरूह और कठिण तथा कठोर शब्दावली ग़ज़ल में न तो माधुर्य उत्पन्न करती है और न गायन के उपयुक्त होता है। स्वर और लय के बगैर शब्द अर्थ हीन बन जाते है । स्वर और लय ऐसे सोपान है जिस पर चलकर शब्द भावसौदंर्य प्राप्त करते है । गज़ल के शेरों की चुस्त कोमल पदावली ही उसकी बुनियाद है। गज़ल और संगीत का पारस्परिक संबध है—

"खुदा नहीं, न सही आदमी का ख्वाब सही ।
कोई हसीन नजारा तो है नजर के लिए ।"[155]

इस प्रकार ग़ज़ल में संगीत को भी स्थान प्राप्त हुआ है । संगीतात्मकता से ग़ज़ल मे नजाकत और नफासत आती है । संगीत के कारण मानव के मन–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है । गज़ल में संगीतात्मकता होने के कारण वह संप्रेषणीयता की दृष्टिसे प्रभावशाली बन गई है ।

4.3.1.4 संक्षिप्तता –

"संक्षिप्तता शेर की महत्त्वपूर्ण विशेषता है । संक्षिप्तता शेर का प्राणतत्व है । विद्वान काव्य में ग़ज़ल को ही सब से छोटी कविता मानते है । पाश्चात्य विद्वान वाल्टेयर के अनुसार, "गज़ल बहुत कुछ कहती है किन्तु गद्य से बहुत कम शब्दों मे संक्षिप्तता की विशेषता के कारण ग़ज़ल मे कुछ ऐसे गुण पैदा हो जाते है जिन्हें शेर और आर्ट के प्राण व आत्मा समझना चाहिए ।"[156] ग़ज़ल के प्रत्येक शेर में एक संपूर्ण कविता का जन्म होता है । सिर्फ दो पक्तियाँ किसी परिवेश, किसी मनोवैज्ञाानिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक,

सांस्कृतिक घटना, प्रेरणा आदि के लिए अपने आप में संम्पूर्ण विचार को अभिव्यक्त करने वाली कविता होती है 'ग़ज़ल' । छोटी सी छोटी बात को भी दो लब्जो में कहना कठिण होता है परंतु ग़ज़ल में वह अर्थवत्ता है जो बडे विचार कों भी संक्षेप में व्यक्त कर सकती है । ग़ज़ल के कई शेर मनुष्य जीवन के प्रेरणा स्त्रोत बने हुए है । वे चिरंजीव बने हुए है । जिस विचार को ज्ञानी प्रभावी ढंग से व्यक्त नहीं कर पातें, वह बात लम्बे चौडे भाषण से सम्भव नही; दार्शनिक किताबों से बात नहीं हो सकती उसी बात को बिल्कूल संक्षिप्तता के साथ प्रभावशाली रूप से पेश किया जा सकता है वह सिर्फ और सिर्फ ग़ज़ल के माध्यम से । गागर में सागर भरने की क्षमता ग़ज़ल में होती है –

"कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों ।"[157]

"सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए ।"[158]

दुष्यंत कुमार के ये शब्द, अपने विचार संक्षिप्तता के साथ प्रस्तुत हुए है । परंतु उसमें प्रभावोत्पादकता का गुण मौजूद है ।

4.3.1.5 विचार तत्व –

कौनसी भी विधा क्यूँ न हो उसमें विचारों का तत्व महत्त्वपूर्ण होता है । काव्य का प्राणतत्व विचार ही है । हिंदी के श्रेष्ठ कवि नीरज की मानवतावादी विचारधारा को एक शेर में देखा जा सकता है –

"अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए
जिससे इंसान को इंसान बनाया जाए ।"[159]

विचार का सौष्ठव निजी अनुभव, सुक्ष्म दृष्टि आदि पर निर्भर होता है । सहज एवं सामान्य बात को भी असामान्यत्व प्राप्त होता है ।

4.3.1.6 चित्रात्मकता –

चित्रकार अपने कुशलता से रेखाओं के माध्यम से सुंदर चित्र निर्माण करता है और कुँचले से रंग भरकर उसे अत्याधिक गरिमा प्रदान करता है । उसी प्रकार उचित शब्दों का चयन करके शाब्दिक चित्र निर्माण का कार्य ग़ज़लकार करता है ।

‘‘अकस्मात तुम बादल भैया कहाँ चले ।
प्यासी रह गई मेरी गैया कहाँ चले ।।
नन्हें –मुन्नों की जिज्ञासा देखो तो ।
हाथों में कागज की नैया कहाँ चले ।।
बिजली पानी चाह रही है तुम ठहरो ।
नाचेगी वह छम्मक–छैया कहाँ चले ।।
बिना बुझाये प्यास अरे इस धरती की
ठुमक ठुमक कर ता–ता थैया कहाँ चले ।।’’[160]

चित्रात्मकता कवि की प्रतिभा की कसौटी होती है । ग़ज़लकार अपने प्रतिभा तथा कल्पनाशक्ति के बलबुते पर ग़ज़ल में चित्रात्मकता लाता है ।

4.3.1.7 चिंतनशीलता –

भाव की दृष्टि से चिंतन प्रधान हिंदी ग़ज़लों का अपना महत्व है । चिंतन के विविध पहलू हो सकते है । चिंतन अध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक आदि, परिस्थिति के अनुकूल और बदलते जीवन मूल्य के संदर्भ में भी हो सकता है । कवि या दार्शनिक अपने अनुभव से प्राप्त ज्ञान के आधार पर चिंतन के मौलिक अंश प्रस्तुत करते है । चिंतन प्रधान ग़ज़ले समाज को सोचने के लिए मजबूर करती है । साथ–साथ आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है ।

‘‘खत्म होती जा रही है जिंदगी,
आज खुद को खा रही है जिंदगी ।
आदमी अब आदमी से दूर है,
मरसिया सा गा रही है जिंदगी ।’’[161]

ग़ज़ल के संदर्भ बदलते जा रहे है । ग़ज़ल का चिंतन पक्ष व्यापक है । समाज की, देश की समस्याऔं से अवगत करके ग़ज़लकार मनुष्य को सोचने के लिए प्रेरीत करता है । चिंतन से मनुष्य सकारात्मक कार्य में सक्रीय हो जाता है ।

4.3.1.8 भावाभिव्यक्ति –

साहित्य मनुष्य का दर्पण होता है । ग़ज़ले मानव के अंतर्मन को उद्घाटित करती है । दिल के मामलात ग़ज़ल में पेश होते है –

“इक लफ्ज मोहब्बत का अदना से फसाना है,

सीमेट तो दिले आशिक, फेले तो जमाना है ।”[162]

‘भाव’ एक व्यापक शब्द है । ग़ज़ल सीधे पाठकों को प्रभावित करती है और उसमें हदय पर असर करने की क्षमता है । ग़ज़ले रसों की अनुभूति कराने का सामर्थ्य रखती है । आज हर एक व्यक्ति स्वंय का बोझ खुद उठाने के लिए मजबूर है । इस भावविव्यक्ति का उदाहरण दृष्टव्य है—

“अपना है और अपनों से अनजान है शहर,

सच पूछिये तो चेहरों की पहचान है शहर ।

जीता है जिसमें आदमी मुर्दो की जिन्दगी,

कुछ लाख जिन्दा लाशों का शमशान है शहर ।”[163]

मनुष्य के आपसी रिश्ते अत्यंत संकुचित बन रहे है । ग़ज़लों मे मनुष्य के अनेक रहस्यों को उद्घाटित किया जा रहा है । मनुष्य के मन के भावाभिव्यक्ति में ग़ज़ल एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर आ रही है ।

4.3.1.9 काल्पनिकता –

कल्पना ही कवि की प्रतिभा का प्रमाण है । हिंदी के ग़ज़लकारों ने अपने ग़ज़लों को कल्पना के माध्यम से खुबसूरत बनाया है । ग़ज़ल में कल्पना के आधार से मानवीकरण, प्रतीकात्मकता, बिम्ब प्रस्तुत किए है । दुष्यंतकुमार की कल्पना शक्ति ग़ज़ल को मौलिकता प्रदान करती है । उन्होंने काल्पनिक प्रतिकों का प्रयोग करके ग़ज़लों को सजाया–सँवारा है + उदाहरण उस धारणा की परिपुष्टि के हेतू प्रस्तुत है –

"कही पै धूप की चादर बिछा के बैठे गए

कही पै शाम सिरहाने लगा के बैठे गए ।"[164]

4.3.1.10 दु:खों की अभिव्यक्ति –

ग़ज़ले दु:ख और दर्द को व्यक्त करती है । शेले के विचारानुसार "Our sweetaste songes are those that tell the saddest thought" अर्थात वही मधुर गीत है जो दु:ख को व्यक्त करते है । शृंगार के संयोग पक्ष की अपेक्षा वियोग को अधिक स्थान दिया है ।

4.3.1.11 लोच –

ग़ज़ल की महत्वपूर्ण विशेषता 'लोच' है । ग़ज़ल आरम्भ में प्रेमानुभूति को अभिव्यक्त करती थी । आज ग़ज़ल के अनेक विषय है जैसे सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक, आर्थिक आदि । हर बात को प्रस्तुत करने में ग़ज़ल समर्थ है ।

4.3.1.12 विषय विस्तार –

ग़ज़ल हर विषय को अपनाकर अभिव्यक्त होती है । मानवीय संवेदनाओं के साथ सामाजिक राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक ही नहीं अपितु समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र को भी अपने में समाए हुए है ।

निष्कर्ष –

साहित्य की अन्य विधा की तरह ग़ज़ल विधा अपने सामाजिक परिवेश का दर्पण है । ये वे परिस्थितियाँ है जो ग़ज़ल की प्रमुख विशेषताएँ बदलती रही है । इनकी बदलती दिशाओं के साथ–साथ ग़ज़लकार का अपना दृष्टिकोन परिलक्षित होता है । यदि यह दुनिया और परिस्थियाँ कवि के मन पर तथा काव्य पर प्रभाव डालती है वैसे ही कवि और उसका काव्य समस्त संसार और साहित्य पर अपनी अमीट छाप छोडता है । इससे जगत् में सन्तुलन बनाएं रहता है । यही कारण है कि मीर की ग़जलो में मजबुर आम आदमी का आक्रोश सुनाई देता है, सौदा अपनी ग़ज़लों के माध्यम से जहर उगलते है , गालिब अपनी मनोवेगों को ग़ज़ल तथा शेर से अभिव्यक्त होते है । महायुद्ध के उपरांत भारतीय भाषा में दो समुह नजर आते है । जो जीवन और उसकी कटूता से पलायन करते है और छायावाद के नशे में रहते है, जीवन के नए–नए संकटों से संघर्ष करने का मन बनाते है । जो कविगण अपना नया संसार बनाए हुए

है उनमें हसरत, जिगर नाम आता है । हिंदी में महादेवी वर्मा, पंत, प्रसाद जो सच्चाई से संघर्षशील रहते है ।

ग़ज़ल के शेरो में सुन्दर बिखराव से ग़ज़ल की गरिमा और अधिक बढ़ गई है । उर्दू ग़ज़ल पर यह आरोप लगाया जाता है कि उसमें इश्क–प्रेम के सिवा कुछ नहीं होता है । ग़ज़ल मानसिक मनोरंजन की ही वस्तु है । परंतु यह सत्य नहीं है ग़ज़ल में प्रेम–निरूपण, प्रेमिका का सौंदर्य चित्रण, श्रृंगार चित्रण जैसे विषय बहुत चित्रित हुए है । गुलाब, फूल, तारा, चाँद केवल प्रेमिका ही नही होती ,मित्र और पुत्र–पुत्री भी हो सकती है । वियोग अपने प्रियजन की मृत्यु को भी कह सकते है । उसका परिवेश बहुत व्यापक है । ग़ज़लों की इन्ही विशेषताओं के कारण ग़ज़ल सभी भारतीय भाषाओं में ही नही विश्व की अन्य भाषाओं में स्थान पाने लगी है ।

हिंदी ग़ज़ल वास्तविकता की राह पर चल रही है । उसे काल्पनिक दुनिया के बदले यथार्थ की भाव–भूमि पर चलना अच्छा लगता है । यही उसकी की आधुनिकता का प्रमाण माना जाता जा सकता है । आधुनिक चेतना का निकष वास्तविकता एवं सौंदर्य बोध है । जीवन की सच्चाई की वह आस्थावान अनुभूति है, जो विश्वास करती है कि जीवन निरस नही, रसपुर्ण है, जीने के लिए है । वस्तुतः विशेषताओं के आधार पर यथार्थ की पृष्ठभूमि आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल ने स्वीकार की है ।

4.3.2 समकालीन ग़ज़लकार और कुँअर बेचैन —

साठोत्तरी ग़ज़ल में कुँअर बेचैन ने अपना विशेष स्थान निर्माण किया है । डॉ. कुँअर बेचैन हिंदी के लोकप्रिय ग़ज़लकार है । उन्होंने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से मानवी जीवन के विविध पहलुओं को उद्‌घाटित कर भाव–भावनाओं को वास्तविक रूप में प्रकट किया है ।

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने ग़ज़ल में अपनी अलग काव्य–प्रतिभा और समिक्षात्मक दृष्टिकोण को स्थापित किया है । अनेक साहित्यिक समीक्षक बेचैन जी को 'प्रतीक एवं बिंब का कवि' कहते है । दुष्यंत के पश्चात हिंदी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल को समृद्‌ध बनाया है । डॉ. कुँअर बेचैन ने इस क्षेत्र में अपने विविध ग़ज़ल संग्रह के माध्यम से हिंदी ग़ज़ल क्षेत्र में अग्रीम पंक्ति में स्थान प्राप्त किया है । अन्य ग़ज़लकारो में गोंविद गुलशन, नित्यानंद तुषार, चंद्रसेन विराट, डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल, विनोद तिवारी, चेतन आनंद, मंगल नसीम आदि के नाम प्रमुख है ।

कुँअर बेचैन जी के विविध ग़ज़ल संग्रहो में से कुछ गज़ले प्रेम पर आधारित है । कुछ सामाजिक, राजनीतिक, दर्शनिकता से जुड़ी है । ग़ज़ल में अपनी जीवनानुभूति होती है तो कभी दूसरों के अनुभव को व्यक्त किया जाता है । डॉ.कुँअर बेचैन जी ने अनिल 'असिम' के ग़ज़ल संग्रह 'मरूथल में झील' की भूमिका में ग़ज़ल के बारे में कहा है– "इन दिनों हिंदी – कविता के क्षेत्र में ग़ज़ल का पदार्पण अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसका मूल कारण यह है कि वर्तमान ग़ज़ल में जहाँ एक ओर व्यक्ति–मन के अनुभवों को व्यक्त करने का सामर्थ्य है, वही उसमें जीवन यथार्थ के विविध पहलूओं को समेटने की शक्ति भी है । अब ग़ज़ल पुराने प्रतीकों, बिंबो एवं भाषा से बाहर निकल आई है, किंतु छंद–विधान और अपनी अन्य विशेषताओं को उसने नहीं छोडा है । हाँ, आज की ग़ज़ल अपने समय से अधिक जुड़ी हुई है और पूरे समाज को दृष्टि में रखकर उसकी फिक्र से बावस्ता है ।"[165]

डॉ. कुँअर बेचैन ने मानवतावादी जीवन–द्दृष्टि को महत्व दिया है । दुसरों के काम आने के लिए वे हमेशा तैयार रहते है । इसलिए उनकी ग़ज़ले मानवतावादी स्वर मुखरित करती है । आपने साक्षात्कार में यही स्पष्ट किया है –"हमारी कविता का स्वर मानवतावादी है । हम अपनी कविताओं में कहीं साम्प्रदायिक नहीं बने । यह साम्प्रदायिक उस अर्थ में नहीं कह रहे जिस अर्थ में लोग समझते है । हम तो इंसान को टटोलते है, वह किस बिरादरी का है, किस मज़हब का है, ये हमारी शायरी में नहीं है । हमारी कविता में व्यक्ति प्रमुख है चाहे वह किसी भी धर्म का मानने वाला हो । दूसरा प्रेम हमारी कविता का मूल विषय है । यहा व्यक्तिगत प्रेम भी हो सकता है, परमात्मा के प्रति भी प्रेम हो सकता है, समाज के प्रति भी प्रेम हो सकता है ।"[166]

डॉ.कुँअर बेचैन आज के समय में समर्थ ग़ज़लकार है । भाषा की दृष्टि से मधुरता और अपने कोमल भाव के कारण ग़ज़ल को मधुरिम सौन्दर्य प्राप्त हुआ है । डॉ.बेचैन का कथन है– – "कवि या शायर कभी–कभी अपनी भाषा खुद तैयार करता है, नए–नए शब्द गढ़ता है, भाषा को नया संस्कार देता है ।"[167]

कुँअर बेचैन की ग़ज़लो में ऐतिहासिक प्रतीकों का प्रयोग कम मात्रा में हुआ है परंतु उन्होंने जीन प्रतीकों का प्रयोग किया है वह अंत्यत सटीक और अर्थपूर्ण है । कुँअर बेचैन के

ग़ज़ल में गौतम बुद्ध ऐतिहासिक प्रतीक के रूप में ग़ज़ल में प्रयुक्त हुए है । गौतम बुद्ध का नाम सुनते ही प्रज्ञा, सत्य, अहिंसा, करूणा का भाव उभरकर आता है । बेचैन जी ने पेड़ रदीफ़ से जो ग़ज़ल कही है, ग़ज़ल में गौतम बुद्‌ध शब्द से पेड की दानशीलता प्रकट होती है । पिपल के पेड की छाया में बुद्‌ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था । बडे–बडे सज्ञनों को पेड की छाया में आत्मज्ञान हुआ है । अतः कुँअर बेचैन गौतम बुद्‌ध को प्रतीक के रूप प्रयुक्त करते है –

"कितने ही गौतम बुद्धों को इनसे अनुपम ज्ञान मिला
बरगद जैसे, पीपल जैसे, कैसे -कैसे ज्ञानी पेड ।"[168]

समाज में आम आदमी की समस्याएँ दिन–ब–दिन बढ रही है । सर्वहारा वर्ग के पीडा को कुअँर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है । कुँअर बेचैन के ग़ज़लों के कथ्य के बारे में डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ने कहा हैं कि –"इन्होंने अपनी ग़ज़लो में प्रेम में बहाए जाने वाले अश्रुओं एवं हृदयविदारक आहों को कथ्य बनाने के बजाय पेट की उस अग्नि को कथ्य बनाया है, जो वर्तमान अर्थव्यवस्था में रोटी के लिए जूझते हुए सच्चे मानव को सिर से लेकर पैर तक जलाती जा रही है ।"[169]

सर्वहारा वर्ग का दर्द, शोषण, अत्याचार आदि का वर्णन कुअँर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के द्‌वारा किया है । आज के समाजिक वातावरण को उजागर करते हुए वे कहते है—

"कैसे बताएँ हम तुम्हें क्या–क्या है रामफल
आँसू के एक गाँव का मुखिया है रामफल
मारा है जिसको रोज महाजन के ब्याज ने
बेबस से एक गरीब का रूपया है रामफल
जब जी किया उधेड दी चाकू की नोक से
गोया फटी कमीज की बखिया है रामफल
जिसको दबा के सो रहे हैं सर बड़े–बड़े
महलों के खानदान का तकिया है रामफल ।"[170]

कुँअर बेचैन जी के ग़ज़लो में विदेशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है । ग़ज़ल का सम्बन्ध अरबी और फारसी से रहा है । इसलिए अरबी फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग

प्रचुर मात्रा में हुआ है । डॉ. बेचैन ने हिन्दी ग़ज़ल की विशेषताओं का विस्तृत रूप वर्णन किया है –“हिन्दी ग़ज़ल वह ग़ज़ल है जिसमें या तो संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग हो या फिर बोलचाल की हिन्दुस्तानी का प्रयोग हो । हिन्दी ग़ज़ल की मुख्य बात यह है कि उसमें चाहे बोलचाल की उर्दू में प्रचलित शब्दों का प्रयोग हो किन्तु सामासिकता में उर्दू–फारसी पद्धति का प्रयोग न होकर हिन्दी की प्रवृत्ति के दर्शन हों । उदाहरण के लिए उर्दू में ‘शामों–सहर’, ‘दिले नादां’ जैसे शब्दों का प्रयोग उपयुक्त रहेगा किन्तु हिन्दी ग़ज़ल में इन्हें ‘शाम और सहर’, ‘नादान दिल’ आदि रूप में प्रयुक्त किया जाएगा ।”[171]

निष्कर्ष –

यहाँ प्रतीत होता है कि डॉ.कुँअर बेचैन का हिंदी ग़ज़ल में अनन्यसाधारण योगदान है । कुअँर बेचैन के हिंदी ग़ज़ल में भावों की सहजता, मौलिक अभिव्यक्ति, कल्पना, सांकेतिकता, भाषा की सरसता और सरलता है । कुँअर बेचैन की गज़लो में प्रेम, सौदर्य एवं यौवन के व्यक्तिगत भाव और ज्ञान–विज्ञान, समाज, राजनीति, समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, श्रम–उद्योग, पूँजीवादी व्यवस्था, आंतरराष्ट्रीय, समाष्टिवादी भावधारा विद्‌यमान है ।

हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार के पश्चात हिंदी ग़ज़ल के विकास में अनेक ग़ज़लकारों ने अपना –अपना योगदान देकर हिंदी ग़ज़ल को प्रतिष्ठा प्रदान की है । जिनमें गोपालदास सक्सेना ‘नीरज’, जहीर कुरेशी, चंद्रसेन विराट, कुँअर बेचैन, सुर्यभानु गुप्त, ज्ञानप्रकाश विवेक, हनुमंत नायडू, रोहिताश्व अस्थाना, शेरजंग गर्ग, डॉ.उर्मिलेश, सुरेन्द्र चतुर्वेदी आदि का नाम उल्लेखनीय है ।

4.3.3 हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकार –

ग़ज़ल का साठोत्तरी युग अनेक समस्याओं का युग रहा है । ग़ज़ल में सामान्य व्यक्ति के दुःख दर्द को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है । ग़ज़ल ने हर शोषित व्यक्ति के दुःख दर्द को भाषा दी है । जनजीवन की विसंगतियों एवं विद्रुपताओं को, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को पहचानकर इसे जन–जन तक पहुँचाने का काम ग़ज़ल के माध्यम से किया हुआ है । सर्वप्रथम दुष्यंत कुमार ने अपने ग़ज़ल के माध्यम से आम आदमी की तकलीफ को व्यक्त किया है ।

ग़ज़ल सम्राट **दुष्यंत कुमार** का जन्म उत्तरप्रदेश, जिला बिजनौर के राजपुर नवादा नामक ग्राम में 1 सितम्बर 1933 को हुआ । दुष्यंत कुमार ने हमेशा सामान्य व्यक्ति, समाज के बारे में सोचा । उन्हें जन के दुःख, दर्द, पीडा को समझकर उसके संकटों का निवारण करने में संतोष मिलता था ।

ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाने वाले ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार की ग़ज़ले हिंदी साहित्य की मौलिक निधी है । प्रारंभिक दौर में गीत लेखन किया । सर्वप्रथम 'सूर्य का स्वागत' और 'साये में धूप' तक की यात्रा सफल रही है । कवि दुष्यंत ने दिल को बहलाने के लिए ग़ज़लों का सृजन नहीं किया बल्कि सर्वहारा वर्ग की पीडा को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । इनकी रचनाओं की संख्या बहुत अधिक नहीं हैं परन्तु मौलिकता एवं गुणवत्ता से असाधारण है । 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेर', 'जलते हुए वन का वसन्त', और 'साये मे धूप' यह काव्यसंग्रह लोकप्रसिद्ध है । दुष्यंत कुमार के बारे में विचार करते हुए डॉ. कुअँर बेचैन ने लिखा हैं –"वास्तव में दुष्यंत कुमार की ग़ज़लो में जो आग हैं, वह उस व्यक्ति की आग है, जो सामाजिक विसंगतियों एवं विद्रुपताओं को ध्यान से देखकर और समाज के बीच रहकर उसकी पीडा.को पूर्णरूपेण समझते हुए भीतर ही भीतर सुलग रहा है । इतना ही नहीं वैयक्तिक भावना को सामाजिक चेतना से जोडने का महत्वपूर्ण कार्य भी दुष्यंत जी ने अपनी ग़ज़लो के माध्यम से किया है, इसलिए अत्याधुनिक काल में उनके अनुयायियों का काफिला लंबा होता चला गया है । आज हिंदी ग़ज़ल का जो बोलबाला है, उसके मूल में दुष्यंत जी की प्रेरणा ही कार्य कर रही है ।"[172]

दुष्यंत कुमार जी ने ग़ज़ल के माध्यम से हिंदी गजल को परंपरागत प्रेम तथा सौंदर्य के दायरे से निकालकर जीवन के समसमायिकता से जोडने का महत्वपूर्ण कार्य किया है । ग़ज़ल दुष्यंत के अंतर्मन में बस गई थी । अत: इनकी ग़ज़लो में जीवन का बाहय पक्ष होने पर भी असली रंग वही का वही है । आज के सामान्य जन की समस्या का अत्यंत स्वाभाविक रूप से दुष्यंत कुमार ने अभिव्यक्ति दी है –

'कहाँ तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए,
कहा चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए ।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,

चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए ।'[173]

दुष्यंत कुमार जी ने ग़ज़लो में जनसामान्य की पीडा से सहानुभूति दर्शाते हुए जीवन की उस विकृतियों पर अपनी पैनी दृष्टि डालकर उसकी पोलखोल दी है । पूँजीवाद के दुश्चक्र में आज का आदमी शिकार बन रहा है, उसे इससें आजादी मिलने की संभावना कम है, इसलिए दुष्यंत जी कहते है –

"कैसी मशाल ले के चले तिरंगी में आप

जो रोशनी थी, वह भी सलामत नही रही ।"[174]

दुष्यंत कुमार जी ने शोषक और शोषित वर्ग का संघर्ष को उजागर करने का प्रयास किया है । पूँजीवादी व्यवस्था में आम आदमी की जीवन कठिनाईयों से गुज़र रहा है । अभाग्रस्तता, आर्थिक विषमता से जीवन जीना दुष्कर हुआ है ।

"दुष्यंत कुमार ने जहाँ जैसा ठीक समझा वैसी ही भाषा का प्रयोग किया । उनकी अधिकांश ग़ज़ले हिंदुस्तानी में है, तत्सम शब्दावली में भी है, किन्तु उनकी तत्सम शब्दावली बड़ी ही सहज है ।"[175] दुष्यंत कुमार जी की भाषा ऐसी हैं कि आम आदमी अपनी जुबान समझकर अपना सके ।

चंद्रसेन विराट जन्म 3 दिसंबर, 1936 को मध्यप्रदेश के इंदौर नगर के पास बलवाडा गाँव में हुआ । कृष्णकांत दुबे के अनुसार– "मन मालवा के सीमान्त का और मातृबोली मराठी इसलिए इस कवि में वह सब कुछ है जो बलवाड़ा में है । एक सरल ग्रामीण मन, मुक्त हँसी, भरपूर तन–मन, आवेग बल से भरी सोच और जिज्ञासू आँखे चंद्रसेन 'विराट' की सही पहचान है ।"[176] विराट जी को बचप़न से ही अध्ययन में रूचि थी । विरोधी परिस्थिति होने पर भी विश्वास को टूटने नहीं दिया और अपनी पढ़ाई जारी रखी । विराट जी मृदु तथा कोमल स्वभाव के है । उन्होंने कवित्व शक्ति को स्वाभाविक रूप से प्राप्त किया । विराट जी में सहजता, अनुभव, गंभीरता, संयम, आडंबरहीनता आदि उनके स्वभाव के गुण दिखाई देते है । विराट जी ने गरीबी को बहुत नजदीकी से देखा है । उस समय की गरीबी ने विराट जी के मन पर अमिट छाप छोडी जो उनके गीत गज़लों में प्रतिबिंबित होती है –

"जो दर्द ने कहा सब वह अश्रु ने सुना है,

हमने उसी कथन को तो गीत में बुना है,

जो जिंदगी में भोगा जो कुछ यहाँ दिखा है,

आपत्ति है तुम्हें पर हमने वही लिखा है ।"[177]

डॉ.चंद्रसेन विराट ने अनुभवजन्य परिस्थिति को स्पष्ट करते है । जो देखा है अनुभव किया है उसे उन्होंने उजागर किया है । आत्मविश्वास के साथ ग़ज़ल के माध्यम से जीवन की सच्चाई की समाज के सम्मुख लाने का सफल प्रयास किया है ।

चंद्रसेन 'विराट'जी ने गीतकार के साथ–साथ हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान निर्माण की है । विराट जी ने हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा को नए पहलू प्रदान किए है । 1970 ई.में 'निर्वसना चाँदनी' उनका पहला हिंदी ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुआ । 'निर्वसना चाँदनी', 'आस्था के अमलतास', 'कचनार की टहनी', 'धार के विपरीत', 'परिवर्तन की आहट' 'लडाई लंबी है', 'न्यायकर मेरे समय', 'हमने कठिन समय देखा है' चंद्रसेन विराट की ग़ज़ल की सृजन यात्रा का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इनका भावुक और संवेदनशील कवि मन सेवा के आवरण में भोगवादी प्रवृत्ति तथा न्याय के नाम पर घोर अन्याय को देखकर विद्रोह से निर्माण पीड़ा, वैयक्तिक दु:ख–दर्द से अधिक महत्त्वपूर्ण है । चंद्रसेन विराट लिखते है –

"जो पकडाया नहीं चोर पर बाकी क्या बदकार नही

चोर बहुत है इस समाज में सारे साहूकार नहीं

काले सी दों बीच दलाली काली खूब कमाई की

मुँह काला कर गई समूचा जिसका है परिवार नहीं

अलग अलीबाब हर दल का, चोर वहीं चालीस जुडे.

चोर मचाये शोर सियासत ही क्या, चोर बाजार नहीं

सारे मौसेरे भाई है केवल झंडे अलग अलग

जाहिर नही हुई मल्कारी तो क्या है मक्कार नहीं?" [178]

चंद्रसेन विराट ने राजनीति पर व्यंग्य कसा है । जो पकड़ाया जाता है वे चोर है फिर भी समाज में चोर बहुत है । जो दलाली करते हुए अर्थाजन करते है । राजनीति में अलिबाबा

और चालीस चोर जैसी स्थिति बनी हुई है । राजनेता एक दूसरे से मिले–जुले है । मिल जुलकर देश को बरबाद कर रहे है ।

गोपालदास सक्सेना 'नीरज' साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल के आकाश में अपना वैशिष्टयपूर्ण स्थान निर्माण किया । 1960 के बाद निरंतर लोकप्रियता के शिखर पर रहने वाले 'नीरज' जी ने व्यक्तिगत और समष्टिगत दोनों ही प्रकार की पीडा का चित्रण किया है । इन्होंने ग़ज़ल को 'गीतिका' नाम देकर सम्बोधित किया है । सन 1987 में 'नीरज की गीतिकाएँ' नाम से इनकी ग़ज़ले प्रकाशित हुई है । सन 1990 में 'नीरज की पानी', 1991 में 'कारवाँ गुजर गया', इन काव्यसंग्रह में ग़ज़ले सम्मिलित है ।

'नीरज' जी के ग़ज़लो में राजनीति के क्षेत्र में पनपती नीति–हीनता, सामाजिक विषमता, सांप्रदायिकता, अलगाववाद, आतंकवाद आदि का चित्रण प्रस्तुत हुआ है । देश और समाज का यथार्थ प्रस्तुत करते हुए सांप्रदायिक सद्‌भाव बनाए रखने की दृष्टि से नीरज जी कहते है –

"अब तो इक ऐसा वरक मेरा–तेरा ईमान हो,
इक तरफ गीता हो, जिसमें इक तरफ कुरआन हो ।
काश ऐसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में,
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमजान हो ।
मजहबी झगड़े ये अपने–आप सब मिट जाएँगे,
और कुछ होकर न गर, इंसान बस इंसान हो ।
अपना ये हिन्दोस्ताँ होगा तभी हिन्दोस्ताँ
हाथ में हिंन्दी के उर्दू का कोई दीवाना हो ।"[179]

नीरज के ग़ज़लो में स्वाभाविक रूप से और सहज तथा सरस शब्दों का चयन हुआ है और उनका प्रयोग अनूठा बन पडा है । दुरूह शब्दों के बजाय बोलचाल की भाषा को अपना कर ग़ज़ल को बोध की दृष्टि से सहज बनाया है ।

हिंदी ग़ज़ल को समृद्‌ध बनाने में **सूर्यभानु गुप्त** जी का योगदान महत्वपूर्ण है । सूर्यभानु गुप्त का जन्म 22 सितम्बर 1940 में फतेहपुर जिले के नाथूखेडा ग्राम में हुआ । गुप्त जी ग़ज़लो की विषय वस्तु व्यापक है । इन्होंने हिंदी ग़ज़ल को जन–जन तक पहुँचाने के लिए और

लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से 'हिंदी एक्सप्रेस' साप्ताहिक में 'लोकप्रिय ग़ज़ले' नामक स्तम्भ चलाया जो हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा में 'मिल का पत्थर' है ।

गुप्त जी की ग़ज़लो ने जीवन के अनेकानेक पहलुओं को स्पर्श किया हुआ है । वर्तमानकालिन रिश्तों के बदलते अंदाज और उससे उभरती रिश्तों की जटीलता तथा समस्या को सूर्यभानु गुप्त जी ने परख लिया है । वे लिखते है—

"रिश्ते गुजर रहे हैं लिये दिन में बत्तियाँ
मैं बीसवी सदी की अँधेरी सुरंग हूँ ।
माँझा कोई यकीन के काबिल न रहा
तनहाइयों के पेड से अटकी पतंग हूँ ।"[180]

सुर्यभानु गुप्त जी की ग़ज़लो में हिंदी के साथ उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है । कही–कही अँग्रेजी शब्दों को अपनाकर नए ढंग की ग़ज़ल प्रस्तुत करने की कोशिश की है । परंतु ग़ज़लो के नियमों का अनुसरण किया है । मौलिकता की दृष्टि से कथ्य और शिल्प इनकी ग़ज़लों की विशेषता है ।

हिंदी के गीत–कविता के सशक्त हस्ताक्षर **रामावतार त्यागी** लोकप्रसिद्ध गीतकार है । कवि संमेलन और साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं के जरिए अपनी अलग पहचान कायम करने वाले इस गीतकार ने अपने गीत सृजन धारा मे साहित्यिक महत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त की है । 1984 ई.में 'लहू के चंद कतरे' ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुआ जो उनकी सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

रामावतार त्यागी एक गीतकार से ग़ज़लकार होने की यात्रा में प्राप्त जीवनानुभूति को अपनी विशेष शैली के साथ प्रस्तुत करते जा रहे हैं । इन्होंने निजी एवं समष्टिगत दुख–दर्द को अपनी ग़ज़लो में स्थान दिया है । सामाजिक सचाई की अभिव्यक्ति के साथ वर्तमान जीवन की नंगी यथार्थ की तस्वीर को सम्मुख खडे करते है । सब से चोट खाया हुआ आम आदमी छलपूर्ण आश्वासनों के चपेट में आकर भी आस्थावान बना हुआ है । ऐसे निष्पाप, मजबूर, आम इन्सान की तस्वीर को त्यागी जी ने रेखांकित किया है –

"तन पे कपडा नही पेट में रोटी भी नहीं
फिर भी मैदान में कुछ लोग डरे देखे है

जिनको लुटने के सिवा और कोई शोक नहीं ।

ऐसे इंसान भी कुछ हमने लुटे देखे है ।"[181]

रामावतार त्यागी की ग़ज़लो के अंतरंग में परिस्थितिगत संदर्भो के सजीव चित्र अंकित हुए है । पीडा को वे अभिव्यक्ति का आवश्यक माध्यम ग़ज़ल को मानते है —

"रोशनी तो चाहिए पर लौ जरा मध्यम रखो ।

चाहिये मुझसे ग़ज़ल तो आँख मेरी नम रखो ।

मैं हुआ तैयार तुलने को तभी कहने लगे,

दूसरे पलडे में अपने जिन्दगी के गम रखो ।।

कौन सा फनकार था जिसको न दी तुमने कसम

आँख में जो भी रहे पर होंठ पर सरगम रखो ।।"[182]

त्यागी जी की ग़ज़लो में गेयता, संप्रेषणीयता, वैयक्तिक और सामाजिक अनुभूतियों की प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होती है ।

बालस्वरूप राही की जन्मतिथि 16 मई 1936 है । प्रारंभिक दौर में राही जी ने गीतकार के रूप में ख्याति प्राप्त की बाद में इन्होंने ग़ज़ल विधा का स्वीकार किया और इसमें अपना योगदान दिया है । बालस्वरूप राही की ग़ज़लो की विशेषता यह है कि बहुत कुछ करने के बावजूद भी न कुछ कर पाने की इन्सानी दर्द की झलक है जो जीवन–संघर्ष के उतार चढाव से निर्माण होता है । यह ऐसी मनोदशा है जिसमें इन्सान स्वंय अपने अंतर में ही एक लड़ाई लड़ता रहता है । अंतर्मन का संघर्ष राही की ग़ज़लों में व्यक्त हुआ है ।उन्होंनें मानवी रहस्यों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है ।

राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले को उनके जिम्मेदारी का एहसास देने के साथ देश के प्रति समर्पण तथा सेवा का संदेश दिया है । वे लिखते है –

"लोग शरमाये इसे अपना वतन कहने में,

ऐसी खिदमत न करो कौम के ठेकेदारों ।

इस इमारत मे रहेगी कई नस्ले राही,

रेत इतनी न भरो नीव में ठेकेदारों ।"[183]

कथ्य की दृष्टि से राही की ग़ज़ले सामान्य जन की समस्याओं और आधुनिक युग बोध को केंद्र में रखकर समसामयिक संदर्भो को वाणी प्रदान करने में पूर्णत: सफल हुए है ।

जहीर कुरेशी का जन्म 5 ऑगस्ट 1950 ई.मे हुआ । जहीर कुरेशी की गणना हिंदी के लोकप्रिय ग़ज़लकारों में की जाती है । कुरेशी जी के ग़ज़लों में आधुनिक जीवन की वास्तविकता का चित्रण मिलता है । अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित ग़ज़लों के अतिरिक्त इनके दो ग़ज़ल संग्रह –'एक टूकडा धूप' (सन 1979) तथा 'चाँदनी का दु:ख' (सन 1986) प्रकाशित हो चुके हैं ।

सामाजिक संदर्भ का वास्तविक चित्रण करते हुए कुरेशी जी आम आदमी की पीडा की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते है । उनके अनुसार आज का आदमी किश्तों में जीवनयापन कर रहा है और किश्तो में मर रहा है । निर्धन को बार–बार कर्ज लेना पड रहा है । और उसका भुगतान किश्तों में कर रहा है । दीनता के कारण आम आदमी कर्ज के बोझ में डुबता जा रहा है । ज़हीर कुरेशी लिखते है—

"विष असर कर रहा है किश्तो में,
आदमी मर रहा है किश्तो में ।
उसने इक मुश्त के लिया था ऋण,
ब्याज को भर रहा है किश्तो में ।
एक अपना बड़ा निजी चेहरा
सबके भीतर रहा है किश्तो में ।
माँ, पिता, पुत्र की पत्नी,
एक ही घर रहा है किश्तो में ।"[184]

आधुनिक जीवन में मनुष्य की भाषा बदल गई है । पढ़ा लिखा आदमी तथा अधिकारी स्नेहपूर्ण भाषा को त्याग चुका है । नगर का जीवन पीडादायक है । जहीर जी के आगे समस्या है कि हम सभ्यता के कौन से युग में जी रहे है, जहाँ मनुष्य को विविध समस्याओं ने घेरा है । यहाँ केवल झगडे, युद्ध की भाषा का प्रयोग किया जाता है । जहीर जी कहते है—

"जिस जुबाँ पर चढ गई अधिकार की भाषा,

उसको आती नहीं है प्यार की भाषा ।

ये महानगरीय जीवन का करिश्मा है,

भूल बैठे हम सुखी परिवार की भाषा ।

सभ्यता के कौन से युग में खडे है हम,

बोलते है युद्ध के बाजार की भाषा ।"[185]

जहीर जी ने वर्तमान युग की दो महत्वपूर्ण समस्याओं को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है । एक समस्या है –'अवर्षण की' और दूसरी समस्या है 'बालमजदूर' की । पहली समस्या का कारण स्पष्ट है कि मनुष्य ने हरे भरे जंगल को अपने निजी स्वार्थ के लिए नष्ट किया और उपर से बरसात की समय पर कामना करता है –

" चाहते है वक्त पर बरसात भी

लोग हरिया ते वनों को बेचकर

होटलो में काम करने आ गए

बाल बच्चे, बचपनों को बेचकर ।"[186]

इस तरह जहीर कुरेशी जी ने अपनी ग़ज़लों में सामान्य जन की समस्या तथा वर्तमान युग की सभ्यता से उत्पन्न समस्याओं को वाणी प्रदान की है । जो मार्मिकता के साथ प्रस्तुत हुई है ।

शेरजंग गर्ग जी की जन्मतिथि 29 मई 1937 है । ग़ज़ल सप्तक में गर्ग जी के बारे में लिखा है – "शेरजंग अपनी ग़ज़ल में बातचीत करते जरूर है लेकिन यह बातचीत प्रेमास्पद और प्रेमी के बीच का पारम्पारिक संवाद नहीं है । यहा संवाद है समाज और व्यक्ति के बीच, विकृत व्यवस्था और जागृत विरोधी चेतना के बीच है ।"[187]

गर्ग जी अपनी एक ग़ज़ले में लिखते है –

"होश की बात बडी बात है दीवानो में

कौन जिन्दा है यहाँ आज सही मानो में ।

खुद को पहचानने खोई हुई पहचानो में,

हम भी भर लाये हैं कुछ हौसले मुस्कानो में ।
जिन्दगी आज है, अरमान है, ईमान भी है
दर्द किस शान से शामिल है परेशानों में ।
गर्क वे हो गये नफरत के गली– कूचो में,
फर्क करते रहे जो उम्र भर इन्सानो में ।
आज हारे हुए सैनिक हैं तो कल जीतेंगे ।
फिर टहलते हुए मिल जाएँगे मैदानो में ।"[188]

शेरजंग गर्ग जी ने मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करने से उनकी ग़ज़ल सरस बन पड़ी हैं । इनकी ग़ज़ल में बोलचाल की भाषा को अपनाया है, इसलिए आम आदमी को गर्ग की ग़ज़ल पसंद है ।

ज्ञान प्रकाश विवेक का जन्म 30 जनवरी 1949 को हुआ । 'धूप के हस्ताक्षर' इस प्रथम ग़ज़ल संग्रह का प्रकाशन सन 1984 को हुआ है । ज्ञान प्रकाश की ग़ज़लों का कथ्य आम आदमी का त्रासदी पूर्ण जीवन, अभावग्रस्तता, निर्धनता के कारण उसकी छटपटाहट आदि है । आक्रोश है परंतु पलायन नहीं, विद्रोह का स्वर मुखरित हुआ है । चुनौतियों का स्वीकार करते हुए उसके विरोध में लड़ने की हीम्मत जुटायी है ।

'धूप के हस्ताक्षर' में संग्रहीत ग़ज़लों के प्रति अपना मतंव्य प्रकट करते हुए **कृष्ण मधोक** ने लिखा है –"प्रस्तुत संग्रह की ग़ज़ले जमीन से जुडी हुई हैं जो आसपास को परिवेश और अनुभवों का प्रतिबिम्ब हैं । ये ग़ज़ले महानगरीय चिपचिपे अँधरे पर धूप के हस्ताक्षर करती महसूस होती हैं । इन गज़लों को पढ़ने के बाद यह स्पष्ट होता है कि ग़ज़लों को बुना या गढ़ा नहीं गया बल्कि सहज रूप से अनुभूतियों को पदों में ढाल दिया गया है । यूँ कहे कि शहरी जिन्दगी की जटिलताओं, आक्रोश और विसंगतियों को ग़ज़लों के माध्यम से उजागर किया गया है ।"[189]

ज्ञान प्रकाश विवेक की ग़ज़लों में आधुनिक काल की महानगरीय व्यवस्था और उससे पीडीत शहरवासियों का यथार्थ चित्रण आया है ।

"सिगरेट के टुकडे की मानिन्द अपनापन सब रौंद गये,

महानगर में ऐसी बाते होती है बेकार–सी ।"[190]

ज्ञान प्रकाश विवेक जी ने महानगरीय जीवन का यथार्थ ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । महानगरों में इन्सानीयतपण, अपनापन नष्ट हो रहा है । महानगरीय जीवन यांत्रिक बन गया है ।

समर्पित और संकल्प के धनी **डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल** की जन्मतिथि सन. 1944 ई.है । जन्मस्थान उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जनपद में 'संभल' नामक ग्राम है । जिन हिंदी – कवियों ने ग़ज़लें कहीं और ग़ज़ल के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के बलबुते पर स्वयं को सिद्ध किया, उनमें डॉ.गिरिराजशरण का नाम मूर्धन्य ग़ज़लकारो में सम्मानपूर्वक लिया जाता है । इनके पाँच मौलिक ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुए है-वे इस प्रकार है – 'सन्नाटे में गूँज', 'भीतर शोर बहुत है', 'मौसम बदल गया कितना', 'रोशनी बनकर जिओ', 'शिकायत न करो तुम'आदि ।

आज का आदमी संवेदना हीन बनता जा रहा है । आत्मकेंद्रीयता के कारण परस्पर सहयोग और विश्वास की जगह संदेह पनप रहा है और टूटता हुआ परस्पर विश्वास का वातावरण बढ़ रहा है । अपनत्व का भाव लुप्त होकर केवल उसका प्रदर्शन हो रहा है । इस बनावटी व्यवहार को चित्रित करते हुए अग्रवाल जी लिखते है –

"कैसे कैसे लोग यहाँ,

गूँगे बहरे लोग यहाँ ।

अपने मन की बात नहीं

मन से कहते लोग यहाँ ।

दिल–दिल में सूनापन है,

खोए–खोए लोग यहाँ ।

छिपकर मन की बाते कहें

सारे अपने लोग यहाँ ।"[191]

डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल पारिवारिक शोषण की शिकार हुई औरत की मनोदशा का चित्रण करते हुए लिखते है –

"आँखो की भाषा कहती है, मौन हुआ जिसका गहना,

मन की बातें मन में रखती, बेचारी औरत घर की ।"[192]

हर एक पीड़ित इन्सान स्वयं को परिस्थितियों के पकड में इतनी विवशता का अनुभव कर रहा है कि इन बंधनों को शिथिल करने के लिए छटपटाता है । छटपटाहट में उसके अंतर्मन की पुकार निकालती है –

"इन चिरागों में रोशनी बो दो,

टूटते तन में जिंदगी बो दो

खेत खाली पडें हुए यार,

आदमीयत में आदमी बो दो ।"[193]

आज आदमी अंदर से टूटता जा रहा है । उसके टूटते तन और मन में विश्वास भर देना आवश्यक है । उसे सहानुभूति की आवश्यकता है । हर एक मनुष्य में आदमीयतपण के बीज बोने की जरूरत विशद की है ।

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना का जन्म 1 दिसंबर 1949 को अटवाअली, मर्दनपुर, हरदोई (उत्तरप्रदेश) में हुआ । अस्थाना जी की संपादित 'इन्द्रधनुषी हिन्दी ग़ज़ले', 'बहुरंगी हिन्दी ग़ज़ले', 'हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी', हिन्दी ग़ज़ल के कुशल चितेरे आदि महत्वपूर्ण पुस्तके है ।

डॉ.रोहिताश्व अस्थाना की ग़ज़लो में सर्वहारा वर्ग की पीडा को अभिव्यक्ति मिली है–

"सड़के बड़ी है, और मकानात वही है;

मेरे शहर में आज भी हालात वही है ।

रोटी की बहस कल थी, वहीं आज भी जारी

दिल पे सभी के दर्द के आघात वही है ।"[194]

रोहिताश्व अस्थाना ने स्वातंत्र्योत्तर भारत की परिस्थिति का अंकन किया है । आज भी रोटी की बहस जारी है मतलब आम आदमी की प्राथमिक आवश्यकताएँ पूरी नही हो पा रही है ।

रामदरश मिश्र जी प्रमुख रूप से कथाकार होकर भी इन्होंने ग़ज़ल में भी योगदान देकर लेखन कार्य किया है । 1996 ई.में 'बाजार को निकलते है लोग' ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुआ

है । इनकी ग़ज़ले शेरजंग द्वारा संपांदित 'हिंदी ग़ज़ल शतक' शीर्षक नामक ग़ज़ल संग्रह में प्रकाशित हुई है ।

इनकी ग़ज़लो में कथ्य का विस्तार व्यापक रूप से परिलक्षित होता है । इन्होंने अपनी ग़ज़लो में जनसामान्य की दशा और व्यथा को अभिव्यक्त किया है । सीने में छिपे दर्द को लेकर जीना इनकी मजबूरी है –

"दर्द दुनिया भर का सीने में लिये जाते है हम
जिंदगी जीने की मजबूरी जिये जाते है हम
अपने दामन से छुडा अब कहते गैरों का हुआ
बेखता दोहरी सजाएँ भी पिये जाते है हम ।
यों तो ये बाजार महफ्लि , पर सभी वीरान है ।
फिर भी वीरानों में आवाज दिये जाते है हम ।"[195]

अनेक पीडा–यातानाओं के बरदाश्त करना अब मजबूरी बन गई है । लोग दोनो तरफ से ताना देते रहते है । जीना दुष्कर करते है । भीड में आदमी अकेलापन महसूस करता है । क्योंकि भीड में सबकी आत्मा मर चुकी है । फिर भी उम्मीदे है इसलिए बीरानों में भी आवाज देते है ।

पुरूषोत्तम प्रतीक जी की जन्मतिथि है 25 दिसम्बर 1937 ई. । सन 1991 ई.में 'पेड नहीं तो साया होता' प्रकाशित हुआ । इस ग़ज़ल संग्रह कुल 112 ग़ज़ले है । वे इस प्रकार है–'प्यास की खुशबू' और 'आँखो में आसमान' आदि । प्रतीक की ग़ज़लो में विविधता परिलक्षित होती है । मनुष्य का जीवन सुख और दु:ख के ताने बाने से बुना हुआ है । उसमें सुख की अपेक्षा दु:ख की मात्रा अधिक है और आदमी इसे भगवान की देन मानता है–

"चार दिन की जिन्दगी में दु:ख हजारों साल के
और यह भी देखिए अहसान है भगवान का ।"[196]

शिव ओम अम्बर जी ने विशुद्ध हिंदी में ग़ज़ल का सृजन कार्य किया है । इनमें भारतीय संस्कृति और सभ्यता चित्रण होना स्वाभाविक है । इनकी ग़ज़लो में आक्रोश और आस्था की दृष्टि भी नजर आती है, अम्बर जी के अनुसार–"आज की हिंदी ग़ज़ल किसी शोख

नाज़नीन की ईगुरी हथेली पर रची हुई मेहंदी की दन्तकथा नहीं है । युवा आक्रोश की मुट्ठी में बँधी बगावत की मशाल है, भाषा के भोजपत्र अंकित विप्लव की अग्नि–ऋचा है ।"[197]

समाज में पनपती विसगतियों की और निर्देश करते हुए आलोचना भी की है –

"खिलौनों का खुदा माने हुए है;
सयाने लोग दीवाने हुए है ।"[198]

है कठौते में हृदय के गीत की गंगा,
गाँव में रैदास बनकर जी रहे हैं हम ।"[199]

"वेशभूषा पहन पुजारी की,
है खड़ी शाख्तियत शिकारी की ।"[200]

आज के समय में नकाबपोश लोगों की तादात बड रही है । मुँह में राम और बगल में छुरी है । आदमी हर वक्त धोखा खा रहा है । पुजारी की वेशभूषा में लुटेरू है । इस प्रकार दिन –ब– दिन बढ़ती विसंगतियों पर अम्बर जी ने व्यंग्य कसा है । शिव ओम अम्बर पवित्र गंगा तट पर रहने वाले है, उनकी विचार की पृष्ठभूमि भारतीय है । गंगा के किनारे जीवन व्यतीत होने के कारण संस्कारवश उनकी भाषा सहजता से अलग है परंतु एक ग़ज़लकार के सब गुण उनमें मौजूद है ।

नए उभरते ग़जलकारो में **हनुमन्त नायडू** जी का नाम अग्रसर है । उनकी ग़ज़ल में कला पक्ष और भाव पक्ष दोनों सशक्त है । उनकी ग़ज़लों को सहज गरिमा प्राप्त होती है । उनकी भाषा सरल, सहज और ग़ज़ल के अनुसार अभिव्यक्त है । यह उर्दूपन लिए हिंदी है । हनुमन्त नायडू समाज के प्रति सचेत है, अपनी पैनी दृष्टि से समाज की विसंगतियों को उजागर करते है जैसे बेईमानी, भ्रष्टाचार और देश में फैली धाँधली के प्रति प्रतिक्रिया देते हुए व्यंग्य कसते है–

"यों तो लगती शरीफों की बस्ती है ये,
एक ईमान ही बदचलन है यहाँ ।"[201]

राजनीति से पीड़ित आम आदमी के हालात को भी सामने लाने का प्रयास किया है । इस पर व्यंग्य करते हुए कहते है–

"भाषण छपा है देश में, खुशियाँ बरस रही,

लेटे है खाली पेट हम अखबार ओढकर ।"[202]

अकेलेपन के अनुभव की त्रासदी का चित्रण भी किया है और अकेलेपन में भी विश्वास के साथ जीवन का सफर जारी रखने हौसला बुलंद है –

"जब तक न धूप थी तो हजारों ही साथ थे,

जलते सफर को हमने अकेले ही तय किया ।"[203]

हनुमन्त नायडू जी का 'जलता हुआ सफर' ग़ज़ल संग्रह कथ्य और शिल्प की दृष्टिसे सफल रहा है ।

आधुनिक हिंदी ग़ज़ल विधा में **डॉ. उर्मिलेश** एक प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में है । उनकी ग़ज़ले विविध पत्र–पत्रिकाओं, ग़ज़ल संकलनों में प्रकाशित हुई है । रोजमर्रा का जीवन, वर्तमान युगीन परिस्थितियों का अंकन आपकी ग़ज़लों में प्राप्त होता है । वर्तमान युग में प्रेम के संदर्भ बदल गए है । डॉ.उर्मिलेश लिखते है –

"उस प्यार के अगाडा अंजाम अजब था ;

पलभर हुआ सूकूँ तो उमर भर कलह हुई ।"[204]

डॉ.उर्मिलेश जी समसामयिक परिस्थिति में भय को दर्शाते है –

"प्यार इतना हुआ अँधरो से

डर सा लगने लगा सबेरो से ।"[205]

डॉ.उर्मिलेश ने आमजन की समस्या को चित्रित किया है । अब दुःख दर्द, की आदत हो गई है । सुख से डर लगने लगा है क्योंकि अब उम्मीदे ही नही रहीं है । जीवन अंधकारमय हो गया है । मन को छू लेने की क्षमता उर्मिलेश की ग़ज़लो में परिलक्षित होती है ।

बेकल उत्साही जी ने ग़ज़ल के क्षेत्र में लोकप्रियता प्राप्त की है । उर्दू के साथ हिंदी ग़ज़ल में भी उनका विशेष योगदान रहा है । इनकी ग़ज़लों राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है । ग़ज़लों का कथ्य धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता को लेकर स्थापित हुआ है । उनकी ग़ज़लों का विषय प्रेम, सौंदर्य एवं श्रृंगार भी रहा है । विरह का वर्णन का उदाहरण दृष्टव्य है –

"जुल्फों के बादल बिखराये तुम जाने किस देश बसे,

गम की धूप उतर आई है जीवन की अँगनाई में ।

यादें तो उकसाया देती है, भूली बिसरी चोटों को,

आँसू आग लगा देते है, सावन की पुरवाई में ।

तेरी मुस्कानों का साया, ताजमहल का रूप अनूप,

जमुना की मौजों की मस्ती है तेरी अँगडाई में ।"[206]

इनकी ग़ज़लों में मानव मन की आशा और निराशा, राग–विराग, जय–पराजय आदि भाव दृष्टिगोचर होते है । प्रेमाभिव्यक्ति का भी सशक्त रूप से चित्रण किया गया है ।

रामकुमार कृषक जी का ग़ज़ल संग्रह 'नीम की पत्तियाँ' का प्रकाशन 1984 ई.में हुआ है । इनकी ग़ज़लों का भावपक्ष प्रबल है । ग़ज़लों में युगीन व्यवस्था की कमियाँ और विसंगतियों का चित्रण किया गया है । राजनीतिक परिस्थितियों पर कडा व्यंग्य कसा है । इस संदर्भ में इनकी एक ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"चीखने लग जाये जब बंदे कही

साफ मतलब है खुदा बहरा हुआ ।

राष्ट्र तो फुटपाथ पर बेदम बिछा ।

और उनका राष्ट्रध्वज फहरा हुआ ।"[207]

रामकुमार कृषक जी ने ग़ज़लों के माध्यम से आधुनिक समाज में व्याप्त अपराधा–बोध, असमानता शोषण से त्रस्त आम आदमी की पीडा को दर्शाने का प्रयास किया है ।

अवधनारायण मुद्‌गल जी ग़ज़लों की विशेषता व्यंग्यता है । वर्तमान युग के अधिकतर ग़ज़लकारों जैसा ही इनकी ग़ज़लो का भाव पक्ष समसामयिक परिवेश ही है । इनकी ग़ज़लो में युगीन परिस्थितियों का वर्णन है—

"सबसे सस्ता है आदमी होना,

काश हम जानवर रह होते ।"[208]

जनसामान्य की बोली भाषा का प्रयोग किया है । इसमें भाषा के शब्दों का अनायास आना अपने आप में एक अलग खूबी है ।

"इस जलालत की जिन्दगी से तो

अच्छा होता ऊपर गए होते ।"[209]

इस प्रकार अवधनारायण मुदगल ने व्यंग्य के माध्यम से आधुनिक युगबोध के जीवंत चित्र अपनी ग़ज़लों में प्रस्तुत किए है ।

अजय प्रसुन जी की ग़ज़ल में राजनीति और सामाजिकता के विडम्बना पर व्यंग्य प्राप्त होता है । आधुनिक युग के मानव की मजबूरी तथा घूटन और अकेलेपन तथा अभावग्रस्तता को व्यक्त करने में प्रसून जी ने सफलता प्राप्त की है –

"आधुनिक परिवेश में सहमें हुए स्वर,
आचरण के वस्त्र ढीले हो गए है ।"[210]

यहाँ अजय प्रसुन ने हिंदी ग़ज़लों के माध्यम से वर्तमान सदी की त्रासदी का निर्मम चित्रण प्रस्तुत किया है । इन्होंने प्रतीकों के माध्यम से आधुनिक जनजीवन को अभिव्यक्त किया है ।

केदारनाथ कोमल की ग़ज़लों का प्रकाशन विविध पत्र–पत्रिकाओं में हुआ है । 'कोहरे से निकलते हुए' और 'मेरे शब्द मेरा लहू' इन दों संग्रहो में इनकी कुछ ग़ज़लों का प्रकाशन हुआ है । सरल छोटी बहर का चयन करते है । इनकी ग़जलों में परिस्थितियों से उपजे दर्द को वाणी दी है—

"टूट गए है छन्द
धुआँ–धुआँ चाहों में ।"[211]

इनकी ग़ज़लों में आधुनिक जीवन संदर्भो की व्यंग्यात्मक दृष्टि से विवेचना की गई है, कोमल जी ने भोगे हुए वास्तविक अनुभवों को ग़ज़ल के माध्यम से उजागर किया है । इसमें सरल हिंदी भाषा का प्रयोग किया है ।

अंजना संधीर ने ग़ज़ल की रचनाओं में हिंदी उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है । व्यक्तिगत पीडा को सार्वजनिक बनाने का प्रयत्न अपनी ग़ज़लों के माध्यम से किया है । मौलिकता इनकी ग़ज़लों की विशेषता है –

"आपका नगर देखा ।
आईंनों का घर देखा,

कितनी बार मर देखा

काँच के मकानों में

बिजलियों का घर देखा ।"[212]

इस प्रकार अंजना संधीर के ग़ज़लों में नए रंग, नए तेवर उल्लेखनिय है ।

अवध किशोर सक्सेना साठोत्तरी ग़ज़लकारों में से एक महत्वपूर्ण ग़ज़लकार है । इन्होंने ग़ज़ल को यथार्थ की धरातल पर लाया है । निडरता से सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश किया है । सक्सेना जी का मानना है कि मानवी जीवन निरतंर संघर्षशील रहता है । मनुष्य का जीवन एक तट की तरह होता है । जहाँ दर्द की लहरे बार–बार आघात करती है । सक्सेना आहत ग्रस्त मानवी जीवन का वर्णन करते है । जीवन की वास्तविकता को उजागर करते हुए अवध किशोर सक्सेना लिखते है –

"समस्याओं से घिरा है आदमी

परिस्थितियों में बिका है आदमी

आम जो इंसान चौतरफा दुखी

जिंदगी ढोते भरा है ! आदमी ।"[213]

सांप्रदायिकता, धर्म और जाति के आधार पर भारत देश की एकता में दरार उत्पन्न हुई है । इन खतरों के प्रति सचेत रहकर इन विचारों को अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्त किया है ।

ओंकार गुलशन की ग़ज़ले व्यक्तिगत पीडा को समष्टिगत धरातल पर प्रस्तुत करते हुए उसे जनमानस तक पहुँचाने का कार्य करती है । ग़ज़लो की भाषा स्वाभाविक और बोधगम्य है । उनका मानना है कि –

"इक बार देखिए तो नदी के चढाव को ।

तुफां में न ले जाइये कमजोर नाव को ।

झूठी तसल्लियों से न कुछ काम बनेगा ।

गर हो सके तो रोकिये बढ़ते तनाव को ।"[214]

इस प्रकार ओंकार गुलशन भाषागत विवाद से दूर रहकर सरल, बोध परक भाषा में अपने विचार व्यक्त करते है ।

डॉ.नरेश जी पर उर्दू–फारसी छंद शास्त्र का प्रभाव दिखाई देता है । हिंदी कविता में उर्दू तत्वों का सफल प्रयोग हुआ है । इनकी भी ग़ज़ले विविध पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है । छंद शास्त्र का प्रभाव भाषा और काफियों के संदर्भ में परिलक्षित होता है । यहाँ ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"अश्रु बहते रहे, जाँ सुलगती रही, दिल तडपता रहा, रात कहती रही,
उनको तो हस्बे–दस्तूर आना न था, मौत भी राम जाने कहाँ मर गई ।
आस की भोली–भाली मधुर बालिका, एक दिन हँसते हँसते ग़ज़ब ढा गई
दिल का दीपक बुझकर कहीं छुप गई, मैं पुकारा किया रोशनी–रोशनी ।"[215]

यहाँ डॉ. नरेश की कविता पंरपरागत स्वरूप के साथ–साथ अपनी सच्ची पहचान भी प्रस्तुत करती है ।

कु.नीर शबनम हिन्दुस्तानी भाषा में लिखित इनकी ग़ज़लें व्यक्तिगत दुःख–दर्द के साथ बनावटी मानवी मूल्यों का पर्दाफाश करती है । शबनम जी का नाम हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में स्थापित हो रहा है । शिल्पगत सौंदर्य इनकी ग़जल की विशेषता है उदाहरण दृष्टव्य है –

"सफर तमाम हुआ पर गुबार बाकी है ।
उतर चुका है नशा पर खुमार बाकी है ।
खिले है फूल मगर मुस्कारा नहीं सकते
खिजों में हाथ ये कैसी बहार बाकी है ।"[216]

इस प्रकार हिन्दी ग़जल के क्षेत्र में नीर शबनम शिल्प–सौष्ठव के कारण लोकप्रिय है ।

डॉ.नरेंद्र वशिष्ठ की ग़ज़ले समाज में समानता का संदेश देकर मूल्यों को स्थापित कर रही है । वशिष्ठ जी शमशेर बहादुर सिंह के विचारों से प्रभावित है । इनकी ग़ज़ले 'दुसरा ग़ज़ल सप्तक' में प्रकाशित हो चुकी है । उर्दूपन का प्रभाव इनकी ग़ज़लों पर परिलक्षित होता है । शिल्प की दृष्टि से ग़ज़ले सुंदर बन पडी है –

"आईना हमको दिखाते क्यूँ है
आँख खूद इससे चुराते क्यूँ है ।
जख्म अपनों से छुपाते क्यूँ है ।

इनको नासूर बनाते क्यूँ हो ।"[217]

नरेंद्र वशिष्ठ की ग़जले न्हास और उत्थान पर समान रूप से जोर देती है । भाषा की दृष्टि से इनका ग़जलों पर उर्दू का प्रभाव परिलक्षित होता है ।

शिवकुमार अर्चन की ग़ज़लों में यथार्थ बोध परिलक्षित होता है । श्रृंगारपरक और सामाजिक वास्तविकता इनके ग़ज़लों की विशेषताएँ है । 'अर्चन' जी ने ग़ज़लों को मधुर स्वर प्रदान किया है । कवि सम्मेलनों, काव्यमंचो से इनकी ग़ज़लों को पेश किया जाता है, अत: इनकी ग़ज़लों की लोकप्रियता सिद्ध होती है ।

"महकती रूप की राशि कमल मालूम होती है ।
तुम्हारे भाल की बिंदिया ग़ज़ल मालूम होती है ।
पढ़ी है जब से मैंने आपके चेहरे की रामायण
तभी से जिंदगी अपनी सफल मालूम होती है ।"[218]

शिवकुमार अर्चन की ग़जलों में गेयता और संगित्माकता है । काव्य-सम्मेलनों में इनकी ग़ज़ल पेश की जाती है ।

धनंजय सिंह जी ने जीवन की अनुभूति को अपने ग़ज़ल का विषय बनाया इसमें जीवन के कटू तीखे अनुभवों के साथ-साथ हृदय के कोमल भावों को अभिव्यक्त किया है । धनंजय सिंह जी ने नए प्रतीक एवं उपमानों को अपनाकर अपने विचार जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है । उदाहरण प्रस्तुत है -

"इस तरह भीड के सैलाब से गुजरता हूँ ।
जैसे दलदल भरे तालाब से गुजरता हूँ ।
डूब जाता है पहाड़ों के बदन चोटी तक ।
जब मेरी आँखो के दोआब से गुजरता हूँ ।"[219]

धनंजय सिंह की ग़ज़ले आमजन के पिडा के अभिव्यक्त करती है । स्वयं को सर्वहारा वर्ग से जोडकर व्यक्त होते है ।

बालकवि 'बैरागी' जी ने काव्यमंचों से अपनी ग़ज़लों को युगीन संदर्भो के साथ जोड दिया । जिससे इनकी ग़ज़लों का प्रभाव जन मानस पर दिखाई देता है । सच्चे दिल का

रचनाकार अपनी ग़ज़लों को सांस्कृतिकता से जोडकर प्रस्तुत करता है । सामान्य मनुष्य की बदनसीबी, उसका उपहास और पीडा की जिन्दगी को ग़ज़लों में व्यक्त करते है –

"हो मुबारक आपको अपनी जमीं
हर दरख्तों पर खडे हो जाएगें
मामला कसमे–वफाका छेडिएं
पेट से लाचार है खा जाएंगे ।"[220]

बैरागी जी ने अपनी ग़ज़लों में प्रतीकात्मक शैली का आश्रय लेकर देश के आज के समय की विषम परिस्थितिओं को विशद किया है ।

विनोद तिवारी 'संवेदना और शिल्प' यह तिवारी जी की ग़ज़लों की विशेषता है । समाज में जागृति लाने वाली इनकी ग़ज़लें नई क्रांति, नई चेतना, जीवन आदर्श प्रदान करने वाली है । क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"अब सुलगती जिन्दगी के नाम अंगारे लिखो
दोस्तों आओ सडक पर और कुछ नारे लिखो ।"[221]

इस प्रकार विनोद तिवारी ने सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से ग़जल का कथ्य रखा है । समाज के मन–मस्तिष्क को झकझोर देने वाली ग़ज़ले है ।

डॉ.सुमेर सिंह 'शैलेश' 'गीतो के राश्मिद्वार' में संग्रहीत ग़ज़लों में जीवन की विवशता, सामाजिक विषमता को प्रतिकात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है ।

"स्थाहियों के रिश्ते है दुधिया सफेदी से
रूप जो कलंकित है चाँद से भले होंगे
सिसकियों के मेले में याचना की गलियों में
पूछिए थकान उनकी पाँव जो चले होगे ।"[222]

हम देखते है कि समस्याओं से घिरा हुआ आज का मानव जीवन अत्याधिक जटिल हो गया है । सामाजिक, राजनीतिक अस्थिरता ने मानव को विचलित किया है ।

तारादत्त 'निर्विरोध' की ग़ज़लों में वर्तमानयुगीन राजनीतिक, सामाजिक जीवन की वास्तविकता का वर्णन प्रभावी रूप से किया है –

"राग रंग आम हो गये ।

काम यों तमाम हो गये ।

राजनीति जाति हो गयी ।

छल–कपट सलाम हो गये ।"[223]

यहाँ तारादत्त ने गीत के माध्यम से व्यक्त करने के लिए ग़ज़ल को माध्यम बनाकर स्मस्याओं का चित्रित किया है ।

राजकुमार 'रश्मि'–जी की ग़ज़ले अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है । 'कादम्बिनी' ने ग़ज़लों के लिए पुरस्कृत कर सम्मान किया है । युगीन पीडा एवं त्रासदी केंद्र में रखकर उसे वाणी दी है । उनकी ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"सागर में नदी ताल में पानी नहीं कहीं ।

धरती की वसीयत की कहानी नहीं कहीं ।

अब के यह इन्कलाब भी कैसा अजब हुआ

बाकी बची नजर में निशानी नहीं कहीं ।"[224]

साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल में मानव त्रासदियों को मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति दी है । हिन्दी ग़ज़ल ने संपूर्ण परिस्थितियों को सावधानी से अपनाया है । दुष्यंत कुमार के बाद हिंदी ग़ज़ल क्षेत्र में अत्याधुनिक विकास हुआ है । उपर्युक्त कवियों के अलावा अन्य ग़ज़लकार भी योगदान दे रहे है । इसमें प्रमुख ग़ज़लकार है –संजीवन मयंक, पवन बाथल, गौरी शंकर, महेश अवध, सावित्री परमार, सलील अश्क, रमेश रंजक, निश्तर खानकाही, आत्माप्रकाश शुक्ल, कृष्णानंद चौबे, कृष्णकुमार खन्ना प्रदीप चौबे, सुशीला सितरिया, राजेंद्र च्यवन, सुभाष पुरी, अविलेश अंजुम, श्याप्रकाश अग्रवाल, अग्निवेष शुक्ल, मृदल शर्मा, सोम ठाकुर, सरस्वती कुमार दीपक, अनिल खम्पारिया, महेश दर्पध, नरेंद्र मिश्र, निर्दोष, पूरन बाल्मिकी, देवराज दिनेश, कूबेर दत्ता, माणिक वर्मा, अरूण लहरी, माधुरी शुक्ला, कपूर –नूतन, मधू भारतीया, राजदेवसिंह, गोंविद व्यास, विठ्ठल भाई पटेल, विक्रम सोनी, जफर सिरोजबी, हरजीत सिंह आदि का नाम हिंदी ग़ज़ल क्षेत्र में लिया जाता है–।

निष्कर्ष –

हिन्दी ग़ज़ल ने ग़ज़ल साहित्य को नए–नए भाव प्रदान किए है । आजादी के पश्चात मोहभंग, सामाजिक विसंगतियों, सर्वहारा की पीडा, बेकारी, अज्ञान, अशिक्षा, रूढिवादिता, नारी समस्या, बालमजदूरी, अकाल, दहेज, प्रदर्शनप्रियता, भ्रष्टाचार, आंतकवाद, अलगाववाद, पूँजीवाद आदि कई युगीन समस्याओं को विराट, डॉ. कुँअर बेचैन, जहीर कुरेशी आदि ने अपनी–अपनी ग़ज़लों में यथार्थ को ग़ज़लों का कथ्य बनाया है ।

सबसे अहम बात यह है कि इन ग़ज़ल रचनाकारों ने सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश करके समता, भाईचारा, स्वातंत्र्य एवं स्वस्थ सामाजिक वातावरण निर्माण करने का कार्य किया है ।

4.3.4 कुअँर बेचैन की ग़ज़लों का महत्व –

हिंदी ग़ज़ल क्षेत्र में कवि कुँअर बेचैन ने अपनी अलग पहचान बनाई है । उनका रचना संसार बड़ा व्यापक है । उन्होंने ग़ज़ल को नई भाषा प्रदान की है । डॉ.कुँअर बेचैन की भाषा पर युगीन परिस्थितियों का प्रभाव परिलक्षित होता है । उनका शब्द भण्डार व्यापक होने से भाषा प्रभावशाली है । डॉ.कुँअर बेचैन एक भावप्रवण रचनाकार है । उनकी ग़ज़लों में सभी परिवेशों का निर्वाह हुआ है । संवेदनशील रचनाकार भावप्रवणता के कारण जन–जन का कण्ठहार बनता है । **डॉ.रामेश्वर खण्डेलवाल** का कहना है–‘‘भावों का तूलिका चित्रण, मुद्रा या मूर्ति– विधान, भाव–प्रकाशन की एक ऐसी शैली है जिसमें लेखक की नितान्त मौलिक व सूक्ष्म कलात्मक कल्पना की शक्ति का पूरा–पूरा परीक्षण हो जाता है ।’’[225]

भाव के बिना कलात्मकता महज बाहय अलंकरण है । डॉ.कुअँर बेचैन ने भी इस तथ्य को मार्मिकता से स्पष्ट किया है–‘‘खोखली कलात्मकता, कलात्मकता होते हुए भी बांस ही रह जाती है । वह बाँसुरी तब ही बनेगी जब वह सीने पर घावों को सहने हिम्मत करेगी, जब उसमें प्राण जाएंगे, जब हृदय की वेदना उससे ऊपर उठेगी और उससे होकर गुजरेगी ।’’[226]

डॉ.कुअँर बेचैन प्रतिभावन ग़ज़लकार के रूप में प्रसिद्ध है । कल्पना के लिए कल्पना करना उनका उद्देश नहीं था । अपनी अनुभूति को कल्पना के माध्यम से सौंदर्य प्रदान करने

के लिए कल्पना का सहारा लिया । अपनी ही आँच से बर्फ के समान पानी में पिघलती चट्टान का दृश्य बेचैन की कल्पनाशक्ति का परिपाक है --

"अपनी ही आँच से कोई चट्टान

बर्फ सी गल रही है पानी में ।"[227]

और एक शेर में कल्पना सौदर्य है-

"तुम खो गए हो ऐसे जैसे विवाह के दिन

खो जाए सजते-सजते कंगन नई दुल्हन का ।"[228]

डॉ.बेचैन की सरस कल्पना का उदाहरण -

"कि मुझमें बंधा यौवन कि मैं भी कंचुकी-सी हूँ,

इसी उन्माद में खिलकर चमेली खुल गई होगी ।"[229]

वस्तु व्यंजना से बाहर निकलकर भाव व्यंजना का रसास्वादन करना यहाँ ग़ज़लकार की विशेषता है । **डॉ. कुमार विमल** कहते है - "कल्पना का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है और उसकी गति एकदम अप्रतिहत प्रखर होती है । कला का संपूर्ण औपम्यमूलक निबन्धन कल्पना पर अवलम्बित है । कल्पना के सहारे ही कलाकार गुण-साम्य, प्रभाव-साम्य, व्यापार-साम्य इत्यादि (मनसा-लब्ध) समताओं के आधारपर प्रस्तुत में अप्रस्तुत के आरोप से रमणीय भाव -लोक की सृष्टि करता है ।"[230]

डॉ.कुँअर बेचैन हिन्दी ग़ज़ल की परंपरा में लोकप्रिय और संवेदनशील ग़ज़लकार है । वे जनवादी भावनाओं के क्रांतिकारक ग़ज़लकार है । जीवनानुभुति और समय के कठोर सत्य ने उन्हें संवेदनशीलता में परिवर्तीत किया है । उनकी ग़ज़लों से विविध आयाम प्रकट हुए है । कुँअर बेचैन जी का चिंतन पक्ष अत्यंत गहन और विस्तृत है । जीवन के विविध पहलुओं को उद्घाटित किया है । इस में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मनोविज्ञानिक, आर्थिक, प्रेमभाव, श्रृगांरिकता, पिडा और वेदना सभी प्रकार के रूप समाहित किए गए है । कुँअर बेचैन जी के ग़ज़लों में अनेकाअनेक आयाम परिलक्षित होते है । राष्ट्रीय एकात्मकता और सामजंस्य उनकी ग़ज़ल का विषय रहा है । साम्प्रदायिकता, प्रांतवाद, भाषावाद, अलगाववाद, सीमावाद, जातिवाद, आतंकवाद जैसी सामाजिक विसंगतियाँ दृष्टिगोचर होती है । इससे देश की एकता

को खतरा निर्माण हो रहा है । बेचैन जी ग़ज़ल के माध्यम से देश की अखण्डता निर्माण करने का प्रयत्न करते है । उनकी ग़ज़ल का एक उदाहरण प्रस्तुत है –

"घर का मतलब है कि घर के लोग मिल–जुलकर रहे ।
चन्द चीजों को सज़ा लेने से कब बनते है घर ।।
बात तो तब है कि दिल के बन्द दरवाजे खुले ।
घर में दरवाजे बना लेने से कब बनते है घर ।।"[231]

डॉ.कुँअर बेचैन की दृष्टि से लोग इतने निष्ठुर हो गए है कि सारे देश में हिंसा और अशांति का माहौल बन गया है । अपने दृष्प्रवृत्ति के कारण देश बरबाद हो रहा है । इस संदर्भ मे ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"फल को खार बनाने पे तुली है दुनिया ।
सबको बीमार बनाने पे तुली है दुनिया ।।
मैं महकती हुई मिट्‌टी हूँ, किसी आँगन की ।
मुझको दीवार बनाने पर तुली है दुनिया ।।
हमने लोहे को गलाकर जो खिलौने ढाले ।
उनको हाथिआर बनाने पे तुली है दुनिया ।
नन्हें बच्चों से 'कुँअर' छीन के भोला बचपन ।
उनको हुशियार बनाने पे तुली है दुनिया ।।"[232]

कुँअर बेचैन जी के विचार है कि देश में शांति और अखण्डता कायम रहे । पारस्परिक प्रेम और भाईचारा का वातावरण रहे । आपसी भेद मिटकर एक दूसरे से गले मिलना चाहिए । साम्प्रदायिकता और जातिवाद के नाम पर जो बिखराव है वह समाप्त होना चाहिए । तब देश में राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित होकर शांति के पथ पर लोग अग्रसर हो जाएंगे ।

"क्या पता कब दूरियाँ नजदीकियाँ बनने लगे ।
खाइयाँ खुदती भी हो तो खाइयाँ पटती भी हैं ।।
चाहे कैसी भी हों दीवारें हमारी राह में ।
चाहे है हममें दीवारें कभी हटती भी हैं ।"[233]

कुँअर बेचैन जी के ग़ज़लो में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का स्वर प्रखरता से मुखरित हुआ है । उन्होंने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सामंजस्य को उजागर करने की कोशिश की है । संप्रदाय, जाति, भाषा, से देश का स्थान ऊँचा होता है ।

हिन्दी साहित्य के सभी विधाओं में दार्शनिकता का दर्शन होता है । प्राचीन काल से दार्शनिकता को महत्व अक्षुण्ण है उदा. जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, आंबेडकरवाद, अस्तित्वाद । इन दर्शनों का चित्रण साहित्य की सभी विधाओं में किया है और उसका प्रभाव साहित्य पर रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में दार्शनिक तत्वों का प्रभाव दिखाई देता है । वर्तमान युग में जीवन मूल्यों में परिवर्तन हुआ है । सच्चाई और ईमानदारी का स्थान झूठ और फरेब ने लिया है । चारो तरफ भ्रष्टाचार और अनैतिकता बढ गई है । मानव की दुष्प्रवृत्ति की ओर ध्यानाकर्षित कर कुँअर बेचैन बदलते हुए मानवी जीवनमूल्यों को उजागर करते है । वे कहते है –

"साधकर फूलों से चेहरों पर निशाने काँच के ।
दे गए अनगिन खरोंचे दोस्ताने काँच के ।।"[234]

जीवन की क्षणभंगुरता का उल्लेख करते हुए अपने ही जीवन की दर्शनिकता को प्रस्तुत किया है । जीवन का यथार्थ कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में व्यक्त किया है –

"जब से मन की मदीरा पी है ।
सारी दुनिया अपनी सी है ।।
रिश्ते नाते झूठे है सब ।
केवल तेरी पीर सगी है ।।
उसका केवल रंग न देखो ।
उसके अन्दर भी खुशबू है ।।"[235]

वास्तव में धर्म प्रेम और उदारता का रूप है । हमारा देश धर्म प्रधान है । भारत वर्ष की संस्कृति का आधारभूत तत्व धर्म है । धर्म में संकुचितता और संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं है । लेकिन आज तो मनुष्य धर्म, जाति, संप्रदाय के नाम पर एक दूसरे से दूर जाता नजर आ रहा है । जिससे आज का मनुष्य डर गया है । सांप्रदायिकता से उत्पन्न भेदभाव को दूर करने के दृष्टि से डॉ.कुँअर बेचैन कहते है –

"यह चमन सारे का सारा आजकल खतरे में है ।
हर तरफ है, आग, दुश्मन, आँधियों धीरे चलों ।।
लिख रही है, खुशबुओं को खत कमल की पांखुरी ।
काँपता है झील का मन आँधियों धीरे चलो ।।"[236]

डॉ.कुँअर बेचैन आपस में स्नेह भाव स्थापित करना चाहते है । उन्हें धार्मिकता से अधिक प्रेमभाव में विश्वास है । इस दृष्टि से डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"तू भले मस्जिद बना मंदिर बना ।
दिल को लेकिन उससे भी बेहतर बना ।।
खेलने दे सबको अपने रंग में ।
प्यार को बस प्यार रख, मत डर बना ।।"[237]

धार्मिकता का सहारा लेकर डर फैलाया जा रहा है । धार्मिक स्थलों की गरिमा पर आँच आ रही है । आज लोगों को पहचानने में धोखा होता है कि वे पुजारी है या आतंकवादी । इस दृष्टि से कुँअर बेचैन लिखते है –

"जैसे कि लफ़्ज अपनी किताबों के साथ है ।
आँखे हमारी आपके ख्वाबों के साथ है ।।
बस दो ही लोग अम्न के दुश्मन बने हुये ।
जो अपनी जिद में खुन खराबों के साथ है ।।
अच्छे बुरे की हो भी तो पहचान किस तरह ।
चेहरे सभी के आज नकाबों के साथ है ।।"[238]

कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से साम्प्रदायिकता के कारण उत्पन्न होने वाले अराजकता का वर्णन किया है । आज के राजनेता धर्म के नाम पर राजनीति करते है । इस बात को दर्शाने का प्रयास किया है । उन्होंने ग़ज़लों के माध्यम से साम्प्रदायिक सद्‌भाव बनाए रखने का प्रयास किया है ।

विश्व मानव इतिहास में भारतीय संस्कृति का स्तर बहुत ऊँचा है । संस्कृति शब्द अत्यंत उदार और व्यापक है । विद्‌वानों ने 'संस्कृति' शब्द को परिभाषित किया है । बाबु

गुलाबराय के अनुसार संस्कृति शब्द का सम्बन्ध 'संस्कार' से है । जिसका अर्थ है संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना । संस्कार व्यक्ति के भी होते है और संस्कार जाति के भी होते है । जातिय संस्कारो को ही संस्कृति कहा जाता है ।"[239] आज भारतीय जीवनशैली में बहुत परिवर्तन हुआ है । भारत की संस्कृति के महान आदर्श बदल रहे है । मानवी मूल्यों में भी परिवर्तन हो रहा है । सामाजिक वातावरण में अनैतिकता का बोलबाला है । सच्चाई के रास्ते पर चलने वालों की समस्या बढ़ रही है । आज की इन दशाओं को देखकर ग़ज़लकार लिखता है –

"इधर आग है और धुँआ है घरों में ।
उधर कैचिया है, हमारे परों में ।
अभी झूठ हाकिम, हुआ है हमारा ।
अभी सच खडा है कई कटघरों में ।।
मिलेगा भला क्या 'कुँअर' शब्द होकर ।
यही एक चर्चा चली अक्षरों में ।।"[240]

मनुष्य स्वार्थ में लिप्त होता जा रहा है । पैसों के लिए झूठ–फरेब का सहारा ले रहा है । लोभ की प्रवृत्ति दिन–प्रति–दिन बढ रही है । जिसके कारण नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है । इस दृष्टि से कुँअर बेचैन लिखते है –

"प्यार पूजा घर था पहले अब तो बस बाजाऱ है ।
जिसको देखों वो ही बिकने के लिये तैयार है ।।
हम थके इस कदर बैठे के उट्ठे ही नहीं ।
लोग कहते रह गये गिरती हुई दीवार है ।।
जिंदगी जिसकी अंधेरों की तिजारत में कटी ।
कैसे कह दे वो उजालों का सही हकदार है ।।
मैने पूछा तो बहुत उत्तर न दे पाया कोई ।
आदमी बीमार है, या जहनियम बीमार है ।।"[241]

आज मनुष्य साँप की तरह जहरिला बन गया है । वह दूसरों के साथ विश्वास घात करके अपना स्वार्थ देख रहा है । कुँअर बेचैन कहते है –

“छा गया यह सोच सन्नाटा शहर में ।

क्यों की पसीने को गया डाँटा शहर में ।।

गाँव से चलकर शहर तक साथ आया ।

साँप ने अक्सर हमें काटा शहर में ।।”[242]

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में आशावाद और परिवर्तन की चाह संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त हुई है । मानव जीवन में संघर्ष ही है और वह रोजमर्रा की कठिनाइयों के साथ लडता रहता है । फिर भी उम्मीदों के सहारे जीवन की ओर सकारात्मक रूप से देखकर उसे आनंदमयी बनाने की कोशिश करता है । यही महत्वपूर्ण विचार कुँअर बेचैन के ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त हुए है ।

निष्कर्ष –

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिकता के अलावा अन्य भावबोध व्यक्त हुए है । जिसमें राष्ट्रीय एकात्मता, दर्शनिकता, आशावाद, मानवी मूल्य, नैतिकता आदि पर चिंतन हुआ है । धर्म जाति से बढ़कर देश तथा राष्ट्र होता है । जीवन में प्रेम और अपनापन महत्वपूर्ण है । कुँअर बेचैन जी ने आर्थिक विपन्नता में जीने वाले वर्ग का चित्रण अपनी ग़ज़लों द्वारा किया है । जीवन की नश्वरता का सच बतलाकर मानव को प्रेम का महान संदेश देते है । जीवनमूल्य से सम्बधित भौतिकवाद, नश्वरता के साथ दार्शनिक चिंतन भी कुँअर बेचैन की ग़ज़ल में प्राप्त होता है । उनका प्रयास यह भी रहा है कि लोग आपसी मतभेद भूलकर एक दूसरे साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार करें ।

डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से अव्यवस्था के विरोध में अपना संघर्ष दर्शाया है । उनकी ग़ज़लों में आशावाद और परिवर्तन की चाहत है । ग़ज़लों में व्यष्टि एवं समष्टि तक पीडा की मार्मिक अभिव्यक्ति सहजता से हुई है । वर्तमान समय में संवेदनहीनता, अभावग्रस्तता का दु:ख हर एक के जीवन में है । नैतिक मूल्यों का ऱ्हास, दु:ख, यातना आदि से उत्पन्न निराशा को अपने ग़ज़लों का कथ्य बनाया है । उन्होंने ग़ज़ल का महत्व, साम्प्रदयिक सद्भाव की स्थापना, मानवी मूल्यों के साथ विकास, राष्ट्रीय एकात्मकता, आशावाद, दर्शनिकता, प्रेमभाव आदि के दृष्टि से सफलतापूर्वक योगदान देने का प्रयास किया है ।

4.4 डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में सामाजिक बोध

प्रस्तावना––

समाज से ही साहित्य का कथ्य प्रस्तुत किया जाता है । व्यक्ति और समष्टि का कल्याण करना साहित्य का उद्‌देश्य है । व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच प्रेमपूर्वक संबंध का निर्माण कार्य साहित्य ही करता है । इसी उद्‌देश्य को सामने रखकर कुँअर बेचैन जी ने साहित्य के उत्तरदायित्व का निर्वाह किया है । उन्होंने ग़ज़ल के उद्‌देश्य को व्यापक धरातल की पृष्ठभूमि प्रदान की है । परिणाम स्वरूप वर्तमान में हिंदी ग़ज़ल सामाजिक बोध की अभिव्यक्ति बड़ी प्रखरता से व्यक्त करते हुए नजर आती है ।

4.4.1 'समाज' का-अर्थ, परिभाषा और स्वरूप —

प्रसिद्‌ध विचारवंत अरस्तु के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । मनुष्य को अपना मनुष्य के रूप में परिचय बनाए रखने के लिए मनुष्यों के साथ रहना अनिवार्य है । इसलिए हर एक व्यक्ति को अपने आसपास के मनुष्यों को एक साथ परस्पर सामाजिक संबंध बनाए रखने की आवश्यकता है । हर एक व्यक्ति के एक दूसरे के प्रति स्थापित संबंधो को 'समाज'कहा जाता है ।

सामाजिक सम्बन्ध की बुनियाद मानव जीवन की मुलभूत जरूरते है । जिन कारणों से विविध स्वार्थ मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरणा देते है । मानव जीवन में आवश्यकताओं और स्वार्थो के अनुसार परिवर्तन आता है और सामाजिक पारस्पारिक सम्बम्ध स्थापित होते है । महान समाजशास्त्रज्ञ मैकाईवर तथा पेज के विचारानुसार ––"समाज चलनों और कार्य विधियों, प्रभुत्व और पारस्परिक सहयोग, उनके समूहों, मानव व्यवहार के नियंत्रणों और स्वच्छन्दताओं की एक व्यवस्था है ।"[243] यहाँ सामाजिक, व्यावहारिक स्थिति का अंकन होता है ।

समाजशास्त्र के अंतर्गत 'समाज'की विविध परिभाषाएँ प्रस्तुत की है । आधुनिक काल में आज भी निरंतर संशोधन हो रहा है । समाज से अभिप्राय सामुदायिक मानव जीवन की निरंतर नियामक व्यवस्था से है ; जिसका सर्जन मनुष्य एक दूसरे के हित के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में करता है । परंतु मानवी प्रगति के साथ–साथ वह जटिल बनकर वर्ग व्यवस्था

को जन्म देता है । समाज मनुष्य –मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्धों का संगठन है । व्यक्ति इस संगठन का प्रवर्तक है । व्यक्ति समाज का केंद्र बिंदू है । समाज रूपी शरीर का एक अंग बन रहने में ही व्यक्ति का कल्याण है । व्यक्ति समाजशील प्राणी है अत: उसका सामाजिकरण समाज ही करता है । व्यक्ति समाज से दूर रहकर अपनी आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं कर सकता । इसी कारण वह अपने अकेलेपन को त्यागकर परिवार तथा समाज में अपना जीवन यापन करने लगता है ।

सामाजिक व्यवस्था का प्रथम आधार संगठन है । इसी संगठन को समाज के रूप में परिभाषित किया है । प्रत्येक समाज की संरचना अलग–अलग होती है । योग्य संरचना सामाजिक व्यवस्था की नीव है । इसके अंतर्गत सार्वभौमिकता और मानवी मूल्यों का योगदान महत्वपूर्ण होता है । भारतीय समाज की आधारशिला पौराणिक है । प्राचीन भारतवर्ष में समाज विविध समूहों में बँटा था । फलस्वरूप आगे चलकर वह जातियों में बदल गया ।

भारतीय समाज की वैशिष्टयपूर्ण विशेषताएँ रही है कि जो अपेक्षाकृत बाहय नियमों, नीतियों और नियन्त्रणों पर अधिक निर्भर नहीं है । हर एक समाज की अपनी–अपनी जीवन शैली है । उनकी अपनी सीमाएँ, सामाजिक बंधन होते है । समाज में प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षा महत्वपूर्ण है और उसकी रक्षा का जिम्मेदार समाज होता है । व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास समाज में होता है । पारस्पारिक सहयोग बनाए रखना हर एक व्यक्ति का परमकर्तव्य होता है । स्वतंत्रता के साथ व्यक्ति अपनी शाक्ति और बौद्धिकता के अनुसार तत्व के आधार पर एक दूसरे से तालमेल बनाकर रागात्मक रूप से अपने जीवन का कल्याण करें । इसीलिए समाज की रचना की जाती है । समाज की प्रवृत्तियाँ सामाजिक चेतना का परिणाम है ।

4.4.1 .1 समाजबोध सिद्धान्त –

'व्यक्ति और समाज' दोनों के पारस्पारिक संबंधों का विवरण विविध दृष्टिकोनों से अनेकानेक समाजशास्त्रियों ने किया हैं । विद्वानों का इस तथ्य पर एक विचार है कि – "समाज के बिना मनुष्य का कोई अस्तीव नहीं है और मनुष्य के बिना समाज का आधार नहीं है ।"[244]

समाज में व्यक्ति–व्यक्ति की एकरूपता अथवा सामुहिकता में अन्त: सम्बन्ध स्थापित करता है । अन्तः सम्बन्ध स्वयं में कुछ सामाजिक जरूरतों एवं समस्याओं का परिणाम है ।

अन्त: सम्बन्धो के परिणामस्वरूप विविध सामाजिक समस्या उत्पन्न होती है । यह सन्तुलन बिगड़ना समाज एवं व्यक्ति के हित में नहीं है क्योंकि अनियंत्रीत संतुलन विनाशकारी शक्तियों को बल प्रदान करता है । ये विनाशकारी शाक्तियाँ सामाजिक जीवन प्रभावित कर परिवारों, समुदाय, व्यवसायों आदि में अव्यवस्था निर्माण करता है । इसके प्रति साहित्यकार जागृत होता है और इस विषय को अपनी रचनाओं में स्थान देता है ।

4.4.1 .2 'समाज' के प्रति वैज्ञानिक ज्ञान –

सामाजिक विज्ञान समाज का निर्माण, उत्थान एवं परिवर्तन का ज्ञान क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है । जो कारक सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करते है तथा प्रगति की इन स्थितियों में सामाजिक विचारधारा कौन सी थी एवं किन–किन सिद्धान्तों पर आधारित थी इसका सम्पूर्ण ज्ञान समाज को देते हैं ।

4.4.1.3'समाज' के उद्देश्य का ज्ञान –

समाज की पहचान उसके आदर्श और उद्देश्य क्या है इससे होती है । समाज की व्यक्ति जो उददे्श्यों का पूर्ण करने का प्रामाणिकता से प्रयत्न करता है, तब उददे्श्यों की पूर्ती कुशलता से हो सकती है । समाज के सदस्य इन से तभी सहमत हो सकते है जब उन्हे उददे्श्यों के प्रति सही जानकारी हो ।

4.4.1.4 सामाजिक अनुकूलता –

प्रत्येक व्यक्ति का समाज के विविध समूहों, वर्गो, संगठन आदि से सम्पर्क स्थापित होता है । समाज के विभिन्न स्तरों में रहकर उनकी विविध प्रजातियों के प्रति ज्ञान प्राप्त करके संस्कृति का बोध कराके उनके रीति–रिवाज, रहन–सहन, कला, खान–पान आदि से परिचय प्राप्त करना होता है । यहाँ सम्पूर्ण जानकारी व्यक्ति को उन समूहों और वर्गो के साथ अनुकूलन करने में मदत होती है । इसके साथ ही नई परिस्थितियों से अनुकूलन में मदत होती है । वर्तमान युग में नई परिस्थितियों से अनुकूलन की क्षमता एक अहम मुद्दा है । हर रोज समाज में परिवर्तन नजर आ रहे है । जो लोग इन परिवर्तनों से अनुकूलन करने की इच्छा रखते है, वे समाज के लिए योगदान दे सकते है ।

4.4.1.5 अहंवाद निराकरण —

रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से अहंवाद की तीव्रता को कम कर सकता है । सर्वसाधारण रूप से हर समाज अपनी संस्कृति को ही श्रेष्ठ मानता है । पाश्चात्य विद्वान लोवी इस बारे में अपने विचार प्रस्तुत करते है कि – "हम में से अधिकांश इस सुखदायक भ्रांति की शरण लेते हैं कि हमारी कार्य प्रणाली चाहे केवल सम्भव प्रणाली न भी हो, परंतु एक मात्र विवेकपूर्ण अवश्य है ।"[245] यही धारणा वर्ग संघर्ष का मूल कारण है । हमारे विचारों में परिवर्तन लाने में साहित्यकार का योगदान महत्वपूर्ण है । इस प्रकार के साहित्य के माध्यम से मनुष्य के वास्तविक मूल्यों को समझा जा सकता है और वर्ण, वर्ग, विश्वास, भेद–भाव की व्यर्थता को महसूस किया जा सकता है ।

4.4.1.6 सामाजिक बोध ––

विविध सामाजिक समस्याएँ, लोकसंख्या, अपराध, बाल अपराध, वेश्यावृत्ति, दहेजप्रथा, डकैती, बेरोजगारी, आत्महत्या, चोरी, आदि का प्रभाव सामाजिक समस्या में मौजूद होता है ।–जैसे अनुशासन के प्रति उदासिनता, सांप्रदायिकता, प्रांतवाद, भाषावाद, जातिवाद, आदि सामाजिक वातावरण बिगाड देता है और समाज की एकता तथा शांति में खल पैदा करके समाज को कमजोर बना देता है । सामाजिक विघटन से सामाजिक जीवन रस हीन एवं कठीण बनता है । इन सब का कारण खोजकर उस पर उपाय करके, मदद करके सामाजिक जीवन शांतिपूर्ण बनाए रखने में साहित्यकारों के सहयोग महत्वपूर्ण है ।

4.4.1.7 प्रगत मान संस्कृति में योगदान –

साहित्य के द्वारा मानव समाज को प्रगत बनाने में साहित्यकार की बड़ी मदद होती है । मनुष्य के संदेह नष्ट होते है और सामाजिक पारस्परिक सम्बन्धों को आधुनिकता तथा अनुसंधान के ज्ञानरूपी प्रकाश में समझा जाता है । साहित्यकार के आधुनिक तथा मौलिक विचारों से समाज के अच्छाइयों और बुराइयों को समझने और योग्य दृष्टिकोण रखकर विचार करने का बल प्राप्त होता है ।

4.4.1.8 सह–अस्तित्व की भावना –

'वसुधैव कुटुम्बकम' को स्थापित करना है तो सर्वप्रथम दुनिया के लोग एक–दूसरे के जीवन के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें । वैज्ञानिक युग के समाज में प्रत्येक

व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण समाज और संस्कृति के प्रति बहुत ही कम अनुभव प्रतीत होता है । परिणामत: समाज के विविध सदस्यों में आपस में संघर्ष दिखाई देता है । संघर्ष की स्थिति को नष्ट करने का एक मात्र उपाय यह है कि समाज के सदस्य एक दूसरे के प्रति सही जानकारी प्राप्त करें । इस प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति में साहित्यकार की सहायता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है ।

4.4.1.9 अन्तर्राष्ट्रीय शांति में सहयोग –

सकारात्मक रूप में ज्ञान प्राप्ति से प्रत्येक मनुष्य का दृष्टिकोण विशाल बनता है । मनुष्य में सहिष्णुता आती है । देश–देश में सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित होते है । पारस्परिक विचारों के लेन–देन से देशो में दृढ सम्बन्ध बनते है । इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय शांति को बनाए रखने में साहित्यकारों का योगदान महत्वपूर्ण है । साहित्यकार की विशेषता यह है कि – "व्यक्ति को मानसिक एवं नैतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन करता है, यह व्यक्ति को मानवता का वास्तविक पाठ पढ़ाता है । इस प्रकार के ज्ञान को व्यक्ति अपने सामाजिक सम्बन्धों को अधिक उत्तम एवं प्रिय बना सकता है । साहित्यकार के समाजबोध से व्यक्ति अपने को अत्याधुनिक व्यापक बनाता है ।"[246] इससे स्पष्ट होता है कि समाजबोध के माध्यम से समाज को ज्ञान प्रदान कर, पारस्पारिक सहयोग की भावना बढाकर, अहं भाव को नष्ट करके तथा सामाजिक समस्याओं की जानकारी प्राप्त करके उस पर उपाय विशेद करते हुए समस्याओं का निराकरण कर एक सभ्य मानव संस्कृति को स्थापित करने में अमूल्य सहयोग देता है ।

4.4.1.10 डॉ.कुँअर 'बेचैन' और वर्तमान समाज –

व्यक्तियों का प्रगतशील संगठन 'समाज' है । व्यक्ति ने काम तथा पैतृक प्रवृत्तियों से अपना अकेलापन छोडकर पारिवारिक जीवन का स्वीकार किया है । आगे चलकर समाज की रचना हुई और सामाजिक भावना को महत्व प्राप्त हुआ है । समाज अपने सदस्यों की सुरक्षा के प्रति सचेत होता है तथा उसके व्यक्तित्व विकास में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है । समाज जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित कर समाज को गतिशील, नीतिमान बनाता है । प्रत्येक समाज की जीवन शैली अलग–अलग होती है । एक दूसरें से मदत करने की भावना होती है ।

प्रत्येक सदस्य की स्वतंत्रता का आदर किया जाता है । परंतु वह सदस्य अपनी बौद्धिकता और तार्किकता के बल पर पारस्परिक सहयोग से जीवन विकसीत करें ।

साहित्य समाज के अनेक पहलुओं को उद्घाटित करता है, आशा–निराशा, हर्ष – विषाद, सुख–दु:ख आदि से साहित्य का स्वरूप बनता है । इसलिए साहित्य सम्पूर्ण मानव समाज का दर्पण है समाज के साथ–साथ साहित्य भी गतिशीलता से प्रभावित होता है । साहित्य समाज को नए आदर्श, मौलिक विचार प्रदान करता है । अत: साहित्य मानव जीवन का दर्पण ही नहीं दीपक भी है । प्रत्येक राष्ट्र, समाज के साहित्य में वहाँ की सामाजिक संस्कृति तथा सभ्यता, मान्यताएँ, रीति–रिवाज, नीतियाँ, जीवनमूल्य आदि के दर्शन प्राप्त होते है । साहित्य का कथ्य–शिल्प समाज से ही स्वीकार किया जाता है । साहित्य का उद्देश्य मानवी समाज का कल्याण करना है । साहित्य व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच में स्नेह स्थापित करता है । अनेक हिंदी ग़ज़लकारों ने भी इसी भावना को अपनी रचना में स्थान दिया है । उन्होंने ग़ज़ल के संकीर्णतापूर्ण कथ्य को बदलकर समाज के व्यापक पृष्ठभूमि पर स्थापित किया है । परिणामस्वरूप वर्तमान युग की ग़ज़ल में सामाजिकता का बोध मौलिक रूप से अभिव्यक्त हुआ है ।

वर्तमान युग की सामाजिक परिस्थितियों पर गहनता से विचार करे तो स्पष्ट होता है कि इस युग में अति वैयक्तिकता से मानवीय उदारता के भव्य पथ में रूकावट आ गई है । 'वसुधैवकुटुम्बकम' की भावना से दूर मानव अपने ही कुटुम्ब से कटता नजर आ रहा है । पारिवारिक विघटन, सम्मिलित परिवार से एकल परिवार का निर्माण, विवाह विच्छेद के कारण सामाजिक जीवन का ऱ्हास हो रहा है । मानवी मूल्यों का विघटन में विशद किया है । कुँअर बेचैन ने वर्तमान समाज के व्यक्ति के विघटन संबंधी विचार व्यक्त कि है । समाज में मानवता नष्ट हो रही है । वे अपनी 'दिवारों पर दस्तक' ग़ज़ल संग्रह में लिखते है –

''उसे ही मृत्यु का विषफल मिलेगा ।
कि जिसको भी कवच–कुण्डल मिलेगा ।।
ये दुनिया है यहाँ क्या जल मिलेगा ।
यहाँ तो दूर तक मरूथल मिलेगा ।।
जिसे तू प्यार देगा, देख लेना ।

तुझे उससे ही कोई छल मिलेगा ।।

'कुँअर' दिल में बसा तू अब उसी को ।

जो तुझसे होके भी ओझल मिलेगा ।।"[247]

इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल के माध्यम से वर्तमान सामाजिक वातावरण को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है । इसमें उन्होंने सामाजिक मानवीय मूल्यों के प्रति अपने विचार विशद किए है । स्वार्थांध बनकर एक ओर व्यक्ति अपनों से मुँह मोड रहा है । परिवार के रिश्ते ठंडे हो रहे है । पिता, भाई–बहन या अन्य निराधार को आश्रय देने से डर रहा है । अपने परिवार के सुख में समाज का शोषण कर रहा है । वह इतना आत्मकेंद्री है कि अपनी अजन्मी पीढियों के सुख विलास के लिए भौतिक संसाधन जमा करने में भ्रष्टाचार कर रहा है । परिवार और समाज से निर्मोह–मोह की यह विकृत मानसिकता दोनों ओर काम कर रही है । इसलिए यह महत्वपूर्ण बनता है कि परिवार और समाज के साथ यथायोग्य संतुलन स्थापित हो । आज मनुष्य–मनुष्य के बीच सम्बन्ध बिघड़ रहे है । आपसी स्नेह मिट रहा है । प्रत्येक मनुष्य मोह में फँसा जा रहा है । वह इतना आत्मकेंद्रीत हुआ है कि कुँअर बेचैन उस भाव को 'रस्सियाँ पानी की' ग़ज़ल संग्रह में व्यक्त करते है –

"मेरी नजरों से, नजारों की तरह टूटे है ।

वो जो टूट तो, सहारों की तरह टूटे है ।।

जिस को चाहा था, उसी प्यार को पाने के लिये ।

हम भी दुनिया में हजारों की तरह टूटें है ।।"[248]

स्वतंत्रता के बाद तत्कालिन व्यवस्था प्रगति के नए दावे दिन–प्रति–द्दिन प्रस्तुत करती है । परंतु वर्तमान का सच यह है कि समाज का सर्वहारा वर्ग तथा आम आदमी उस विकास के लाभ से कोसो दूर है । डॉ. मधु खराटे जी का मानना है कि–

"एक जमाना था कि जब समाज में मानवता की पूजा होती थी,

मानवता को पैसा, पद, प्रभुता आदि से बड़ा मात्रा जाता था ।

किन्तु वर्तमान समय में बढ़ती हुई बौद्धिकता और स्वार्थ

के सामने मानवता बीते युग की चीज हो कर रह गयी है ।"[249]

भारतीय संस्कृति में उदात्तता का काफी महत्व रहा है । मनुष्य के जीवन में सेवा भाव, दया भाव, अहिंसा शांति, भाईचारा आवश्यक माना गया था । भौतिक सुख साधनों से बढकर मानवता और अध्यात्म का स्थान ऊँचा था । आज के समय में इसके विपरित वातावरण दिखाई दे रहा है । मनुष्य आत्मकेंद्री बनकर अपने स्वार्थ में लिप्त है । एक सवेंदना रहित व्यवहार बढ रहा है । परिणाम स्वरूप मनुष्य समाज से अलग हो रहा है । उच्च मानवी मूल्यों का ऱ्हास दिन–ब–दिन बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है ।

कुँअर बेचैन ने 'शामियाने काँच के' ग़ज़ल संग्रह में सामाजिक विषमताओं की पीडा को झेलते हुए सर्वहारा वर्ग के दु:ख–दर्द को व्यक्त किया है ।

"जहाँ इन्सान की औकात से दौलत बडी होगी ।
महल तनकर खडे होंगे झुकी हर झोपडी होगी ।।
वो जिससे झोपड़ी की पीठ की ताकत लडी होगी ।
न होगा और कुछ वो सिर्फ चाँदी की छडी होगी ।
न यह पूछो कि क्यों टूटा हुआ है, आईना दिल का
किसी की आह ने तस्वीर आँसू की जड़ी होगी ।।"[250]

आज समाज व्यवस्था में आपसी स्नेह और सहयोग देखने को नहीं मिल रहा है । नफरत और भेदभाव बढ रहा है । आज मानव को जाति शत्रुता, स्वार्थपरता आदि ने घेरा हुआ है । मानव–मानव में आपसी सहकार्य तथा मधुर सम्बन्ध नष्ट होते जा रहे है ।

कुँअर बेचैन की ग़ज़ल में सामाजिक विकास की पोल खोल दी है । यह यथार्थ है कवि कल्पित नहीं है । आधुनिक भारत के हर दल के नेताओं ने विकास का अर्थ संकुचित रूप में स्वीकार किया है । उनकी नजर में अधिक से अधिक अर्थ की प्राप्ति ही प्रगति है । उसे पाने के लिए नैतिकता का स्तर गिरा तो भी उन्हें फर्क नहीं पड़ता, सामाजिक अपराध करने में भी पीछे हटते नहीं हैं । भ्रष्टाचार के किचड में भारत धँसा जा रहा है, यह गलत नीतियों का परिणाम है । आर्थिक विकास के साथ सामाजिक विकास महत्वपूर्ण है, उसके लिए नैतिकता और मानवी मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है । परंतु स्वातंत्र्योत्तर काल में मानवीय मूल्यों की बलि सरेआम दी जा रही है । इसीलिए बडे–बडे पूँजीपति, प्रतिष्ठित जन, राजनेता अपराधिक गतिविधियों में लिप्त है । कुँअर बेचैन जी वर्तमान समाज की डरावनी स्थिति को अपनी ग़ज़लों

के माध्यम से व्यक्त करते है –

"मत पूछिये के कैसे सफर काट रहे है ।
हर साँस एक सजा है मगर काट रहे है ।
खामोश आसमान के साये में बार–बार ।
हम अपनी तमन्नाओं का सर काट रहे है ।।
आधी हमारी जीभ तो दाँतो ने काट ली ।
बाकी बची को मौन अधर काट रहे है ।।"[251]

सुविधा संपन्न लोगों का घोटालों में लिप्त पाया जाना, मंत्रियो और ऊँचे पदो पर आसिन अधिकारियों द्वारा कुछ दिनों में ही अपार संपत्ति को बटोर लेना आम बात बन गई है । भ्रष्टाचार के कारण भारतीय समाज में नैतिकता का ऱ्हास हो रहा है । भूखा आम–आदमी नहीं बल्कि सुख संपन्न भरे पेट वाला अधिक पाप कर रहा है । आज का मानव भ्रष्टाचार के कारण परेशान है । वर्तमान समय में भ्रष्टवातावरण में आम आदमी के जीवन पर कुँअर बेचैन स्पष्ट लिखते है –

"क्या सुनाएँ आपको अपने सफर की दास्ताँ ।
जिंदगी भी जिंदगी के बोझ को ढोकर मिली ।।
हम युगों से जागकर भी मंजिले ना पा सके ।
है बडा अचरज कि मंजिल उनको सो–सो कर मिली ।।"[252]

सामाजिक विषमता हमारे लिए अभिशाप है । इसी अभिशाप से छुटकारा पाने के लिए डॉ. कुँअर बेचैन जी ग़ज़ल में अपने भाव व्यक्त करते है । शोषक वर्ग, मेहनत कर मजूदर आम आदमी के बलबुते पर विलासीता में जीवन यापन कर रहे है ।

जो लोग प्रामाणिकता से परिश्रम करते है वे जीवन में आगे बढ कर तरक्की नही कर पाते किन्तु रिश्वतखोर लोग आगे बढ रहे है । डॉ.कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल में प्रस्तुत करते है कि —

"वो कसक वो जिंदगी की बेकरारी अब कहाँ ।
दिल ही दिल में टूटने की होशियारी अब कहाँ ।।
कितनी खामोशी से हमसे पूछती है घण्टियाँ ।

देवता मन्दिर वो मंदिर के पुजारी अब कहाँ ।।

जालिमों का सर तो काटा जा भी सकता है 'कुँअर'

जुल्म का सर काटनेवाली कटारी अब कहाँ ।।"[253]

डॉ.कुँअर बेचैन के सन्नाटे विरूद्ध अपनी आवाज उठाने चाहते है । उन्हें आम आदमी का सामर्थ्य की जानकरी है । मानवता के लिए अपना दायित्व निभाने के लिए कहते है ।

भारतीय नारी का सामाजिक जीवन में अनन्य रुप मेंस्थान है परंतु उसकी मुक्ति के नाम पर भारतीय समाज जीवन में वह अधिक प्रताड़ित है । आज के सभ्य समाज में भी उसकी करूण कहानी है । परित्यक्ता की आधार हीनता -उसकी पीड़ा बयान करती है । कुँअर बेचैन ने नारी की दुर्दशा का चित्रण किया है । पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में सबला हो परंतु उसपर अन्याय अत्याचार का दौर कम नहीं हो रहा है । मंदिर हो या उंची हवेलियाँ अनाचार हर जगह होता ही रहता है । कभी पुजारी तो भी साहूकार अबला की इज़्ज़त से खेलते है । डॉ.कुँअर बेचैन ने 'आरती' इस प्रतीक द्वारा उसकी पीड़ा को व्यक्त किया है –

"आसनों से उतारी गई आरती ।

हाँ, जहर दे के मारी गई आरती ।।

मंदिरों में ग़ज़ब का अंधेरा हुआ ।

कह उठे थे पुजारी, गई आरती ।

लोग कहते है यह हादसा तब हुआ ।

जब महल की अटारी गई आरती ।।

मंदिरो के झरोखे नहीं खुल सके ।

मैकदों से निहारी गई आरती ।।

आह के, अश्रु के, भूख के, मौत के ।

सब के घर बारी-बारी गई आरती ।।

आरती नाम था उज्वला धूप का ।

राख कहकर पुकारी गई आरती ।।"[254]

नारी पर सदियों से अन्याय अत्याचार हो रहा है इस बारे में आर.पी. भोसले कहते है– “ अविवाहिता; विवाहिता परित्यक्ता, पुनर्विवाहिता और विधवा नारी दोहरे रूप में जीवित रहने के लिए अभिशप्त है, जिसमें उसका भीतरी संघर्ष निरंतर चलता रहता है ।”[255]

स्वतंत्रता के बाद जो राजनीतिक नेता है वे दिन–ब–दिन रईस होते गए । भ्रष्टाचारी राजनीतिक वातावरण में यहाँ नौकरशाही उन्हें ही साथ दे रही है । व्यापारी, अधिकारी, ठेकेदारो ने भ्रष्ट राजनीतिक दल को मदत की है । इस प्रकार एक दूसरे का साथ देने से सामान्य भी विशिष्ट बन गए है । राजनीतिक बल के कारण बेईमानी से प्राप्त सम्पत्ति के मालिक बन गए है । इस राजनीतिक घिनौनेपन को कुँअर बैचेन ने रेखांकित किया है । यह धन झूठ से, बेईमानी से आता है । दफ्तरों में गलत काम होता है । इनकी कमाई खुन पसीने की नहीं । ग़ज़लकार कहता है—

“बडे लोगों के दफ्तर में वो ठंडक है कि क्या पूछो
पसीने की कमाई देखने में ही नहीं आती ।”[256]

शासन व्यवस्था के रिश्वतखोरी के बारे में कुँअर बेचैन ग़ज़ल प्रस्तुत करते है –

“जरा सोचो कि मुँह तक रोटियाँ क्यों आ नहीं पाई ।
तुम्हारी कलाई में कही कुछ गड़बड़ी होगी ।
मनाऐंगे कभी दीपावली हम इस तरह यारों ।
हमारे पास होगी आग उन पे फुलझडी होगी ।।”[257]

डॉ.कुँअर बेचैन जी ने हिंदी ग़ज़ल साहित्य में अभिव्यक्त समसामयिक समाज का चित्रण व्यापक रूप से करने का सफल प्रयास किया है । ग़ज़लकार ने उन सभी विषयों को अपनी ग़ज़लों में विशद किया है जो हमारी जीवन से सम्बन्धित है । जिसमें राजनीतिक पतन, भ्रष्टाचार, सरकार की निष्क्रीयता, भूमंडलीकरण की भयावहता, पाश्चात्य संस्कृति का विरोध, मानवी मूल्यों का विघटन, आर्थिक विषमता आदि सभी सामाजिक विषयों को उद्घाटित किया है ।

4.4.2 डॉ. कुँअर 'बेचैन' की ग़ज़ल में बदलती समाज मान्यताएँ—

हिंदी ग़ज़ल में 'कुँअर बेचैन' का स्थान महत्वपूर्ण है । उन्होंने हिंदी ग़ज़ल को समृद्ध बनाने में अमूल्य योगदान दिया है । उन्होंने ग़ज़ल के द्वारा सामाजिक विभिन्न प्रश्नों और समस्याओं को उद्घाटित किया है । वर्तमान युग में समाज की बदली हुई मान्यताओं को उन्होंने अपनी ग़ज़ल के द्वारा स्पष्ट किया है । पारतंत्र्य में भारतीय सामाजिक जीवन की अपनी मान्यताएँ कायम थी । जीवन मूल्य निर्धारित किए गए थे, जिनका पालन व्यक्ति अपने जीवन में करता था । स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक व्यवस्था में शीघ्रता से परिवर्तन आया । 1960 ई. के पश्चात सामाजिक मूल्यों मे काफी परिवर्तन हुआ एवं पतन हुआ है । व्यक्ति के बीच में स्नेह, सहानुभूति, जैसे भाव खत्म हो गए । मनुष्य आत्मकेंद्री बना, फलस्वरूप व्यक्ति न केवल समाज से परिवार से भी दूर होता जा रहा है ।स्वार्थ के कारण उसके कोमल और मधुर भाव नष्ट हो रहे है ।

"समाज में इन्सानीयत गायब हो रही है और अर्थकेंद्रीत रिश्ते ही समाज में पनप रहे है । परिणाम स्वरूप आज का इंसान पैसे को ही ईश्वर मानकर पैसों का गुलाम हो गया है ।"[258]

पाश्चातों के अंधानुकरण से रिश्ते–नातों का महत्व कम हो गया है । आत्मकेंद्री प्रवृत्ति के कारण रिश्ते स्वार्थ के घेरे में अटक गए है । रिश्ते तोडने में मनुष्य को कोई दर्द नहीं होता है । रिश्तों को तोडना अब उसके लिए आम बात है । आज किसी पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता । आज अपना दोस्त कभी भी विश्वासघात कर सकता है । पारस्पारिक सौहार्द और स्नेह की कमी के कारण मनुष्य दु:खी बनता जा रहा है । यहाँ सामाजिक पतन की और निर्देश करते हुए ग़ज़लकार लिखते है– –

"प्यार पूजा घर था पहले अब तो बस बाजार है ।
जिसको देखो वो ही बिकने के लिये तैयार है ।"[259]

व्यक्तिगत जीवन की समस्याए अव्यवस्था एक सामाजिक स्थिति को पैदा करती है कि जिसके अंतर्गत किसी को भी जीवन–मूल्यों से कुछ भी लेना–देना नहीं होता है । एक ऐसी सभ्यता विकसीत होती है जिसमें मनुष्य संकीर्णता के घेरे में सिर्फ अपने स्वार्थ के बारे में

सोचता है संवेदन हीन बनकर स्वार्थ के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार होता है । मनुष्य–मनुष्य के बीच सम्बन्ध संदेहपूर्ण बना जाते है ।

धर्म उदारता और उदात्तता से परिपूर्ण है । धर्म की व्यापकता में संकीर्णता का स्थान नहीं होता । परंतु धर्म का उदात्त भाव कमजोर हो रहा है । पुरानी परम्पराओं, दाकियानुसी विचारों के साथ धर्म के ठेकेदारों ने धर्म को बदल कर संकीर्ण एवं विकृत रखने का प्रयास किया है । धर्म के आड में स्वार्थी प्रवृत्ति, ढोंग, अनाचार, अन्याय आदि अप्रवृत्तियों को जन्म हुआ है । संप्रदायिकता एक समस्या के रूप में उभरकर सामने आ रही है । धर्म के नाम पर अलग –अलग स्थानों पर अलग–अलग वर्गो में दंगा–फसाद होता है । कभी हिन्दू–मुसलमानों में तो कभी हिंदू के जाति–वर्ग में आपस में टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है । धार्मिक कट्टरता से लोगों की संकीर्णता बढ रही है । आज हम अनुभव कर रहे है कि साम्प्रदायिकता के अंगारे प्रति दिन बरस रहे है । धर्म के नाम पर खुन की नदियाँ बह रही है । मासूम निष्पाप बच्चों की जान की कोई किंमत नहीं रही है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है –

“है दिन भी अँगारो के, हर रात अँगारो की
यह किसने हमे दी है, सौगात अँगारो की
मुश्किल है बहुत मुश्किल, अब घर से निकल पाना
कागज की छतरियाँ है, बरसात अँगारों की
क्यों आग की लपटों से, घर मेरा बचा रहता
आँधी की तरह आई, बारात अँगारों की ।”[260]

आजादी के बाद देश की औद्योगिक विकास से महानगरों का स्वरूप बदल गया है । महानगरों में भौतिक सुख–साधनों की चकाचौंध है । भौतिकता का एक तरफा विकास महानगरों में विद्रुपता को निमंत्रण दे रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल संग्रह ‘**महावर इन्तजारों का**’ की एक ग़ज़ल में महानगरीय जीवन का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया है, वे लिखते है कि आज रिश्तों में ठंडापन आ गया है अपने ही पराए जैसा व्यवहार कर रहे है । ऐसा महसूस होता है कि उनकी रगों में अपना खून ही नहीं रहा है । वे लिखते है –

“गैर बनकर रह रहा है, अब सगों के बीच में ।
खून बहता है नही अपनी रगो के बीच में ।।”[261]

आज भ्रष्टाचार ने विकराल रूप धारण किया है । भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में मौजूद है । इस प्रवृत्ति से सम्पूर्ण देश का वातावरण दूषित हो गया है । आज नैतिकता, मूल्यों का कोई महत्व नहीं रहा है । इसके स्थान पर धनप्रतिष्ठा को महत्व मिल रहा है । दूसरों के सुख– दुःख के प्रति उदासिनता बढ रही है । मनुष्य संवेदन हीन बनता चला जा रहा है । इस भाव को कुँअर बेचैन **'नाव बनता हुआ कागज'** ग़ज़ल संग्रह से विचार प्रकट करते है –

"गाँव आते है, नगर आते है, घर आता है ।
फिर भी अपना न कहीं, कोई नजर आता है ।।
दिल की बस्ती में कहीं आग लगी है अब भी ।
अश्क हर बार ही लेकर, ये खबर आता है ।।"[262]

कुँअर बेचैन की ग़ज़ल में प्रेम का चित्रण हुआ है । ग़ज़ल में प्रेम के संयोग पक्ष की अभिव्यक्ति नहीं हुई है । इसका कारण हिन्दी ग़ज़लकारों ने प्रेम विषय को अपने ग़ज़लो में केंद्र में नहीं रखा जितना कि उर्दू शायरों ने रखा था । हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक प्रवृत्तियों का चित्रण है । -किन्तु जहाँ प्रेम संवेदना प्रकट हुई है वह वियोग शृंगार रूप में है । अपने ही जब प्रेम के रास्ते में रूकावट पैदा करते है तो प्रेमी को अनेक संकटों से गुजरना पडता है । प्रेमी की इस विवशता को कुँअर बेचैन ने रस्सियाँ पानी की ग़ज़ल में चित्रित किया है–

"मेरे दिल को तुम्हारे प्यार से होकर निकलना था
कि इक चलती हुई तलवार से होकर निकलना था
ठहरना था उसी के पास जिसके पास से होकर
मुझे इक तेज़–सी रफ्तार से होकर निकलना था
पिघलने की इजाजत थी न जलने की इजाजत थी
मुझे फिर भी किसी अंगार से होकर निकलना था
मेरा हर दर्द मेरी डायरी तक था 'कुँअर' जिसको
सभी के सामने अखब़ार से होकर निकलना था ।"[263]

भारतीय समाज पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहा है । "परंतु मानव को मशीन में परिणत कर देने वाली पश्चिम की जीवन शैली उबाऊ, रस हीन, जीवन और रस के अभाव में

एक से एक उत्तेजक गतिविधियों में फँसकर विनाशोन्मुख हुए पश्चिम के लोग हजारों की तादाद में वास्तविक जीवन जीने की प्यास लिए भारत आते है । पर भारत पुत्र अपना सर्वतोमुखी विकास का मूल केवल पश्चिम के अन्धानुकरण करने में ही निहित मानकर एक दूसरे से होड करते देखे जाते है ।"[264] यहाँ भारतीय समाज के कई लोगों पाश्चात्य संस्कृति अंधा अनुकरण एवं उस संस्कृति के प्रभाव में विचारों का आदान–प्रदान कर रहा है ।

भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति की तुलना करते हुए कुँअर बेचैन कहते है कि हम भारतीय लोग जो भी काम करते थे खुले आम करते थे । नहाने के लिए बंद कमरे की आवश्यकता नहीं थी । भारत जैसे गर्म प्रदेश में ठंडे पानी का अनुभव सुखद होता है । पश्चिम के लोग खुले में स्नान नहीं करते । भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों की तुलना करते हुए ग़ज़ल़कार समझाते है कि हमारी संस्कृति पारदर्शक है तो पाश्चात्य संस्कृति चमक–दमक से निर्माण है, जिसमें नुकसान है । इसलिए कुँअर बेचैन कहते है –

"बाथरूमों की नयी 'कल्चर' में इतना बंद हूँ
खुल के बारिश में नहाने की अदा जाती रही ।"[265]

सामाजिक परिवर्तन के दौर में समाज में नई सभ्यता पनप रही है । लेकिन आस्थाएँ डाँवाडौल हो रही है । एक ही आदमी के दो रूप दिखाई दे रहे है । असली रूप दर्पण में ही दिखाई देता है । अपनी ही मजबूरी पर उसे रोना आ रहा है –

"बात ऐ आइने, क्या सोचता है तू अकेले में
हम अपने जब कई चेहरे, तेरे सम्मुख बदलते है ।"[266]

वर्तमान समाज ने नई सभ्यता का स्वीकार किया है । किन्तु इस प्रकार की सभ्यता से मनुष्य भौतिकवादी बन गया है । इससे जीवन मूल्यों का ऱ्हास हो रहा है । बेचैन जी के ग़ज़लो में भौतिकवादी सभ्यता को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया है । नई सभ्यता ने मनुष्य को 'आत्मकेंद्री' बना दिया है । उसके सामाजिक उत्तरदायित्व के भाव कुंठित हो गए है । अकेलापन और अभावग्रस्तता इस सभ्यता के तत्व है । रिश्तों –नातों के विषय में कुँअर बेचैन कहते है कि नेम प्लेट लगा देने से घर नहीं बनते उसके लिए परस्पर स्नेह जरूरी है । घर के सदस्यों में तालमेल आवश्यक है । रागात्मक सम्बन्धों से घर स्वर्ग सा बनता है सिर्फ चार दिवारों का घर नहीं होता है । डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"नाम में अपने लिखा लेने से कब बनते हैं घर
नेमप्लेटों को लगा लेने से कब्र बनते है घर
घर का मतलब है कि घर के लोग मिलजुलकर रहें
चंद चीजों का सजा लेने से कब बनते है घर
घर में इक सुरत्ताल का होना भी जरूरी है बहुत
घर का केवल राग गा लेने से कब बनते है घर ।"[267]

कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में आधुनिक युग के समाज की मान्यताएँ प्रकाशित हुई हैं । उनकी ग़ज़लों में जीवन की वास्तविकता की अभिव्यक्ति स्पष्ट होती है । उन्होंने इन सबका प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुत किया है ।

4.4.3 डॉ.कुँअर बेचैन जी के ग़ज़ल साहित्य में सामाज़िक समस्याएँ —

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में पीढ़ियों का द्वंद्व अधिक तीव्रता से उभरकर आया हैं । दो पीढ़ियों के संघर्ष में नई पीढी.ने पुरानी पीढी को स्वीकारा नहीं हैं । सन 1960 के पश्चात राजनीति ने समाजनीति से अपना अलग अस्तित्व निर्माण किया हैं । राजनीति सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रही हैं । समाज की हर गतिविधियों को राजनीति संचालित कर रही हैं । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस देश में राजनीति का भ्रष्ट रूप सामने आया है । राजनीति ने सामाजिक क्षेत्र को भी दूषित और भ्रष्ट कर दिया हैं । मतलब आज का सामाजिक वातावरण पूरी तरह से विकृत तथा दूषित बना है । राजनीति का यह रूप देश के लिए हानीकारक हैं । राष्ट्र, समाज तथा व्यक्ति को इससे भारी नुकसान हो सकता हैं ।

सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से यहाँ पतन का काल था । स्वातंत्र्योत्तर काल में जो आजादी के दिनों सुख के स्वप्न देखे थे सबके सब चकनाचुर हो गए हैं । पूँजीपतियों ने गरीबों को शोषण शुरू किया हैं । आज भी सामन्ती प्रवृत्ति अपना रंग दिखा रही है । यह सामन्तवाद अनेक रूप धारण करके गरीबों का शोषण कर रहा है । गरीब और गरीब बन रहा है अमीर और अधिक अमीर बन रहा है । इस सम्बन्ध **डॉ.प्रतिमा सक्सेना** का विचार है कि "सत्ता, अर्थतंत्र और धर्म की सशक्त ताकतें लाचार आदमी को लूटने में लगी है । आम आदमी की दयनीय स्थितियों और त्रासदियों के लिए उत्तरदायी ताकतों के उद्देश्यों को बेनकाब करना, जनता में आत्मविश्वास तथा एक व्यापक आन्दोलन की सक्रीय भूमि तैयार

करने में सहयोग देना, आज के साहित्यकार के लिए बुनियादी सरोकार बन गए है । हिंदी के साहित्यकार बखूबी अपने इस दायित्व का निर्वाह भी कर रहे है । हिंदी के ग़ज़लकारों ने आज के सामाजिक यथार्थ को गहराई के साथ पहचाना है ।''[268]

4.4.3.1 महानगरीय जीवन की विद्रुपताएँ –

आजादी के बाद देश में औद्योगिक विकास के साथ महानगरों में भी परिवर्तन आया है । महानगरीय जीवन पर भौतिक विकास का प्रभाव दिखाई देता है । लेकिन महानगरों में विद्रुपता ने उग्र रूप धारण किया है । इस पीड़ादायक स्थितियों का वास्तविक चित्रण हिंदी ग़ज़लकारों ने मार्मिकता के साथ किया है । ''आज हमारे देश का शहरीकरण बड़ी तेजी से हो रहा है । आजादी के पूर्व महात्मा गांधी ने 'देहातों की और चलो' की घोषणा की थी । क्यों कि उन्हें मालूम था, यहाँ की आबादी का 75 % हिस्सा देहातों में रहता है और उनकी मेहनत के बदौलत सभी भारतीयों को अनाज मिलता है । किंतु आजादी के बाद परिस्थितियाँ बदल गई और देश का बड़ी तेजी से नागरीकरण होने लगा ।''[269] शहरों में दंगे–फसाद जैसी घटनाएँ आम लोगों को प्रभावित करती है । सारा शहर आग से जलता है और लोग तमाशबीन बनते है । इस पर कुँअर बेचैन कहते है –

''जल रहा है शहर सारा और हम खामोश हैं
जर्रा–जर्रा है अंगारा और हम खामोश हैं
चाकुओं की नोंक पर है अब हमारी गर्दनें
गर्दनों पर दुधारा ओर हम खामोश है ।''[270]

आज मानव जीवन सुख या दु:ख की राह पर नहीं वह नफरत और स्वार्थ में लिप्त है । इसी कारण संघर्ष पैदा होता है आपस में टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है; कुछ समय के लिए शांति स्थापित होती है परंतु शांति तथा सुख के पल बहुत कम होते है । कुँअर बेचैन स्पष्ट रुप से कहते है –

''सपनों को जले कितने बरस बीत गये है
आँखो में मगर अब भी धुआँ देख रहा हूँ
ना शोर कहीं है, न किसी दिल में है हलचल

पर मैं तो 'कुँअर' अब भी धुआँ देख रहा हूँ ।"[271]

महानगर भौतिक उन्नति का लेखा–जोखा है और महानगरीय जीवन हिंदी ग़ज़ल में व्यापक रूप से चित्रित है । महानगरों की ओर आकर्षण बढ़ रहा है परंतु वहाँ पहुँचकर असलियत का पता चलता है, भीड में मनुष्य अकेलेपन से बेचैन है । शहरों में मील मालिक मजदूरों का शोषण करने लगे है । मजदूरों को सही मजदूरी नहीं मिलती है । अत्याचार और शोषण से आम आदमी का जीवन त्रस्त है । महानगरीय मानव के जीवन के बारे में कुँअर बेचैन लिखते है –

"छा गया यह सोच, सन्नाटा शहर में ।
क्यों पसीने को गया, डाँटा शहर में ।।
गाँव से चलकर शहर तक साथ आया ।
साँप ने अक्सर हमें काटा शहर में ।"[272]

"अब रसोई के अंदर कहने लगे है ।
सह रहे है रोज हम घाटा शहर में ।।
पिस रहा है, बीच का तब का शहर में ।
लोग कहते पिस रहा आटा शहर में ।।"[273]

डॉ.कुँअर बेचैन जी ने आम आदमी का त्रासदी को अपने ग़ज़ल का विषय बनाया है । आज आम आदमी आर्थिक विपन्नता से संघर्ष कर रहा है । रोटी के लिए संघर्ष कर रहा है । इस प्रकार की स्थिति आज महानगरों में आम आदमी की बनी हुई है । उसे भूख की आग नख–शिखान्त जलाती जा रही है । आज व्यवस्था के शामियाने है परंतु वह काँच के है । जिनमें आने वाली किरणे प्रखर होती है तब यह शरण अत्यंत पिड़ा देती है । कुँअर बेचैन कहते है –

"साधकर फूलों से चेहरों पर निशाने काँच के
दे गए अनगिन खरोंचें दोस्ताने काँच के
यह भरम लेकर कि यूँ जुड़ जाएँगी यादे तेरी
जोडते रहते है हम टुकडे पुराने काँच के

इस चिलकती धूप में कुछ और भी ज्यादा जले

सर पे हम ताने हुए थे, शामियाने काँच के

इस जमाने में, गुलेलों में है दाने काँच के ।"[274]

शहरों में आम आदमी की स्थिति खराब है उसका जीवन दुरूह बना हुआ है । दानवी प्रवृत्ति वाले लोगों ने आदमी की खुशबू सूंघ ली है । यह दृष्ट लोग आम आदमी का जीवन ध्वस्त कर रहे है । ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"आदमी जिन्दा रहेगा अब यह मुमकिन ही नहीं

दानवों ने सूँघ ली है आदमी की खुशबुएँ ।"[275]

आज के महानगरीय समाज की विसंगति से पता चलता है कि आज पारस्परिक विश्वास का वातावरण खत्म हो गया है । आज अपने पडोसी, रिश्तेदार कब विश्वासघात करेगा यह कहा नही जा सकता । इसी कारण मन में अनेक प्रश्न है । "नगर घर कही भी आत्मीय वातावरण नहीं है । पारस्परिक प्रेम सौहार्द के अभाव में सारा नगर जंगल की तरह भयावह व घर परिवार नागफनी की तरह तीखी चुभन देने वाला है ।"[276] बेचैन जी लिखते है –

"नागफनियों के शहर आवाज दे ।

ला पिऊ तेरा जहर आवाज दे ।।"[277]

डॉ.कुँअर बेचैन ग़ज़ल के माध्यम से यह प्रतीत होता है कि महानगरीय आदमी स्वार्थांध हुआ है जिसमें अपनापन शून्य है । मानवता से बहुत दूरियाँ निर्माण हुई है वह अपने संसार में अपना जीवन यापन कर रहा है । आजादी के बाद विकास के कारण लोग नौकरी के कारण शहरों में स्थापित हो रहे है । वह स्वतंत्र रूप से कमाने लगा है । उसकी यह आजादी घर परिवार, गाँव से अलग बन गई है । इसलिए वर्तमान युग में आदमी के रिश्तों के बीच का धागा कच्चा बनकर टूट रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन जी ग़ज़ल दृष्टव्य है –

"सामने था न क्यों नजर आया ।

ये भी इल्जाम मेरे सर आया ।।

उसको जिसने भी उडना सिखलाया

पंख उसके ही वो कतर आया ।।"[278]

यहाँ जीवन मूल्य नष्ट हो रहे है । युग परिवर्तन के साथ–साथ मनुष्य की मानसिकता भी बदल रही है । बुरे वक्त में अपने भी साथ छोड देते है । महानगरीय जीवन मूल्य हीनता को बेचैन जी उजागर करते है –

‘‘गम के माले में अकेला छोड जायेंगे

देख लेना, तेरे रिश्ते तोड जाएंगे तुझे ।’’[279]

महानगरीय जीवन की विद्रुपता चरम सिमा पर है आपसी विश्वास टूट गया है । मैत्री भाव कहने के लिए है, मित्रता महसूस नहीं हो रही है, एक दूसरे प्रति संदेह पैदा हुआ है । मित्रता में विश्वासघात का अनुभव हो रहा है । बेचैन जी लिखते है ––

‘‘यारों का मत यार कहो, ये यार नहीं दीवारें है ।

तुम जिन पर दस्तक देते हो, द्वार नहीं दीवारें है ।।

सब को अपनी ही आदम से रहना अच्छा लगता है ।

मछली को तो ये शीशे के, जार नहीं दीवारें है ।

जब कोई एहसान जताता है तो ऐसा लगता है ।

जैसे मुझ पर उसके ये उपकार नहीं दीवारें है ।।

कर्तव्यों के आँगन को, जो छोटा करते रहें कुँअर ।

मन के आँगन में वे सब अधिकार नहीं दीवारें है ।।’’[280]

ग़ज़लकार महानगर में रिश्तों की बात करते है । रिश्ते दो पावों के जैसे होते है जिस पर रिश्ता चलता है । दो पावों में तालमेल जरूरी है अगर तालमेल बिघड जाता है मनुष्य अपाहिज तरह चलता है, वैसे ही रिश्ते में होता है । डॉ. कुँअर बेचैनी दृष्टि से –

‘‘रिश्ते भी आदमी के दो पाँवो की तरह है ।

गर हो न ताल मेल तो लँगड़ा के चलेंगें ।।’’[281]

महानगरीय मनुष्य का जीवन कठिण हो गया है । वह अकेला, बेसहारा हो गया है –

‘‘अब तो पूरा जिस्म है ही कुछ इस तरह बीमार है ।

पीठ खुद बोझा हुई है, पेट पल्लेदार है ।।’’[282]

महानगरीय जीवन की पहचान आत्मकेंद्रीयता बन गई है । "व्यक्ति की लाचारी, मजबूरी, असहायता, अमानवीयता, समाज में दिन–ब–दिन बढ़ने लगी परिणामतः व्यक्ति का समाज से सम्बन्ध टूटता हुआ नजर आ रहा है । आज व्यक्ति और समाज में एक प्रकार का अन्तरात दिखाई देता है ।"[283] महानगरीय जीवन दमित वासनाओं से भरा है । जिससें अनेक प्रकार की विकृतियाँ, विद्रुपताएँ विद्‌यमान है । परस्पर सौहार्द तथा परोपरकार की भावना नष्ट हो गई है । कुँअर बेचैन कहते है –

"गैर को अपना बनाने की अदा जाती रही ।
दिल की महफिल को सजाने की अदा जाती रही ।।
नकली मुस्कानों के हमले होठों पे कुछ यूँ हुए ।
सच्चे दिल से मुस्कुराने की अदा जाती रही ।।
उससे हम कुछ यूं मिले इतने मिले ।
दूर रहकर पास आने की अदा जाती रही ।।"[284]

उपर्युक्त सभी शेरों में महानगरीय जीवन के तत्वों का चित्रण हैं । डॉ.कुँअर बेचैन जी का जीवन और जीवन का बहुत सारा हिस्सा महानगरों में बीत गया हैं । कुँअर बेचैन जी का अनुभव विश्व बहुत व्यापक है । इसी कारण उनके अनुभवों में महानगरीय जीवन के तत्वों का होना उचित हैं । कुँअर बेचैन जी ने महानगरीय जीवन में आत्मीयता का अभाव, अजनबीपन, प्रेम–मैत्री–बंधुभाव जैसे मूल्यों का ऱ्हास, हठ–छल–धोखा–फरेब जैसी विकृतियाँ आदि को अपनी ग़ज़लों में विविध रूपों में प्रक्षेपित किया है । महानगरीय जीवन में सर्वहारा वर्ग का दर्द केंद्र में है ।

4.4.3.2 मानवी मूल्यों का विघटन –

एक समय था जब 'मानवता' को सर्वोच्च स्थान था । धन बल से मानवता को श्रेष्ठ समझा जाता था । आज आधुनिकता के दौर में बौद्‌धिकता के आगे मानवता चरमरा गई हैं । मानवता का स्थान स्वार्थ, चालाकी, फरेब ने लिया हैं । आज भारत में मानवीय सम्बन्ध संकट में होने के प्रमाण मिल रहे है । दाम्पत्य–जीवन के पारंपारिक मूल्यों का ऱ्हास हो रहा है ।

जीवन –मूल्यों के सम्बन्ध में कहा जाए तो आजादी के बाद होने वाले बदलाव के संदर्भ में आम आदमी को बहुत सारी उम्मीदे थी, स्वप्न देखे थे वे सब चकनाचूर हो गए हैं । जो कामना, मोह लोगों ने मन में रखा था टूट गया हैं । पुराने विचार तथा जीवन मूल्य अर्थ हीन हो गए हैं । इस प्रकार मूल्य विघटन की स्थितियाँ उत्पन्न हो गई हैं ।

दिन–ब–दिन स्वार्थी तत्वों के कारण मानवता की हत्या दिन–दहाडे हो रही हैं । पत्थर दिल इन्सान में सहानुभूति, उदारता का नामो–निशान नहीं रहा हैं । सब अपने में मस्त हैं । मानवता सिर्फ किताबों कैद होकर रह गई है । कुँअर बेचैन के अनुसार शहर में मूल्य बदल चुके हैं । एक बिमारी है जिस बिमारी ने सारे शहर को अपने चपेट में लिया है । जो इस झील का पानी पीता है वह बिमार होता हैं । अब ग़ज़ल में प्यार नहीं , अब ग़ज़ल में प्यार रोगग्रस्त हैं । इस दृष्टि से डॉ.कुँअर बेचैन जी की ग़ज़ल प्रस्तुत हैं –

"रोग कुछ ऐसे मिले पूरे शहर की झील कों
जिस किसीने भी यहाँ पानी पिया बिमार हैं
तब ग़ज़ल में प्यार के ही काफियों का जोर था
अब ग़ज़ल में प्यार का ही काफिया बिमार हैं ।"[285]

हमे अपनो के बीच कटकर रहना पड़ता हैं । यहा मुसीबत मनुष्यों के रिश्ते ठंडे होने से उत्पन्न हुई हैं । जब रगो में लहू की जगह पानी बहता है तब सगे–साथीयों को मनुष्य भूल जाता हैं । उसके मानवी मूल्यों का विघटन हो जाता है । "यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि अब सभी रिश्ते, चाहे वे मैत्री के हो, पारिवारिक हों या फिर सामाजिक हो, इस सीमा तक व्यावसायिक हो गए है कि गर्म प्याले से निकलती हुई भाप के अंत तक उसका कोई अस्तित्व ही शेष नहीं रह जाता । यह वर्तमान की सामाजिक विडंबना है ।"[286] जो जीवन साथी को भी गैर मानने लगते हैं ।

आज चारो तरफ प्रेम का बाजार सजा हुआ है । इस बाजार में खुद को बेचने की होड है । आज खुले में आम इन्सानियत का गला दबोचा जा रहा है । सामाजिक मूल्यों का पतन आम बात बन गई है । कुँअर बेचैन कहते है –

"हर इक सड़क पे हो रहा इन्सानियत का कत्ल
पूरे शहर में फिर भी कोई सनसनी नहीं ।।"[287]

नैतिक मूल्यों का विघटन की और संकेत करते हुए ग़ज़लकार कहते हैं इन्सान का अजीबो–ग़रीबों जैसा व्यवहार है । कब वह और कैसे फरेब करे, धोखा दे, ठग दे पता नहीं चलता हैं। डॉ.कुँअर बेचैन इस बात को अपने ग़ज़ल के माध्यम से व्यक्त करते हैं –

"न तो गाँवो ने हमें और न शहर ने काटा ।

हमको इन्सानों के इक मीठे जहर ने काटा ।।"[288]

डॉ.कुँअर बेचैन की दृष्टि से आम आदमी की स्थिति आग के लिबास की तरह हैं । उसे दबाकर रखने की कोशिश की तो आग भडकेगी । इसलिए डॉ.कुँअर बेचैन ग़ज़ल में लिखते है– – "अब आग के लिबास को, ज्यादा न दाबिये ।

सुलगी हुई कपास को, ज्यादा न दाबिये ।

मुमकिन है खून आप के दामन पे जा लगे ।

जख्मों के आस–पास को ज्यादा न दाबिये ।।

पीनें लगे न खून भी आँसू के साथ–साथ ।

यों आदमी की प्यास को, ज्यादा न दाबिये ।।"[289]

आज के समय में जीवन मूल्य बदल गए हैं । आज राम और तुलसी अदृश्य हैं । अब आदर्श की बातों में परिवर्तन आ गया है –

"अब राम कहाँ, किसलिए एक घाट पै तुलसी

चंदन को साथ–साथ लिए घूम रहा है ।।"[290]

आज इन्सान की किंमत शून्यवत है, वह समाज से अलग हो गया है । आज के मानव के बदलते हुए रूप का चित्रण डॉ.कुँअर बेचैन करते है –

"गर्दन है अगर हम तो वो आरी की तरह है ।

सीने में अब तो दिल भी कटारी की तरह है ।।

ये रात और दिन तो सरौते की तरह है ।

इन्सान की औकात सुपारी की तरह है ।।"[291]

चाहे इश्क हो या जीवन हर जगह धोखा ही धोखा है । इस से बचना मुश्किल है । जीवन के इस सफर में रिश्तों के कारण दुःख ही ज्यादा है –

“कथा आँसू की चलती ही रहेगी
ये एक दो रोज का किस्सा नहीं है
सभी रिश्तों में यह मत सोचियेगा
कि वो ऐसा है, ये वैसा नहीं है
मोहब्बत हो कि जीवन का सफर हो
कहा अब ऐ ‘कुँअर’ धोखा नहीं हैं ।”[292]

स्पष्ट है कि समाज में मानवता का ऱ्हास और मानवी मूल्यों का विघटन डॉ.कुँअर बेचैन ने यथार्थ रूप में प्रकट किया है । समाज में होने वाली विद्रुप, अवमानवीय हरकतों को बड़ी मार्मिकता से व्यक्त किया है ।

4.4.3.3 समाज की बिगडती स्थिति –

समकालिन समाज का निरीक्षण करें तो समाज की स्थिति बिगडी हुई नजर आती है । सामाजिक मूल्यों जैसे कि संवेदना, सहानुभूति, ईमानदारी, सत्य, अहिंसा, निस्वार्थ भावना, प्रेम और मानवता आदि मूल्यों का विघटन हुआ है । समाज की इस बिगडती स्थिति को कुँअर बेचैन ने अपने ग़ज़ल का कथ्य बनाया है । सामाजिक स्थिति बिगड़ती गई है । डॉ. कुँअर बेचैन ग़ज़लों के माध्यम से समाज की बिगड़ती स्थिति पर प्रकाश डाला है –

“दो दिलों के दरमियाँ दीवार–सा अन्तर न फेंक ।
चहचहाती बुलबुलों पर विष बुझे खँजर न फेंक ।
हो सके तो चल किसी की आरजू के साथ–साथ ।
मुस्कराती जिंदगी पर मौत का मन्तर न फेंक ।।”[293]

पारस्पारिक स्नेह के अभाव में आपसी संबंध बिगडते जा रहे है । प्रेम की जगह कटुता ने ली है । पीडादायक विषाक्त भाव जागृत हुआ है । इसी कारण एक दुसरे पर भरोसा नहीं रहा है । इन्सान समाज में फैले हुए भय आशंका से उत्तेजित नहीं बल्कि सचेत भी है

“मत पूछिये की कैसे सफर काट रहे है ।
हर साँस एक सजा है, मगर काट रहे है ।”[294]

जहाँ स्नेह होना चाहिए वहाँ कटुता आ गई है । स्वाभाविक सम्बन्ध में दूरी और अविश्वास पनप रहा है । लोगों की शांति भंग हो गई है । आज समाज में हैवान की हरकते बढ रही है । इन्सानियत लोग भूल गए हैं । इसी बात को लेकर कुँअर बेचैन लिखते हैं –

“जब मेरे घर के पास में कोई नगर न था ।
कुछ भी था मगर राह में लुटने का डर न था ।।
जंगल में जंगलों की तरह सफर न था ।
सूरत में आदमी की कोई जानवर न था ।।”[295]

वर्तमान समय में एक दूसरे के प्रति हीन भाव पैदा हो रहा हैं । चारो ओर मनुष्य नफरत का अनुभव कर रहा हैं । जिससे मनुष्य के जीवन की राह कठिण है, जिस पर चलते–चलते मनुष्य दम तोड रहा हैं । जीवन का हर पल उसे काँटो की तरह चुभता हैं । उसे रात और दिन अंगारों की तरह अनुभव हो रहे हैं । कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल में लिखते है –

“दिन भी अंगारों के, हर रात अंगारो की ।
यह किसने हमें दी है, सौगात अंगारों की ।
यह कैसा जमाना है, जो बर्फ के टुकडे भी ।
दिल खोल के करते है, अब बात अंगारो की ।”[296]

डॉ. कुँअर बेचैन समाज की स्थिति को अपनी ग़जल का कथ्य बनाकर यथार्थ का चित्रण किया हैं । मनुष्य की हीन मानसिकता का परिणाम यह है कि सारे समाज का वातावरण बिगड़ गया हैं । डॉ.कुँअर बेचैन इस भाव को अपने ग़ज़ल में व्यक्त करते है –

“हर तरफ बारूद का मौसम कहाँ जाकर रहें ।
आदमी भी हो गया है बम, कहाँ जाकर रहें ।।
जब गुलाबी पांखुरी अँगार सी लगने लगे ।
पूछती है फूल से शबनम, कहाँ जाकर रहे ।।
आज फिर त्यौहार के घर, खून की नदियाँ मिली ।
भी जहाँ खुशियाँ, वहाँ मातम, कहाँ जाकर रहे ।।”[297]

आज के समय में व्यक्ति क जीवन की पीडा बढ़ रही है ।

"आज कोई किसी की भावनाओं को समझने के लिए तैयार नहीं है । आनेवाले दुःख से हर कोई घबरा रहा है । एक–दूसरे के साथ मिलकर दुःख बाँट लेने की प्रवृत्ति समाप्त–सी होती जा रही है ।"[299] कुँअर बेचैन ने बिगडती स्थिति को प्रतीकों द्वारा भी चित्रित किया हैं –

"अब मेरी आँखो के काजल को तुम काजल कहो
यह मेरे जलते हुए दिल का धुआँ है दोस्तों
आज तो चेहरा भी मेरा एक रेगिस्तान है
आँसुओं जब तक तुम्हारा जी करे बहते रहो
जिनके पन्नो पर तुम्हारे दर्द का इतिहास है
लिखने वालो नाम मेरा उन किताबों में लिखों ।"[300]

इस अंश में प्रतीकों प्रयोग से डॉ.कुँअर बेचैन जी ने समाज की स्थिति को उजागर किया हैं । ग़ज़लकार अपना दर्द व्यक्त करते हुए कहते है कि मेरा दिल जल रहा है । रेगिस्तान की तरह चेहरा बन गया हैं । अर्थात सिर्फ दर्द का नाम जीवन है । दर्द से दिल आग की तरह जल रहा है ।

इस प्रकार डॉ.कुँअर बेचैन ने वर्तमान समाज की बिगडी हुई स्थिति और नैतिकता और मानवता का अभाव और स्वार्थ वृत्ति का चित्रण व्यापक रूप से किया हैं । आज अपना भरोसेमंद व्यक्ति हमारे कठिण समय में हम से दूरियाँ बनाता हैं । रिश्तों को मजबूत करने के बजाय कमजोर करता है, इस बारे में डॉ.कुँअर बेचैन जी को भाव महत्वपूर्ण हैं ––

"भरोसा देके फिर मुँह मोडनेवालों में शामिल हैं ।
मेरा हमदर्द ही दिल तोडनेवालो में शामिल हैं ।
'कुँअर' फूलों को रंग और खुशबुएँ वो किस तरह देगा ।
कि जो पेड़ों से शाखे तोडनेवालों में शामिल हैं ।।"[301]

समाज की सद्य स्थिति में जो अनुभव हो रहा है उस बिगडी स्थिति को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया हैं ।

4.4.3.4 भय का वातावरण –

आज की स्थिति में मानवी मूल्यों के विघटन, महानगरीय जीवन का बदलता रूप, भौतिकवादीता के परिणाम स्वरूप आम आदमी असुरक्षित महसूस कर रहा हैं । साम्प्रदायिक सद्‌भावना नष्ट हो रही है इस कारण अनेक प्रांतो में दंगे–फसाद लगातार बढते जा रहे हैं । मनुष्य की आत्मकेंद्रीय प्रवृत्ति ने उसे अपने ही नजरों में गिरा दिया हैं । आज राजनीतिक खिलवाड में आन्दोलन करना, उग्र प्रदर्शन करना, नारे लगाना, अपनी दल की शक्ति दिखाने हेतू जूलूस निकालना यह दिन–प्रति–द्दिन हो रहा है । परिणाम स्वरूप जगह–जगह आगजनी, धार्मिक स्थानों पर पथराव, लूटमार, महानगरों में से लेकर कस्बों तक कर्फ्यू आदि घटनाओं से आम आदमी डर गया है । संवेदनशील साहित्यकार के मन पर इन घटनाओं का गहरा असर होता है । कुँअर बेचैन ने अपने ग़ज़लों में आम आदमी का भय तथा आतंक के वातावरण को व्यापक रूप से दिखाने का प्रामाणिक प्रयास किया है । इस बारे में **यतींद्र तिवारी** कहते है– –

‘‘कविता अपने समय की अनुगुंज है, जिसमें परस्पर विरोधी परिस्थितियों के बीच जी रहे आदमी की अंतर्वेदनाओं और आस्थाओं की ध्वनियाँ समाहित है । हिंसा भारतीय जीवन शैली नहीं है किंतु असंतुष्ट पीढ़ी हिंसा के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में सक्रीय रही है । सांप्रदायिक हिंसा ने अपने तांडव से मानवता को कँपा दिया है ।’’[59300]

मानवता का यह सहमा रूप समाज में व्याप्त डर और आतंक का संकेत है । कुँअर बेचैन ने इसे यथार्थ के व्यापक धरातल पर प्रस्तुत किया है । आज के मनुष्य की राक्षसी प्रवृत्ति का वर्णन डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में किया हैं ––

‘‘है कौन सा चमन जो बहारों की तरफ हैं
जिसको भी देखिये वो अंगारो की तरफ हैं
निचुडा है, बूँद बूँद खून फूल का मगर
वो कह रहे है, फूल निखारों की तरफ हैं ।।
है घोसलों में शोर मगर यह तो सोचिये ।
दिल क्यों सभी का चीख पुकारों तरह है ।।’’[302]

मनुष्य इतना हिंसक हो गया है कि उसका मन और मस्तिष्क हत्यारा हो गया है । कहने के लिए हम इन्सान है पर हिंसा अंतर में बस गई है – –

"सीर्फ पंजे ही नहीं खूनी हमारा दिल भी है

कहने भर को ही 'कुँअर' हम आदमी की जात है ।"[303]

चारों दिशा भयानक स्थिति उत्पन्न हुई हैं । लोग आंतक दंगो से, डर से, भय से काँप रहे हैं । चारों तरफ खामोशी छा गई है । आज के मौसम का रूप बडा डरावना है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"काँपकर टूटे सितारे और सन्नाटा हुआ ।

आज के मौसम का चेहरा इस कदर विकराल था ।"[304]

आज हत्या, खून, आगजनी, लूटखसोट की घटनाएँ घटीत हो रही हैं । "मतहब के नाम पर दंगा कराने वाले वे लोग होते है जिन्होंने न तो कोई धर्म–ग्रंथ पढ़ा होता है । किसी भी धर्म में हिंसा को जायत नहीं कहा गया है किन्तु कुछ लोग अपना स्वार्थ साधने के लिए लोगों को मजहब के नाम पर लड़वाते है ।"[305] चारों ओर शहर–शहर, गाँव–गाँव में धुआँ है और घरों को आग के हवाले किया जा रहा है –

"मेरे चारो और धुआँ है,

किसके घर में आग लगी हैं ।"[306]

सडकों पर खून की नदियाँ बह रही हैं, मानव की लाशे पड़ी है, आदमी ही आदमी की हत्याएँ कर रहा हैं । गलियों में मातम की स्थिति बनी है –

"सडकों सडकों लाशे हैं ।

गलियों –गलियों मातम हैं ।।"[307]

धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा है जाति के नाम पर अपने ही लोगों के घर जला रहे हैं । मनुष्य एक दूसरे की हत्या करने को उतारू हुआ हैं । बेकफन लाशे पडी है और घोर धुआँ गहराता जा रहा है –

"बेकफन लाशें, ये जलते घर, ये गहराता धुआँ ।

हो गये हैं आज ये हर इस नगर की दास्ताँ ।"[308]

वर्तमान में देश की स्थिति भयानक तथा डरावनी हैं, घर–घर दिन–दहाडे उजाडे. जा रहे हैं । दंगा–फसाद, आगजनी की घटनाओं की अंधी–आंधियों में बहुत से पेड –पौधे उखडे.

हैं । कुँअर बेचैन को चिंता हैं कि इस विनाश की स्थिति में मनुष्य के घर कहाँ बनेंगें । बेचैन जी कहते है –

“सोचता हूँ अब परिंदे घर बनायेंगे कहाँ
अब वे अंधी आँधियों में पेड उखड़े है बहुत ।”[309]

आज मानव की परिस्थिति खराब बन रही है । अपने पर हुए अत्याचार की शिकायत करना भी मुश्किल हो गया हैं । व्यक्ति–व्यक्ति में संघर्ष चरम सिमा पर हैं । सांस्कृतिकता और नितिमत्ता खत्म हो चुकी हैं । सच्चाई, ईमानदारी और विश्वास सब ग्रंथो में स्वर्णाक्षर बन कर रह गए है । लोग अपने स्वार्थ हेतु बड़ी सहजता से वादे से मुकर जाते है, निजी स्वार्थ हेतु ईमान बदल देना आज के आदमी की आदत बन चुकी है ।[310] अमीर अमीर बनता जा रहा हैं गरीब और अधिक गरीब बनता जा रहा हैं । आम आदमी आर्थिक विपन्नता में जी रहा हैं । आज के समय में गाली –गलोज आम बात बन गई हैं । दंगो से, खून–हत्याओं से, लूट, खसोट से जनसामान्य भयभीत हैं । कुँअर बेचैन लिखते हैं –

“कुछ अपरिचय और कुछ पहचान में मारे गये ।
जिंदगी हम यूँ तेरे आरमान में मारे गये ।।
बे वजह ही आंधियों पर कत्ल का इल्जाम हैं ।
ये दिये तो आग के तूफान में मारे गये ।।”[311]

भविष्य में भी हादसों से अधिक डरावनी स्थिति निर्माण होने का अंदेशा हैं । खौफ के कारण मनुष्य अपने को बचाने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हैं, अपितु स्वयं ही लूटने देता हैं । इन स्थितियों को मद्‌दे नजर रखते हुए ग़ज़ल दृष्टव्य हैं –

“आत हर संभावना का नाम हैं, सीताहरण ।
फंस गये है राम फिर माया मृगों के बीच में ।।
आज के माहौल की खूंख्खार चेहरा देखकर ।
गठरियों खुलने लगी खुद ही ठगों के बीच में ।।”[312]

आजादी के बाद अब ऐसा दौर चल रहा है कि हर मनुष्य खुद को असुरक्षित समझ रहा हैं । आज आंतक, अत्याचार, हिंसा, लूट–दंगा के कारण जहरिला माहौल देश में फैल रहा

हैं । मनुष्य का जीना मुश्किल हो गया हैं । और यह आंतक का वातावरण लगातार बढता ही जा रहा है । आजादी के फल मिठे होंगे ऐस जो सोचा था वह स्वप्न भी भंग हो रहा हैं । आजाद भारत में आज भी मुक्त रूप से संचार करना और अभिव्यक्त होना स्वप्न मात्र बनकर रह गया हैं । इसलिए ग़ज़लकार कहते हैं –

"ऐसा नहीं की आज ही, चाहे कभी मिले ।
लेकिन कभी तो भीड में इक आदमी मिले ।।
ये कह रहा था द्वार पें बुझता हुआ दीया ।
मुझको उसी के प्यार की अब रोशनी मिले ।।"[313]

भारतीय दर्शन पुरूषार्थो को महत्व देता है जो नैतिक मूल्य का मूलाधार हैं । "पश्चिमी दर्शन में भौतिकता को अधिक महत्व हैं । पश्चिमी अन्धानुकरन की होड में भारतीय समाज में अपने भौतिक उत्थान के लिए हिंसा का पथ अपनाया है । पश्चिम की इकाई व्यक्ति हैं, जब कि हमारे यहाँ गाँव हैं ।"[314] व्यक्ति इकाई हैं तो वह आत्मकेंद्री बनना स्वाभाविक है; वह स्वयं की प्रगति के बारे में सोचता हैं अतः दूसरों के प्रति उसकी भावनाएँ संकीर्ण बनती हैं । वह दुष्कर्म करने में हिचकिचाता नहीं हैं । आज जो डर की परिस्थिति निर्माण हुई है उसका कारण संकुचित मानसिकता भी हो सकती हैं । देश में अमन या शांति का वातावरण आवश्यक हैं । इसलिए ग़ज़लकार प्रयत्नशील हैं । संम्पूर्ण मानवता का कल्याण हो, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना हर ह्दय में स्थापित हो । यह कामना है डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त की है ।

4.4.3.5 बेईमानी झूठ और फरेब –

वर्तमान समय नैतिकता का स्तर गिरता जा रहा है और उसके मापदण्डों में परिवर्तन आया हैं । चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है, भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया हैं । "आज संपूर्ण समाज में चारों तरफ नैतिकता का ऱ्हास हो रहा है । उसके मानदण्डों में परिवर्तन आ गया है । आज सच बोलना लोग पाप समझते है । जहाँ देखो वहाँ झूठा बेईमानी और फरेब का ही वातावरण परिलक्षित होता है । आज सच पर चलने वाले को ठोकरें मिलती है, झूठ और बेईमानी करने वाला मौज मनाता है ।"[315] जो प्रामाणिकता से जीवन यापन कर रहा है उसके

जीवन में बहुत अधिक कठिणाइयाँ आ रही हैं । जीवन के हर क्षेत्र में बेईमानी झूठ और फरेब दृष्टिगोचर होता हैं । राजनीतिक नेता, दफ्तर का बाबू भ्रष्टाचार को अपना अधिकार समझ रहे हैं । व्यक्ति का व्यक्ति पर से विश्वास टूट गया है । नेता नकाबपोश है अत: जनता की नजर धोखा खाती हैं । डॉ.कुँअर बेचैन जी कहते है –

“बदलता था वो अपने रूप इतने

नजर हर बार धोखा खा रही थी ।”[316]

आज मनुष्य ने अपने मन मस्तिष्क में धोखा, बेईमानी, झूठ, फरेब जैसी गलत बाते संचित कर रखी हैं । पहले गलत बातों से आदमी डरता था अब उसे झूठ–फरेब की आदत सी हो गई हैं । आज की विडम्बना है कि सत्य और असत्य की पहचान नहीं हो पा रही है क्योंकि मनुष्य का विवेक नष्ट हो गया है –

“जिन्दगी की जेब में क्या–क्या न अब रखते हैं लोग

पहले तो डरते थे सब कुछ भी गलत रखते हुए ।।”[317]

आज अनुभव हो रहा है कि जिस पर अधिक विश्वास करते हैं वही ही धोखा दे रहा हैं । इसलिए मनुष्य–मनुष्य की तरफ संदेह से देख रहा हैं –

“हर जगह विश्वास के ही बाद में धोखे मिले ।

कोई भी धोखा विश्वास से पहले न था ।”[318]

आज मनुष्य इतना स्वार्थांध हुआ हैं कि अपने स्वार्थ प्राप्ति के लिए अपना ईमान बेचने लिए सदैव तैयार हैं, उसे बेईमान बनने भय नहीं, संकोच नहीं । डॉ.कुँअर बेचैन ने समाज की इस विकृति पर अपने विचार ग़ज़ल के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं । आज मनुष्य दोहरी जिंदगी यापन कर रहा हैं । वह अंदर से कुछ है और बाहर से कुछ है । अर्थात ‘मुँह में राम बगल में छुरी’ उसके जीवन का मुहावरा उसे ही चिपक कर बैठा हैं । दिन–ब–दिन आर्थिक लोभ, ऐश्वर्य की लालसा बढ रही हैं । इस कथ्य को दृष्टि में रखते हुए फरेब की प्रवृत्ति का वर्णन ग़ज़ल में दृष्टव्य हैं –

“साधकर फूलों से चेहरे पर निशाने काँच के ।

दे गये अनगिन खरोंचे दास्ताने काँच के ।।

अब तो अपनी ही कोई आवाज सुनने के लिये

तोडते है लोग दिल लेकर बहाने काँच के ।।"[319]

मनुष्य में बेईमानी इस कद्र बढ रही है कि छल और ढोंग करके तथा बेईमानी के रास्ते पर चलकर वह अपने लक्ष्य तक पहुँच रहे हैं । **श्री.गणेश अष्टेकर** लिखते है– "व्यक्तिगत जीवन की पीडाएँ, अव्यवस्था और अनास्था एक ऐसी सामाजिक स्थिति को जन्म देती है जिसमें किसी भी तरह के श्रेष्ठ जीवन–मूल्यों से किसी को कुछ लेना–देना नहीं रहता । ऐसी नई सभ्यता का प्रभाव बढ़ता है जिसमें हर व्यक्ति मात्र स्वार्थ की ही सोचता है । दूसरों के प्रति इंच मात्र दया–सहानुभूति शेष नहीं रह पाती । इन नई तहजीब में मनुष्य और मनुष्य के बीच के सम्बन्धों का रूप भयावह होता है ।"[320] कालाबाजरी, रिश्वतखोरी, मिलावट जैसी काली करतूते समाज में धन के बल पर मान–सम्मान प्राप्त कर रहे हैं । जो भी इनके विरूद्ध बोलने लगता हैं उसे डर दिखाकर आवाज बंद की जाती हैं । कुँअर बेचैन कहते है ––

"हमारे खास दोस्तों की हम पें थी इनायते ।

यूँ ही नहीं लहू से दिल हमारा तरबत्तर हुआ ।।

यह एक की नहीं 'कुँअर' हर एक की ही बात हैं ।

जो उससे बाखबर हुआ वो खुद से खबर हुआ ।।"[321]

भारत में भ्रष्टाचार नौकरशाही तथा अफसरशाही में बहुत बड़ी मात्रा में हैं । अगर कोई प्रामाणिकता से काम करना चाहता है तो उसके काम में बाधाएँ उत्पन्न की जाती है । उसकी प्रामाणिकता का मजाक उडाया जाता है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है –

"बडे. लोगों के दफ्तर में वो ठंडक है कि क्या पूछो ।

पसीने की कमाई देखने में ही नहीं आती ।।"[322]

आज परिस्थितियों में इतना बदलाव आया है कि जो भी सचाई का रास्ता अपनाता है वह लोगों को बेईमान लगता है । जो झूठ को सत्य की तरह बोलते है उसे इमानदारी का बक्षिस मिलता है । कुँअर बेचैन कहते है ––

"मैं अपने सच को भी बोलूंगा तो भी झूठा लगेगा वो ।

मगर वो झूठ को सच की तरह से बोल जाएगा ।।"[323]

आज मनुष्य सच्चाई की राह से भटक रहा है, आज जनसामान्य भी बिना परिश्रम किए झूठ फरेब से धन कमाना चाहता है । धोखा, कालाबाजारी से छूटकारा पाने के दृष्टि से ग़ज़लकार उनके विरोध में लिखता है –

“दिले से, आँखो से किसी ठौर से देखा न गया ।।
वो उजाला था मगर गौर से देखा न गया ।।
कत्ल मेरा जो मेरे दिल में लगातार हुआ ।
वो सिवा मेरे किसी और से देखा न गया ।।
मैं चुभा आँखो में लोगों की किसी नश्तर सा ।
सबने देखा था मगर और से देखा न गया ।।”[324]

आज मनुष्य दुसरों के अच्छे पन की कद्र और परख करने के बजाय दु:ख पहुँचाता है । “मनुष्य अत्यंत आत्मकेंद्री हो गया है, उसे दूसरों से कोई लेना देना नहीं है । संवेदना और सहानुभूति का मनुष्य के जीवन में कोई स्थान नहीं रहा । दूसरों का दुःख दर्द, पीडा, तकलीफ, मुसीबतें परेशानियों को समझकर उसे सहयोग देने की बात अब हवा हो गई है ।”[325] दुसरों के आनंद क्षण भी उससे देखे नहीं जाते उसकी मुस्कुराहट छीनने में कोई डर नहीं रहा है । आज का हर व्यक्ति अपने आप को दुःखी महसूस कर रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ल दृष्टव्य है –

“फुल से खुशबु भ्रमर से गुनगुनाहट छीन ली ।
एक मौसम ने हमारी खिल खिलाहट छीन ली ।
जाने ये कैसी हवाएँ है जिन्होंने आजकल ।
फूल की हर पांखुरी से मुस्कराहट छीन ली
मैं उसे दुश्मन कहू या दोस्त जिसने ए ‘कुँअर’
पर दिये लेकिन परों से फडफडाहट छीन ली ।।”[326]

जो लोग चरित्र से कलंकित और फरेबी है उन्होने ही अपनी पहचान मसिहा के रूप में बनाई है । आज धोखेबाज और ईमानदार को समान रूप से देखने नजरिया पनप रहा है ।

मानवता धर्म पर चलने वाले व्यक्तियों की कमी महसूस हो रही है । सही रूप से प्रत्येक आदमी में सच्चाई और आदमियतपन हो यही डॉ. कुँअर बेचैन की इच्छा है । वे लिखते है –

"ऐसा नहीं की अब मिले चाहे कभी ।
लेकिन कोई तो भीड़ में इक आदमी मिले ।।
आंसू टपक के आँख से दामन पे आ गिरे ।
उम्मीद थी कि राह में शायद हँसी मिले ।।
मिट्‌टी को ओढ के जो सो गये है लोग ।
उनके भी दिल में चाह थी कि जिंदगी मिले ।।"[327]

वही डॉ. कुँअर बेचैन कहते है कि 'जैसी करनी वैसी भरनी' अर्थात जैसा कर्म होता है उसके अनुसार ही परिणाम भुगतने पडते है । अपनी ग़ज़ल मे विचार प्रस्तुत करते है – –

"जिसने भी धोखे दिये, खुद उसने भी खाये बहुत ।
वह पता जिनको चला वो, लोग घबराये बहुत ।।"[328]

आज पग–पग पर पल–पल धोखा दिया जा रहा है । एक दूसरे पर भरोसा करना बहुत मुश्किल हो गया है । इस बारे में कुँअर बेचैन का एक शेर दृष्टव्य है –

"सिर्फ पत्थर ही नहीं देते किसी को ठोकरें ।
फूल ने रोका मुझे तो फूल भी ठोकर लगा ।।
फूल में भी जब से बम रखने लगे दुनिया के लोग ।
ऐ 'कुँअर' माला पहनने में भी डर लगा ।।"[329]

आज से पहले समाज की स्थिति बिगडी नहीं थी । **श्री. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय** जी ने लिखा है– "आज का नवयुवक असन्तोष और अस्वीकार का साक्षात् प्रतीक बन गया है । परतंत्र–भारत में जनता के सामने एक आदर्श था, अनुशासन था और एकता के सूत्र में बँधे रहने की प्रबल आकांक्षा थी । किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पुराने जीवन मूल्य खण्डित हो चुके थे और उनके स्थान पर नए पुष्ट जीवन–मूल्यों की स्थापना नहीं हुई थी । जीवन के ऐसे वातावरण में नई–पीढी का भ्रमित हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।"[330] लोगों का एक दूसरे पर गहरा परस्पर विश्वास था । वर्तमान युग में फरेब, धोखा आम बात बन गई है । कुँअर बेचैन का एक

शेर दृष्टव्य है – –

“घर सुखों का दुःख के आवास से पहले न था ।
यह ठहाका अश्रु के आभास से पहले न था ।।
हर जगह विश्वास के बाद में धोखे मिले ।
कोई भी धोखा किसी विश्वास से पहले न था ।।”[331]

आज–कल गिरगिट की तरह लोग रंग बदल रहे है । लोग इमानदारी को हाशिए पर बिठाकर धन कमाने की होड में लगे है । अपराधिक मामलों में अपराधी बाईज़्ज़त बरी होकर समाज में सम्मान पा रहे है । हम तमाशबीन बनकर चुप्पी साध लेते है । इस पर डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है –

“तरकश में तीर तो थे मगर चल नहीं सके ।
हम हम नहीं है, लगता है, टूटी कमान है ।।
इन्साफ का ये हाल है, कि सच के होठों पर ।
या तो पडे हे ताले या झूठे बयान है ।।”[332]

इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़लों में बेईमानी झूठ और फरेब के विविध आयाम चित्रित किए है ।

4.4.3.5 आम आदमी की पीडा –

सर्वसामान्य के जीवन से सम्बन्धित अनेक सामाजिक बिम्ब–प्रतिबिम्ब हिंदी ग़ज़ल में स्पष्ट रूप से दिखाई देते है । वर्तमान में सामान्य व्यक्ति अनेक पीडाओं का लेकर जीवन यापन कर रहा है । ग़ज़लकारों ने आम आदमी की पीडा को भी अपनी ग़ज़लों में प्रभावशाली रूप से व्यक्त किया है । मनुष्य के अन्तरद्वंदव को उद्घाटित करने का प्रयास कुँअर बेचैन ने किया है । मनुष्य के भीतर सन्नाटा है वह उसके जीवन में व्याप्त यातना का ही प्रतीक है । डॉ. कुँअर बेचैन जी की ग़ज़ले आम आदमी के करूण कहानी का दस्तावेज भी है । आम आदमी के जीवन का चित्र खींचा जाए तो उसका उदास चेहरे के साथ हताश, चिन्ता, क्षोभ एवं आक्रोश, अपमानित और निरसता के भाव लेकर उभरता नजर आता है । इस चेहरे में जो दर्द–पीडा है; उसे व्यक्त करने के लिए ही कुँअर बेचैन उसका अनुवाद आसँओं की भाषा में करने की चेष्टा करते है ।

"लोग हमसे कह रहे है आग की बात करो ।

आँसुओं के गीत तो हमने तुम्हारे सुन लिए ।।"[333]

डॉ. कुँअर बेचैन आम आदमी की छटपटाहट के साथ–साथ उसका मन किसी सहारे के तलाश में है, इस ग़ज़ल में अभिव्यक्त करते है –

"बडा उदास सफर है हमारे साथ रहो,

बस एक तुम पै नजर है हमारे साथ रहो ।

हम आज तक भटके मुसाफिर हैं ,

न कोई राह न घर है हमारे साथ रहों ।"[334]

आम आदमी के यथार्थ जीवन का भयानक पहलू कुँअर बेचैन जी चित्रित करते है । उसकी आँखो से निरंतर आँसू बहते है वह रोटी से भरे थाल का सपना देखता है । वह रोटी के लिए बेबस है, डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है –

"सबका कहना है खुशी झेल न पाया वे शख्स ।

उसने रोटी से भरे थाल का सपना देखा ।।"[335]

आम आदमी से का जीवन अभाव ग्रस्तता भरा है । उसकी रोजमर्रा की आम जरूरते भी पुरी नहीं होती है । आम आदमी सरकारी सुविधा से कोसों दूर है । वह खुन पसीना बहाकर भी, मेहनत और मजदूरी करने पर भी अपनी जीवन की आवश्यकताएँ पूरी नही कर सकता है । उसकी दुर्बलताओं का चित्रण करते हुए ग़ज़लकार कुँअर बेचैन लिखते है –

"अब तो पूरा जिस्म ही कुछ इस तरह बीमार है ।

पीठ खुद बोझा हुई है पेट पल्लेदार है ।।

साँस की मजदूरि में दबकर न मर जाएँ कहीं ।

जिस तरफ भी देखता हूँ रेत की दीवार है ।"[336]

आज के हालात ऐसे है कि आम आदमी को दर–दर की ठोकरे खानी पड रही है । "मार्क्स के मतानुसार समाज शोषक समाज और शोषित दो वर्गो में बँटा है । शोषक वर्ग नित शोषित वर्ग का शोषण कर अपनी तिजोरियाँ भरता जाता है । जिसके कारण अमीर और अमीर होता जा रहा है तथा गरीब और गरीब । आर्थिक विषमता की यह खाई दिन–प्रति दिन बढ़ती ही जा

रही है ।"[337] इस विचारधारा से प्रेरित होकर डॉ.कुँअर बेचैन ने अपने अपनी ग़ज़लो में सामाजिक और आर्थिक विषमता, मजदूर वर्ग की आर्थिक दशा, श्रम का शोषण, आदि स्थिति को विशद किया है । सर्वहारा वर्ग और मजदूर का शोषण आज के आधुनिक तथा वैज्ञानिक युग में भी हो रहा है । शोषक वर्ग सामन्यजन पर जुल्म ढोता है । कुँअर बेचैन ने आम आदमी के आक्रोश को अपने ग़ज़ल के माध्यम से व्यक्त किया है --

"हमको ठोकर न मारियेगा सर ।
प्यार से भी निहारियेगा सर ।।
गालियाँ गोलियों सी लगती है ।
नाम लेकर पुकारियेगा सर ।।
आदमी आप आदमी हम भी ।
आप थोडा विचारियेगा सर ।।"[338]

डॉ. कुँअर बेचैन बेसहारा मुसाफिर की व्यथा को व्यक्त करते है । अकेलेपन का बयान करते हुए उसकी तपन को सहन करने में असमर्थ होने से थके हारे मन को सहारा ढूँढते है । वे कहते है -

"बडा उदास सफर है, हमारे साथ रहो ।
बस एक तुमपे नजर है, हमारे साथ रहो ।।
हम आज एक भटकते हुये मुसाफिर है ।
न कोई राह न घर है हमारे साथ रहो ।।"[339]

डॉ. कुँअर बेचैन कहते है कि मै हर दम लोगों को एक दूसरे के करीब लाने का प्रयत्न प्रामाणिकता के साथ करता रहा । लोग पास तो नहीं आए पर दूर ही निकल पडे है । कुँअर बेचैन का शेर इस दृष्टि से प्रस्तुत है -

"ये हमे कैसी नई मजबूरियों के खत मिले ।
पास रहकर भी दिलों की दूरियों के खत मिले ।
देर तक रोते रहें चुपचाप नैनों के हिरन ।
जब उन्हें बिछुडी हुई कस्तूरियों के खत मिले ।।"[340]

आज आदमी की खुशियाँ गायब हो चुकी है ।"आज की वर्तमान व्यवस्था में आम आदमी की अवस्था बहुत ही खतरनाक है । आम आदमी की जिन्दगी का चित्र खिंचा जाए तो चेहरा लटका हुआ बहुत कुछ करने की हौंस लिए, किन्तु कुछ भी न कर पाने की विवशता, हताशा एवं तनाव से विकृत, चिन्ता की लकीरों में खोया-खोया, क्षोभ एवं आक्रोश में झुँझलाया हुआ, उदासिन-खिन्न और इन्सानी रिश्तों की तलाश में भटका हुआ, इन सबको अंकित करने के बाद भी आधा- अधुरा ।"[341] समाज के हर व्यक्ति के जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख ही बढ़ रहा है । मनुष्य का जीवन रेगिस्तान बन गया है । उसके जीवन में सुख की हरियाली की कोई उम्मीद ही बची नही है । कुँअर बेचैन लिखते है –

"बात किस-किस की करूँ, हर एक घर पर धूप थी ।
जाने क्या मौसम था जो पूरे शहर पर धूप थी ।।
रोशनी जिसने भी की तपना पडा उसको जरूर ।
रात थी शीतल मगर दिन के अधर पर धूप थी ।।
क्यो ंन जलते पाँव मेरे कयों न छाले फूटते ।
मैं उधर चलता रहा जिस जिस डगर पर धूप थी ।"[342]

वर्तमान में आम आदमी की जीवन की स्थिति बहुत ही खराब होती जा रही है । उसे हर समय संकटो के बादलों ने घेरा हुआ है । अतः आक्रोश का धुआँ उसके आसपास ही मँढराता है । उसका साथ देने वाला अपना कोई नहीं है । समस्या और पीडा का सिलसिला उसका पीछा नहीं छोड रहा है । ऐसे वातावरण में वह अकेला बेसहारा जीवन यापन करने के लिए मजबूर है । कुँअर बेचैन लिखते है – –

"जब से मन की मदिरा पी है । सारी दुनियाँ अपनी सी है ।
मेरे चारों ओर धुआँ है । किसके घर में आग लगी है ।।
रिश्ते नाते झूठे है सब, केवल तेरी पीर सगी है ।"[343]

आज मनुष्य खाली पेट के साथ-साथ अनेकानेक यातनाओं को झेल रहा है । यह दुर्बलता की स्थिति जिंदा लाश की तरह है । साँस चल रही है इसलिए जिंदा है । दुःखों की मार से

उसका जीवन ध्वस्त हुआ है । वह अपनी की करूण कहानी बताने में डर महसूस कर रहा है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है –

"हमने लपटों के बीच वन देखे ।
आपने दूर जाके घन देखे ।।
पेट की भूख ने कहाँ हँसकर ।
कौन अब धूप की तपन देखे ।।
दिल में धोखे छुपाए फिरते है ।
हमने ऐसे कई नमन देखे ।।"[344]

लोग रोटी पाने के लिए वहशी तरह लपट पडते है । जीवन में कमियों के कारण अपने अर्ध नग्न तन छुपाने के लिए घुटनों का सहारा लेते है । सर्दी के दिन की स्थिति चित्रित करते हुए कुँअर बेचैन लिखते है –

"जिसको भी देखिए भूखे की तरह टूट ।
धूप का टुकडा भी रोटी -सा लगा सर्दी में ।।
अपने घुटनों में छुपाया तो बहुत सर उसने ।
उसका तन हो न सका उसका संग सर्दी में ।।"[345]

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने समाज का सुक्ष्म निरिक्षण किया है । व्यापक दृष्टि से आम आदमी की पीड़ा के अनेकानेक रूपों को पहचान कर उन्हे अपने ग़ज़लों का कथ्य बनाया है ।

4.4.3.7 नारी शोषण एवं अत्याचार का चित्रण –

यह बडी बिडम्बना है कि जिस देश में 'यत्र नार्यस्तु पुजन्ते, रमन्ते तत्र देवता' के अनुसार स्त्री का महत्त्व विशद किया है । उसी देश में नारी पर अत्याचार व्याप्त है । नारी को उपभोग्य वस्तू मानकर उसे हीनता से व्यवहार किया जा रहा है । समय–समय पर नारी शोषण का विरोध हुआ है और उसकी मुक्ति के आंदोलन खडे हुए है । नारी शोषण के प्रति ग़ज़लकार अत्यंत संवेदनशील रहे है । नारी को घर से बेदखल किया जा रहा है , उसका शोषण हो रहा है, इस बारे में डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है –

"मत उसको खींच खींच के बाहर निकालिये ।

सीता सती के पाँव का बिछिया है, रामफल ।।"[346]

देश में आज के माहौल में नारी को जिंदा जलाने की कोशिश होती है । दहेज की कुप्रथा प्रचलित है । **डॉ.आर.पी. भोसले** जी नारी के प्रति अपना मंतव्य रखते है – "घर से बाहर निकलने वाली नारी आज अधिक यौन–शोषण और बलात्कार की शिकार हो रही है । अपहरण और नारीत्व हरण के साथ–साथ शिक्षित लडकियों को भी दहेज की बलिवेदी पर चढ़ना पड़ता है । "[347]कवि की दृष्टि से घर से निकलने वाली बिटियाँ की डोली अर्थी की तरह होती है । कुँअर बेचैन कहते है –

"इक बहू का बयान ये भी था ।

डोलिया–अर्थिया निकलती है ।।"[348]

माँ अपने बच्चों के लिए पूरा जीवन समर्पित करती है । माँ त्याग की मूर्ति है जो स्वयं दुःख झेलती है और अपने संतान के लिए सुख प्रदान करती है –

" हर के मौसम की आफतों से, बचा लिया है उड़ा के आँचल

हो सख्त जाडे में धूप तुम ही, तपन में ठंडी फुहार हो माँ

तुम्हारे दिल को बहुत दुखाया, खुशी जरा ही बहुत रूलाया

मगर हमेशा हमें क्षमा दी, कठोर को भी, उदार हो माँ ।"[349]

आज की भौतिकवादी तथा भोगवादी प्रवृत्ति के कारण बलात्कार, अत्याचार की घटनाएँ लगातार हो रही है । आज नारी की स्वतंत्रता पर आँच आ गई है । नारी अकेली मुक्त रूप, बेखौफ से कही घुमने नही जा सकती । उसका जीवन दुरूह बन गया है । आज मानव जानवर बन कर स्त्री के इज्ज़त के साथ खिलवाड कर रहा है । कुँअर बेचैन इस यथार्थ को अभिव्यक्त करते है –

"एक मछली इक शिकारी की नजर को देखकर ।

जल से उछली और फिर जल में ही छप से गिर गई ।।

एक ढपलीवाला चमडी पीटता ही रह गया ।

पर जो उसकी अपनी थी आवाज ढप से गिर गई ।।"[350]

ग़ज़लकार नारी के उत्पीडन तथा आक्रोश को अपनी ग़ज़ल में व्यक्त करता है । नारी के जीवन का पट विवाह से लेकर मृत्यू तक कैसा भयंकर और कष्टप्रद होता है इसका चित्रण ग़ज़लकार अपनी ग़ज़ल में करता है – –

"पूछते हो किधर गई मैना
इक लुटेरे के घर गई मैना
आ गई बाज़ के वो चंगुल में
खूँ से हो तर बत्तर गई मैना
पंख कुछ इस तरह से नीचे थे
पूरे घर में बिखर गई मैना
बाद में ही हुई थी वो गुँगी
पहले चीखों के घर गई मैना
उसने आँसू बना के छोड दिया
जिसकी आँखो में भर गई मैना
वो भी पत्थर पिघल गया, जिस पर
कल पटक करके सिर गई मैना
एक मैना को देखकर घायल
दूसरी भी सिहर गई मैना
एक पिंजरे से दुसरा पिंजरा
और आखिर में मर गई मैना "[351]

भारतवर्ष में 'यत्र नार्यस्तु पुज्यते,.रमन्ते तत्र देवता' का मंत्र था । "नारी के समस्त अधिकार छीन लिए गए और उसे परतंत्रता की बेडीयों में जकड़ दिया गया । नारी की दशा और अधिक दयनीय होते–होते पूज्या नारी मात्र 'भोग्या' बन गई । नारी का जीवन पुरूषों के दया पर निर्भर होने लगा ।"[352] उसी देश में नारी को उपभोग्य वस्तु मानकर उसका शोषण हो रहा है । कुँअर बेचैन जी ने नारी की पीडा एवं शोषण की स्थिति का वर्णन अपनीं ग़ज़लो में किया हैं ।

आज नारी अपनी इज्ज़त के लिए खुदखुशी करने लिए मजबूर है । गरीब स्त्री अन्याय और अत्याचार विरोध न कर सकने से मजबूरी से बरदाश्त कर रही है । उसकी शारीरिक स्थिति की ओर न देख कर, उसकी आर्थिक विपन्नता को देखकर उसका मजाक नही करना चाहिए, उसे सहानुभूति तथा दया की आवश्यकता है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है ––

"भाग के फूल, न झीलों मे मछलियाँ देखो ।

देखना है तो सिसकती ये तितलियाँ देखो ।।

सुर्ख फुलों को कुँअर देखते रहे हो तुम ।

अब जरा सूखते पत्तो की पसलियाँ देखो ।।"[353]

कुँअर बेचैन कहते है कि माँ वात्सल्यता की मूर्ति है, औरत बाजार का कोई खिलौना नहीं है । वह बेटी का रूप धारण कर के बहन का प्यार देती है । और अपने जीवनसाथी के साथ तन–मन–धन से जीवन भर साथ देती है । औरत के विविध रूपों को समझने की आवश्यकता है –

"कहीं माँ है, कहीं बेटी कहीं बहिना कहीं बीबी

कई रंगो में बिखरी है ये औरत की नयी खूशबू ।"[354]

नारी अनमेल विवाह की शिकार है । आज के प्रगत युग मे भी में जब लडकी जवान होती है तो तुरंत उसकी शादी की तैय्यारी में लोग जुड जाते है । कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल के शेर में कहतें है– –

"जवाँ जबसे हुई वो शोख लडकी ।

निगाहों में स्वयंवर घुमते है ।।

कुँअर जो जख्म दे जाते है, हमको ।

वही जह्नो में अक्सर घुमते ।।"[355]

दुल्हन साज–श्रृंगार कर डोली में बैठकर आती है । अपने ससुराल में खुशियाली की महक फैलाने जाती है । परंतु दुर्भाग्यवंश ससुराल में उसे चार दिवार में बंद किया जाता है । जिस प्रकार कैक्टस के नुकीले काँटे चुभते है उसी प्रकार कैक्टस के घर में आजीवन बंदी

बनकर रहती हैं, गुलामी का जीवन जीने के लिए । यहाँ नारी की पीडा को ग़ज़लकार ने उजागर किया है –

“सज के डोली में जो खुद खुशबू लुटाने आई थी ।

कैक्टस के घर, वो प्यारी रात रानी बंद है ।”[356]

सदियों से नारी के साथ धोका हो रहा है । एक तरफ उसे भरोसा दिया जाता है परंतु दुसरें ही पल भरोंसा टूट जाता है । जिन लोगों से उसे उम्मीदे थी उन्होनें ही विश्वासघात किया है । फिर भी वह सदैव स्नेह के पथ पर चलने की कोशिश करता है । डॉ. कुँअर बेचैन स्त्री के आक्रोश को ग़ज़ल के माध्यम से व्यक्त करते है ।

“कभी धडकन, कभी मदमस्त चाहत की तरह हूँ मैं ।

मुझे दिल में जरा रख लो, मोहब्बत की तरह हूँ मैं ।

मोहब्बत ने कहा मुझसे सताये जा, सताये जा ।

तुझ मैं प्यार ही दूँगी कि औरत की तरह हूँ मै ।।”[357]

कवि की यह समस्या है कि इस प्रश्न का उत्तर कौन देगा कि सेजों को लोग कलियों सें क्यूँ सजाते है? कम उम्र की लडकियाँ वासना की शिकार बन रही है । आज अनेक औरते हवस की शिकार बन रही है । और दरिदें शिकारी स्त्री को बेरहमी से लूट रहे है । डॉ. कुँअर बेचैन ने मनुष्य की दुष्प्रवृत्ति को उजागर किया है –

“देखता हूँ कौन देगा इस पहेली का जवाब

किस तरह कलियों से सेजो को सजा लेते है लोग ।”[358]

समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण संकीर्ण रहा है ।

“सदियों से समाज में पुरूष को प्रथम स्थान माना गया है और नारी को द्वितीय स्थान पर इतना ही नहीं तो नारी मानवी रूप में, व्यक्ति रूप में कभी मानी ही नहीं गई । वह या तो बेटी है, पत्नी है, बहू है या माँ है । इससे अलग उसकी पहचान ही नहीं ।”[359]

नारी जीवन की त्रासगी को संवेदना के साथ डॉ. कुँअर बेचैन ग़ज़ल में अभिव्यक्त करते है– –

“एक लडकी की तरह फूटपाथ पर बैठे हुए ।

जिदंगी पढती रही हर एक नज़र की दास्ताँ ।।

मौत जो आने से पहले इस कदर खामोश थी ।

कह गई पलभर में वो ही उम्र भर की दास्ताँ ।।"[360]

इस प्रकार डॉ. कुँअर बेचैन ने नारी के प्रति सहानुभूती जताकर नारी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है । वर्तमान युग में नारी ने प्रगति की है लेकिन पुरूष प्रधान व्यवस्था में उसका व्यक्तित्व कुचला जा रहा है ।

4.4.3.8 आतंकवाद –

सन १९९० के पश्चात भारत में आतंकवाद की दुष्प्रवृत्ति बढती गई है । आतंकवाद के पिछे विदेशी ताकदों का हाथ भी है । यह आतंकवाद कश्मीर, उत्तराखंड, झारखंड, पंजाब, आसाम आदि प्रदेशों में तेजी से पनप रहा है । अपनी माँगे पूर्ण करने के लिए आतंकवादियों ने हिंसा का मार्ग अपनाया है । आतंकवाद के कारण देश के विकास तथा एकता और अखण्डता में बाधा उत्पन्न होती है । इन सारी देश विघातक बातों को हिन्दी ग़ज़लकार ने अनुभव किया है । डॉ. कुँअर बेचैन भी अपनी ग़ज़लो के माध्यम से आतंकवाद का चेहरा उजागर करते है –

"है कौन सा चमन जो बहारों की तरफ है ।

जिसका भी देखिये वो अंगारो की तरफ है ।

हे घोसलों में शोर मगर यह तो सोचिये ।

दिल क्यों सभी का चीख पुकारों की तरफ है ।"[361]

आज चारो तरफ हिंसा का माहौल बढ़ रहा है, हाथ में तलवारे है, देश मे बढते हिंसाचार से भय और खौफ का वातावरण है । दिन–ब–दिन असुरक्षितता बढ़ रही है । यह सब क्यूँ हो रहा है । ग़ज़लकार सोचने को मजबूर करते है––

"है बात सोचने की, जो हो सके तो सोचो

तलवार क्यों हुए है, ये व्यंग्य तराजू के ।"[362]

आतंकवाद में अशांती और बेचैनी बढती है । चारों तरफ हर एक के मन में डर पैदा होता है । "समाज में जैसा डर हिंसक पशु बाघ का होता है । वैसा ही डर वर्तमान परिवेश में इन आतंकवादियों का है । आज भारतीय आम जनता का अपनी सुरक्षा व्यवस्था पर से विश्वास उड गया है । वह भयभीत है ।"[363] लोगो को असुरक्षितता महसूस होती है । लोकतांत्रिक

व्यवस्था को खतरा महसूस होने लगता है । अलगाववाद की दृष्प्रवृत्ति से देश में विघटन का वातावरण निर्माण हो रहा है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

“बढ रही हर दिल की धडकन आंधियों धीरे चलो ।
फिर कही टूटे न दर्पन, आँधियों धीरे चलो ।।
यह चमन सारे का सारा, आजकल खतरे में है ।
हर तरफ है आग दुश्मन, आँधियों धीरे चलो ।।”[364]

कुँअर बेचैन देख रहे है कि हर दिन का आरंभ आतंक की किलकारी से शुरू होता है । चारो दिशाओं में आतंकवादी घटनाओं से देश में डर का वातावरण निर्माण हुआ है ।

“कुछ रोज से मै देख रहा हूँ कि हर सुबह
उठती है एक कराह भी किलकारियों के साथ ”[365]

बँटवारे और आतंकवादी गतिविधियों से चीख, कत्ल, नफरत, अविश्वास, डर का वातावरण दिखाई देता है । साम्प्रदायिक दंगो का माहौल बन रहा है । इसलिए डॉ. कुँअर बेचैन आतंक को फिर से बढावा न मिले और आजादी पर संकट न आए, इस डर से चिंतीत है –

“फिर वो निशान चोट की यादे दिला न दे ।
उससे कहो की दिखने का सिलसिला न दे ।।
मुद्दत के बाद ख्वाब के ये फूल खिले है ।
डर है कि कोई नींद की टहनी हिला नदे ।।
दालान में है अब भी लुटेरों की टोलियाँ ।
भीतर की कोठरी से कोई खिल खिला न दे ।।
जैसा भी हो बचायें रखों खुद को ऐ कुँअर ।
कोई तुम्हारे खूँन में पानी मिला न दे ।।”[366]

देश में आतंकवाद के इतने पैर फैल गए है कि किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति की बेरहमी से हत्याएँ की जा रही है । आतंकवादीयों ने राजीव गांधी को जिस तरह से फूल की माला पहनाने के बहाने से बम लगाकर मार दिया था । यह आतंकवाद देश और दुनिया में इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है –

"फूल में भी जब बम रखने लगे दुनिया के लोग

ऐ 'कुँअर' माला पहनने में मुझे भी डर लगा ।"[367]

वर्तमान समय में समाज के अतंर्गत हररोज हादसे, पत्थरबाजी, आगजनी की घटनाएँ दिन–ब–दिन बढती जा रहीं है । आम आदमी इसके चपेट में आ रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है –

"जल रहा है शहर सारा और हम खामोश है ।

जर्रा–जर्रा है अंगारा, और हम खामोश है ।।

चाकूओं की नोक पर है अब हमारी गर्दने ।

गर्दनों पर है दुधारा और हम खामोश है ।"[368]

देश में वातावरण इतना भयानक है कि हर स्थान पर आतंकवादियों ने कब्जा किया है । सरकारी दफ्तर इसके चपेट में है । मार–काट और हर कोई एक दुसरे के खुन का प्यासा बन गया है । मनुष्य ही मनुष्य पर शस्त्र उठा रहा हैं । मानवी कल्याण का पथ 'अहिंसा और शांतिं है । इस पर चलने का प्रयत्न कोई नहीं करता है इसलिए ग़ज़लकार कहते है –

"आँख गायब है, कान गायब हैं, चुप्पियाँ है बयान गायब है ।

दिल के कातिल को कैसे पहचाने, उंगलियों के निशान गायब हैं ।

मेज पर रायफल है, चाकू है, मेज से फूलदान गायब है ।

खीच ली है, सभीने तलवारे और हाथों में म्यान है ।।"[369]

स्पष्ट है कि डॉ.कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से आतंकवाद की समस्या के साथ उससे सामाजिक जीवन पर पडने वाले असर का चित्रण मार्मिकता से किया है । आतंकवाद से अहिंसा और शांति का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा ।

इस प्रकार कुँअर बेचैन ने मानव को आतंक की मार झेलनी पड रही है उसके प्रति सहानुभूति दर्शायी है । मनुष्य–मनुष्य के बीच मानवतावाद के साथ दृढ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया हैं ।

निष्कर्ष –

समाज व्यक्ति–व्यक्ति के परस्पर सम्बन्धों से बनता हैं । इस सम्बन्धों का आधार मनुष्य के जीवन की जरूरतें हैं । मनुष्य समाज का अभिन्न अंग हैं । समाज के बिना मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती हैं । जब समाज में अव्यवस्था वातावरण निर्माण होता है तब साहित्यकार अच्छी उस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सतर्क रहता है । साहित्यकार समाज को सहयोग देने के लिए, ज्ञान प्रदान करने के लिए, मानव संस्कृति को उन्नत बनाने के साथ आंतरराष्ट्रीय सहयोग बढाने के लिए सम्पूर्ण योगदान देता हैं ।

कुँअर बेचैन ने ग़ज़लो के माध्यम से वर्तमान समाज का सच प्रस्तुत किया हैं । स्वतंत्रता के बाद हमने जो ख्वाब देखे थे वे चकनाचूर हो रहे हैं । हमारे जीवन मूल्यों का नाश हो रहा है समाज में नैतिकता का स्तर गिरता हुआ नजर आ रहा है । मैत्री और बंधुत्व जैसे शब्द गायब हो रहे है । स्वार्थी प्रवृत्ति पनपती जा रही है । आज धर्म जाति, प्रांत के नाम पर राजनीति हो रही है । आपसी प्रेम और सद्भाव का ऱ्हास हो रहा है । साम्प्रदायिक ताकदे बढ रही है । जाति गत संघर्ष दिन–प्रति–द्दिन बढ रहा है ।

आज देश में भ्रष्टाचार की जड़े मजबूत हो रही है । देश में रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, श्रम के शोषण, रूपये के अवमूल्यन, महँगाई, बेरोजगारी, बढती आबादी से देश की समस्याओं में इजाफा हो रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन जी ने इन परिस्थितियों को समझकर अपनी ग़ज़लों को स्पन्दित किया है । कुँअर बेचैन प्रेम के उदात्त और व्यापक भावना का स्वीकार करते हैं । समाज से कटे हुए व्यक्ति का मूल्यांकन उन्होंने अपने ग़ज़लो में किया है । उन्होंने समाज में रहकर सभी परिस्थितियों का जायजा लिया अनुभव किया और बाद में कहा है । उन्होंने हमेशा सत्य का समर्थन किया है । सुख–दुःख, आशा–निराशा, चिंता, व्याकूलता, अकेलापन, दीवानापन, त्याग, हास–अश्रू, प्रेम, समर्पण, बेबसी की ग़ज़लों का वह भावपक्ष है जिस के आधारपर मानवी मूल्यों को लेकर मानवता का मंदिर स्थापित किया है ।

कुँअर बेचैन जी ने बड़े व्यापक रूप से सामाजिकता का चित्रण किया है । सामाजिक विद्रुपताओं, नारी शोषण,आर्थिक विपन्नताओं को अपनी अनेक ग़ज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । सम्पूर्ण सामाजिक परिवेश उनकी ग़ज़लों में मुखरित हो उठा है । महानगरीय जीवन, मानवी मूल्य, समाज की स्थिति, भय का वातावरण, भ्रष्टाचार आम

आदमी की पीडा, आतंकवाद का अपनी ग़ज़लों की माध्यम से वास्तविक चित्र खिंचा है । कुँअर 'बेचैन' जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से मानव मुक्ति तथा उसके उत्थान को महत्व प्रदान किया है ।

4.5 डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लो में राजनीतिक तथा अन्यान्य बोध

प्रस्तावना–

'राजनीति' शब्द आज के संदर्भ में अपना मूल्य खो चूका है । राजनीतिक क्षेत्र में अनेक विकार निर्माण हुए है । कुँअर बेचैन ने इन विकारों को अपनी ग़ज़ल के माध्यम से विविध रूपों में रेखांकित करने का प्रयास किया है । किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल स्त्रोत राजनीतिक चेतना ही है । किसी भी सुशासन में ही सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक विकास संभव है । "किसी भी काल–विशेष के राजनीतिक परिवेश का प्रभाव उस काल विशेष के समाज, संस्कृति, और साहित्य पर पडता है । राजनीतिक चेतना मनुष्य के सामाजिक जीवन का एक अनिवार्य अंग है ।"[370] अतः उसका भी स्पष्ट प्रतिबिम्ब साहित्य में दिखलाई पडता है । राजनीतिक चेतना जब कमजोर होने लगती है तो उसमें प्राण फुँकने का काम साहित्य ही करता हैं ।

4.5.1 राजनीतिक बोध -

वर्तमान युग में प्रत्येक क्षेत्र राजनीति से प्रभावित है । सामाजिक विकास में भी राजनीति का महत्वपूर्ण स्थान है । राजनीतिक सशक्तता पर ही राष्ट्रीय विकास निर्भर है । जहाँ जिस राष्ट्र में राजनीतिक शक्ति दुर्बल होती है तब राष्ट्र हित के स्थान पर व्यक्तिगत स्वार्थ शुरू होता है । समाज की उन्नति अवरूद्ध हो जाती है ।

15 अगस्त 1947 को अनेक दशकों की पराधिनता के बाद भारत अँग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ । पराधिनता के कारण देश का ऱ्हास हो चुका था । बँटवारे के कारण भारत का एक प्रांत पाकिस्तान देश से कट गया । अँग्रेजों की भेद नीति के कारण जातीय हिंसाचार हुआ था ।

डॉ. अंजनी कुमार दुबे जी के मतानुसार -"18 सितम्बर से 29 अक्तूबर 1947 ई तक के इन 42 दिनों में इस्लाम धर्म को न माननेवाले व्यक्तियों की 24 पैदल तुकडियाँ, सैकडों बैल गाडियों और पशुओं के साथ तकरीबन 84,90,000 व्यक्तियों ने सीमा पार करके भारत में प्रवेश किया । 26 अगस्त से 6 नवम्बर तक रेल्वे ने 23,00,000 शरणार्थियों को

भारतीय सीमा से इधर या उधर पहुँचाया । पाकिस्तान में हिन्दुओं ने 500 करोड की सम्पत्ति छोडी तथा भारत में मुसलमानों की सम्पत्ति 100 करोड़ थी, जिसे वे छोडकर पाकिस्तान गए । इस बँटवारे में कम से कम 5 लाख लोगों को अपने जान से हाथ धोना पड़ा था । ऐसा विश्वास किया जाता है कि 1962 ई.तक लगभग एक करोड पचास लाख हिन्दू, सिख और मुसलमानों को घर द्वार छोडकर शरणार्थी बनना पडा था । इसमें 90 लाख शरणार्थी भारत आए थे, और 60 लाख शरणार्थी पाकिस्तान गए थे ।"[371]

भारत 15 अगस्त 1947 ई.स्वतंत्र हुआ परंतु यह स्वतंत्रता वरदान के साथ अभिशाप बनी । विभाजन के कारण हिन्दू और मुसलमानों में नफरत के बीज बोए गए और वैमनस्य की भावना तीव्र हुई । स्वतंत्रता के बाद देश की शासन व्यवस्था का व्यवस्थित संचालन एवं देश के विकास को ध्यान में रखकर नए संविधान का निर्माण कार्य हुआ । 26 जनवरी 1950 से संविधान का अमल शुरू हुआ और भारत को समता और समानता पर आधारित धर्मनिरपेक्ष प्रजातांत्रिक गणराज्य घोषित किया गया । धर्मनिरपेक्षता का अर्थ राजनीतिक दलों ने अपने–अपने दृष्टि के अनुसार स्वीकार किया । परिणामत: देश में धर्म पर आधारित विकृत राजनीति ने जन्म लिया है ।

आजादी के पहले जो स्वप्न संजोए थे वे सब बिखर गए, टूट गए । चारो तरफ निराशा का वातावरण पैदा हुआ है । शुरू–शुरू में राजनीति का स्तर ऊँचा था । बाद में राजनीति का स्तर गिरता गया है । राजनीति का आदर्श और नैतिकता से रिश्ता टूट गया है । दिन–ब–दिन राजनीतिक वातावरण बिघड़ता जा रहा है । राजनीति राष्ट्रनिष्ठा और देशभक्ति से अलग हो गई है । स्वांतत्र्यपूर्व काल में राजनीति आत्मसमर्पण, देशहित, लोककल्याण का पर्याय थी, परंतु वर्तमान समय में वह वैयक्तिक स्वार्थ तक सिमित बनकर रह गई हैं । ग़ज़ल समिक्षक **डॉ.मधु खराटे** जी का चिंतन है कि "राजनीतिक दल आपसी फूट, गुटबाजी, स्वतंत्रता से प्राप्त सुख–सुविधा के उपयोग की बढती हुई प्रवृत्ति, राष्ट्र और देशहित के सम्मुख अपने निजी स्वार्थों को प्रश्रय देने की मनोवृत्तिं, कुनबा–परस्ती, भाई–भतिजावाद, विचारधाराओं के आपसी अन्तर्विरोध के कारण देश की जनता की दृष्टि में पतित होते चले गए । राजनीतिक दलों के प्रति लोगों की आस्थाएँ टूटती चली गई । राजनीति का देशहित और जनहित में प्रयोग किया । नेतागिरी देश में पूरी तरह हावी होती चली गई ।"[372]

आजादी के बाद मनुष्य की प्राथमिक जरूरतों की भी पूर्ति नहीं हो सकी । प्रत्येक मनुष्य ने स्वप्न देखा था कि उसे रोटी, कपड़ा और मकान मिलेगा और समानता प्राप्त होगी । किन्तु वास्तव अलग ही नजर आता है । **विनिता निर्सर** इसपर लिखती है –"पिछले चार दशको में राजनीति सरे आम निकम्मेपन और बेईमानी की हद पर उतर आई है । सात दशकों की आजाद़ी के इतिहास में स्याही की काली रेखाएँ नजर आती है, लेकिन स्वर्णाक्षरों का अभाव हैं । करों का बोझ दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है, बेरोजगारों की संख्या बढ रही है, आवास हीनों की कतारें लम्बी लगी हुई है, मनुष्यता की सफेद चादर अपराध के धब्बे से लगातार गंदी हो रही हैं । लाल–फीताशाही ने प्रशासन को इस तरह बाँध रखा है कि कहीं कुछ भी न बढ़ने पाए । लोक द्वारा, लोक के लिए लोक का शासन, यदि लोकतंत्र की यही परिभाषा है तो आधुनिक परिस्थितियों में लोकतंत्र अभी भारत से काफी दूर हैं ।"[373] देश की प्रगति के हेतु एवं जनकल्याण के लिए सरकारी कई योजनाएं बनाई गई परंतु देश में भ्रष्ट नेताओं की गलत नीति के कारण यह योजनाएँ आम आदमी से कोसो दूर रह गई है । चुनाव में नए–नए हथकंडो का प्रयोग होने लगा है । संप्रदाय, भाषा, प्रांत आदि के आधार पर देश की जनता को बाँटा गया है । धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद की भावना को बढ़ावा दिया गया है । आज के समय में अनाचार; अनैतिकता, भ्रष्टाचार, धोखेबाजी आदि कई दुष्प्रवृत्तियाँ राजनीति का अंग बन चुकी है । अब राजनीति में सद्‌गुण नहीं रह गए और यह एक विषैला हस्त कौशल बन राजनीति ने जनकल्याण की किसी भी योजना को पूरा नहीं होने दिया । सम्पूर्ण राष्ट्र में अवसरवादिता को बढावा मिला है ।

हर एक प्रकार के हथकण्डे से बहुमत प्राप्त करने के लिए नेता गण कोशिश करते है । इसी आवश्यकता ने कभी जाति के, कभी भाषा के आधार पर, कभी धर्म के आधार पर और धन के दुरूपयोग से बहुमत हासिल करने के लिए हर दल का नेता प्रयास करता है । इस संदर्भ में डॉ.कुँअर बेचैन कहते है–

"ये चाले सियासत की, सियासत की अदाएं,
है अपने ही माँझी को, निगलती हुई नावें ।"[374]

जनादेश और जनमत जनसेवा या समाजसेवा अपना मूल अर्थ खो बैठे है । अवसरवादी तथा दलबदल की राजनीति ने तो सभी मूल्यों की हत्या कर दी है । एक प्रकार से

सामन्तवादी व्यवस्था निर्माण हुई है । नेता विलास प्रिय एवं ऐषो आराम की जिंदगी जी रहे है । उन्हे आम आदमी की पीडा से हमदर्दी नहीं है । ‘‘साहित्यकार राजनीतिज्ञ नहीं होता है और नहीं वह राजनीति में सक्रीय भूमिका निभाता है, वह तो तटस्थ भाव से उसका सर्वेक्षण करता रहता है और यह राजनीतिक परिस्थितियाँ जाने–अनजाने उस पर निरन्तर प्रभाव डालती रहती है । यह प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से पडने वाला प्रभाव ही विभिन्न काव्य रूपों में मुखर हो उठता है ।’’[375]

इस प्रकार राजनीतिक परिवेश खराब है लेकिन इसका अर्थ यही नही है कि सब नेता, एंव राजनीतिक लोग भ्रष्ट एवं स्वार्थी है कुछ राजनीतिक लोग सकारात्मक राजनीति के पक्ष में है । परंतु साठोत्तरी हिंदी–ग़ज़लकारों ने राजनीतिक भ्रष्टाचार की पोल खोल कर जनता के सामने लाने का प्रयास किया है । आज राजनीति में देश सेवा कम ही की जा रही है । राजनीति सत्ता स्थापन करने का साधन बन गई है ।

4.5.2 राजनीतिक शोषण

स्वंतत्रता के उपरांत लोगों ने मन बना लिया था कि भारत में खुशआली आएगी । जिस समर्पण, परिश्रम के आधार पर हमारे नेताओं ने आजादी प्राप्त की उसी बल पर स्वराज्य का निर्माण करना आसान था; परंतु भारत में विपरीत परिस्थितियाँ निर्माण हुई और मोहभंग हुआ । राजनीतिक व्यवस्था ने विकृत रूप धारण किया है । त्याग का स्थान स्वार्थ ने लिया है । हर एक व्यक्ति जीवन यापन के लिए मजबूरन राजनीतिक शोषण को स्वीकार करते हुए व्यवस्था से हाथ मिला रहा है । राजनीतिक नेतागण सामान्य जनता का गलत रूप से इस्तेमाल करके राजनीतिक शोषण कर रहे है ।

देश में आम आदमी की समस्याएँ बढ़ रही है । आम आदमी की यातनाओं को डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है । कुँअर बेचैन की ग़ज़लों के भाव के संबंध में रोहिताश्व अस्थाना कहते है–‘‘इन्होंने अपनी ग़ज़लों में प्रेम में बहाए जाने वाले अश्रुओं एवं हदयविदारक आहों को कथ्य बनाने के बजाए पेट की उस अग्नि को कथ्य बनाया है, जो वर्तमान अर्थव्यवस्था में रोटी के लिए जूझते हुए सच्चे मानव को सिर से लेकर पैर तक जलाती जा रही है ।’’[376]

सामान्यजन की पीडा, शोषण और उस पर होनेवाले अत्याचार का वर्णन संवेदनशीलता के साथ कुँअर बेचैन ने किया है--

"कैसे बताएँ हम तुम्हें क्या-क्या है रामफल
आँसू के एक गाँव का मुखिया है रामफल
मारा है जिसको रोज महाजन के ब्याज ने
बेबस से एक गरीब का रूपिया है रामफल
जब जी किया उधेड दी चाकू की नोक से
गोया फटी कमीज की बखिया है रामफल
जिसको दबा के सो रहे हैं सर बड़े-बडे.
महलों के खानदान का ताकिया है रामफल ।"[377]

आम आदमी के जी तोड मेहनत करने के बाद भी उसे खाली पेट सोने की नौबत आती है । शोषक वर्ग इतना शोषण करता रहता है कि आम आदमी रोटी के लिए बेबस होकर दर-दर ठोकरे खाता रहे -

"गर्दन है अगर हम, तो वो आरी की तरह है
सीने में तो दिल भी कटारी की तरह है
ये रात और दिन तो सरौते की तरह है
इन्सान की औकात सुपारी की तरह है ।
यह हमको नचाता है, इशारों पै रात-दिन
यारो हमारा पेट मदारी की तरह है ।"[378]

शहरों में मेहनतकश मजदूरों का जीवन वेदनामय है । उसके अधिकार को छीन ने काम हो रहा है । उसे डराया धमकाया जा रहा है । कुँअर बेचैन ने मजदूरों का यथार्थ चित्रण ग़ज़ल के माध्यम से प्रस्तुत किया है -

"छा गया यह सोच सन्नाटा शहर में
क्यों पसीने को गया डाँटा शहर में
गाँव से चलकर, शहर तक साथा आया
साँप ने अक्सर, हमें काटा शहर में

पिस रहा है, बीच का तबका शहर में

लोग कहते, पिस रहा आटा शहर में ।"[379]

कुँअर बेचैन के मन में राजनीतिक अविश्वास के प्रति घृणा है । कुकर्म करनेवाले राजनेता आम जनता का भला नहीं कर सकते । नेतागण संवेदन हीन बन गए है । वर्तमान युग में राजनेताओं से भरोसा उठ गया है । गरीब मजदूर इनके विरूद्‌ध लड़ नही सकते । उनके मन में आक्रोश है, पर व्यक्त नही कर सकते । इस बात से जाहिर होता है कि राजनीति में बल का प्रयोग गुण्डागर्दी के लिए होता है । राजनीति का यह विकृत तथा विद्रुप रूप राजनेता के कारण ही है । परिणामस्वरूप नैतिकता का ऱ्हास हो चुका है । भ्रष्टाचार ने सम्पूर्ण वातावरण बिग़ाड दिया है ।

कुँअर बेचैन राजनेताओं की चूस ने की वृत्ति की पोलखोल तथा शोषण की प्रवृत्ति को उजागर करने का प्रयास किया है । कुँअर बेचैन शोषण पर कहते है –

"मेरे बिस्तर पे काँटे रोज बिखरायेगी यह दुनिया ।

चुभन दे के मुझे क्या यूँ ही तडपायेगी यह दुनिया ।।

जलाया घर मेरा, और रास्ते बाहर के सब छीने ।

न जाने और मुझपर क्या सितम ढायेगी यह दुनिया ।।"[380]

डॉ. कुँअर बेचैन ने राजनीतिक घटनाओं का ग़ज़लों में वर्णन किया है । आज के समय में राजनीति छल, छन्द, साम, दाम, दण्ड भेद का नाम है । राजनीतिक हादसों के स्वयं भुक्त भोगी है कुँअर बेचैन । राजनीतिक व्यवस्था पर कुँअर बेचैन प्रहार करते है –

"हम कभी इस तट, कभी उस तट पे हैं।

सुख न जाने कौन सी करवट पे हैं ।

किस तरह ये रात काटी देख लो ।

दुख ही दुख चादर की हर सिलवट पे हैं ।।"[381]

राजनेताओं के कारण आम आदमी त्रस्त है । आए दिन उसका जीवन कठिनाइयों से भरा है । हर तरफ दंगे–फसाद और लूट–खसोट चल रही है । आज की विषम परिस्थिति में सामान्य जन बेसहारा हो रहे है । खुले आम जनता का शोषण हो रहा है "अब राजनीति में

सद्गुण नहीं रह गए और यह एक विषैला हस्तकौशल बन गया है ।"[382] कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल में लिखते है—

"मत पुछिये कि कैसे सफर काट रहे है ।

हर साँस एक सजा है, मगर काट रहे है ।।

खामोश आसमान के साये में बारबार ।

हम अपनी तमन्नाओं के सर काट रहे है ।।"[383]

आज राजनीति सारे देश को एक बिमारी की तरह अपने चपेट में ले रही है । लोक कल्याण की दृष्टि से राजनीति नासूर बन गई है क्योंकि राजनीति ने देश को बाँट दिया है । देश में हिंसा और अशांति का वातावरण है । राजनीतिक बिगडती परिस्थिति के कारण सामान्यजन शोषण का शिकार बन गया है । कुँअर बेचैन लिखते है–

"इस नये माहौल में जो भी जिया बीमार है ।

जिस किसी से भी नया परिचय दिया बीमार थे ।

आम शब्दों की सभा में एक यह ही शोर –था ।

सुखी है क्यों सुर्खियां जब हाशिया बीमार है ।।

रोग कुछ ऐसे मिले पूरे शहर की झील को ।

जिस किसी ने भी यहा पानी पिया बीमार है ।।

एक भी उम्मीद की चिठ्ठी इधर आती नहीं ।

हो न हो अपने समय का डाकिया बीमार है ।।"[384]

आज का राजनेता अपने अधिकार का उपयोग गलत काम के लिए कर रहा है । उन्होंने लोकतंत्र को कमजोर बनाया है । लोकतंत्र पर होने वाला विश्वास टूट रहा है । जनता में राजनीतिक व्यवस्था के विरूद्ध क्रोध बढ रहा है । राजनेता ने आम आदमी के सुख–चैन को नष्ट किया है । उसकी आशा–आकांक्षाओं का गला घोट दिया है । उसकी हँसी को भी छीन लिया है । उसका आर्थिक और मानसिक शोषण हो रहा है । कुँअर बेचैन लिखते है– –

"फुल से खुशबू भ्रमर से गुनगुनाहट छीन ली ।

एक मौसम ने हमारी खिलखिलाहट छीन ली ।।

तब सोचिये, दिल मेरा ये किस तरह जी पायेगा ।

तुमने भी जो दिल से उसकी थरथराहाट छीन ली ।।

जाने ये केसी हवाएँ है जिन्होंने आजकल ।

फूल की हर पँखुरी से मुस्कूराहट छीन ली ।।"[385]

आज के राजनीतिक वातावरण में मानवी जीवन कष्टप्रद संकटों से है, अनेकानेक यातनाओं से मनुष्य संघर्ष कर रहा है । राजनेता चुनाव के दिन आते ही लोगों से मिलते है और चुनाव के के खत्म होते ही गायब हो जाते है । लोग गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई की मार झेलते है । जनता के प्रति उनकी आत्मीयता एक ढोंग होता है । राजनेता हमेशा समाज का शोषण करते रहते है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है–

"उसका न कोई दिन, न ईमान धर्म है ।

इस हाथ से उस हाथ में जाता है आईना ।।

हर रोज नहाता है, हमारे ही खून से ।

पानी से अब कहा यह नहाता है आईना ।।"[386]

इस प्रकार हमें यह नज़र आता है कि कुँअर बेचैन वर्तमान राजनीतिक विसंगतियों को सूक्ष्मता के साथ स्पष्ट करते है । अपने अधिकारों का उपयोग लोगों के शोषण के लिए करना आम बात बन गई है । अंधिकांश ग़ज़ले राजनीति से संबंधित है । कुँअर बेचैन ने शोषण पर आधारित राजनीति व्यवस्था का पर्दाफाश किया है ।

4. 5.3 राजनीतिक भ्रष्टाचार –

आधुनिक युग में जहाँ देखो वहाँ भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था काम कर रही है । राजनीति से नैतिकता स्तर गिर गया है । भ्रष्टाचार के बिना राजनीति ही नहीं रही । राजनीति और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पयार्यवाची बन गए है । देश की भ्रष्ट राजनीति ने लोककल्याण परक योजनाओं को अधूरा छोडा है । व्यवहार में भ्रष्टाचार है । समाज में भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार का रूप धारण कर रहा है । राजनेताओं पर से जनता का विश्वास टूट रहा है । भ्रष्ट नीतियों के कारण सारे व्यवहारों में घपलों की बू आती है । राजनीतिक वातावरण में जो भी नेता आ रहा है स्वार्थ और धनलोलूपता में मशगुल हुआ दिखाई देता है । देश में भ्रष्टाचार के कारण

सर्वहारा वर्ग का जीवन त्रस्त हुआ है । कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से राजनीतिक जीवन की दुष्प्रवृत्तियाँ और राजनेताओं की भ्रष्ट प्रवृत्ति पर निशाना साधा है ।

वर्तमान स्थितियों को देखते ही साहित्यकारों का संवेदनशील मन दहलता है । वे अपने साहित्य के माध्यम से इन सारी चिजों को समाज के सामने लाते है । आज देश का वातावरण ऐसा है कि हर व्यक्ति बिक रहा है । धन प्राप्ति के लिए मनुष्य कुछ भी कर रहा है । लेकिन यह गलत काम मनुष्य को जकड लेता है । कुँअर बेचैन कहतें है

"सिक्कों की ये खनक जो, तुझको नचा रही है ।
घुँगरू की शक्ल में है, जँजीर याद रखियो ।"[387]

राजनेता जहाँ मगरमच्छ के आँसू निकालते है ग़ज़लकार को यह सब ढोंग लगता है । क्योंकि वे रोने का रहस्य जानते है । समाज में ठेकेदार राजनेता के हाथ में हाथ मिलाकर समाज का ही खुन चूसता है ।

"हँसने पे रोये और कभी रोने पे हँस दिये ।
हम जैसे सरफिरों का भी किस्सा अजीब है ।"[388]

कुँअर बेचैन ने यह स्वीकार किया है कि यह जीवन दुःख, यातनाओं से भरा है । इसमें कही आतंक है, कही शोषण का वातावरण है । भ्रष्टाचार मानों मनुष्य के जीवन का अंग बन गया हो । लोकतंत्र के नाम जैसे को भ्रष्टाचार कि खुली छूट मिली हो । आज का नेता अपने लाभ के लिए बेरोजगार युवा का इस्तेमाल कर रहा है । आज की स्थिति पर डॉ. कुँअर बेचैन की राय है कि इस पर अब कोई उपाय नहीं रहा है । लोकतंत्र में राजनीति के नाम पर नंगा नाच चल रहा है । राजनेता की संवेदना हीनता के कारण एक दुसरे पर विश्वास नहीं रहा है । जानवर की तरह लोग एक दुसरे से बर्ताव कर रहे है । डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़ल में इसी प्रकार के भाव अभिव्यक्त किए है –

"माना की मुश्किलों का तेरी हल नहीं 'कुँअर' ।
फिर भी तू जंगलो की तरह जल नहीं 'कुँअर' ।।
हर रोज कोई कूद के करता है खुदकुशी ।
है बात क्या कि झील में हलचल नहीं 'कुँअर' ।।
अब अपनी जिदंगी को पहनना सँभालकर ।

यह खुरदुरा सा टाट है मखमल नहीं 'कुँअर' ।।"[389]

प्रजातांत्रिक व्यवस्था में जन सेवा को ही ईश्वर सेवा माना जाता था । परंतु आज के समय यह भावना लुप्त हो चुकी है । "स्वतंत्रता और विधि के शासन के लिए विश्व–भर में प्रसिद्ध भारतीय लोकतंत्र में विगत कुछ वर्षो में अनेक दुर्बलताएँ उजागर हुई है, जिनकी काली छाया धीरे–धीरे पूरी राजनीतिक व्यवस्थाओं को ढकती जा रही है । लोकतंत्र तो जैसे दिखावा–मात्र ही रह गया है । वास्तविक लोकतंत्र तो राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में कही खो गया सा लगता है ।"[390] जनता को खोखले नारे छलते है । आजादी के फल आम जनता से दूर ही रह गए है । आजादी के ख्वाब चकनाचूर हो गए है । आम जनता की प्राथमिक आवश्यकताएँ पूरी नही हुई है । कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल में लिखते है–

"जहाँ इन्सान की औकात से दौलत बड़ी होगी ।
महल बनकर खडे होगे, झुकी हर झोपड़ी होगी ।।
जरा सोचों कि मुंह तक रोटीयाँ क्यों नहीं आई ।
तुम्हारी ही कलाई में कहीं कुछ गडबड़ी होगी ।।"[391]

राजनेता अपनी कुर्सी को बचाए रखने के लिए गिरगिट की तरह रंग बदलते है । राजनेता की दल बदलू राजनीति के कारण विश्वास, प्रामाणिकता, देश प्रेम जैसे मूल्यों का पतन हो रहा है । सर्वसामान्य जनता के जीवन में नई–नई समस्याएँ उत्पन्न हो रही है । देश की स्थिति बिगडने के कारण देश की जनता भी कमजोर हो रही है । राजनीतिक भ्रष्टाचार बहुत बढ गया है जिससे देश का वातावरण खराब होता जा रहा है । कुँअर बेचैन भ्रष्ट स्थिति को उजागर करते है—

"अब मोहब्बत के मानी बदलने लगे ।
लोग फिर से निशानी बदलने लगे ।।
इस बदलते हुये दौर को देखकर ।
लोग बातें पुरानी बदलने लगे ।
मेघ भी अपना पानी बदलने लगे ।।
के महाराज यह क्या हुआ आपको ।

आप भी राजधानी बदलने लगे ।।

सब ये कहते है, तू बी बदल ऐ 'कुँअर' ।

संत भी अपनी बानी बदलने लगे ।।''[392]

सत्ता, शासन के गलत तरीकों से दुरूपयोग से डर का वातावरण निर्माण हुआ है । परिणामत: सत्य और और आदर्श की हत्या हो चुकी है । शांति हिंसा में बदल गई है, चारो तरफ आतंक का बोल बोला है । ऐसी बिगड़ी परिस्थिति में डॉ कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का स्वर यही मुखरित करता है कि आम आदमी ही नहीं समाजसुधारक, विचारवंत तक चूपचाप बैठकर जीवन यापन कर रहे है । राजनीतिक क्षेत्र में नेता का मत महत्वपूर्ण होता है । राजनीति को प्रभावशाली, सक्रीय बनाने के लिए नेता की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है । देश को आगे ले जाने के लिए, देश में सुव्यवस्था निर्माण करने, शांती बनाए रखने के लिए नेता का उत्तरदायित्व महत्त्वपूर्ण होता है । लेकिन आज के राजनेताओं में यह गुण मौजुद नहीं हैं । आजादी से पहले कई नेताओं ने देश के लिए अपना सर्वस्व अर्पित किया था । देश को आजाद करने के लिए अपने प्राणों की बली दी थी । परंतु आजाद देश में राजनेता स्वार्थांध बन गए है । उनकी कथनी और करनी में अंतर आ गया है ।

ग़ज़लकार ने भ्रष्ट नीति पर व्यंग्य कसा है । राजनेता समाजसेवा का नाटक करते है । इनके नारे खोखले साबित होते है । सत्ता का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते है । डॉ. कुँअर बेचैन ने राजनेता की कुर्सी भ्रष्ट है ऐसा कहकर व्यंग्य कसा है । वे लिखते है –

''न जाने है ये किससे नाम कुर्सी ।

सभी को चाहिये आराम कुर्सी ।।

जिसे देखों वो पाँवों पर पडा है ।

बनी है चारों धाम कुर्सी ।।

ये दुनियाँ गौर से देखा तो जाना ।

हर एक आगाज का अंजाम कुर्सी ।।

मढी जायेगी सोने से अचानक ।

पिएगी फिर लहू के जाम कुर्सी ।

कभी बिक जायेगी यूँ ही किसी को ।

लगायेगी ये अपने दाम कुर्सी ।।

'कुँअर' सब लोग अब ये सोचते है ।

मिलेगी कब हमें निष्काम कुर्सी ।।"[393]

आज का राजनेता सत्ता लोलूप है । सत्ता हाथियाने के लिए देशवासियों से झूठे वादे करता है । लोगों को ठगाकर कुर्सी में बैठ जाता है । फिर वापस लौटकर नहीं आता, जब फिर से चुनाव आता है, तब ही वह जनता से हाथ जोडकर मत माँगता फिरता रहता है । जब तक कुर्सी में है तब तक लोगों की समस्या की और अनदेखा करता है । उल्टा आम जनता का शोषण करता है । बहुत ही कम ऐसे नेता गण है जो दिए हुए वादों को पूरा करते है । भ्रष्ट नेताओं पर कारवाई होनी चाहिए तब कही राजनीति में सुधार आएगा । देश भ्रष्टाचार मुक्त होगा तब खुशहाली आएगी । दुर्भाग्यवश अपने नेता लोभ के कारण अपनी ही जेब भरने का काम करते है । उन्हें गरीबों के आँसू पोछने का समय नहीं है ।

नेता के लिए पद ही साध्य है और उसके लिए अनैतिक साधनों का उपयोग करता है । 'वोटर' तो चंद सिक्को अथवा शराब की बोतलों से खरीदा जा सकता है । ऐसे ही राजनीतिक लोग निर्वाचित होकर शासन में आते है । आज की राजनीति में वे ही प्रवेश पा सकते है जिनके पास वोट खरीदने के लिए नोट है । केवल वे ही टिकट प्राप्त कर सकते है जिनके पास पैसा है ।[25] डॉ.कुँअर बेचैन ने राजनेताओं की भ्रष्ट प्रवृत्ति को उजागर किया है । नेता किसी एक दल से प्रामाणिक नहीं होते, वे हर समय कुर्सी के लिए पक्षांतर करते रहते है । दल बदलू नेताओं का पर्दाफाश 'आईना' प्रतीक के माध्यम से किया है । वे कहते है --

"अपनी सियाह पीठ छुपाता है आईना ।

सबको हमारे दाग दिखाता है आईना ।।

उसका न कोई दीन न ईमान धर्म है ।

इस हाथ से उस हाथ में जाता है आईना ।

हम टूट गये और यह बोला न एक बार ।।

जब खुद गिरा तो शोर मचाता है आईना ।

शिकवा नहीं कि क्यों यह कहीं डगमगा गया ।

शिकवा तो यह है कि अक्स हिलाता है आईना ।।

यह रोज नहाना है हमारे ही खून से ।
पानी से अब कहाँ यह नहाता है आईना ।
सजने के वक्त भी तो हमें दे गया चुभना ।
कहते ही भर को भाग्य विधाना है आईना ।।"[395]

भारतीय राजनीति के आपातकाल में लोग त्रस्त हो चुके थे । लोग सोचते है कि यह भी राजनीतिक रूप से भ्रष्टाचार है । आम आदमी भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ आवाज बुलंद करना चाहता था परंतु उसको गूंगा बना दिया था । क्योंकि उसके बोलने से शोर उठ सकता था । आपात की स्थिति का वर्णन डॉ.कुँअर बेचैन करते है–

"आँख गायब है, कान गायब है ।
चुप्पियाँ है, बयान गायब है ।।
दिल के कातिल को कैसे पहचाने ।
उंगलियों के निशान गायब है ।।
पाँव से यहा जमीन क्या खीसकी ।
सर से सब आसमान गायब है ।।
मेज पर रायफल है, चाकु है ।
मेज से फुलदान गायब है ।।"[396]

आज के समय चुनाव गुंडा गर्दी और धन के बल पर जीते जाते है । आम आदमी चुनाव में खड़े होने का साहस नहीं करता । चुनाव जीतने पर ये राजनेता स्वंय को भगवान समझने लगते है । इनके दर्शन भी दुर्लभ हो जाते है । तथाकथित राजनीतिक नेताओं की वोट की राजनीति देश को कमजोर कर रही है । आज का नेता चन्द वोटों को पाने के लिए दुम हिलाते फिरते रहते है चुनाव जीत जाने पर भेड़िए नजर आने लगते है । राजनेता राजसत्ता के हेतु नए नए हथकण्डे अपनाता है । कुँअर बेचैन इससे भली–भाँति परिचित है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने राजनेता का नकाब उतारने का काम ग़ज़ल के माध्यम से किया है । वे कहते है–

"मुझसे न कोई पुँछे किस साज का चेहरा है ।
हर दर्द मेरे दिल की आवाज का चेहरा है ।।

वह कौन परिन्दा है, बैठा जो मुँडरी पर ।

कुछ कुछ है, कबुतर सा, कुछ बाज का चेहरा है ।

इन्सान का वह चेहरा, कल और भी बदलेगा ।

यह आज का चेहरा तो, आगाज का चेहरा है ।।"[397]

चुनाव के समय हर दल अपना घोषण-पत्र प्रकाशित करता है । जिसमें राष्ट्र हित और लोक कल्याण के लिए किए जाने वाले कार्यो की लंबी सूची होती है । नेतागण बडी सभाओं में अनेक वादे करते रहते है । गरीबी, बेरोजगारी, और महँगाई को कम करने का वचन देते है । सामान्य जन को सपने दिखाते है । यह सब वोट पाने का बहाना है । वादा खिलापी उनका स्वभाव बन गया है । राजनेता के बारे में कुँअर बेचैन लिखते है –

"यह दिन है या कि रात उन्हें याद नहीं है ।

अब अपनी कोई बात उन्हें याद नहीं है ।।

वो छत पें बैठते ही हमें भूल गये है ।

गालियों की मुलाकात उन्हें याद नहीं है ।।

है उनको फकत याद सिर्फ कहकहों की कहानी ।

आँसू की वारदात उन्हें याद नहीं है ।।"[398]

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ के सतर्क और ईमानदार राजनेता के माध्यम से होती है । उसकी सुनियोजित कार्य पद्धती पर ही विकास निर्भर होता है । जब राजनेता को अपनी जिम्मेदारी का एहसास नहीं होता है तब देश का पतन होता है । "राजनीतिक दल अपनी फूट, गुटबाजी, सत्ता से प्राप्त सुख-सुविधाओं के उपभोग की बढती प्रवृत्ति, निजी स्वार्थी को आश्रय देने की मनोवृत्ति, भ्रष्टाचार, अनैतिकता के कारण जनता की दृष्टि में पतित होने चले गए राजनीतिक का जनहित और देश हित में प्रयोग करने के स्थान पर व्यक्तिगत हित में ही प्रयोग किया गया ।"[399] आज राजनेता अपना उत्तरदायित्व भूलकर विलासप्रिय जीवन यापन कर रहे है । ऐसे राजनेताओं के चरित्र पर प्रकाश डालने का महत्त्वपूर्ण काम कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल के माध्यम से किया है वे लिखते है-

“थी जिनके पास सबको जगाने की बागडोर ।

वो खुद ही किसी नींद का दफ्तर बने रहे ।।

बेकार उनको मील का पत्थर कहा गया ।

कुछ लोग वो जो राह का पत्थर बने रहे ।।”[400]

आज राजनीति आम आदमी से खिलवाड करती है । राजनेता प्रामाणिक होते तो आमजन का जीवन जिस तरह गरीबी में बीत रहा है, वैसे नहीं होता । गंदी राजनीति के कारण इस देश में भूख की समस्या बन चुकी है । रोटी के टूकडे लिए लोग कुत्तों की तरह टूट पडते है । गरीब के पास न तन ढकने के लिए कोई वस्त्र है न ठंडी से बचने के लिए ओढ़ना–बिछाना । राजनेताओं को गरीबों के अभाव और समस्याएँ दूर करनें का वक्त नहीं है । वे अपने में ही मस्त है । राजनेता बड़ी–बड़ी बाते तो करता है लेकिन वह राजपथ की चकाचौंध देखकर बात करता है । देश का वास्तव देखना है तो गाँवो के गरीबों को देखना होगा, गाँवों की उजड़ी गलियों को देखना होगा, फटियाल जिंदगी को देखना होगा । कुँअर बेचैन कहते है–

“बड़ी मुश्किल से उसने घर बनाया

मगर बच्चे कहाँ घर कह रहे हैं

न हम पर ओढ़ना है न बिछौना

जमीनों को ही बिस्तर कह रहे है ।”[401]

जाहिर सी बात है कि आज की राजनैतिक परिस्थिति भ्रष्टाचारी नेताओं के कारण ही बनी है । वर्तमान समस्याएँ को राजनेताओं को दिखाने का प्रामाणिक प्रयत्न डॉ.कुँअर बेचैन जी ने किया है । आमजन की पीडा उनकी ग़ज़लों मे परिलक्षित है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

“न समझे जिंदगी का छोर है क्या ।

तुम्हारी भी नज़र कमजोर है क्या ।।

किसी की बात तुम सुनते नहीं हो ।

शहर में इतना ज्यादा शोर है क्या ।।

गलत हाथों में जो अब आ गई है ।

तुम्हारी ही पतंग की डोर है क्या ।।

सजा.मुज़ीरम अब मिलती नहीं है ।

कि जो मुसिक है वो ही चोर है क्या ।।”[402]

तात्पर्य यह है कि राजनेता की भ्रष्टनीति के कारण से आम जनता को परेशानी होती है । जनता क्रांति करना चाहती है । डॉ.कुँअर बेचैन ने अपने अनुभूति के बल पर जनता के दर्द को अभिव्यक्त किया है ।

दिल्ली देश की राजनीति का केंद्र है । प्रत्येक राज्य से, हर एक दल से निर्वाचित सदस्य एकत्रित होते है । प्रजातंत्र अंको का खेल है । दिल्ली राजनीति का प्रमुख केंद्र होने के कारण हर तरह की राजनीतिक उथल–पुथल; जोड़–तोड़ होती है । इस दिल्ली शहर में क्या–क्या होता है उसे डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़ल में अभिव्यक्त किया है । दिल्ली को 'हवेली' के प्रतिक रूप में लेकर राजनेताओं का पदार्फाश किया है–

“इतने तीर तनाव हवेली में ।
घायल है, हर भाव हवेली में ।।
जो भी आया वो आकर भटका ।
इतने अधिक घुमाव हवेली में ।।
सिर्फ किराये दार बदलते है ।
और न कुछ बदलाव हवेली में ।।
खुनी चेहरे रहते है, अब भी ।
दे मूछों पर ताव हवेली में ।।
आजू बाजू कमरे है, फिर भी ।
आँगन का अलगाव हवेली में ।।
होता है, पत्थर से हर दिन ।
शीशों का टकराव हवेली में ।।”[403]

4.5.4 राजनीतिक स्वार्थ –

प्रजातंत्र की विशेषता यह है कि इसमें राजनीति से प्रत्येक व्यक्ति से सम्बन्ध आता है । यह राजनीति गली से होती हुई दिल्ली तक पहुँचती है । हर एक क्षेत्र में राजनीति छा गई है जैसे कि सरकारी दफ्तर, फैक्टरी, शिक्षा के केंद्र आदि । साहित्यकार पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से राजनीति से प्रभावित होता है । आज का कवि यह देख रहा है कि कैसे प्रजातान्त्रिक

व्यवस्था में सुविधाओं की जगह अभाव और अव्यवस्था ने ली है । हिन्दी ग़ज़लकार प्रजातंत्र के उपलब्धियों पर सवाल करता है । आज हमारे देश में राजनीति को ही विकास का साधन माना जाता है । जिसे देश में राजनीतिक वातावरण बिगड़ जाता है, राजनीति में स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ती है, वह देश अध:पतन की ओर बढ़ता है । राष्ट्र हीत देश की राजनीति पर निर्भर है । अफसोस है कि आज भी आम आदमी को स्वातंत्र्य के सुनहरे दिन देखने को नहीं मिल रहे है ।

आज राजनीतिक वातावरण दूषित हो रहा है । आजादी के पहले एक ही लक्ष्य था कि देश को अँग्रेजी शासन की दासता से मुक्त करना है । देश के अनेक क्रांतिकारों ने, नेताओं ने अपना बलिदान दिया है । अर्थात स्वातंत्र्यपूर्व काल में कोई भी नेता स्वार्थी नहीं था । आज राजनीति स्वार्थ के घेरे में है । राजनेता राजनीति का उपयोग ही स्वार्थ के लिए कर रहा है । स्वार्थी मनोवृत्ति के कारण सरकारी योजनाएँ आम जनता तक पहुँचती ही नहीं । भ्रष्टाचार ने शिष्टाचार का रूप धारण किया है । राजनेता सुख–बिलास में रहते है । स्वंतत्रता के पश्चात रोटी, कपड़ा और मकान इन प्राथमिक आवश्यकताओं पूर्ति होगी, ऐसा सपना हर एक भारतीय व्यक्ति ने देखा था । परंतु उसका सपना टूट गया । स्वार्थी राजनेताओं ने आदर्श और नैतिकता को हाशियें पर रखा है ।

आधुनिक युग में राजनेता स्वार्थ के दलद्दल में नख–शिख डूब गए है । नेता स्वार्थ के लिए दल भी बदलते है । राजनेता अपना प्रभाव सिद्ध करने के लिए अनेक तौरत्तरीके अपनाता है । अनेक प्रकार की विद्रुपताएँ राजनीति में आ गई है । सत्ता पाने के लिए राजनेता अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे है । कुँअर बेचैन कहते है–

"घिर गये है आज हम हमलावरों के बीच में ।
सिर्फ यह चर्चा है, घायल अक्षरों के बीच में ।।
थी हमारे पास भी कल तक कोई उँची उडान ।
आज रख दी कैं चियाँ किसने परों के बीच में ।।
फिर कोई आवाज इनमें छटपटाकर मर गई ।
फिर कोई जलसा हुआ मुर्दो घरों के बीच ।।"[404]

आज राजनेताओं पर कोई भरोसा नहीं कर रहा है । योग्य और प्रामाणिक राजनेता न होने से उसे जनता के प्रश्नों की जानकरी सही रूप में नहीं होती है । ऐसे बेईमान नेताओं के कारण कारोबार भी भ्रष्ट हो गया है । "एक समथ था, जब राजनीति के क्षेत्र में कार्यरत राजनेताओं मंत्रियों, सांसद एवं विधायको आदि को बहुत सम्मान की दृष्टी से देखा जाता था उन्हें देशवासियों का मार्गदशक एवं देश का कर्णधार माना जाता था । परन्तु आज राजनीति में आई गिरावट से यह क्षेत्र सबसे अधिक भ्रष्ट माना जाने लगा है । राजनीति को भयंकर दलदल कहा जाने लगा है । राजनीतिक वातावरण दूषित हो रहा है । राजनीति किसी महान उद्देश्य की प्राप्ति का साधन नहीं, वरन् राजनेताओं के छोटे–छोटे स्वार्थों की पूर्ति का साधन बनकर रह गई है ।"[405] राजनेता स्वार्थ और लोभ में डूबा है । हर समय राजनेता अपना रूप बदलता है और अपनी जिम्मेदारी से दूर भागता है । यह बिल्कुल अवसरवादी होते है । हम जिस पर भरोसा करते है अक्सर वही धोखा देते है । ऐसे धोखेबाज स्वार्थी नेता पर कुँअर बेचैन लिखते है–

"हमने समझा था उसे क्या मगर वो क्या निकला ।
भीड में भी उसे देखा तो वो तन्हा निकला ।।
जिसको दीवार समझकर के सहारा चाहा ।
वो किसी मंच का एक काग़जी परदा निकला ।।
लोग क्या क्या न तेरे बारे में सोचेंगे 'कुँअर' ।
एक सिक्का भी अगर जेब में खोट निकला ।"[406]

अर्थात नेता गण हमेशा अपने स्वार्थ को सिद्ध करने में लगे रहते है । उन्हे गरीब, वंचितोओं से कोई लेना–देना नहीं होता है । डॉ.कुँअर बेचैन ने ऐसे स्वार्थी नेताओं और उनकी स्वार्थगत राजनीति को अपने ग़ज़ल के माध्यम से प्रकाशित किया है । अपने स्वार्थ के हेतु कुर्सियों को चिपक कर बैठे नेता के बारे में कुँअर बेचैन कहते है–

"कोशिशें करके थक गई दुनिया
जुल्म की उँगलियाँ नहीं टूटीं ।
लोग बनकर पहाड बैठे हैं ।

फिर भी कुछ कुसियाँ नहीं टूटी ।''[407]

राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थ के लिए अपने इशारों पर किसी को भी नचाते है । ''संसद भी इन राजनीतिज्ञों के व्यक्तिगत स्वार्थ का केंद्र बन चुकी है । सामान्य व्यक्ति की समस्याओं को दूर करने की दृष्टि से कोई पक्ष दिल से रूचि नहीं लेता है, चाहे वह सत्तारूढ पक्ष हो या विपक्ष किन्तु जहाँ राजनीतिक स्वार्थ की बात होती है वहाँ पक्ष और विपक्ष दोनों सजग हो जाते है ।''[408] कई राजनेता ऐसे है वो दूसरों के इशारों पर सरकार चलाने का काम करते है क्योंकि इसमें उनका वैयक्तिक हित होता है । इस प्रकार अवसरवादी राजनीति को स्पष्ट करते हुए डॉ. कुँअर बेचैन जी लिखते है–

''नदी कैसी वो होगी सोचियेगा
कि जिसके घर समन्दर घूमते है
कला उनकी कलाई में है ऐसी
इशारे से ही पत्थर घूमते है ।''[409]

देश का राजनीतिक वातावरण ऐसा बन गया है कि राजनेता अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करते है । किसी भी बात का मतलब गलत निकाल कर देश की जनता को अपने निजी स्वार्थ के लिए गुमराह करते है । देश में कही भी कोई भी घटना घटित हो जाती है । तो उस घटना का सम्बन्ध राजनीति से जोडते है । हर दल आरोप और प्रत्यारोप करता है । और उसमें से अपना स्वार्थ सिद्ध करते है । इतना ही नही किसी की मृत्यू हो जाती है तो राजनेता इतना गिर जाते है कि उसका भी फायदा उठाने में पीछे नहीं हठतें । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है—

''चीज़ क्या है और उसको क्या बना लेते है लोग
अब चिताओं अलावों का मजा लेते है लोग ।''[410]

आजादी के पूर्व भारतीय जन–मानस ने जो स्वप्न संजोये थे वे सब के सब चकनाचूर हो गए है । आजादी के बाद लोग सुख–चैन की साँस लेंगे ऐसा प्रतीत हो रहा था । परंतु स्वार्थी राजनेता के कारण लोगों की साँस टूटती नजर आ रही है । स्वार्थी राजनीति की वजह से लोगों को स्वातंत्र्यपूर्व काल की कडी धूप भी अच्छी लगती है । कुँअर बेचैन कहते है– –

"इससे तो धूप भली थी, उजियारा तो था उसमें,

अब तो केवल अँधियारा है, शाम सुहानी क्या निकली ।"[411]

राजनेताओं के कारण आम इन्सान की स्थिति हतबल हो गई है । आम जनता सत्ताधिशों के सामने अत्यंत कमजोर हो गई है । आम आदमी सरकार की गलतियों का पूरजोर विरोध करना चाहता है, आंदोलन करके परंतु यहाँ की शासन व्यवस्था उसके विरोध को दबा देती है । ग़ज़लकार ने राजनेताओं की स्वार्थी प्रवृत्ति को उजागर किया है । सत्ता लोलूप राजनेता जनता को विरोध करने से रोकते है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है– –

"हमारे हाथ तो कट ही चुके है

सियासत अब गला भी चाहती है ।"[412]

सियासत के सामने सब हतबल हो गए है । कभी–कभी राजनीतिक राजनेता ही अपने स्वार्थ के लिए अपने ही लिडर को निगलते है । कुँअर बेचैन कहते है–

"ये चाले सियासत की सियासत की अदाएँ

है अपने ही माँझी को निगलती हुई नावे ।"[413]

डॉ. कुँअर बेचैन ने वर्तमान राजनीति पर व्यंग्य के बाण चलाए है । आमजन के लिए राजनीति के मायने क्या है? राजनीतिक खेल में हर व्यक्ति टूटता जा रहा है । राजनेता वोट की राजनीति अपने स्वार्थ के लिए करते है । मजे करने वाला मजा ही कर रहा है, सत्ता का मजा चख रहा है । सामान्य व्यक्ति राजनेताओं की घिनौनी राजनीति से उत्पन्न संकटो को, रोजगारी की समस्याओं को झेल रहा है । ग़ज़लकार को यह मालूम नहीं था कि राजनीतिक काले नाग चंदन के पेड पर मतलब सत्ता की कुर्सी पर बैठे है । अपने स्वार्थ में डूब गए राजनेता ऐसे भी हो सकते है ऐसा किसी ने भी सोचा नहीं था । कुँअर बेचैन प्रस्तुत ग़ज़ल में कहते है–

"आज अमलतासों की बाहों पर हमने

लटके देखे काले–काले नाग के फल

किसने सोचा था लहरे रख जाएंगी

सागर के तट पर ये उजले झाग के फल ।"[414]

आज जनता स्वार्थी राजनीति के कारण प्रताड़ीत हो रही है । तथाकथित नेता प्रताड़ीत कर रहे है । ''देश के लिए बनाए संसद को जनता बडे विश्वास के साथ अपना आधार मानती रही परन्तु संसद द्वारा रौंदे गए साधारण जन की स्थिति फटे हाल ही रही ।''[415] जनता का सब कुछ लुटने से भी राजनेता का पेट नहीं भरता है । राजनेता ने अपने स्वार्थ के लिए जनता की रूह को ही नहीं जिस्म को भी घायल कर डाला है फिर भी इनके अत्याचार की लाठी नहीं टूटी । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है–

''गर्दन है अगर हम, तो वो आरी की तरह ;
सोने में अब तो दिल भी कटारी की तरह है ।
ये रात और दिन तो सरौते की तरह है,
इन्सान की औकात सुपारी की तरह है ।
यहा हमको नचाता है, इशारों पै रात–दिन,
यारो हमारा पेट मदारी की तरह है ।
हर बोझ से सोचा कि चलो बैठ कर देखें,
शायद हमारी पीठ सवारी की तरह है ।''[416]

आज कल धर्म के नाम पर जो दंगे फसाद होते है, उसका राजनीतिक लाभ उठाया जा रहा है । धर्म के नाम पर खून बहाया जा रहा है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है–

''है दिन भी अंगारों के, हर रात अंगारों की;
यह किसने हमे दी है, सौगात अंगारों की ।
मुश्किल है बहुत मुश्किल, अब घर से निकल पाना,
काग़ज की छतरियाँ है, बरसात अंगारों की ।''[417]

नेताओं के तौरतरिकों के कारण ग़ज़लकार क्रोधित है, और क्रांति की बाते करता है । जो राजनेता नकाब पहन कर बैठे है वे ही गुनहगार है, उनको बेनकाब करना है । निजी स्वार्थ सिद्धि के लिए ये दूसरों को मिटाने चले है परंतु जिते जी उनकी यह कामना कभी पूरी नहीं हो सकती । कुँअर बेचैन कहते है–

“इस वक्त अपने तेवर, पूरे शबाब पर है,
सारे जहाँ से कह दो, हम इंकलाब पर है
उन कातिलों के चेहरे अब तो उधारियेगा
ताजा लहू के धब्बे, जिनके नक़ाब पर है
कोई मिटा न पाया हमको ‘कुँअर’ जहाँ में
हम दस्तखत, समय के दिल की किताब पर है ।”[418]

कुँअर बेचैन ने देश में जो अनाचार, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महँगाई बढ गई है उसे आज की राजनीति को दोष दिया है । उन्होंने राजनेताओं को विरोध किया है । स्वार्थी नेता और राजनीति की और निर्देश करते हुए कुँअर बेचैन ने व्यंग्य किया है । आम आदमी मायूस है क्योंकि कोई आशा की किरण नहीं है । राजनेताओं की करनी ओर कथनी में अंतर है इसलिए दिए आश्वासन की पूर्ति राजनेता नहीं कर सकते । स्वार्थांध राजनीति में परिवर्तन लाने के लिए सही रास्ते पर सब को चलना होगा । डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ल दृष्टव्य है–

“लाये है, अपने साथ में वो इश्तहार दिन ।
उन सबके शीषर्क है, घरों से फरार दिन ।।
वेतन की शक्ल में जो मिले खर्च हो गये ।
अब रहे गये है पास जो वे है उधार दिन ।।
सोने से पीठ से सुबह कभी तो शाम ।
निकले है तीर ही की तरह आर पार दिन ।।
सुरज ने खुद ही बेंच दी है, भोर की किरण ।
बैठे हुये है, ओढ़कर अब अंधकार दिन ।।”[419]

“देश स्वतंत्र हुआ उसके बाद हर क्षेत्र में विकासात्मक प्रगति हुई है, लेकिन यह प्रगति भाषणों के चमत्कारिता से हुई है । जो सरकारी योजनाओं की प्रगति से कई गुना वास्तविक रूप में हुई, नेता चाहे सरकार की संसद में हो या सत्ता के बाहर हो उसका बडा शस्त्र भाषण होता है । वह सत्ता से बाहर रहने पर विरोधी होने के कारण सत्ताधारियों के गालियाँ देता है, अर्थात भाषण की चमत्कारिता से जनता को वह दोनों तरफ से लूटता है ।”[420]

डॉ. कुँअर बेचैन जिनके झूठे भाषण है, झूठे वादे है, कथनी और करनी में अंतर है ऐसे राजनेता का घोर विरोध करते है । राजनेता लोगों के आँखो में धूल झोंकने का प्रयास करते है और सत्ता पर असिन होने के पश्चात अपनी स्वार्थ की रोटी सेंकते रहते है । ऐसी स्वार्थी प्रवृत्ति को लेकर कुँअर बेचैन का शेर द्रष्टव्य है –

"उन कातिलों के चेहरे अब तो उधारियेगा ।

ताजा लहु के धब्बे जिनके नकाब पर है ।"[421]

राजनेताओं की झूठी बयानबाजी से जनता दूर नहीं रहती । उनके पकड में राजनेता की गलत बात नहीं आती । एक बार जनता का वोट प्राप्त करते है कि अगले चुनाव में जनता के सामने प्रस्तुत होते है । अपनी स्वतंत्र चुनावी रैलीयाँ करता है । जनता के सामने हाथ जोडकर खडा रहता है । जनता को एहसास दिलाता है कि उनके जीवन में मैं ही ऐसा नेता हूँ जो आपका कल्याण कर सकता है । ऐसे भाषण बाजी से स्वार्थ की गंध आती है । जब स्वार्थ पूरा होता है तब वह सारी बाते भूल जाता है । फिर उसे न अपने दल का घोषणा पत्र याद आता है न अपना स्वंय का भाषण । राजनेता अपने भाषण और आदर्श के विरूद्ध बर्ताव करने लगता है । गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले, अपने दिए हुए वचनों से भटकने वाले नेताओं की प्रवृत्ति को डॉ. कुँअर बेचैन विरोध करते है–

"नजरों से जब भी ख्वाब सुनहरे उतर गये ।

हमने सुना है, सबके चेहरे उतर गये ।।

लोगों के दर्दो ओ गम भी सियासत के जहन में ।

झन्डों की तरह एक दिन फहरे उतर गये ।।

नारों की सिढ़ीयों को लगाकर चढे थे जो ।

होकर उन्ही की चोट से चेहरे उतर गये ।।"[422]

भारत में चुनाव के दिन आम आदमी भ्रष्ट बन जाता है । चंद फायदे के लिए वह अपना वोट राजनेता को देता है । जुग्गी झोपडीयों में रहने वाला गरीब शराब और चंद रूपये के लिए अपना ईमान बेचता है । यह उसकी मजबूरी है । राजनेता सामाजिक, धार्मिक वातावरण बिगाडने का काम करता है । "जब धर्म में राजनीति और राजनीति में धर्म घुस चुका हो तब सत्ता में वर्चस्व रखने वालों की आर्थिक, राजनीतिक महत्त्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए

सांप्रदायिकता एक उपयोगी अस्त्र बन जाता हे ।"[423] अपने स्वार्थ के लिए धर्म, जाति, संप्रदाय और प्रान्तवाद के नाम पर दंगे भडकाने का प्रयास करते है । देश की एकात्मकता को बाधा पहुँचाने का प्रयत्न करते है । चुनावी प्रणाली के दौरान राजनेताओं के विद्रुपताओं और दुष्कर्मों पर व्यंग्य करते हुए कुँअर बेचैन कहते है–

"कुछ अपरिचय और कुछ पहचान के मारे गये ।
जिंदगी हम यूँ तेरे अरमान में मारे गये ।।
बेव्जह ही आँधियों पर कत्ल का इल्जाम है ।
ये दिये तो आग के तुफान में मारे गये ।।
सोचिये वो क्या है, कुछ मजबूरियाँ जिनके लिये ।
धर्म या ईमान तक इन्सान में मारे गये ।"[424]

चुनाव में राजनेता नए–नए प्रयोग कर रहे हैं । अनेक प्रकार से मतदाताओं को आकृष्ठ करने के लिए तरकीब ढूँढ निकालते है । चुनावी घोषणा पत्र जनता के सामने पेश किया जाता है । कुँअर बेचैन कहते है–

"देखकर सूरत, नज़र पहचानकर बातें करो ।
जिंदगी को अपनी किस्मत मानकर बाते करो ।
है अगर यह चाह सिर पर छाँव ठहरी ही रहे ।
अपने सिर पर अपनी छतरी तानकर बाते करो ।।"[425]

राजनेता को मालूम है कि आमजन के मन में क्या है ? इस दृष्टि से वह अपने चुनाव की नीतियाँ बनाता है । जनता की माँग के अनुसार, उसकी सेवा के लिए क्या–क्या प्रयोजन करना है, यह सब पहले ही तय किया जाता है । समाचार पत्र और दूरदर्शन पर जनता के कल्याण के विज्ञापन प्रसारित किए जाते है । डॉ.कुँअर बेचैन इन सारी खोखली और मिथ्था बातों से परिचित है । नेता अक्सर चुनाव के बाद आदतन यह सब कुछ भूल जाते है और अपने स्वार्थ सिद्धी के काम में व्यस्त होते है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है–

"फूल को खार बनाने पर तुली है दुनिया ।
सब को बीमार बनाने पर तुली है दुनिया ।।

मैं महकती हुई मिट्टी हूँ किसी आँगन की ।

मुझको दीवार बनाने पर तुली है दुनिया

हमने लोहे को गलाकर जो खिलौने ढाले ।

उनको हथियार बनाने पर तुली है दुनिया ।।''[426]

भारतीय राजनेताओं ने स्वार्थ हेतू अनेक घोटाले किए है । राजनेता जनता के लिए जो आवश्यक है वह नहीं कर रहा है जिसमें पैसे हडपने को मिलते है उसी योजनाओं को अविलंब कार्यान्वित करता है । राजनेता आधा–अधूरा काम करता है, पर उस काम के बडे–बडे विज्ञापन देता है । बाढ की चपेट में आने वाले घरों की और पीडीत परिवार की स्थिति का वर्णन डॉ. कुँअर बेचैन ग़ज़ल में करते है –

''दिलो में जहन में इक–इक नजर में पानी है

हुई वो बारिशें पूरे ही घर में पानी है ।''[427]

राजनेता जो भी सरकारी योजनाएँ बनाता है । वह आम जनता के लिए होती ही नहीं है । इन योजनाओं का लाभ कम होता है परंतु उससे समस्याएँ ज्यादा उत्पन्न होती है । भ्रष्ट नेताओं की भ्रष्ट नीति पर कुँअर बेचैन ने सवाल खडे किए है –

''न जाने कैसी निजामत है, हुक्मरानों की

कुएँ तो सुखे पडे है, 'गटर' में पानी है ।''[428]

राजनेता अपने स्वार्थ के लिए, चुनाव में जीत प्राप्त करने की दृष्टि से झूठ का सहारा लेता है । कितना भी बडा झूठ क्यूँ न हो राजनेता अपना काम चलता है और लोगों को ठगाता रहता है । कुँअर बेचैन कहते है –

'कुँअर' अब इससे बड़ा झूठा और क्या होगा;

पड़ा है गाँव में सूखा खबर में पानी है ।[429]

आज के दौर में गरीब सिर्फ सपना देखता है । गरीबों के लिए अनेक योजनाएँ बनाई जाती है । योजनाओं के लिए बजट भी पारित होता है । असल में उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता यह बड़ी विसंगती है । उनके देखे हुए सपने धूल में मिल जाते है । ''हमारे देश की संसद व्यर्थ की बैठको में अधिक व्यस्त रहती है । सांसद अपने मतदाताओं का दुःख–दर्द उनकी

समस्याएँ जानने के लिए उनके बीच कभी नहीं जाते ।"[430] योजनाओं का पैसा स्वार्थी नेता के तिजोरी में चला जाता है । गरीबों के लिए योजनाओं के दरवाजे बंद है –

"दिन के ढलते ही हुए बंद सभी दरवाजे

अब किसे शाम सुहानी का पता चलता है ।"[431]

आज जीवन बदल रहा है । मानव जीवन छल, कपट, बेईमानी झूठ फरेब से भरा हुआ है । मनुष्य अंदर से कुछ और बाहर से कुछ है । जबान पर मधुर बोल है लेकिन दिल में छल कपट की जलन है । हम किसी के मुश्किलों में काम आते है पर वह अपना काम बनते ही मुँह फेर लेता है । जो सहानुभूति देता है, मदत करता है, हमदर्दी रखता है उसके साथ ही छल कपट किया जा रहा है । राजनेता का साथ जनता ही देती है । चुनाव में राजनेता की जीत आमजन के सहयोग से ही होती है । लेकिन राजनेता अपने स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण जनता को जल्दी ही भूल जाता है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"जिसे तू प्यार देगा, देख लेना

तुझे उससे ही कोई छल मिलेगा ।"[432]

आज के राजनेता का गरीबों की और ध्यान ही नहीं । गरीबों का सिर्फ चुनाव में ही इस्तेमाल किया जाता है । कोई भी नेता गरीब की समस्याओं का निवारण नहीं करता है । "संसद भी इन राजनीतिज्ञों के व्यक्तिगत स्वार्थ का केंद्र बन चुकी है । सामान्य व्यक्ति की समस्याओं को दूर करने की दृष्टि से कोई भी पक्ष दिल से रूचि नहीं लेता है , चाहे वह सत्तारूढ़ पक्ष हो या विपक्ष । किन्तु जहाँ राजनीतिक स्वार्थ की बात होती है वहाँ पक्ष और विपक्ष दोनों सजग हो जाते है ।"[433] गरीब के पास भिखारी को देने के लिए कुछ भी नहीं है । गरीब की आँखो में आँसू है । आज गरीब और फकीर में कुछ अंतर ही नहीं रहा है । दोनों की स्थिति एक जैसी हो गई है, सिर्फ गरीब के हाथ में कटोरा नहीं है । फकीरों की तरह गरीबों की जिंदगी भी खराब है । कुँअर बेचैन राजनेताओं से सवाल करते है कि जो भी सरकारी लोककल्याण की योजनाएँ है, वह गरीब तक क्यूँ नहीं पहुँचती ? डॉ. कुँअर बेचैन ने गरीब की समस्याओं का कारण स्वार्थी राजनेता है यही स्वीकार किया है । कुँअर बेचैन लिखते है–

"करो हमको न शर्मिंदा बढो आगे कहीं बाबा
हमारे पास आँसू के सिवा कुछ भी नहीं बाबा
कटोरा ही नहीं है हाथ में बस इतना अन्तर हैं
मगर बैठे जहाँ हो तुम खडे हम भी वही बाबा
तुम्हारी ही तरह हम भी रहे है आज तक प्यासे
न जाने दूध की नदियाँ किधर होकर वहीं बाबा
सफाई था, सचाई थी पसीने की कमाई थी
हमारे पास ऐसी ही कई कमियाँ रहीं बाबा ।"[434]

डॉ. कुँअर बेचैन ने आज के नौजवानों की आत्मीय पीडा को भी अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया है । आज की राजनीति और राजनेता की उदासिनता के कारण शिक्षित बेरोजगार युवा दर–दर की ठोकरे खा रहे है । बरबादी और लाचारी में उसे हर दिन गुजरना पड रहा है । रोजगार के हेतु आवेदन तो भेजता है, परंतु लाखों युवकों को निराशा ही मिलती है । नौजवान हाथ को काम मिलेगा इस आशा में पेट पीठ पर ढोते हुए शाम तक खाली पेट लड़ता रहता है । डॉ. कुँअर बेचैन ने नवयुवकों की समस्या का उद्घाटन ग़ज़ल के माध्यम से किया है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है–

"अब तो पूरा जिस्म ही कुछ इस तरह बीमार है ।
पीठ खुद बोझा हुई है पेट पल्लेदार है ।।
साँस की मजदूरी ने दबकर न मर जाये कही ।
जिस तरफ भी देखता हूँ रेत की दीवार है ।।
फिर न जाने क्यों मुझे लगने लगा जैसे कि अब ।
अपनी अर्थी को उठाना पर्व है त्यौहार है ।।"[435]

राजनेता अपने स्वार्थ में अंधे हुए है नवयुवकों की अनेक समस्याओं से वे अनजान है । आम आदमी अपनी जिंदगी में पग–पग पर संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है । वह रोजी–रोटी के लिए दिन–रात मेहनत करता है । इतना कुछ करने के बावजूद भी उसके बुरे दिन खत्म नहीं होते है । आर्थिक विषमता और आम आदमी की संवेदना को कुँअर बेचैन ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करते है । शहर में मजदूर जो रोजी रोटी कमाने आ रहा है, शहर के

नेताओं ने उसका भी वोट की राजनीति के लिए फायदा उठाया है । मजदूर और गरीब को अपमानित किया जाता है । कुँअर बेचैन कहते है –

"छा गया सोच सन्नाटा शहर में ।
क्यों पसीने को गया डाँटा शहर में ।।
सैकडों आँखे अभी तक जागती है ।
सो रहा है एक खर्राटा शहर में
पीस रहा है; बीच का तबका शहर में ।
लोग कहते पिस रहा आटा शहर में ।।"[436]

राजनीतिज्ञों की स्वार्थी प्रवृत्तिं के कारण बुद्धिजीवी वर्ग भी त्रस्त हो रहा है । आज की स्थिति में शिक्षा के साथ–साथ घर की जिम्मेदारी युवकों के कंधे पर आ रही है । उम्र बढने से नोकरी से हाथ धो बैठता है । सारे सपने बिखर जाते है । शिक्षा के प्रति तथा राजनीतिक व्यवस्था से युवाओं को घृणा होने लगती है । शिक्षित युवक नौकरी के लिए दफ्तर के चक्कर काँटता है । लेकिन नौकरी कोई उम्मीद नहीं रही है । कुँअर बेचैन कहते है–

"यह मत पूछों नाम में मेरे अब कैसी जागीर है ।
मुझपर तो केवल गर्दन है, लोगों पर शमशीरे है ।।
दुनियाँ की तो बात न करिये, समझी है ना समझेगी ।
लेकिन तुम तो समझों यारों, हम टूटी तस्वीर है ।।
जब जब भी मैने सोचा है, मुठ्ठी में आ जाती है ।
खुली हथेली पर जो मेरी अनगिन भाग्य लकीर है ।।
मिट्टी ; पानी, आग, हवा, ये नील गगन के सन्नाटे ।
सब ही मुझसे पूछ रहे है, हम किसकी तहरीरे है ।।"[437]

डॉ.कुँअर बेचैन ने बेरोजगारी का समस्या की उजागर किया है । आखीर में युवा कहता है कि उसके हाथों की लकीरों में शायद नौकरी ही नहीं है । इस प्रकार ग़ज़ल में भाव की अभिव्यक्ति हुई है जो अत्यन्त निराशावादी है ।

4.5.5 राजनीतिक धोखेबाजी– –

आज राजनीतिज्ञ खुलेआम देश में झूठ और फरेब कर के आम जनता का शोषण कर रहे है । वर्तमान समय में राजनीति निकम्मेपण की हद पर उतर आई है । बेईमानी राजनीति की पहचान बनी है । राजनेताओं के तौरतरिकों से मनुष्य त्रस्त है । अपने स्वार्थ के लिए राजनेता झूठ–फरेब का सहारा लेकर देश को लूट रहा है । सम्पूर्ण राजनीतिक वातावरण दूषित हो गया है । जिन राजनेताओं पर समाज ने अपना समझा, भरोसा किया था । वे ही धोखेबाज और गद्दार हो गए है । ये राजनेता नकाबपोश है ; इन राजनेताओं की वृत्ति दोहरी होती है । ये दोगली नीति का प्रयोग करते है, चुनाव के वक्त अपने घोषणापत्र को प्रस्तुत करते है, बडे़–बडे. वादे करते है, जनता को आकृष्ट करते है । चुनाव में जीत प्राप्त करते ही अपने किए हुए वादों से मुखर जाते है । जनता के साथ धोखेबाजी करते है । यह स्पष्ट है कि राजनेता आम जनता का भला कभी नहीं कर सकते । राजनेता कभी किसी के आदर्श नहीं बन सकते । स्वांतत्र्यपूर्व काल में आदर्शवादी नेता थे । सच्चाई के मार्ग पर चलकर ईमानदारी से काम करते थे । परंतु आज का नेता अपनी खुशी के लिए दुसरों के खुशी को नष्ट करते है । धोखेबाजी करने वाले इस राजनीतिक स्थिति का वर्णन कुँअर बेचैन ने अपने ग़ज़लों के माध्यम से किया है ।

‘‘काव्य में भी राजनैतिक चेतना कई रूपों में व्यक्त होती है । कहीं राजनैतिक अभिप्रायों को स्पष्ट करने के लिए सांश्लिष्टता लाई जाती है और जन–जन की पीड़ा के माध्यम से ही पीड़ा के कारणों को जान कर राजनीतिक आशय समझा जा सकता है । कही भोलेपन और कलात्मक संयम के साथ गैर राजनीतिक ढंग से लिखी गई कविता में शासन की करतूतों को उद्घाटित किया जाता है । कहीं नाटीकायता के माध्यम से राजनीति को उद्घटित किया जाता है । कहीं राजनीति पाखंड और अत्याचार को सामान्य मनुष्य के जीवन के किसी ठोस और अमानवीय प्रसंग में मुर्त किया जाता है ।’’[438]

राजनीतिक का व्यापक और उदार रूप होना चाहिए । राजनीति का उपयोग समस्त लोककल्याण के लिए होना जरूरी है । समाज में आदर्शवत नेताओं ने राजनीति में सक्रीय होना आवश्यक है । परंतु स्वातंत्र्योत्तर काल में भ्रष्ट राजनीति भ्रष्ट नेताओं ने प्रचलन शुरू हुआ है ।

ग़ज़ल समिक्षक डॉ.मधु.खराटे जी ने वर्तमान कालिन राजनीतिक वातावरण पर अपने विचार प्रस्तुत किए है –"1960 ई. के बाद देश में मोहभंग की स्थितियाँ निर्मित हुई है । आजादी से पूर्व जो स्वप्न देखे गए थे; वे साकार नहीं हो सके है । परिणामत: हताशा और निराशा का वातावरण चारों तरफ फैल गया है । आरंभ में जो कुछ नैतिकता राजनीति में थी, बाद में वह लुप्त हो गई, देश की राजनीति का आदर्श और नैतिकता से कोई संबंध नहीं रहा । उतरोत्तर राजनीतिक वातावरण दूषित होता चला गया । राजनीति किसी महान उद्‌देश प्राप्ती का साधन न रहकर साध्य बन गई ।"[439] आज के राजनीतिज्ञ ऐसे सेवाभाव का दिखावा करते है कि वे सच्चे जनता जनार्दन के सेवक है । जनता उनके भाषणों से, मिठी वाणी से फँसकर उन्हे ही अपना नेता मानती है । बाद में मालूम होता है कि ये बडे धोखेबाज है । वे जनता को लुभा रहे है, ठगा रहे है । राजनेता खुद को जनता का सेवक मानते है, देशभक्त मानते है लेकिन सबसे बडे लूटेरे है । सत्ता पर असिन होते ही जनता को दर किनार करते है । कुँअर बेचैन कहते है–

"वो इतनी होशियारी से वफा का स्वाँग भरते हैं
कि उनकी बेवफाई देखने में ही नहीं आती ।
निकलकर दिल से करती थी जो एक–इक लफ्ज को रोशन
इधर वो रौशनाई देखने में ही नहीं आती ।"[440]

आज का राजनीतिक माहौल बडा ही कठिण और बुद्धिजीवी के समझ से परे है । आज राजनीति धार्मिकता और आर्थिकता के साथ जुड गई है । राजनीति का व्यापारीकरण हुआ है । लोकतंत्र की भैंस या गाय थोडा दूध तो देती है परन्तु यह दूध सिर्फ दिखाने के लिए होता है । सच्चाई यह है कि गाय दूध नहीं देती सींग मारती है । आज की राजनीतिक व्यवस्था पर यह तमाचा है । प्रजातंत्र के नाम पर जनता के साथ धोखा है । "राजनेता आम आदमी का शोषण करते रहते है । उनकी सारी बाते खोखली होती है । समाज की सेवा का ढोंग करते रहते है । पर्दो पर साँप की तरह बैठे हुए वे दंश करते है । त्याग की अपेक्षा वे भोग में विश्वास करते है । अपनी करतूतों को छिपाने में वे बडे. माहिर है ।"[441] आज की राजनीतिक व्यवस्था में सेवा कम धोखेबाजी ज्यादा है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है–

"सींग देखे नहीं व्यवस्था के

आपने सिर्फ उसके थन देखे ।"[442]

राजनीतिक संस्कृति इस तरह बन गई है कि यह हमारे सामने विनय प्रदर्शित करती है । आज राजनेता ने विनय और नमन का उपयोग राजनीति के लिए किया है । जनता के सामने हाथ जोडकर, नमस्कार करके सब को अपने वश में करते है । इनका नमस्कार का शस्त्र जनता पर वार करता है वह भी धोखे से पीठ पर । राजनेता की नम्रता में नाटकीयता है उसका उद्देश्य राजनीतिक लाभ उठाना है । इस प्रकार राजनेता दिल में धोखे छिपाए फिरते है –

"दिल में धोखे छुपाए फिरते है

हमने ऐसे कई नमन देखे ।"[443]

वर्तमान युग में राजनीतिक स्तर इतना गिर गया है कि लोग जैसे रोज कपडा बदलते है वैसे ही राजनेता अपना दल बदलते है । जो लोग प्रमुख थे वो ही अपने को बदलने लगे है । इस प्रकार की धोखेबाजी को कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल में अभिव्यक्त किया है –

"इस बदलते हुए दौर को देखकर

लोग बातें पुरानी बदलने लगे

ऐ महाराज, यह क्या हुआ आपको ?

आप भी राजधानी बदलने लगे ।"[444]

राजनेता साफ सुथरे, सफेद कपडे पहन कर जनता के सामने साफ चारित्र का होने का ढोंग करते है । इन की हर बात का मतलब अलग –अलग होता है । राजनेता मन के सच्चे नहीं बिल्कूल धोखेबाज होते है यह राजनेता । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

" दिल में अक्सर उनके ही कालिख बहुत देखी गई,

लोग वो, जो दिखने में साफ–सुथरे है ।"[445]

प्रत्येक युग का इतिहास समस्या और संघर्ष का रहा है । समाज समस्याओं से मुक्त नहीं हो रहा है । वर्तमान काल में भारतीय समाज में जीवन मूल्यों का ऱ्हास हुआ है । एक ऐसा युग था तब समाज में आदर्श की पुजा होती थी । मानवता का धर्म निभाया जाता था ।

लेकिन जैसे–जैसे मानव प्रगती करने लगा वैसे–वैसे मानवता क पतन होने लगा है । आज राजनीतिक क्षेत्र मे स्वार्थ और धोखे की राजनीति खेली जा रही है –

“हर सडक पे हो रह इंसानियत का कत्ल
पुरे शहर में फिर भी कोई सनसनी नहीं ।”[446]

आज भारत में राजनीतिक व्यवस्था ने समाज को सुख कम और दुःख ज्यादा दिया है । सहारा देने, मदत करने का सिर्फ नाटक होता है । जो जीवनावश्यक है वह नहीं मिल रहा है । इसलिए मनुष्य का जीवन दुःखों से भरा पूरा है । हर बार दुःखों का पहाड आमजन पर टूट पडता है । राजनीतिज्ञ सिर्फ सेवा भाव का प्रदर्शन करते है । राजनेताओं पर से विश्वास टूट गया है । अब आमजन के जीवन में खुशी नहीं आ सकती है । राजनेता हर समय धोखा ही देते रहेंगे । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

“सुलगती धूप में सर पर तेरा आँचल मिला मुझको
ऐ साकी ! मैं बहुत प्यास हूँ थोडा जल पिला मुझको
कोई भी गम अगर चाहे तो मुझमें आ के मिल जाए
जमाना अब तो कहता है ‘गमों का काफ़िला मुझको
में खुशियों की कली हूँ मेरी खुशबू भी कही बिखरे
ऐ मेरी जिंदगी आ, अपने होठों से खिला मुझको
खुशी आना भी चाहे तो ‘कुँअर’ अब आ नहीं सकती
न जाने दे दिया किसने दुखों का ये किला मुझको ।”[447]

आज राजनेताओं को अपने स्वार्थ के सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देता । शहर–शहर और गाँव–माँव भूखमरी बढ गई है । खेत खलिहान से बहुत सारा अनाज आता है । वह कहा चला जाता है । सब कुछ धोखा ही है । “देश में राजनीति के नाम जो खेल दिखाई दे रहा है देश में उनसे आंतकित है । राजनीति के नाम पर देश की इज्ज़त, खुशहाली और यहाँ तक की मानवता से खिलवाड हो रहा है ।”[448] डॉ. कुँअर बेचैन ने अनाज के गायब होने पर सवाल करते है ।

"हमारे गाँव के खलिहान हम से पूछते हैं यह

है इतना अन्न लेकिन हर तरफ यहा भूखमरी ही क्यों ।"[449]

आम आदमी कुछ आशाओं के साथ शहर में आता है । शहर में आकर फिर भी अपने लिए घर नहीं बना सकता । शहर में आकर कुछ न मिलने पर वह दु:खी है । मेहनत का फल उसे नहीं मिलता है । राजनेता आम आदमी का उसका इस्तेमाल करता है । वह आम आदमी के मजुबरी का फायदा उठाता है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

"हमारा दिल तो नाजूक फूल था सबने मसल डाला

जमाना कह रहा है दिल को हम पत्थर बना लेते

हम इतनी करके मेहनत शहर में फूटपाथ पर सोये

ये मेहनत गाँव में करते तो अपना घर बना लेते ।"[450]

सामान्य जन राजनेताओं को सत्ता तक पहुँचाने का काम करते है । राजनेताओं से उम्मीद रहती है कि वह उनके जीवन में सूख लाएगा । चुनाव में जीत हासिल होने के बाद नेता आम आदमी को भूल जाता है । आम आदमी के बदौलत वह कुर्सी प्राप्त करता है । आम आदमी को राजनेता धोखा देता है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है—

"जिन पतंगो को उडाने में खुशी मुझको मिली

काटता है उँगलियों को उनका ही धागा बहुत

मैं अँगोछे-सा सभी के काम आया हूँ मगर

सबने ही दुख की अलगनी पर मुझे टाँगा बहुत ।"[451]

हम जहाँ विश्वास करते है वही हमारा विश्वासघात हो जाए तो मनुष्य के जीवन में दु:ख का अंधकार रहेगा । दिन–ब–दिन मनुष्य अनेकानेक समस्याओं से घेरा जा रहा है । राजनेता लाल फिताशाही के हाथ में हाथ मिलाकर जनता के साथ धोखा कर रहे है । देश को दोनों हाथों से लूट रहे है । आम आदमी का शोषण कर रहे है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

"घर सुखो का दुःख के आवास से पहले न था ।

यह ठहाका अश्रु के आभास से पहले न था ।।

हर जगह विश्वास के ही बाद में धोखे मिले ।

कोई भी धोखा किसी विश्वास से पहले न था ।।

तुम जिसे आवाज देते फिर रहे हो ए 'कुँअर' ।

राम का यहा राज्य भी वनवास से पहले न था ।।''[452]

ग़ज़लकार डॉ.कुँअर बेचैन राजनीति पर व्यंग्य करते हुए कहते है कि रियासत का महल बहुत बडा होकर भी उसकी छत की ऊँचाई बहुत कम है । छते बहुत ही नीचले स्तर पर है । और ऐसे महल के अंदर छोटे कद का ही इन्सान रह सकता है । ऊँचे कद वाले इंसान को परेशानियों का झेलना पडेगा । यह महल ऊँचे कद वाले के लिए नहीं है । ऊँचे कद वाले याने प्रामाणिक, अच्छे लोग । अच्छे लोग इस महल में चलते है तो उन्हें चोटें खाने पडती है । इस राजनीति रूपी महल में जो लोग धोखेबाज है वही रह सकते है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है–

''हम सियासत के महल की इस कदर नीची छते

मैं उठा ही था कि उनसे जाके मेरा सर लगा ।''[453]

आज राजनीति में विद्रुपताएँ बढ रही है । राजनीति में आम इन्सान का कोई स्थान नहीं । आम आदमी राजनीति से दूर रहना बेहत्तर समझता है । राजनेता सफेद, साफसुथरे खद्दर के कपडे पहनते है । लेकिन वे सफेद कपडे में छीपे चोर है । डॉ.कुँअर बेचैन ने ऐसे नकाबपोश नेताओं को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है । राजनेता सफेद कपडे पहनकर हमेशा लोगों को धोखा देते है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है—

''सफेद धब्बे सा वो भी उजली सफेदियों में छिपा रहेगा

यह सोचकर ही सफेद कपडो में हर लुटेरा है रोशनी में ।''[454]

वर्तमान युग में राजनीति व्यापार बन गई है । राजनेता हर बार लोगों के सामने नए–नए हथकण्डे अपनता है । जनसामान्य हर बार धोखा खाते है । राजनेता हर बार वही झूठी बाते करके लोगों को धोखा देता है । नेता जनता की नस पहचानता है, वह सिर्फ धोखा देने के लिए । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

''बदलता था वो अपने रूप इतने

नजर हर बार धोखा खा रही थी ।''[455]

राजनीति के अनेक रूप है । राजनेता चुनाव जीतने के लिए एडी–चोटी एक करता है । चुनाव में किसी की हार और किसी की जीत होती है । कुछ लोगों को कम–अधिक मात्रा में वोट प्राप्त होते है । कुछ राजनेता बहुत कम वोटों से जीतते है । तो कुछ राजनेता बहुत कम वोट से हारते है । इस राजनीति में जीत का बहुत महत्व है । राजनीति की यह स्थिति देखकर डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

"क्यों न जानेमात बहुमत को मिली इस गाँव में

और कुछ को शह मिली है अल्पमत रखते हुए ।"[456]

राजनेता जनता के वोट पर चुनाव जीतता है । परिणामत: उसकी जनता के प्रति जिम्मेदारी बढ़ती है । परंतु भारत में राजनेता चुनाव जीतकर आते है और घोडे बेचकर सोते है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है कि सोचा था कि राजनेताओं के मदत से देश का विकास की ओर अग्रसर होगा परंतु जनता का मोहभंग हुआ है । राजनेताओं की विशेषता यह होती है कि मतदाताओं को अपने मधुर एवं आकर्षक घोषणा; वायदे आदि के द्‌वारा मोहित करते है । उन्हें भाविष्य के सुनहरे सपने दिखाते है । और मतदाता भी उनके भुलावे में आकर उन्हें अपना सच्चा रहनुमा मान लेता है ।"[457] देश के वर्तमान राजनेता ने जनता के साथ बार–बार धोखा किया है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

"थी जिनके पास सबको जगाने कि बागडोर

वे खुद हि किसी नींद का दफ्तर बने रहे ।"[458]

देशवासियों ने सपने देखे थे कि आजादी के बाद देश में उन्नति होगी । सब मिल–जुल कर सुख से रहेंगे । लोगों की समस्याओं का निवारण करने वाले राजनेता होंगे । परंतु राजसत्ता के सोने के सिंहासन पर बैठने वाले राजनेता धोखेबाज निकले । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"दरवाजे पर, नाम लिखा था सोने के सिंहासन का

लेकिन अन्दर जाकर देखा, मिले लुटेरे कमरे में ।"[459]

जो लोग आजादी के लिए शहीद हुए, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जेल जाना पड़ा स्वतंत्रता के संग्राम में जो सहभागी हुए थे वे राजसत्ता दूर हो गए जो लोग तमाशबीन थे, स्वतंत्रता

आंदोलन से दूर थे वही लोग सत्ता स्थान पर कब्जा कर बैठे है । वे ही राजनेता देश के साथ धोखा कर रहे है । गाँव आज टूटते जा रहे है और इन गाँवो में पीने का पानी की भी सुविधा नहीं है । बीमारी का इलाज करवाने के लिए शहर दौडना पड़ता है । प्राथमिक सुविधाओं का भी जहाँ अभाव हो वहाँ अन्य विशेष सुविधाएँ देने की बात एक प्रकार का छल है और यह छद्‌म हमारे राजनीतिज्ञ आज तक चलाते आए है ।''[460] देश के करोडों लोगों को धोखा देकर सत्ता प्राप्त करना उनका लक्ष्य है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने लिखा है—

''बोया न कुछ भी फस्ल ढूँढते है लोग
कैसा मजाक चल रहा है क्यारियों के साथ ।''[461]

आजादी के बाद देश ने जो कुछ भोगा है, जो राजनीति से धोखा खाया है, उसे कुँअर बेचैन ने बडे मार्मिक रूप में अपनी ग़ज़लो में चित्रित किया है । ग़ज़लकार ने गाँव की राजनीति से लेकर राष्ट्रीय राजनीति पर अपना मत ग़ज़लो के माध्यम से प्रदर्शित किया है । डॉ. कुँअर बेचैन राजनीति की विद्रुपता और दोगलेपन को चित्रित करते है । इन ग़ज़लो के द्‌वारा जनता को सचेत करने का काम ग़ज़लकार ने किया है । ग़ज़लकार कुँअर बेचैन जी राजनीति में परिवर्तन की आशा करते है । आज के दौर में राजनीति की दशा विचित्र सी है । सत्ता परिवर्तन में सिर्फ किरायेदार बदलता है राजनीति अपने स्थान पर कायम है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है—

''इतने तीर तनाव हवेली में
घायल है हर भाव हवेली में
सिर्फ किरायेदार बदलते हैं
और न कुछ बदलाव हवेली में ।''[462]

सरकार की योजनाएँ संसद में पास होती है । इन विविध योजनाओं का लाभ सामान्य जन को नहीं मिलता है । राजनेता हर समय जनता के साथ धोखा करते है । योजनाएँ बनती है परंतु योजनाओं का पैसा कहाँ जाता है ? यह अपने आप में बडा सवाल है । गरीब उन योजनाओं की आस लेकर बैठता है जैसे कि नदी किनारे कोई वृक्ष पानी के लिए तरसता है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है–

"पूछा है कई बार किनारे के शजर ने

क्यों तट पै कभी घूमने आता नहीं पानी ।"[463]

राजनीति में राजनेताओं की आपसी मिलिभगत है । विपक्ष और सत्ता पर असीन राजनेता दोनों मिलकर जनता को धोखा देकर लूट रहे है । जो भी गठरियाँ है वह ठग लोगों के बीच खुलती है । राजनेताओं की दृष्टप्रवृत्ति के कारण आज का राजनीतिक वातावरण खराब हुआ है । आम इन्सान इस गठरों से दूर है राजनेता आपस में इस गठरी को बाँट कर खाते है । गठरी लुटने वाले ठग और कोई नहीं है राजनेता है । कुँअर बेचैन लिखते है –

"आज के माहौल का खूँखार चेहरा देखकर

गठरियाँ खुलने लगी खुद ही ठगों के बीच में ।"[464]

वर्तमान युग में राजनेता भ्रष्टाचार करके भी किसी भी व्यवस्था के पकड में नहीं आते । राजनेता कोई भी सबूत पीछे छोडता नहीं है । जैसे कि कोई कातिल खून का एक भी निशान छोडता नहीं है । चरित्र कलंकित होते हुए भी राजनेता सज्जन तथा आदर्श नेता का नकाब पहनकर समाज में घुमते है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है कि समाज से धोखेबाजी–करने वाला समाज में ही अपना स्थान साम भेद दंड की नीति अपना कर बनाता है –

"कातिल पकड में आए भी तो आए किस तरह

छोडा न कत्ल का कोई दिल पर निशान तक ।"[465]

सत्ता धोखे से प्राप्त करने वाले जनता को सुनते ही नहीं । वह सिर्फ जनता को भाषण देते है । जनता की पीडा, दुःख – दर्द को सुनने वाला और समझने वाला कोई राजनेता नहीं है । आमजन की समस्याओं को जानबूझकर अनदेखा करता है । जनता के आक्रोश का नेता पर बेअसर दिखाई देता है । सत्ता की नशे में राजनेता मस्त है परंतु जनता त्रस्त है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है–

"कभी सुनता नहीं खुलकर जो मेरे दिल की बातों को

अभी भी सामने उसके फरियाद जारी है ।"[466]

कुँअर बेचैन ने हर घर–परिवार की आशाएँ कैसी निराशा में तबदील हो गई है इस मोहभंग की स्थिति का चित्रण अपनी ग़ज़ल के माध्यम से किया है । राजनीति हीन स्तर पर

गिर गई है, इस बात का बिल्कुल एहसास ही नहीं है । जो गरीब आजादी के फल के लिए तरसते थे आज तक कोई राजनेता उनके हिस्से की आजादी नहीं दे पाया है । सब कुछ होते हुए भी सब कुछ न होने के बराबर है । समाज को सुख साधनों से दूर है । ‘‘जनसेवा के नाम पर जनता से मतदान माँगन`वाला नेतृत्व अपनी मनमानी करता रहा । बिजली, पानी, सडके, कृषि–विकास आदि के वायदे मात्र प्रलोभन सिद्ध हुए । स्वावलंबी जनता की अपेक्षा उनमें परावलंबन, असाहयता निराशा दिखने लगी । जिस नेतृत्व पर विश्वास कर जनता निश्चिंत रही, उसी आधारवृक्ष में बेकारी, भूखमरी, गरीबी, भ्रष्टाचार धूप पीडा देने लगी ।’’[467] आम आदमी को योजनाओं का लाभ मिल सकता है परंतु राजनेता की देने की इच्छा शक्ति ही नहीं है । कुँअर बेचैन कहते है–

‘‘यो ठंडी हवा घर में मेरे आई नहीं है
पछवा है इधर झूमती पुरवाई नहीं है
मैं भीड में रहकर भी अकेला सा रहा हूँ
यह किसने कहा भीड़ में तन्हाई नहीं है
यह सुबह भी कैसी है कि इन्साँ के बदन में
जागे हुए एहसास की अँगडाई नहीं है
जो प्यास के होठों पे बरस जाए घुमडकर
लगता है अभी ऐसी घटा छाई नहीं है
हर एक शजर दर्द के काँटो से भरा है ।
अब आम के बागों मे भी अमराई नहीं है ।’’[468]

राजनीति के माध्यम से आर्थिक सुधार आता है । राजनीति सकारात्मक रहेगी तो देश का उत्थान होगा ही । राजनेता के भ्रष्ट नीति और धोखेबाजी से देश में तीव्र गति से विकास होना चाहिए था नहीं हो पा रहा है । गाँव में आम आदमी अभाव में जीने के लिए मजबूर है उसके दु:खो का सिलसिला कम होता नज़र नहीं आ रहा है । कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़लों के माध्यम से कहते है–

‘‘जिंदगी यूँ भी जली, यूँ भी जली मीलों तक
चाँदनी और चार कदम, धूप चली मीलों तक

प्यार का गाँव अजब गाँव है जिसमें अक्सर

खत्म होती ही नहीं दुख की गली मीलों तक ।''[469]

आज के समय राजनेताओं ने नकाब पहने हुए है । आम आदमी अच्छे और बुरे की पहचान ही नहीं कर सकता है । वह हर बार चुनाव में जिस नेता को जिता कर संसद में भेजा देता है वह फिर मुडकर कर देखता ही नहीं । ''चुनाव के दिनों में नेता लोग सडकों पर बडे–बडे नारे लगाते है । किन्तु ये सभी नारे अस्थिर बन गए है । चुनाव के दौरान लगाए जाने वाले नारे केवल 'चुनाव नारे' बनकर रह जाते है ।''[470] आम आदमी हर चुनाव में हर दल से धोखा ही खाता है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है—

''अच्छे–बुरे की हो भी तो पहचान किस तरह

चेहरे सभी के आज नकाबों के साथ हैं ।''[471]

आजकल हर जगह, हर वक्त धोखाधड़ी चल रही है । लोग मुट्ठी में दाने लेकर कबूतरों को फँसाने की कोशिश करते है । राजनीतिज्ञ का जब तक लोगों में अपना अस्तित्व नहीं होता है तब तक वह नए–नए–पैंतरे अपनाता है । लोगों को खुश रखने की कोशिश करता है । लोगों के साथ प्यार से पेश आता है । राजनेता अपना मिलनसार व्यक्तित्व बनाता है । लोगों को अपने जाल में फँसाने के लिए तरकीबे ढूँढ निकालता है । लोगों की हर समस्या पर नाटकियता से बात करता है । सत्ता प्राप्त करते ही नम्रता से, प्यार से रहनेवाला नेता जनता पर रोब जमाने लगता है । सत्ता की नशा उसके रोम–रोम में दिखाई देने लगती है । वह जनता को धोखा देकर सत्ता के सुख का उपभोग करता है । धीरे–धीरे आम आदमी राजनेता की इस प्रवृत्ति को अच्छी तरह से पहचाने लगा है । कुँअर बेचैन राजनेता से सवाल करते है कि जनता को धोखे में रखकर अपने जाल में कब तक फँसाता रहेगा? कुँअर बेचैन जी लिखते है–

''महक कलियों में खुशबू फूल के प्यालों में कितनी है

कोई समझे कि काँटो की चुभन डालों में कितनी है

मेरी मंजिल तो सबने देख ली पर यह नहीं देखा

जलन पाँवों के इन फूटे हुए छालों में कितनी है

शिकारी, तू मुझे फाँसने का फैसला कर ले

जरा मैं भी तो देखूँ जिद तेरे जालो में कितनी है ।"[472]

दुःख–दर्द में दीन की मदत करना, समस्याओं का निवारण करना ही मानवता है । परंतु 'मानवता' अब किताब का शब्द रह गया है । आज कोई भी एक दूसरे की मद्द नहीं करना चाहता है । राजनेता वादे करते है, मुसीबत में साथ देने का वचन देते है पर अनुभव यह है कि राजनेता धोखा देते है । सत्ता पर अधिकार जमाते ही जनता का साथ छोड देते है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है –

"दुखों में को किसका साथ देता है कि नदियाँ भी
सुलगती गमियों में साथ तट का छोड जाती है
किसी बालक से पूछा क्यों खडे. हो तट पे तो बोला
यहाँ लहरे कभी सिक्का गिलट का छोड़ जाती है ।"[473]

निष्कर्ष –

'राजनीतिक बोध' कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का महत्वपूर्ण विषय है । हम देखते है कि स्वार्थी और भ्रष्ट राजनीति के कारण देश कमजोर हो रहा है । देश को बाहर से कम अंदर से ही खतरा बड़ रहा है । राजनीति के कारण जो संघर्ष पैदा हो रहा है । देश का वातावरण बिगड गया है । हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार तथा घुसखोरी बढ रही है । इसमें आम आदमी का ही शोषण होता है । षडयंत्र, वादों को भूलना, मोहभंग, संसद, वोटर, धोखेबाजी, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, शोषण इन सारी बातों का चित्रण कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों कें माध्यम से किया है । धनवान लोग ही देश का माहौल खराब कर रहे है । चुनाव में तोड–फोड की राजनीति हो रही है । कोई भी नेता जब चाहे अपना दल बदल रहा है । राजनेता को गिरगिट की उपाधी दी गई है । वे रंग बदलने के मामले में गिरगिट को भी पीछे छोड देंगे । साहित्य समाज का दर्पण होता है । इस दर्पण में राजनीति का चेहरा भी उभरकर आता है ।

डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से राजनीति के हर पहलू की मार्मिकता से उद्घाटित किया है । आज की राजनीति में ईमानदारी नष्ट हो गई है । आज के समय में राजनीति में धोखेबाजी, फरेब, सत्ता लोलूपता, प्रदर्शन, अवसरवादिता का बोलबाला बढ़ रहा है । लोग झूठ की राजनीति और स्वार्थी राजनेता को समझ रहे है । ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल के

माध्यम से राजनीतिक परिस्थितीयों की कटूतापूर्ण सच्चाई समाज के सामने प्रस्तुत की है । डॉ. कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल के माध्यम से राजनीति का पर्दाफाश किया है । जब राजनीतिज्ञ अपने आदर्शों से हटते गए तब ग़ज़लकारों ने उनको सही रास्ते पर लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है । राजनेता कौन–कौन से हथकण्डे अपनाता है उसे उजागर करते हुए पोलखोल दी है । समाज में जागृति पैदा करने काम डॉ. कुँअर बेचैन ने किया है । डॉ. कुँअर बेचैन ने ग़ज़लों के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

डॉ. कुँअर बेचैन ने वर्तमान समय की राजनीति का सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण किया है । उन्होंने ग़ज़लों के द्वारा राजनीतिक भ्रष्ट व्यवस्था पर प्रहार किया है । राजनीति की विकृति और विद्रुपताओं को बडे ही मार्मिकता के साथ उद्घाटित किया है । बेचैन जी ने आम आदमी की पीडा तथा उसकी परेशानियों को ग़ज़ल के द्वारा सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया है । बेचैन जी आमजन को हमेशा राजनेता से सचेत रहने का उपदेश करते है । राजनेता आम आदमी के कमजोरी और मजबूरी का फायदा उठाते है इसलिए लोगों ने जागरूक रहकर राजनेता के मनसूबों को समझना चाहिए । आज की राजनीति के अन्तर्गत राजनेताओं की सही तस्वीर समाज के सामने लाने में डॉ. कुँअर बेचैन सफल हुए है । इनकी ग़ज़लों में विषम परिस्थियों से लड़ने की ताकत है । इनके ग़ज़लों मे सकारात्मक दृष्टिकोण है । साथ यहाँ की शासन व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह का स्वर मुखरित हुआ है ।

‘कोई आवाज देता है’ से ‘नाव बनता हुआ कागज’ आदि सभी ग़ज़ल संग्रहो में वैयक्तिकता के साथ सामाजिकता का स्वर प्रभावशाली रुप से उमडकर आया है । ग़ज़लों में राजनैतिक विसंगतीयों के साथ आनेवाली विकृतियों को उद्घाटित किया है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से स्वार्थी तथा भ्रष्ट राजनीति, झूठे वादे, धोखेबाजी, राजनीतिक शोषण को समाज के सामने उद्घाटित करके सामाजिक परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है ।

4.5.6 अन्यान्य बोध

ग़ज़ल विधा का पूरा संबंध प्रबल अभिव्यक्ति से है । डॉ.कुँअर बेचैन की प्रमुख विशेषता यही है कि उन्होंने आर्थिक पतन को बड़े व्यापक स्तर पर स्पष्ट किया है । डॉ कुँअर बेचैन ने अपने समय की आर्थिक विषमता को अनिी गजलों के माध्यम से दर्शाने का सफल

प्रयास किया है अर्थप्रधान समाज में धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है । ऐसे विषम स्थिति को अपने ग़ज़ल में अग्रणी स्थान रखने वाले डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में सशक्त रूप से प्रकाश डाला है । यहाँ डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़ल साहित्य में आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक एवं नैतिक बोध का सिलसिलेवार अध्ययन करेंगे ।

4.5.6.1 आर्थिक बोध –

आम आदमी की आर्थिक विपन्नता की स्थिति उसके समय तक ही मर्यादित नहीं रहती है । वह उसके पुरखों को भी अपने चपेट में ले लेती है । जिसे सुख और आनंद मिलना चाहिए उसे गरीबी, अभावग्रस्त पीडा के कारण अपमानित जीवन यापन करते हुए अपना पेट पालना पडता है । इस गरीबी का वर्णन डॉ.कुँअर बेचैन जी ने ग़ज़ल के माध्यम से किया है । डॉ.कुँअर बेचैन आमजन की दीनता और मजबुरी को विशद करते हुए जीवन की सचाई को उजागर करने की चेष्टा करते है । ग़ज़ल के कुछ शेर दृष्टव्य है –

"मत पूछिये कि कैसे सफर काट रहे है
हर साँस एक सजा है, मगर काट रहे है
खामोश आसमान के साये में बार–बार
हम अपनी तमन्नाओं के सर काट रहे है ।
आधी हमारी–जीभ तो दाँतों ने काट ली
बाकी बची को मौन अधर काट रहे है ।"[474]

वर्तमान युग में मकान बनाना साधारण बात नहीं रही है । किसी को भी घर बनाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है । अपने स्वंय के घर का ख्वाब लेकर काम की तलाश में अपने गाँव से दूर चला जाता है । दिन–रात खुन पसीना बहाकर पैसे कमाने लगता है । डॉ.कुँअर बेचैन का एक शेर दृष्टव्य है –

"घर के ही लोग समझे नहीं ये जरा सी बात
क्यों घर के वास्ते मैं रहा घर से दूर–दूर ।"[475]

आर्थिक नीति राजनेता तथा पूँजिपतियों के हाथ में है । मजदूर तथा आम आदमी को रोजमर्रा की समस्याओं से उबरना मुश्किल हो रहा है । देशवासियों की आर्थिक स्थिति के लिए भ्रष्ट नेता जिम्मेदार है । राजनेताओं ने त्याग और समर्पण के बदले निजी स्वार्थ को महत्त्व देने

से गरीब की स्थिति द्यनीय बन गई है । राजनेता न सर्वजन सुखाय तथा सर्वजनहिताय की नीति छोडकर 'स्वांत: सुखाय' के मार्ग पर अग्रसर है । आम आदमी की जिंदगी अभावों में और शोषण में बीत जाती है । डॉ.कुँअर बेचैन ने इस यथार्थ को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करते है–

"जहाँ इन्सान की औकात से दौलत बडी होगी
महल तन कर खडे होंगे, झुकी हर झोपडी होगी ।"[476]

आर्थिक विषमता से हालात ऐसे भी बन चुके है कि अमीर आराम की जिंदगी जीने वालों को नींद की गोली लेनी पडती है । मजदूर तथा गरीब दिन भर परिश्रम करने से थक कर तूरंत आराम से सो जाता है । बाकी दूसरों के लिए अनेक भौतिक सुख–सुविधाएँ होते हुए भी नींद के लिए रात भर परेशान है । गहरी नींद उसे मिलती है जो प्रामाणिकता से जिंदगी में कष्ट करता है । डॉ.कुँअर बेचैन इस भाव को व्यक्त करते है–

"तुम्हारा क्या तूम अपनी नींद के ये गोलियाँ खाओ
है गहरी नींद क्या, यह तो थका–हारा बताता है ।"[477]

आर्थिक प्रगति के बडे–बडे दावे करती है । देश में अनेक योजनाएँ बनाने का काम शासन दरबार में होता है । परंतु जिनके वास्ते योजनाएँ बनाई जाती है उसका लाभ निर्धन, गरीब–दीन आमजन तक नहीं पहुँच पाता । पूँजीपतियों, मंत्रियों एवं अफसरों के मिलीभगत से गरीबों के विकास के लिए आबंटित योजनाओं का धन गायब करके अपने जेब में ही डालते है । डॉ.कुँअर बेचैन ने 'रामफल' को आम आदमी का प्रतीक मानकर उसकी वास्तविक स्थिति विशद की है –

"आर्थिक बतायें हम क्या–क्या है, रामफल
आँसू के गाँव मुखियाँ है, रामफल
बेबस–से एक गरीब का रूपिया है, रामफल
जिसके दबा के सो रहे है , सर बडे–बडे
महलों के खानदान का तकिया है रामफल ।"[478]

आज देश की आर्थिक स्थिति खराब बनती जा रही है हर व्यक्ति आज बिकता हुआ नजर आर हा है । हर तरफ भ्रष्टाचार फैलता हुआ दिखाई देता है । चंद पैसों के लिए मनुष्य कुछ भी करने के लिए तैय्यार है लेकिन कुछ सज्ज्न ईमानदार भी लोग होते है जो कि धन को नजर अंदाज करके राजनैतिक नेताओं द्वारा बिकते नहीं है । भले ही वे आर्थिक विपन्नता जीवन यापन कर रहे हो–

"तूने थैली सामने रख दी है क्या कुछ सोचकर

मैं नहीं बिक पाऊँगा, तू अपनी दीनारे हटा ।"[479]

आज का आम आदमी जीवन से संघर्ष करते–करते थक गया है । उसकी स्थिति दिन–ब–दिन बद–से–बदत्तर बनती जा रही है । उसे जन्म से ही जीवन की अनेक कठिनाईयों से सामना करना पडता है । समाज में अनेक कठिनाईयों से सामना करना पडता है । समाज में अनेक विषम परिस्थितियाँ है इनमें से आम आदमी को गुजरना पडता है । उसमें बेचैनी बढती है बिना शिकायत करके सब कुछ चुपचाप सहन करता है । जिंदा रहने के लिए उसे तालमेल बना के चलना पडता हे यह आमजन की मजबूरी है । डॉ.कुँअर बेचैन इस परिस्थितियों को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करते है–

"वो घर में अकेले जो कहीं चीख रहा है

इस दौर में जीने का हुनर सीख रहा है

दुनिया है, कोई चाह हो, हद से न गुजरना

हर चाह का अंजाम यहाँ भीख माँग रहा है

इन्सान मिटा पाायेगा किस तरह अँधरो

इन्सान तो खुद जुलम की तारीख रहा है ।"[480]

संसद में राजनेता मौन धारण कर बैठता है । सर्वहारा वर्ग की समस्याओं को लेकर संसद में आवाज उठानी चाहिए परंतु सांसद संसद में पहुँचकर स्वार्थ की राजनीति करके खुद पूँजीपति जैसा व्यवहार करने लगता है । अपने गाँव की समस्याओं को, असुविधाओं को भुलकर अपनी भलाई और अपनी कुर्सी को सम्भालने लगता है । हमारे देश में गिने–चुने लोगों के हाथ में देश की संपत्ति है । कुछ लोग गरीबों की समस्या, पीडा देखकर समाजवद और समता की बाते करने लगते है ऐसे स्वार्थांध लोगो के विरोध में डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है –

"सोचा था लायेंगे दिल का करार दिन
पर हमकों हमेशा मिलें अश्कवार दिन
सीने से और पीठ से सुबहो कभी तो शाम
निकले है घर में सिर्फ राख और शाम का धुँआ
लौटा है करके रोशनी का इन्तजार दिन ।"[481]

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़ल के माध्यम से बेरोजगारी की समस्या को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । आज उच्च शिक्षा की तालीम ले रहे युवाओ के सामने भविष्य में अधंकार नजर आ रहा है । वर्तमान समय में बडी भारी मात्रा में बेरोजगारी की समस्या उभरकर सामने आ रही है । इसलिए आमजन आर्थिक विवंचना बढ़ रही है । डॉ. कुँअर बेचैन ने इसी वास्तविकता का बयान ग़ज़ल में किया है –

"लाये है, अपने साथ में जो इश्तहार दिन
उन सबके शीर्षक है, घरों से फरार दिन
सोच था साथ लायेंगे दिल का करार दिन
पर हम को हमेशा ही मिले अश्कवार दिन
वेतन की शक्ल में जो मिले खर्च हो गये
अब रह गये है, पैसा जो वे है उधार दिन
सुरज ने खुद ही बेंच दी है भौर की किरण
बैठे हुये है, ओढ़कर अब अंधकार दिन ।"[482]

डॉ. कुँअर बेचैन जी के ग़ज़लों में आर्थिक स्थिति का जो उद्‌घाटन हुआ है उससे स्पष्ट होता है कि डॉ. कुँअर बेचैन ने भारतीय समाज की आर्थिक विषमतााओं पर अपना चिंतन प्रस्तुत किया है । भारतीय समाज विषमताओं में बँटा हुआ है । एक और आर्थिक संपन्नता में, सुख–विलास में रहने वाले चंद लोग है और दुसरी ओर अपनी जरूरी चीजे जुटा न पाने के कारण दम तोडने वाले आम लोग, जो रोटी–कपडा–मकान भी आज के समय में भी एक ख्वाब ही है । डॉ.कुँअर बेचैन ने भी अपने जीवन आर्थिक संकटो से मुकाबला किया है; अनेक यातनाएँ भोगी है इसलिए उन्होने सर्वहार वर्ग के प्रति सहानुभूति दर्शाते हुए समाज की आर्थिक दशा का वर्णन किया है ।

4.5.6.2 सांस्कृतिक एवं नैतिक बोध –

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में सांस्कृतिक और नैतिक बोध की मार्मिक और मौलिक अभिव्यक्ति हुई है । भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने नैतिकता का हमेशा समर्थन किया है । अमानवीयता को भारतीय संस्कृति में कोई स्थान नहीं है । नैतिकता की राह पर चलकर जीवन को नीतिमान बना सकते है । लेकिन आज के समय में दिन–ब–दिन नैतिक मूल्यों का पतन शुरू हुआ है । पहले व्यक्ति की पहचान उसके आदर्श और चरित्र से की जाती थी । प्रज्ञा, शिल, करूणा मानव के आवश्यक गुण है परंतु आज परिस्थिति अत्यंत विरोधी चल रही है । सच पर झूठ, प्रामाणिकता की जगह अप्रामाणिकता ने ली है । चारों तरफ बेईमानी झूठ–फरेब का बोलबोला है ।

संस्कृति शब्द का अर्थ है–परिमार्जन की क्रिया डॉ.नगेन्द्र का मत है– ‘‘यदि हम कहना चाहे तो कह सकते है कि सामाजिक जीवन की आंतरिक मूल प्रवृत्तियों का सम्मिलीत रूप है । ‘संस्कृति’ इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य को जीवन के अन्त स्थल में प्रवेश करना पडता है स्थूल आवरण के पीछे सूक्ष्म का जो सत्य, शिव और सुन्दरम् रूप छिपा हुआ है ‘संस्कृति’ उसी को पहचानने का प्रयत्न करती है ।’’[483] इस कथन से स्पष्ट होता है कि मानव को संस्कारित करने वाला भाव संस्कृति है । संस्कृति का तात्पर्य मानव की व्यापक और प्रवृत्तियाँ से सम्बन्धित है । जिस के अंतर्गत प्रज्ञा, सत्य, अंहिसा, शिल, करूणा, प्रेम, त्याग, भाईचारा, सयंम क्षमा, लोक–कल्याण की भावना, परोपकार, साधन आदि भारतीय विशेषताओं का उल्लेख होता है ।

वर्तमान समय में संस्कृति के आदर्शो में परिवर्तन आ रहा है जीवन की विसंगतियाँ बढ रही है । समाज में सत्य की जगह झूठ–फरेब ने ली है । जो प्रामाणिकता से जीवन के पथ पर चलता है उसको अपमानित किया जा रहा है । लोग बेईमानी करके भौतिक सुख–साधनों को जुटा रहे है । झुठ का प्रभाव बढ़ रहा है । सच बोलने वालों पर कोई विश्वास नही करता है । डॉ. कुँअर बेचैन ने इस बिग़ड़ती स्थिति को स्पष्ट करते हुए लिखा है –

‘हमने समझा था, उसे क्या वो मगर क्या निकला
भीड़ मेंभी उक्षे देखा तो वो तनहा निकला
मैनें क्या सोच के मुस्कान को अपना माना

जब भी देखा तो, मेरा अस्क ही अपना निकला
जिसने की है, मेरी जुँबा काटने की गुस्ताखी
वो जुवाँ के ही बहुत पास का हिस्सा निकला ।
लोग क्या क्या न तेरे बारे में सोचेंगे 'कुँअर'
एक सिक्का भी अगर जेब मे खोटा निकला ।"[484]

इस प्रकार समाज में ऐसा वातावरण निर्माण हो गया है कि हर तरफ झूठ. दिखाई देता है । सच बोलने वालों को झूठा साबित किया जा रहा है । डॉ. कुँअर बेचैन ने प्रतीकों के जरिए से सम्बन्धों को न टूटने की सलाह देते है । अपने प्रियजनों को साथ रखने में ही कल्याण है । अपनों की सेवा में जीवन की सार्थकता होती है । डॉ. कुँअर बेचैन जी का शेर दृष्टव्य है –

"देख, पलडों में अभी बैठे हुए माता–पिता,
हे श्रवण । निज कंध से संबंध की काँवर न फेंक।"[485]

मनुष्य धन लाभ के लिए धर्म और ईमान बेचने की कोशिश कर रहा है । अपनी इस स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण मनुष्य के नैतिकता आदर्श का ऱ्हास दिखाई देता है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने इस स्थिति को ग़जल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है –

"प्यार पूजा घर था पहले अब तो बस बाजार है ।
जिसको देखो वो ही बिकने के लिये तैयार है
हम थके इस कदर बैठे के उठे ही नहीं
लोग कहते रह गये गिरती हुई दीवार है ।
जिंदगी जिसकी अंधरों की तिजारत में कटी
कैसे कह दे वो उजालों का सही हकदार है ।
मैने पूछा तो बहुत उत्तर न दे पाया कोई ।
आदमी बीमार है, या जहनियत बीमार है ।"[486]

मानव के गिरते नैतिकता के कारण सामाजिक वातावरण विकृत होता नजर आ रहा है । डॉ. कुँअर बेचैन ने सामाजिक जीवन मे व्याप्त बुराईयों पर व्यंग्य किया है । मानवी मूल्यों का विघटन, आर्थिक विषमता के साथ अपसंस्कृति का असर समाज मन पर हो रहा है उसे अपनी गज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है ।

निष्कर्षता यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय की अपसंस्कृति, मानवी मूल्यों का विघटन यह समाज की समस्या बन गई है । इस बात से वे दुःखी है । डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपनी गजलों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक जीवन मूल्यों मे जो बदलाव आया है उसका व्यापक रूप से विशद किया है ।

4.5.6.3 पर्यावरण तथा वृक्ष संवर्धन बोध –

भूमंडलीकरण के कारण समूचे देश में शान्ति के नाम पर युद्ध लड़ा गया । स्वतंत्रता के नाम पर शोषण हुआ । विकास के नाम पर विनाश हुआ । आज के समय में प्रगति के नाम विनाश मतलब भौतिक वस्तुओं को निर्माण करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का ऱ्हास किया जा रहा है । आधुनिक तथा वैज्ञानिक युग में प्राकृतिक संसाधनो का बड़े पैमाने पर नाश किया गया जो आधुनिक मानव की अत्याधिक महत्त्वाकांक्षा और लोभ का परिणाम है । इस प्राकृतिक विनाश में पेड़–पौधों को काटना, उससे भौतिक सुविधाओं मे इजाफा करने वाले वस्तुएँ तथा बहुपयोगी साधनों का निर्माण करना इस वास्ते वृक्षों की कटाई के बुरे परिणाम मानव जीवन पर दिखाई दे रहे है । 'प्रकृति मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगी लेकिन लालच की नहीं' गांधी जी के इस विचार से स्पष्ट होता है कि कुछ. लाभ के लिए, भौतिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का विनाश किया जाए तो गंभीर परिणाम भुगतने पडेंगे आज की यह स्थिति है कि वातावरण में कार्बनडाय ऑक्साईड फैल रहा है । कारण स्पष्ट है कि वन–उपवन नष्ट हो रहे है । इस बात को लेकर 'लोकमत समाचार' की रिपोर्ट हमारा ध्यान आकर्षित करती है । रिपोर्ट के अनुसार "दुनिया के विकसित और विकसनशील देश जिस तरह से धरती के प्राकृतिक संसाधनो का दोहन करके अपने लिए ऐशोआराम की सुविधाएँ जुटा रहे है, उससे वायुमंडल में कार्बनडाय ऑक्साईड और मिथेन की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ गई है । इसका सबसे ज्यादा खामियाजा दुनिया की गरीब आबादी को झेलना पड़ रहा है ।"[487] डॉ. कुँअर बेचैन जी कहते है, आज की स्थिति यह है कि वृक्ष लगाने वाले और उसको सम्भालने वाले आज दिखाई नही दे रहे है, आज तो अत्याधुनिक साधन लेकर पेड़ को काटने वालें की तादात बढ़ गई है । डॉ. कुँअर बेचैन इस स्थिति को गज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करते है –

"सर्ख फूलों को 'कुँअर' देखते रहे तो तुम

अब जरा सूखते पत्तों की पसलियाँ देखो ।"[488]

वृक्ष संवर्धन का महत्त्व पर्यावरण शास्त्रीयों ने विशद किया है । वैज्ञानिकों के अनुसार जमीन 33 % जंगल होना अत्यावश्यक है परंतु सचाई यह है कि हमारे देश में 10 % जंगल बचे हुए है वह धीरे–धीरे नष्ट होने का धोखा है । यह स्पष्ट है कि पेड़ो की संख्या कम हो रही है जो मानव सभ्यता के लिए बुरी खबर है । आज का मनुष्य प्रकृति के उपकार को भूल गया है, प्रकृति के प्रति कृतज्ञ हुआ है । जीस पेड़ से शितल छाया मिलती है, जो पेड़ सुमधुर फल देते है, सुवासिक फूल देते है उसे काटक़र अपने निजी लाभ के लिए बाजार में बेच देता है । हर मनुष्य का कर्तव्य बन पड़ता है कि वह पेड़–पौधों का संवर्धन करे जिससे जंगल पर निर्भर जंगल के प्राणियों का अस्तित्व बने रहे । आज सीमेंट कॉंक्रिट के बड़ी–बड़ी इमारतो निर्माण हो रही है, बड़े–बड़े फैक्टरी तैय्यार हो रही है उसके लिए बड़ पैमाने पर जंगल की कटाई हो रही हैं । मनुष्य के मन में बुराईयों के जंगल ने जगह ली है । डॉ.कुँअर बेचैन इस प्रवृत्ति पर चर्चा करते हुए कहते है –

"आज के इंसान ने भी ये कैसे–कैसे काम किए,

काट दिए बाहर के जंगल मन में जंगल भेज दिए ।"[489]

इस प्रकार डॉ.कुँअर बेचैन ने पर्यावरण के महत्त्व को विशद करते हुए जंगल के महत्त्व को उज़ागर किया है । मानवी जीवन प्रकृति पर निर्भर है । प्रकृति का संरक्षण और संवर्धन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है ।

4.5.6.4 धार्मिक बोध –

हिंदी ग़ज़ल में धार्मिक बोध का व्यापक रूप से वर्णन हुआ है । डॉ.कुँअर बेचैन ने भी धर्म के विविध पहलुओं को उद्‌घाटीत करते हुए अपनी ग़ज़लों के माध्यम से धार्मिक रूढ़िवादिता पर व्यंग्य किया है । धर्म मानव के विकास में सहाय्यक सिद्‌ध हुआ है । धर्म के पथ पर अग्रसर होनेवाला कोई भी व्यक्ति हो उसे शारीरिक, मानसिक बल प्राप्त होता है । मनुष्य का आत्मिक विकास होता है । हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्‌ध आदि धर्म का तात्पर्य नहीं है । जो व्यक्ति उच्चतम गुणों को धारण करता है उस धारण करने की श्रेष्ठ प्रवृत्ति धर्म है । धर्म

का दृष्टिकोण सकारात्मक व्यापक और उदार रहा है ।

वर्तमान युग में धार्मिक उन्माद, धार्मिक कट्टरता बढ़ रही है । मानव मानव न रहकर वह धर्म की पहचान बना हुआ है । साम्प्रदायिकता का जहर फैल रहा है । मानवता की जगह दानवी प्रवृत्ति ले रही है । भारतीय संस्कृति और सभ्यता का आधारभूत तत्व धर्म ही है । भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व.डॉ.राधाकृष्णन ने धर्म के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा है – "धर्म का उद्देश्य यह है कि सभी मनुष्य के शरीर, बुद्धि, मन और उनकी संकल्प शक्ति का विकास हो । ईश्वर का ध्यान करने से, मन में अच्छे भाव पैदा करने से और आत्म सयंमन करने से, मनुष्यों के स्वास्थ, व्यक्तिमत्व का विकास होता है । वे चाहे किसी भी धर्म के मानने वाले हो, उनमें एक सच्ची एकता होती है । जैसे वे सब एक ही परिवार के सदस्य है । बुनियादी तौर पर दुनिया के सभी धर्म एक जैसे है ।"[490]

धर्म का रूप उदार एवं उदात्त होता है । नकारात्मकता, संकुचितता, संकीर्णता को धर्म में कोई स्थान नही होता है । धर्म सब मानवी और प्राणी जगत के लिए समान है । धर्म में सब समान होते है उसमें किसी भी प्रकार का भेद नहीं है ।

आज मनुष्य संप्रदाय के नाम पर, जाति तथा वर्ण के नाम पर, धर्म के नाम पर एक दूसरे से अलग हो रहा है । इस धार्मिक तथा साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण समाज में संघर्ष का माहौल पैदा हो गया है । साम्प्रदायिक भेद मिटाने में ही देश का हीत है । इसी विचार को लेकर डॉ.कुँअर बेचैन अपने भाव को व्यक्त करते है –

'यह चमन सारे का सारा आजकल खतरे में है
हर तरफ, आग, दुश्मन, आँधियों धीरे चलो ।'[491]

आज मनुष्य धर्म –धर्म में बँट गया है । वर्तमान समय में धार्मिक उन्माद के कारण समाज में खुन–खराबा, दंगा–फसाद हो रहा है । दंगो में हिन्दु और मुस्लिम की मौत नहीं होती है बल्कि इन्सान की मौत होती है । इन्सान ने इन्सानियतपण का धर्म अपनाकर अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए । आपस में प्रेम का रिश्ता तथा विश्वास निर्माण करके भाईचारा स्थापित करना चाहिए । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है –

"तू भले मस्जिद बना मंदीर बना
दिल को लेकिन उससे भी बेहतर बना

खेलने दे सबको अपने रंग में

प्यार को बस प्यार रख, मत डर बना ।"[492]

मानव भगवान को मस्जिद या मंदिर मे खोजने की कोशिश करता है । "मजहब के नाम पर दंगा कराने वाले वे लोग होते है जिन्होंने न तो कोई धर्म ग्रंथ पढा होता है और न कोई धर्म चर्चा सुनी होती है उन्हे तो शायद यह भी पता नहीं होता कि किसी भी धर्म में हिंसा को जायज नहीं काहा गया है किन्तु कुछ लोग अपना स्वार्थ साधने के ल्एिा लोगों को मजहब के नाम पर लडवाने रहते है ऐसे में ये बडे से बडा पाप करने से भै नहीं चूकते ।"[493] भगवान इन तिर्थस्थलों पर भी मिळता है और मन से, श्रद्धा भाव से कहीं भी उसके स्मरण में सर झुकाया वहाँ उसके दर्शन होते है । उसके प्रति मन में गहरी आस्था की आवश्यकता है–

"मन्दिरों या मझ्जिदों की बात मैं करता नहीं

मैंने सूने में भी अपना सर झुकाया तुम मिले ।"[494]

धार्मिक संघर्ष का वजह से हिंदू–मुस्लिम के बीच मजहब की रेखा खिंच दी गई है । परिणामस्वरूप भाईचारे के रिश्तो में संदेह पैदा होता है । अब यह समय की माँग है कि राम और रहीम एक साथ मिलकर साम्प्रदायिकता की दीवार को तोड दे । जब तक दोनों में दिल के रिश्ते मजबूत नहीं होगे, दोनों को एकता के सुत्र में बाँधकर सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहते है । कुछ असामाजिक तत्व भी धर्म का आश्रय लेकर मानवी जीवन के लिए कठिनाईयाँ उत्पन्न कर रहे है । धर्म की गलत व्याख्या करके मनुष्य के दिलो–दिमाख को दूषित करने की कोशिश हो रही है जिससे धार्मिक वातावरण बिगड.रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल में इन विचारों को विशद करते है–

"कितनी खामोशी से हमसे पूँछती है घंटियाँ

देवता, मंदिर वो मंदिर के पुजारी अब कहाँ ।"[495]

धार्मिकता का राजनीतिक लाभ बड़े बड़े राजनेता बडे. चतुराई से करते है । आमजन को धर्म के नाम पर, मंदिर और मस्जिद के नाम पर वोट माँगते है । धर्म के नाम पर वोट की राजनीति करते है । आम जनता की धार्मिक भावना को भडकाने से राजनेताओं को राजनीतिक उपयोग होता है । उन्हे मंदिर और मस्जिद से लेना–देना नहीं है उनका लक्ष्य सत्ता

को प्राप्त करना होता है । डॉ.कुँअर बेचैन राजनेताओं की दोगली नीति का पर्दाफाश करते हुए व्यंग्य करते है –

"कैसे किसी के बारे में सोचे यहाँ कोई
रहता नहीं है, लोगों को अब अपना ध्यान तक
दुनियाँ है ये यहाँ पे अलग सबकी दौड है
मस्जिद तलक है इसकी तो उसकी दुकान तक ।"[496]

डॉ.कुँअर बेचैन समाज को जोडने का काम करते है, उन्हे एकता के सुत्र में बाँधने की कोशिश करते है । डॉ.कुँअर बेचैन के विचार है कि –"इन्सान और इन्सान के बीच दीवारे खड़ी करने वाली राक्षसी ताकते इन्सानियत की दुश्मन है और जो भी ताकते या शक्तियाँ इन्सान और इन्सान के बीच प्यार का सूत्र बाँधने का काम करती है, वे ही इन्सानियत की सच्ची दोस्त है । एक वह दिवाार है, जो आँगन में खड़ी है । वह रोशनी को रोक रही है हवा को रोक रही है । और इसके विपरीत एक कमरे की दीवार है, जो अपने सिर पर धुप, वर्षा, आँधी और अनेक आपत्तियों से बचाकर शरण दे रही है । अतः आँगन की दीवार दुश्मनी का प्रतीक है और कमरे की दीवार दोस्ती का ।"[497] डॉ.कुँअर बेचैन जी अपनी देश की एकता और अखण्डता को कायम रखना चाहते है ।

"तुझको दीवार ही बनना है, तो कमरे की बन
जिसने औरों के लिये सर पे छते रखी ।"[498]

इस देश पर किसी भी प्रकार से संकट बादल न छा जाए । "सभी एक साथ भाईचारे का जीवन जिए और एक दूसरे के प्रति प्रेम हो । लोगो में आपसी भेद और दूरियाँ घटनी चाहिए । ये तभी संभव हो सकता है, जब एक दूसरे से आपसी सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनेंगे । धर्म के नाम पे, जाति के नाम पे जो आपसी कलह समाप्त हो जाएंगे भी से संभव हो सकता है । और देश में राष्ट्रीय एकात्मता व अखंडता निश्चित ही हो सकती है ।"[499]

इसलिए डॉ.कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल में राष्ट्रहीत में अपने विचारों को प्रकट करते है –

"धुआँ उठता रहा, जल्ता रहा दिल का नगर लोगों
भला बचता कहाँ ये मेरे अरमानों का घर लोगों

मिलेगा प्यार, तो वो प्यार से बंध जाएंगे खुद ही
कभी मत बाँधना उड़ती हुई चिड़ियाँ के पर लोगो
जिसे हम प्यार कहते, दुआ है, वह किसी दिल की
कभी होने न देना इस दुआओं को बेअसर लोगो ।"[500]

आज के समय में देश के हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई सब एक है । सभी का खून लाल रंग का है, फिर भी मनुष्य–मनुष्य के में भेद क्यूँ ? हम सब भारतीय है तो हम सब में राष्ट्रनिष्ठा तथा देशप्रेम समान रूप से मौजुद हो । जो भी नफरत की दीवारे पैदा करता है वह देशद्रोही है । जब हम सब में एक दूसरे प्रती अटूट और गहरा विश्वास और प्रेम निर्माण होगा तब कोई भी ताकद हमे एक दूसरे से अलग नहीं कर सकती है । हम एकता और अखण्डता को महत्त्व देकर भाईचारे के सूत्र में बाँध जाए यही भाव डॉ.कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल के माध्यम से व्यक्त करते है –

"रूढ़ियाँ बनकर, कभी बनकर रिवाज आयेगा तू
अपने पंजो में हम लेने, ऐ बाज आयेगा तू
ए मजहब चलकर किसी का कत्ल करने के लिए
आरती करके, कभी पढ़ के नमाज आयेगा तू ।"[501]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लो में धार्मिक बोध की बहुआयामी अभिव्यक्ति हुई है । धार्मिक उन्माद, धार्मिक पाखंड, रूढ़ीवादिता, सांप्रदायिक भेदभाव, इन्सानियतपण आदि धर्म के विविध पहलू का सकारात्मक स्वर मुखरित किया है । डॉ.कुँअर बेचैन विश्वास व्यक्त करते है कि एकता, भाईचारा, प्रेम, सद्भावना, उच्च मानवी मूल्यों के द्वारा मनुष्य –मनुष्य की बीच विश्वास का अटूट रिश्ता स्थापित होकर वह मानवी कल्याण की ओर अग्रसर होगा ।

निष्कर्ष –

डॉ.कुँअर बेचैन जी ने अपनी गज़लो में आर्थिक विषमताओं का व्यापक चित्रण किया है । एक ओर धनवान शोषक वर्ग है जिसके पास सब कुछ है । दूसरों ओर सर्वहारा वर्ग शोषित वर्ग है । जिस का जीवन दरिद्रता भरा है । आर्थिक विपन्नता में जीवन यापन कर रहा है । डॉ.कुँअर बेचैन ने मजदूर वर्ग की स्थिति, श्रम का शोषण, आर्थिक विषमता, रोटी–कपड़ा–

मकान जैसी प्राथमिक आवश्यकताएँ, बढ़ती बेरोजगारी आदि को स्पष्ट रूप से चित्रित करने का प्रयास किया है । आर्थिक विषमताओं के लिए भ्रष्ट राजनेताओं को जिम्मेदार ठहराया है ।

डॉ.कुँअर बेचैन सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों एवं परम्पराओं को सामान्य जन तक पहुँचाने चाहते है । आज आधुनिक युग में मनुष्य यंत्रवत बन गया है । ऐसे भौतिकवादी दौडने वाला व्यक्ति प्रेम, दया, करूणा, त्याग, सेवा, जिम्मेदारी निभाने वाला, आदमियतपण, क्षमा, शांति आदि श्रेष्ठ मूल्यों से दूर जा रहा है । परंतु डॉ.कुँअर बेचैन आशावादी है । वे अपने ग़ज़लों के माध्यम से मानवी मूल्यों को जन–जन में स्थापित करते है । मानव को मानव बनाने की उनकी कोशिश सराहनीय है ।

डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से मनुष्य को पर्यावरण के प्रति जागृत रहने को संदेश देते है । पर्यावरण का संतुलन बिग़डने से पृथ्वी का विनाश हो सकता है । पृथ्वी को बचाने के लिए प्रदूषण मुक्त वातावरण निर्माण करने की आवश्यकता है । वृक्ष संवर्धन और उसका संरक्षण एक मिशन बनना चाहिए । वृक्ष से प्रेम करके समाज में संदेश देना जरूरी है कि पेड़–पौधों से मानवी जीवन सुरक्षित और पोषित है । प्रकृति हमें सब कुछ देती है उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए । डॉ.कुँअर बेचैन ने पर्यावरण के प्रति जागृती करने का सफल प्रयास किया है ।

कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से धर्म के नाम पर होने वाले उन्माद और विकृतियों को उजागर किया है । उन्होंने धर्म से उत्पन्न संकीर्णता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, धर्मांधता, रूढिवादिता आदि पर व्यंग्य करते हुए विरोध किया है । राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थ के लिए धर्म का सहारा लेकर दुरूपयोग कर रहे है । जनता का धर्म के नाम पर गुमराह करते है । साथ ही डॉ.कुँअर बेचैन समाज को संदेश देते है कि इन धार्मिक उन्माद और मतभेदों को कम नहीं किया गया तो देश और समाज के साथ मानवता का नुकसान हो सकता है ।

4.6 कुँअर 'बेचैन' की ग़ज़लो में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के रूप में प्रेम निरूपण

प्रस्तावना–

ग़ज़ल मूलतः प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । प्रेम, सौंदर्य एवं लालित्य का संगम 'ग़ज़ल' है । वर्तमान युग में ग़ज़ल का यही रूप प्रचलित है । 'प्रेम' एक व्यापक और उदार भाव है । जीवन में प्रेम के बिना अपनेपन का एहसास कर पाना कठिण है । बगैरे प्रेम के दुनिया की सुंदरता को समझा नहीं जा सकता । प्रेम व्यक्ति के जीवन का सहारा हो सकता है । प्रेम किसी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है । मनुष्य का अध्यात्मिक विकास प्रेम से ही होता है । जीवन में परमोच्च आनंद की प्राप्ति प्रेम की बिना सम्भव नहीं है । प्रेम में भाषा, धर्म एवं जाति की रूकावटे नहीं होती है । वर्तमान समय में मनुष्य अपने लिए प्रेम की आशा करता है, परंतु दूसरों को प्रदान नहीं करना चाहता । ज्ञान और प्रेम देने से ही निरंतर बढ़ता रहता है । निराशा की हर शुरूआत आशा से की जाती है । जो मनुष्य स्वयं से प्रेम करता है वह दूसरों को प्रेम दे सकता है । प्रेम में समर्पण ही महत्त्वपूर्ण है । जो देना जानता है वह जीवन में हमेशा खुश रहता है । प्रेम वह अनुभूति है जिसे मनुष्य हमेशा अनुभव करना चाहता है और वह अधिक से अधिक अनुभव करता जाता है वैसे मन की मलिनता नष्ट हो जाती है । प्रेमान्तर्गत प्रणय, ज्ञान, प्रेम, सदाचार से प्रेम, राष्ट्र प्रेम आदि सभी प्रकार प्रेम में आ जाते है । काव्य में 'प्रेम शब्द' का प्रचलन दो रूपों में रूढ हो गया है –

1) लौकिक प्रेम

2)अलौकिक प्रेम

4.6.1 ग़ज़ल : प्रेम अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम– –

ग़ज़ल की परिभाषा से स्पष्ट होता है कि ग़ज़ल का मुख्य उद्देश्य 'प्रेम' ही है । लौकिक और अलौकिक प्रेम का एक विषय 'प्रेम' ही है । डॉ.उद्धव महाजन का मानना है कि "प्रेम के पक्ष होते है जितने भी चरण होते है, जितने भी पडाव होते है, सब के सब इस संग्रह में रूपायित हुए है । प्रेम पात्र का रूप हो या सौंदर्य, प्रेमी की मिलनोत्कण्ठा हो या विरहदग्धता । विरह की घडियों में प्रेमपात्र का उपेक्षा भाव हो या उसकी तडपती यादे, प्रिय

पात्र के प्रति निष्ठुरता के प्रति शिकायत हो, या उससे अप्रसन्नता, रूप और प्रेम के बिना जिंदगी में आया हुआ रूखापन हो या यातनाएँ ।''[502] यहाँ ग़ज़ल को भावपक्ष को अंकित करने का प्रयास किया है ।

परंपरागत रूप से प्रेम की अभिव्यक्ति ग़ज़ल की मुख्य आधारशिला है । ग़ज़ल शब्द का शाब्दिक अर्थ ही 'प्रेमिका से वार्तालाप' रहा है । ग़ज़ल के प्रारंभ से ही 'प्रेम'यह मुख्य भाव रहा है । ग़ज़ल के विकास क्रम के वर्ण्य विषयों पर ध्यान देने से पता चलता है कि ग़ज़लो में प्रेम और प्रेम से सम्बन्धित संयोग और वियोग पक्ष को भी मुख्य विषय के रूप में प्रस्तुत किया है । ग़ज़ल के प्रवर्तन का स्त्रोत मुख्य रूप से प्रेमाभिव्यक्ति ही है ।

''पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ, पंडित भया न कोय ।

ढ़ाई आखर प्रेम का, पढे सो पंडित होय ।''[503]

अनेक विद्‌वानों ने प्रेम के स्वरूप को परिभाषित करने का प्रयास किया है । **स्वामी रामतीर्थ** के अनुसार–''सच्चा प्रेम सूर्य की तरह आत्मा के प्रकाश में फैलाता है । प्रेम का अर्थ है, वास्तविक सौंदर्य का दर्शन । यह सत्य है कि जिसने कभी प्रेम नहीं किया उसे ईश्वर की प्राप्ति हो ही नही सकती ।''[504]**आचार्य रामचंद्र शुक्ल** के मतानुसार ''विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होनेवाला लोभ जो साात्विक रूप में प्राप्त होता है, उसे प्रीति या प्रेम कहते है ।''[505]

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ने प्रेम की व्यापकता को ध्यान में रखकर स्पष्ट किया है– ''प्रेम मन की एक कोमल एवं पवित्र भावना है । जिसकी अनुभूति से ही आत्मा का उन्मीलन होता है और आनंद की प्राप्ति होती है । प्रेम ही जीवन का प्राण है, प्राण के अभाव में संसार की समस्त धाराएं सूनी एवं अस्तित्वहीन प्रतीत होती है । जिस प्रकार जल के अभाव में हरी भरी वसुन्धरा मरूभूमि में परिवर्तित हो जाती है । वैसे ही प्रेम बिना शुन्य हृदय पत्थर के समान माना गया है । प्रेम एक माधुर्य उष्मा के समान है, जो हृदय को उष्ण एवं आप्लवित रखती है, और अवर्णनीय तृप्ति प्रदान करती है । प्रेम के अन्तर्गत लेन–देन की भावना नहीं रहती । प्रेम का मंजर तो त्याग की नींव पर खडा रहता है । यह स्थान केवल नायक एवं नायिका के प्रति ही नहीं बल्कि भक्त का भगवान के प्रति, माता का पुत्र के प्रति, देश प्रेमी का मातृभूमि के प्रति भी हो सकता है ।''[506] यहाँ प्रेम के कई आयाम दृष्टिगोचर होते है । काव्य में रस की

अनुभूति हेतु साहित्यकारों ने नायक–नायिका के प्रेम को ही केंद्र में रखकर कथ्य का विषय बनाया है । ग़ज़ल में भी यही परिलक्षित होता है । 'ग़ज़ल और उसका व्याकरण' में **डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल** इस तथ्य को प्रस्तुत किया है –"अब तक की शोध से जो तथ्य सामने आए है , उनसे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में एक अलग काव्यविधा के रूप में ग़ज़ल का प्रचलन नहीं था । तब 'रज़ज (वीर रस की कविताएँ) और 'कसीदे' (राजा – महाराजाओं की प्रशंसा में लिखे जाने वाले महाकाव्य) ही लिखे जाते थे । 'कसीदे' में शायर अपने प्रशंसात्मक शेरों के बीच में एक टुकडा ऐसा भी डाल देता था, जो प्रशंसा के विषय से अलग प्रेम, बसंत बहार, प्रकृति के सौदंर्य शराब या श्रृंगार रस से जुड़े कुछ अन्य विषयों से संबधित होता था । कालांतर में यह टुकड़ा कसीदे से अलग हो गया और ग़ज़ल के नाम से एक अलग विधा के रूप में स्थापित होता चला गया । यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि कसीदे से अलग हुए टुकड़े का नाम ग़ज़ल क्यों पडा? इस प्रश्न के उत्तर में यह कहा जाता है कि ग़ज़ल शब्द का अर्थ है – प्रेमिका से वार्तालाप करना । तो सहज ही यह बात समझ में आ जाती है कि बादशाहों की प्रशंसा में लिखे जाने वाले क़सीदों कें बीच शायर श्रृंगार रस से संम्बन्धित शेरों का जो टुकडा जोड़ता था, वह भी वस्तुतः बादशाहों का मन बहलाने और भावनात्मक स्तर पर उन्हें आनंदित करने के लिए ही होता होगा । कालांतर में जब यह टुकड़ा कसीदे की विधा से अलग हो गया तो इसमें इश्क, आशिकी, शराब और शबाब के अतिरिक्त और भी बहुत से विषय जुडते चले गए ।"[507] इस प्रकार प्रेम की अभिव्यक्ति करना –उर्दु –फारसी' ग़ज़लों का मुख्य विषय रहा है । अक्सर प्रेम शब्द अत्यंत व्यापक और उदार भाव का प्रकटीकरण करता है । ग़ज़ल के अंतर्गत इश्क मजाज़ी (सांसारिक प्रेम) की अभिव्यक्ति हुई है । और इसके साथ–साथ 'इश्क हक़ीक़ी' (अलौकिक प्रेम) को भी प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त किया है । ग़ज़लो में निहीत प्रेम का विवेचन नायिका और नायक के प्रेम के लिए निरूपित किया गया है । यह डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में परिलक्षित होता है । हर एक ग़ज़ल संग्रह मे प्रेम का अनुठा और मधुर वर्णन वर्णनीत किया है । ग़जल का उद्‌भव प्रेम से संबंधित विषयों को अभिव्यक्त करने लिए हुआ है । मतलब आशिक और माशुक की भावनाओं को वाणी देने का प्रयास किया है । ग़ज़ल में कुँअर बेचैन का मानना है कि "ग़ज़ल का भीतरी उद्‌देश्य संसार को उसके सौंदर्य के प्रति उन्मुख करना और उसे प्रेम

की गहराई में उतरना है । इसलिए ग़ज़ल हुस्न और इश्क की कविता रही है । ग़ज़ल का दुरगामी उद्‌देश्य संसार को प्रेम के जल में नहलाना है । ग़ज़ल एक ऐसी विधा है जो प्रेम करना और प्रेम को समझना सिखाती है इसमें प्रेम का संसार और प्रेम संस्कार दोनों भी है ।''[508]

फारसी ग़ज़लो में शुरू में अलौकिक प्रेम का वर्णन था बाद में सामाजिक परिवर्तन के कारण लौकिक प्रेम की ग़ज़ले बडे. पैमाने पर लिखी जाने लगी है । ''प्रेम व्यक्ति मन का सब से कोमल मनोभाव है, और वह निज से अधिक जुड़ा होता है । प्रेम में सर्वाधिक व्यक्तिपरकता परिलक्षित होती है ।''[509] यहाँ प्रेम भाव को रूपायित करने का प्रयास किया है । ग़ज़ल के क्षेत्र में प्रेमतत्व महत्त्वपूर्ण तत्व माना गया है । इस प्रेमतत्व के अनेक आयाम है । प्रेम का स्थायी भाव रति है जो श्रृंगार का ही रूप है । वह प्रेम पर आधारित ग़ज़लो में दृष्टिगोचर होते है ।

डॉ. नगेन्द्र के विचारानुसार –''श्रृंगार का अर्थ है, कामोद्रेक, उसके आगमन अर्थात उत्पत्ति कारण ही श्रृंगार कहलाता है ।''[510] प्रेम ओर श्रृंगार एक ही सिक्के के दो पहलू है । किन्तु प्रेम और यौवन ग़ज़ल के मुख्य आधार है । ग़ज़ल में प्रेम की व्यापकता दिखाई देती है । डॉ. कुँअर बेचैन ने प्रेम के लौकिक और अलौकिक रूप के बारे में कहा है– ''इश्क–ए–मजाजी का सम्बन्ध परमात्मा के प्रति प्यार से है । अक्सर ग़ज़ल प्रेमिका के प्रति प्रेमी का आत्मनिब्वेदन है और उसमें परमात्मा को प्रेमीका और भक्त को प्रेमी माना जाता है । यद्‌यपि हिन्दी कविता में अपनी सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार परमात्मा को प्रेमी एवं आत्मा को प्रेमिका के रूप में प्रदर्शित किया जाता है । किन्तु हिन्दी ग़ज़ल में सूफी काव्य की तरह परमात्मा को प्रेमिका एवं आत्मा को प्रेमी के रूप में वर्णित किया जाता है ।''[511]

अर्थात ग़ज़लो में अधिकतर प्रेमी प्रेमिका अर्थात नायक एवं नायिका के बीच का संवाद होता है । यही सूत्रपात सभी ग़ज़लकारों के ग़ज़लों में परिलक्षित होता है । शुरू में फारसी ग़ज़लों में अलौकिक प्रेम का विवेचन व्यापक था । परिवेश के बदलते रूप को देखकर लौकिक प्रेम का विवेचन बहुत बडी मात्रा में होने लगा है । प्रेम मनुष्य मन का संवेदनशील और कोमल, लुभाने वाला मनोभाव है । प्रेम में निजत्व का महत्त्व असाधारण है । ग़ज़लकारों ने प्रेमी और प्रेमिका के प्यार को अनेक रूपो में नायक और नायिका प्रधान वर्ण्य रेखांकित किया गया है ।

“प्रेम एक शाश्वत सत्य है, एक अकथनीय अनुभूति है । एक असीम सागर है, जिसमें डूबे बिना पार उतरा नहीं जा सकता । प्रेम यह शब्द किसी भी परिभाषा से परे है । वह गूँगे के गुड के स्वाद के समान अकथनीय है जिसे चखने वाला ही जानता है । प्रेम एक ऐसी अनुभूति है, जो देश, काल, जाति, धर्म, आयु आदि सीमाओं से परे है । प्रेम एक ऐसी भावना है, जिसे स्नेह, प्यार, आत्मीयता, लगाव आदि से संबोधित किया जाता है । प्रेम बाँधा नही ं जाता वह तो मुक्ति देता है । जो बाँध दे उसे प्रेम नहीं कहते, प्रेम तो व्यक्तित्व को नए आयाम देता है । प्रेम एक समर्पण भाव है, जो निस्वार्थ रूप से सब को चाहता है, उसकी महिमा अनंत है ।”[512] प्रेम यह व्यापक भाव है जो मनुष्य-मनुष्य के बीच के अंतर को मिटाता है और उन्हे जोड़ता है । प्रेम की विशेषता है कि वह सबको एक सूत्र में बाँधता है । प्रेम जीवन है, मानव की आवश्यकता है । कहते है कि प्रेम की कोई भाषा नही होती । वह हमेशा मौन होती है । प्रेम के विषय में कुछ बोलना है तो दीर्घ भाषण की अपेक्षा संक्षिप्त शब्दों की अभिव्यक्ति प्रभावशाली होती है । प्रेमाभिव्यक्ति के लिए ग़ज़ल एक प्रभावशाली माध्यम है । संक्षिप्तता ग़ज़ल का गुण है । इन विशेषताओं के कारण प्रेमाभिव्यक्ति का एकमात्र सशक्त माध्यम ग़ज़ल ही है ।

हिंदी ग़ज़ल के प्रारंभिक दौर में ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में प्रेम विषयक ग़ज़लों को अधिक मात्रा में स्थान दिया है । हिंदी ग़ज़ल के प्रवर्तक सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार **अमीर खुसरो** के ग़ज़ल में प्रेम की अभिव्यक्ति सुंदरता के साथ हुई है – –

“जब यार देखा नयन भर, दिल की गई चिंता उतर,
ऐसा नहीं कोई अजब, राखे उसे समझाय कर ।
जब आँख से ओझल भया, तडपन लगा मेरा जिया,
हक्का इलाही क्या किया, आँसू चले भर लाय कर ।”[513]

कबीर की ग़ज़ल भी अलौकिक प्रेम को अभिव्यक्त करती है । संत कबीर के ग़ज़ल के शेर –

“हमने इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या?
रहें आनद यों जग से, हमन दुनिया से यारी क्या?
जो बिछुडे है पियारे से, भटकते दर–बदर फिरते,
हमारा यार है हम में, हमन को इंतजारी क्या?

न पल बिछुडे पिया हमसे, न हम बिछुडे पियारे से,

उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या?

'कबीर'इश्क का मारा, दुई को दूर कर दिल से,

जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या?"[514]

कबीर निर्गुणवादी भक्ति के ज्ञानाश्रयी शाखा के महत्त्वपूर्ण कवि थे । उन्होने परमात्मा के प्रति प्रेम अभिव्यक्त किया है । प्रेम में समर्पण का महत्त्व है । प्रेमी सदैव अपनी प्रेमिका के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करता है । इस समर्पण में ही उसे खुशी मिलती है । **बलवीर सिंह** ने यहीं समर्पण का भाव ग़ज़ल में अभिव्यक्त किया है–

"सारा जीवन गँवाया तुम्हारे लिये

तुमको अपना बनाया तुम्हारे लिये ।

चाहे मानो न मानो तुम्हारी खुशी

'रंग' महफिल में आया तुम्हारे लिए ।"[515]

साठोत्तर हिन्दी ग़ज़ल हस्ताक्षर **दुष्यंन्तकुमार** की ग़ज़लो में यत्र–तत्र प्रेम का वर्णन किया है । कवि प्रेमिका के सौन्दर्य को आँखो में समाना चाहता है । सौन्दर्य को छू कर नहीं बल्कि निहारने से ही आनंद प्राप्त होता है । इस आनंद के आस्वादन में मन अतृप्त रहता है –

"तुमको निहारता हूँ सुबह से ऋतम्बरा,

अब शाम हो रहीं है, मगर मन नहीं भरा ।"[516]

छायावादोत्तर युग के कवि हिंदी कवि **हरिकृष्ण** 'प्रेमी' ने ग़ज़ल परंपरा को हिंदी में लाने का सफल प्रयास किया है । उर्दु फारसी ग़ज़लों जैसे ही प्रेम, यौवन, श्रृंगार और मदिरा आदि है –

"सोचता था मैं रहूँगा पीर प्राणों की छुपाकर,

आँसुओ ने पर उमड़कर, कर दिया अभिमान पानी ।

साधना भी थक गई है, प्यार प्रियतम से न पाया;

पर अमर धन वेदना का, दे गया नादान दानी ।"[517]

चंद्रसेन विराट जी ने 'प्रेम' को मुख्य भूमिका में रखकर यह सिद्ध किया कि समाजोन्मुख ग़ज़लों में कितनी ही विकासोन्मुखता क्यों न हो ग़ज़ल का पारंपारिक कथ्य प्रेमभाव कभी कुंठित और अवरूद्ध नहीं हो सका है । विराट जी कहते है –

"आज जब भी समीप होते है,
प्राण जैसे महीप होते हैं ।
चिन्ह चरणों के आपके ही तो
प्रेम पथ के प्रदीप होते है ।"[518]

यहाँ ग़ज़ल के विवेचन द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि ग़ज़ल के उद्गम से वर्तमान युग तक सभी शायरों की तरह हिंदी–ग़ज़ल क्षेत्र में विविध कवियों ने प्रेमाभिव्यक्ति को ग़ज़ल ही माध्यम बनाया है । इन ग़ज़लों में लौकिक प्रेम से लेकर अलौकिक प्रेम का मौलिक रूप से निरूपण हुआ है । प्रेम के संयोग और वियोग के पक्ष को बेहत्तरीन रूप से चित्रित किया है । साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक परिवेश का प्रभाव दिखाई देता है । परंतु प्रेम भाव का भी सुदंरता के साथ निरूपण हुआ है । साठोत्तरी कविता में लौकिक प्रेम को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है । प्रेमी को प्रिय के बगैर जीवन निरस लगता है । प्रिय की मौजुदगी में हृदय को आनंद देने वाली चीजें वियोग की अवस्था में चुभने लगती है । ग़ज़लकार नरेंद्र पांडये की ग़ज़ल – –

"सिंधु हो जाय बादल तुम्हारे बिना,
रात हो जाय पागल तुम्हारे बिना ।
खुशनुमा भोर जैसा तुम्हारा मिलन;
गेह लगता है जंगल तुम्हारे बिना ।
पाँखुरी तोड दी बेरहम वायु ने,
गंध लगती है घायल तुम्हारे बिना ।
मुझको कस्तूरी–सा है तुम्हारा प्रणय,
मन हिरन सा है चंचल तुम्हारे बिना ।
बीत सावन गया है प्रतीक्षा लिए,
किस तरह जी सकें स्वप्न में उम्र भर,
मन न लगता किसी पल तुम्हारे बिना ।"[519]

किसी की याद में आँसू बहना स्वाभाविक है । दिन तो ढल जाता है परंतु जैसे–जैसे शाम होती है यादों का सिलसिला शुरू होता है । शाम के साथ यादे भी और करीब आने लगती है । जिससे गम की मात्रा बढ जाती है । **ओंकार गुलशन** ने अपनी ग़ज़ल में इस भाव को व्यक्त किया है – –

“साँज ढले जब सन्नाटा मेरे घर का मेहमान हुआ,
तेरी यादों का मेरी तनहाई पर अहसान हुआ ।
कैसे कैसे दिन दिखलाए मुझको तेरी चाहत ने,
मैं अपनी बस्ती में अपने लोगों से अनजान हुआ ।”[520]

प्यार का बंधन एक अलग ही बन्धन है । मन सदैव प्यार की कोमल और सुंदर कल्पनाओं में मशगुल रहता है । संयोगावस्था में जो बाते मन को सुख प्रदान करती है, जैसे शूल भी कोमल लगते है । वही वियोगावस्था में सुखकारक चीजे कष्टप्रद लगने लगती है । वियोग में सारी चीजें पीडादायक बन जाती है । संयोग में पत्थर भी मुलायम लगते है । विरह की स्थिति में उदासी का वातावरण छा जाता है । **कुमार अनिल** ने इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति की है –

“प्यार के बंधन तुम्हारे जब से ढीले हो गए
कल्पनाओं के सुनहले पंख नीले हो गए ।
तुम चले तो साथ देने को बहारें चल पड़ी
हम चले तो राह के गुल भी कँटीले हो गए
मीठी नजरों ने तुम्हारी छू लिया जब भी मुझे
कितनी क्वाँरी हसरतों के साथ पीले हो गए ।
बन के मरहम वक्त ने जख्मों को जितना भी भरा
याद के नश्तर भी उतने ही नुकीले हो गए ।
तेरे गीतों में मिला वह दर्द दुनिया को ‘अनिल’
पत्थरों के भी सुना है नैन गीले हो गए ?”[521]

जिज्ञासा में मन जब उस असीम सत्ता प्रति जानने लगता है तब उसके दर्शन के लिए व्याकुल हो जाता है । जीव ब्रम्ह को मिलने के लिए तडपता है । जीवात्मा को एहसास होता है

कि उस परम सत्ता के बिना सब कुछ निरर्थक है । उस परमतत्व की प्राप्ति के लिए जीवात्मा सारे बंधन तोडने के लिए तैयार हो जाता है । इन सभी भावों को **राजमूर्ति सिंह** सौरभ ने अभिव्यक्त किया है । यह अलैकिक प्रेम का निरूपण प्रभावशाली बना है –

"आज फिर व्यग्र है मन तुम्हारे लिए ।
सूना–सूना है जीवन तुम्हारे लिए ।।
अर्चना के लिए चल पड़ी भावना ।
तोडकर सारे बंधन तुम्हारे लिए ।।
तरू, लताएँ, हवाएँ, नदी, चाँदनी ।
भोरसंध्या है, उन्मन तुम्हारे लिए ।।
प्रेम के पंथ पर में अकेला बचा।
हो गयी जग से अनबन तुम्हारे लिए ।।
चुक गया स्नेह जलने लगी वर्तिका ।
ज्योति के आखिरी क्षण तुम्हारे लिए ।।
कर रहा हूँ वरण में स्वयं मृत्यु का ।
जिन्दगी का समपर्ण तुम्हारे लिए ।।"[522]

यहाँ प्रेम की अभिव्यंजना प्रकृति के माध्यम से करने का सफल प्रयास रहा है । जीव परमात्मा से मिलने के लिए आतुर है परंतु दुर्भाग्यवश मिल नहीं पाती । परमात्मा साधना का मार्ग में अत्यंत कठिण है । साधना मार्ग में मोहमाया आकृष्ठ करके बाधा डालती है । माया साधक को अपने में वश करती है । माया साधक को अपने में वश करती है । आत्मा परमात्मा के मार्ग में सब से बडी बाधा अपना शरीर है । यह शरीर माया ही है । शरीर भौतिक सुख साधना में अटका रहता है । जब तक मन माया से मुक्त नहीं होता है तब तक उसे परमात्मा के दर्शन नहीं होते । **जहीर कुरेशी** कहते हैं –

"हम आत्मा से मिलने को व्याकुल रहे, मगर
बाधा बने हुए है ये रिश्ते शरीर के ।"[523]

छायावादी कवियों की तरह हिन्दी ग़ज़लकारों नें परमात्मा के प्रति जिज्ञासा प्रकट की है । परम सत्ता से एकरूप होने का प्रयास किया है । **सरस्वती कुमार** की एक ग़ज़ल ने इन्हीं भावों को व्यक्त किया है –

"कौन, नभ के दीप दमका कर गया
कौन तम का रूप चमका कर गया
मैं उलझ और थक कर सो गया
उलझनों को कौन सुलझा कर गया
कल्पना की कुसुम काया क्लान्त थी
हृदय उपवन कौन महका कर गया
ओ पवन तू ही बता, वह कौन था
जो कि मेरे द्वार तक आ कर गया
कौन किरणों के करों की घात से
लहरियों के तार झनका कर गया ।"[524]

यहाँ अलौकिक प्रेम कि अभिव्यंजना प्रकृति के प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करने का प्रयास हुआ है । प्रेम एवं श्रृंगार को फारसी ग़ज़लकारों ने केन्द्रीय भाव माना था और फारसी के समान सूक्ष्मता साठोत्तरी ग़ज़लो में बहुत ही कम थी । साठोत्तरी ग़ज़ल सामाजिक परिवेश को लेकर आगे बढ़ी । परन्तु कहीं कहीं प्रेम को भी अभिव्यक्त किया है ।

प्रेमाभिव्यक्ति में संयोग और वियोग दोनों अवस्था का मार्मिक चित्रण अपने ग़ज़लों के माध्यम से किया है । हिंदी ग़ज़लकार लौकिक प्रेम के साथ–साथ अलौकिक प्रेम का भी चित्रण करते है । अलौकिक प्रेम में परमसत्ता के प्रति जिज्ञासा का वर्णन, संसार की क्षणभंगुरता, माया का बंधन आदि का मौलिक चित्रण किया है ।

4.6.2 कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में लौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति–

डॉ. कुँअर बेचैन हिन्दी ग़ज़ल परम्परा के एक प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में प्रसिद्ध है । वे सामाजिक, जनवादी ग़ज़लकार है । उन्होंने जीवन के यथार्थ को अपनी ग़ज़लों में प्रमुख स्थान दिया । उसी प्रकार प्रेमभाव को लेकर ग़ज़लों का निर्माण कार्य किया है । प्रेम के विविध आयामों डॉ. कुँअर बेचैन नें अपनी ग़ज़लों में स्थान दिया है । **डॉ.सविता मिश्र** अपना मंतव्य

व्यक्त करते हुए लिखती है– "कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में प्रत्येक शेर ऐसा लगता है जैसे वह उनके हृदय की गहराई से निकला कोई विशिष्ट अनुभव है, आँसुओं के नीर की प्राचीर से टकराता हुआ गंगाजल है, या फिर हदय की उन्नत लपटों से उठा हुआ प्रकाश का स्वर्णकलश है ।"[525] ऐसे अनेक आयाम हमें उनकी ग़ज़लों में परिलक्षित होते है । डॉ.कुँअर बेचैन –की ग़ज़लों में प्रेम के दोनों रूपों एवं पक्षों का विवेचन मिलता है ।

4.6.2.1 लौकिक प्रेम–

'प्रणय' को ही लौकिक प्रेम के रूप मे पहचाना जाता है । शायर ने लौकिक प्रेम को प्रचुर मात्रा में चित्रित किया है । प्रणय भावना सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है । मानवी सभ्यता से लेकर प्राणी जगत तक यह भावना समान रूप से विद्‌यमान है । संसार में ऐसा कोई नहीं हो सकता कि जिसके दिल में प्रेम भाव जागृत हुआ न हो । सामान्यरूप से प्रेम दो पक्ष के रूप में स्वीकार किया है । एक है संयोग पक्ष और दुसरा वियोग पक्ष है । सन 1960 के बाद हिन्दी साहित्य में प्रेम और श्रृंगार को अधिक महत्व दिया गया । "वस्तुत: काव्य में संयोग –श्रृंगार की अपेक्षा वियोग श्रृंगार ही अधिक प्रभावशाली होता है, जिसका कारण यह है कि वियोगजनित दुःखमयी अनुभूतियाँ जिस सीमा तक हमारे हदय में गहरे उतर जाती है । संयोग दशा की मुखमयी अनुभुतियों से हमारे मन की इन्द्रिया शिथिल हो जाती है; मन खिन्न हो जाता है – मानो हम थक गए हों, पराभूत हो गए है ; किन्तु विरह में रूदन के पश्चात ऐसा लगता है जैसे मानो हमारे मन का भारी बोझ हल्का हो गया हो । यही कारण है कि विरह की यह पुण्यात्मा कभी हमारे काव्य में नागमती बनकर कभी गोपियाँ बनकर कभी यशोधरा बनकर साकार हुई है । हिन्दी ग़ज़लों में भी विरह की पवित्रात्मा नाना रूपों में अपने को साकार करती रही है ।"[526]

वियोगवस्था में प्रिय की याद जीवन का आधार बन जाती है । प्रिय की यादे कभी पुलकीत करती है, कभी उदास करती है, तो कभी मुस्कराती है । वह कभी–कभी प्रियतमा के प्रति नाराज हो जाता है । यहाँ कुँअर बैचेन ने नायक और नायिका के भाव मनोवैज्ञानिक रूप से चित्रित किए है । प्रेमी को अपने प्रिय याद में पतंग जैसा अनुभव हो रहा है । शमा जैसे पतंगे को जलाती है वेसे ही प्रेमी उसके याद में जल रहा है । कुँअर बेचैन कहते है –

“जब तेरी याद ने सीने से लगाया मुझको ।

याद आकर भी कोई याद न आया मुझको ।

प्यार के खत की तरह तुमने लिखाया मुझको;

फिर क्यों शम पै पतंगे सा जलाया मुझको ।”[527]

प्रिय के स्मरण में दिल मायूस और बेचैन रहता है । आँखे नम हो जाती है । डॉ.कुँअर बेचैन ने भावों को प्रकट करते हुए यादों को समुंदर की लहरे कहा है । प्राकृतिक प्रतिकों के माध्यम से अपनी मनोदशा का वर्णन किया है – प्रिय का याद में प्रिय का मन चंदन की तरह सुलगता है । और प्रेम रस की बुँदो समान है । लगातार यादों का सिलसिला समुंदर लहरों के समान मन में उमडता है –

“तेरी यादों में सुलगता रहा दिल चंदन –सा

जब पिये अश्क, लगा शहद की बूँदे पी रहे ।

आदी है, मुझको भिगोती है; चली जाती है ।

उसकी यादे भी समुंदर की तरंगो सी है ।”[528]

दिल यादों में डूब जाता है और सुख–चैन खो जाता है । रात भर प्रिय के याद में जागना यह रोज–रोज की बात बनती है । दिल सुलगकर रहता है । प्रिय की आँखो में अंकित है । इसलिए अब राते भी नहीं रही, नींद भी नही रही है । याद रूपी चोर ने उसकी नींद ही चुरा ली है । ग़ज़लकार ने मनोवैज्ञानिक रुप से प्रेमी के मन की दशा को चित्रित किया है । तडपना, छटपटाना यह उसकी याद में अक्सर होता है –

“वो मेरी रातें मेरी आँखो में आकर ले गई,

याद मेरी चोर थी नींदे चुरा कर ले गई ।”[529]

जब कोई किसी के प्रति आकर्षित है तो उसके मन में मिलन की इच्छा और उत्कंठा निर्माण होना सहज और स्वाभाविक है । मन जिसे भी चाहता है उसके सम्पर्क में ही उसे सुख की अनुभूति प्राप्त होती है । हर पल वह प्रियतम के साथ व्यतीत करना चाहता है । प्रिय के बिना जीवन निरर्थक और नीरस है –

"जब से नजरों में कोई समाया लगा
मैं भी अपने को कितना पराया लगा
जिन्दगी की चिलकती कड़ी धूप में;
जब ख्याल आया उनका तो साया लगा।"[530]

डॉ.कुँअर बेचैन के मतानुसार प्रेम यह चिरंतन होता है। प्रेम कभी नष्ट नहीं होता है। कवि को विश्वास है कि इस दुनिया में प्रेम अमर रहता है। वे जब तक इस संसार में चांदनी रातें रहेगी तब तक प्रेम रहेगा। इस प्रेम की बात ग़ज़लकार के शब्दो में—

"कि जब तक चांदनी राते रहेगी,
रहेंगी, प्यार की बाते रहेगी।"[531]

वियोगावस्था में प्रेमी और प्रेमिका के लिए विगत स्मृतियाँ ही जीने का आधार होती है। स्मृति के कारण ही दोनों एक दूसरे को याद कर के सुख और शांति को प्रतित कर सकते है। स्मरण का वह एक पल अर्निवचनिय होता है। प्रेम में 'स्मरण' की अवस्था में प्रेमी को अपनी प्रेमिका का चांदनी रात में स्मरण होता है। वह दूर चली गई है फिर भी प्रेमी को विश्वास है कि एक दिन जरूर मुलाकात होगी –

"भले ही दूर हो जाओ नजर से,
मगर फिर भी मुलाकात रहेंगी।
विरह ने यह दिया आशीष हम को
नयन में सिर्फ बरसाते होगी।"[532]

जब भी हम किसी के प्रति प्रेम भाव रखते है, तो उससे दिल का रिश्ता बन जाता है। अपना सब कुछ उस पर न्यौछावर कर देते है। उससे ऐसे जुड जाते है कि उसमें हम को मिटा देते है। उसके लिए कोई भी कष्ट उठाने के लिए हमेशा तैयार रहते है। वियोग की स्थिति में आँखो से आँसू बहने लगते है। डॉ.कुँअर बेचैन ने आत्मपिडा आत्मानुभुति के रूप में प्रस्तुत की है। उसने जो दिल तोड दिया है उसे वह सहन नहीं होता है। कुँअर बेचैन के मतानुसार जब प्रेमी आहत होता है तब उसके लिए उसके दिल पर क्या बीतती है वही समझें। प्रेमी और प्रेमिका के वियोग में सिर्फ यादे ही जीने का सहारा बनती है। और वह दर्द

आँखो के आँसू के द्वारा निकल पडता है । हृदय टूटने से गिरता जा रहा है । उनका यह विरह इस सीमा पर पहुँच जाता है कि आँखो से निकलते आँसू को समझाते है कि रोना बंद करो, अब मुस्करा, कब तक विलाप करोगे लेकिन आँसू लगातार बहते ही जा रहे है । डॉ.बेचैन ग़ज़ल में लिखते है—

"आँसूओं की शक्ल लेकर बारी–बारी आँख से ।

टुकडा–टुकड़ा हो के निकला दिल हमारी आँख से ।।

दूर से आया हूँ तेरे पास अब तो मुस्करा ।

यह कहा आँसू ने अपनी हारी–हारी आँख से ।

हम तुम्हारी आँख के आँसू है अब तो रोक लो ।

कब तलक गिरते रहेंगे हम तुम्हारी आँख से ।।"[533]

ग़ज़लकार ने स्वंय को कंदील रूप में चित्रित किया है । उन्होंने प्रेम रूपी दिया अपनी प्रेमिका के दिल में प्रज्वलित किया है । कंदील में स्नेह रूपी दीप प्रदिप्त है । वह प्रेम का ही प्रतीक है । दीपक ज्योति अर्थात प्रेम का प्रकाश कंदील के रंगो में रंगकर उसमें से स्नेह रूपी प्रकाश फैला रहा है । उसकी शमा रवि की तरह निखर जाती है । ग़ज़लकार यह दिखा रहे है प्रेम का दीपक जब से प्रेमिका ने दिल में जलाकर रखा है तब से उनकी स्थिति कंदील के समान हो गई है । कंदील अर्थात 'दीप' जिसमें आग निरंतर जलती रहती है दीपक स्वयं जलकर औरों को प्रकाश देता है । जहाँ सुख है वहाँ दु:ख है, जहाँ प्रेम है वहाँ प्रेम के साथ दर्द भी है । प्रेम को पाने के लिए जिंदगी के जहर को भी स्वीकारना होता है । पहले हृदय के प्रवेश द्वार पर दस्तक देनी पडती है । दस्तक के बगैर आप प्रेम के सिंहासन पर आरूढ नहीं हो सकते । प्रेम के मार्ग पर चलते समय दुनिया ने बिछाए हुए काँटो से चलना पडता है । चुभनी वाली बातों को सुनना पडता है । लेकिन स्नेह की नजर से देखेंगे तो यह दुनिया खुबसूरत लगती है । डॉ.कुँअर बेचैन ने प्रेम के लिए प्यार भरा दिल होने की आवश्यकता बताई है –

"प्यार पाना है तो इतना कीजिए

दिल के दरवाजे पर दस्तक दीजिए

मीठी मुस्कानों की चाहत है अगर

हंस के खारे आँसूओं की पीजिये

खुबसूरत है ये दुनिया आज भी

प्यार की नजरों से देखा कीजिये ।"[534]

डॉ.कुँअर बेचैन के अनुसार प्रेमी को प्रेमिका का मनोविज्ञान भली –भाँति पता है । प्रेमी ने प्रेमिका के चेहरे से ही उसकी दिल की बात को समझ लिया है । काँटे ही गुलाब की सुंदरता को और निखार रहे है । वे कहते है कि यदि उन्होंने किसी से भी प्यार किया है किन्तु उसे प्रकट नहीं किया । जिसने अपने प्रेम को पहचान नहीं पाया, जिसके हृदय में प्रेम का अंकुर पल्लवित नहीं हो पाया, ऐसे व्यक्ति का जीवन निरर्थक है । कबीर कहते है –

"जा घट प्रेम न संचरे वो घट जान मसान ।

जैसे खाल लोहार की साँस लेत बिन प्राण ।।"[535]

जिस मनुष्य के जीवन में प्रेम नहीं है उसका संसार ही निरस है । उसका पूरा जीवन रस हीन बनकर निराशामय हो जाएगा । "प्रेम मन की एक कोमल एवं पवित्र भावना है जिसकी अनुभूति से ही आत्मा का उन्मीलन होता है और आनंद की प्राप्ति होती है । प्रेम ही जीवन का प्राण है । प्रेम के अभाव में जीवन की सार छटाएँ सूनी एवं अस्तित्वहीन प्रतीत होती है ।"[536] इसलिए जीवन में प्रेम की आवश्यकता प्रतिपादीत की है । यह प्रेमानुभूति सिवाय प्रेम की नहीं आती है । कुँअर बेचैन की एक ग़ज़ल द्रष्टव्य है –

"हाँ देखकर सूरत किसी इक माहताब की

तहरीर पढ़ रहा हूँ, मैं दिल की किताब की

शाखों को कल जो गौर से देखा तो यह लगा

काँटो ने भी बढाई है, रौनक गुलाब की ।

तुझकों न किसी से भी मुहब्बत हुई तो फिर

तू यह समझ कि जिदंगी यूँ ही खराब की ।"[537]

माशूक अपनी माशूका को एकांत में और कभी खतों को पढकर याद करता है । प्रेमिका का खत यादों की खुशबुओं से भरा है । अब उसके जीवन का लक्ष्य प्रेमिका का प्रेम ही है । दिल धडकता है वह प्रेमिका के यादों के सहारे । प्रेमी के लिए प्रेमिका का प्यार उसकी

आरजू और किस्मत है । उसकी जिन्दगी की एक आदत सी बन गई है, उसके सपनों की हकीकत है, वह प्रेमिका उसके लिए सब कुछ है । कुँअर बेचैन लिखते है –

"खुशबूओं से भरा हुआ खत हो ।
तुम मेरी आरजू हो, किस्मत हो ।
मेरे मरने के बाद छूटोगे ।
तुम मेरी जिंदगी की आदत हो ।।
जिसको सदियों से ढूंढता था मैं ।
तुम उसी खाब की हकीकत हो ।
तुमको देखा तो यूँ लगा जैसे ।
तुम ही दिल हो तुम ही मोहब्बत हो ।।"[538]

प्रेमी अपने ग़ज़ल में ही प्रेमिका का रूप देखता है । प्रेमी अपने प्रेमिका को याद करता है । प्रेम के एक–एक पल की सुंदरता प्रभावशाली रूप से पेश करते है । ग़ज़लकार को प्रेमिका के होंठ ही नहीं रूमानी ग़ज़ल के दो मिसरे है । उसके खुले कुंतल ग़ज़ल की दौलत है । प्रेमिका के आँखो से हजारों रंग के भाव जैसे कि मस्तानी ग़ज़ल के भाव है । उसके मुस्कराने से कई ग़ज़लों के स्वर मिलते है । कुँअर बेचैन की दृष्टिसे ग़ज़ल ही उनकी प्रेमिका है । यही भाव अपनी ग़ज़ल के माध्यम से प्रकट करते है –

"बताएँ हमे तुम्हारे होंठ क्या है ।
ये दो मिसरे, रूमानी ग़ज़ल के ।।
तुम्हारी साँस की खुशबू, को छूकर ।
खुले कुंतल किसी धानी ग़ज़ल के ।।
छलकते है, तुम्हारे लोचनों से ।।
हजारो रंग मस्तानी ग़ज़लों के ।।
तुम्हारी हर हँसी में गुँजते है ।
कई स्वर एक पहचानी ग़ज़ल के ।।
मेरी ग़ज़लों में ये जो शब्द है ना ।
ये मोती है, किसी दानी ग़ज़ल के ।।"[539]

प्रेमिका जब दिल तोडती है तब प्रेमी व्याकुल होकर तडपता है । "वियोग शृंगार में उत्पन्न भाव और अधिक सघन मार्मिक एवं प्राणवान हो जाते है ।"[540] वह बेचैन होकर भटकता है । वह अपने प्रेमिका को बेवफा समझने लगता है । परंतु प्रेमी के जीवन में यह घटनाएँ होना स्वाभाविक है । जब अपने पास प्रेमिका नहीं है तो उस आघात से आहत होकर प्रेमी यह कहता है –

"तेरे साथ गुजारे दिन ।
अपने सबसे प्यारे दिन ।।
आ में तुझसे प्यार करूँ ।
मेरे राज दुलारे दिन ।।"[541]

प्रेमिका ने उसके साथ विश्वासघात किया है । प्रेमी इस सद्में से आहत है । जिसने अपने प्रेमिका को दिल से चाहा, विश्वास किया उसी प्रेमिका ने उसे अकेले छोड दिया है । उसने जो भी ख्वाब देखे थे वे सब के सब बिखर गए । जैसे कि एक रेत की दीवार हो । कोई उसकी निगाहों और धडकन को समझ नहीं पा रहा है । और वह कहता है की कोई मुझे देवता न समझे वह तो गुनाहों की मूरत है । अब वह पूर्ण रूप से टूट गया है उसे अपनी बाँहो में लेकर सँवारने वाला ही नहीं रहा है । कुँअर बेचैन कहते है कि अब यह दिल किधर मूड जाएगा पता नहीं क्योंकि प्यार के बंधन जो टूट गए है । ग़ज़लकार कहते है –

"अब ये चाहत है, मेरी चाहों की ।
कोई धडकन सुने निगाहों की ।।
कोई मुझको न देवता कह दे ।
एक मूरत हूँ मैं गुनाहों का ।
मैं जो गिरता हूँ मुझको गिरने दे ।।
अब जरूरत नहीं है, बाहों की ।।
कब न जाने किधर को मूड जाये ।
ये कही फितरत है, दिल की राहों की ।।"[542]

ग़ज़ल साहित्य में आशिक और माशुक के संबंधित ग़ज़लें प्रचुर मात्रा में देखने को मिलती है । अंतिम दशक की हिंदी ग़ज़लों में ग़ज़लकारों ने प्रेमिका के खुबसुरती को चित्रित किया है । कुँअर बेचैन अपनी प्रेमिका को शोर की इस भीड़ में खामोश तनहाई और धूप के दिनों की मदमस्त पुरवाई कहते है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है –

“शोर की इस भीड में खामोश तनहाईसी तुम

जिंदगी है धूप, तो मदमस्त पुरवाई –सी तुम ।”[543]

डॉ.कुँअर बेचैन प्रेमिका की सुन्दरता का बयान करते है । प्रेमिका के सौंदर्य में चार चाँद लग चुके है । जिसमें प्रेमिका का चेहरा अपने दोनों हाथों पर रखा है । दोनों हथेलियों में वह चेहरा चाँदी का है ऐसा प्रतीत होता है । दोनों हाथों में उसका चेहरा ऐसा लग रहा है कि पूनम का चाँद उदित हुआ है जैसे कि सीप में मोती रखा हुआ है, ऐसा सुन्दर चेहरा है –

“चाँदी की हथेली पर फिर चाँद सा चेहरा है ।

अब सीप में मोती का शुभ ध्यान किया जाए है ।।”[544]

हिन्दी ग़ज़लो में विरह को अत्याधिक महत्त्व दिया गया है । विरह के विविध रूप डॉ. कुँअर बेचैन के ग़ज़लों में परिलक्षित होते है । विरह की पवित्रता होती है, उसी के अनुसार विरहानुभूति को अभिव्यक्त किया है । डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी प्रेमानुभूति को बड़ी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है । जब कोई किसी को अपने दिल में बसाता है और उसे चाहने लगता है, तो प्रेमी उसपर जीवनभर की खुशियाँ न्यौछावर करता है । फिर दुनिया वाले उस को विरोध करने लगते है । ऐसे में वियोग की स्थिति पैदा होती है । कुँअर बेचैन विरहावस्था को बहुत ही मार्मिक रूप से प्रस्तुत करते है –

“चाहा था एक फूल ने तडपे उसी के पास ।

हमने खुशी से पाँव में काँटे चुभा लियों ।।

चाहो तो रोक लो हमें, चाहे विदा करो ।

अश्कोनें कहा आँख से लो हम तो आ लिये ।।

अब भी किसी दगज में जायेंगे तुम्हें

वह खत जो तुम्हें दे न सके लिख –लिखा लिये ।।

जब हो न सकी बात तो हमने यही किया ।

अपनी ग़ज़ल के शेर कहीं गुनगुना लिए ।।"[545]

अरबी, फारसी और उर्दू की तरह हिंदी ग़ज़ल ने श्रृंगार के दो पक्ष संयोगावस्था और वियोगावस्था में से वियोग शृंगार को अधिक महत्त्व देते हुए, विरहानुभूति का अधिक मात्रा में चित्रण किया है । डॉ.कुँअर बेचैन अपनी विरहावस्था की तुलना उस पंछी के साथ करते है जो पर कटने से उड नहीं सकता । कुँअर बेचैन कहते है –

"बिन तुम्हारे, ये जिंदगी अपनी
पंछियों के कटे परों जैसी ।"[546]

प्रेमी को अपने आप पर पूरा विश्वास है । दिल से जिसे चाहा है वह प्रेमिका उसे मिल जाती है । प्रेमिका उसकी जिंदगी की राशिफल बनने वाली है । भोर की किरण के रूप में वह उसे छूने वाली है । जैसे भोर की किरन के छूने से कमल खिल जाता है वैसे ही प्रेमी के जीवन में आनंद तथा खुशियाँ मिलने वाली है । प्रेमिका के प्रेम भरी नजरों से जीवन के सारे प्रश्न खत्म होने वाले है । "प्रेम जीवन की एक मार्मिक तरंग को रूप में मानव हृदय में सदैव होता रहा है । प्रेम जीवन की उर्जा है जो जीवन को चैतन्य बनाए रखती है । प्रेम वह रस की गागर है जो छलककर औरों को छलकाती है । प्रेम एक उद्वेलन है, अंग है, जो असीम है ।"[547] यहाँ पर कुँअर बेचैन ने प्रेमी के मनोदशा का सुंदरता के साथ वर्णन किया है –

"यह किसे मालूम था वो वक्त भी आ जायेगा ।
आप मेरी जिंदगी के राशिफल हो जायेंगे ।
भोर की पहली किरण बनकर जरा छू दीजिए ।
आपकी सौंगध हम खिलकर कमल हो जायेंगे ।।
प्रश्न पत्रों की तरह मिलने लगी है जिंदगी।
आपकी नजरें उठे सब प्रश्न हल हो जाऐंगे ।।"[548]

प्रेम एक ऐसी हृदय की स्थिति है जिसमें मनुष्य उत्पन्न समस्या को सहन करता है । अपने प्रेम के खातिर लम्बे समय तक प्रतिक्षा करता है । प्रेम की लिए हीर ने राँझे के लिए अपने सुखमय जीवन को कठिनाईयाँ में डाला था । ग़ज़लकार कहते है –

“अपने रांझे की शुभ प्रतीक्षा में ।
कब से बैठी है हीर पत्थर पर ।।
सीचं दे प्यार की कलम सेतू ।
खुशबूको की लकीर पत्थर पर ।।”[549]

प्रेम की असफलता प्रेमी के लिए अत्यंत वेदनामय पल होता है । प्रेमी को पता है कि इल्जाम लगाया जाएगा । उसे बाजार में निलाम होना पडेगा । प्रेम में दुनिया बाधा डालती है । लेकिन प्रेमी उसकी परवाह नहीं करता क्योंकि उसका प्रेम सच्चा है । ऐसे कठिनाइयों को उसको आदत हो गई है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है–

“जैसा सबके साथ होता है मुझे मालूम है ।
प्यार मेरा भी ये पहुँचेगा किसी इल्जाम तक ।।
सबने मिलकर इस कदर मेरी लगाई बोलियाँ ।
जो मुझे बाजार में होना पडा निलाम तक ।।”[550]

प्रेम को मन की पवित्र भावना है । पूजा, आराधना प्रेम के ही रूप है । आज प्रेम की परिभाषा बदल चुकी है । प्रेम के व्यापक और सकारात्मक भाव का पतन हो रहा है । आज प्रेम में प्रदर्शन प्रियता बढ गई है । प्रेम का सात्विक भाव नष्ट हो रहा है । वासनात्मकता की और प्रेम अग्रसर हो रहा है । शारीरिक प्रेम की वजह से उसमें व्यापार जैसी लेन–देन शुरू हो गई है । कुँअर बेचैन ने प्रेम के इस व्यापारिक रूप को भी चित्रित किया है । प्रेम में मन ही नहीं तन भी जरूरी हो गया है । यह वास्तव ग़ज़लकार प्रस्तुत करते है –

“प्यार पुजा था पहले अब तो बस बाजार है ।
जिसको देखो वो ही बिकने के लिये तैयार है ।।
जिंदगी जिसकी अँधेरो की तिजारत में कटी ।
कैसे कह दे वो उजालों का सही हकदार है ।।”[551]

इस दुनिया में प्रत्येक मनुष्य प्रेम का प्यासा है । प्रेम की कोई निश्चित समय सीमा नहीं होती । प्रेम अपने आप हो जाता है । प्रेम मानव को जिंदा रखता है क्योंकि प्रेम प्रतीक्षा है, इन्तजार है । प्रेम मनुष्य जीवन की अमूल्य निधि है । प्रेमी उसे संभालकर रखता है । प्रेम

जमाने से छुपाकर अपने दिल में बिठाकर किया जाता है । प्रेमी अपने गम में डूब गया है । फिर वह मुस्कुराने के लिए भी कहता है । प्रेम में हँसना–रोना, सुख–दुःख आदि होता ही है । ग़ज़लकार कुँअर बेचैन कहते है –

"जमाने से छुपाकर देखियेगा ।
मुझे दिल में बिठाकर देखियेगा ।।
मैं अपने गम में फिर डूबा हुआ हूँ ।
मुझे फिर मुस्कुराकर देखियेगा ।।"[552]

प्रेम को समझने के लिए दिल में भी प्रेम हो । ग़ज़लकार ने अपने खुद के प्रेम को समझने की दृष्टि से कहा है कि प्रेम तो अपनाने की चीज है । मानव हदय में प्रेम बसता है । कई लोग अपने प्रेम को प्रकट करते है । तो कई ऐसे भी होते है जो प्रेम को अपने दिल में छिपाकर रखते है । आज हर एक को प्रेम चाहिए । अगर किसी को प्रेम प्राप्त होता है उसका जीवन बदल जाता है । प्रेम सागर जैसा शान्त है, प्रेम दरिया भी है, प्रेम में गीत और संगीत भी है, प्रेम में सुख भी है और दुःख भी है । डॉ.कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल के माध्यम से कहते है –

"दिल हूँ रहती है कोई रूप की रानी मुझमें ।
यानी एक शोख मोहब्ब्त की कहानी मुझमें ।
जब से सागर हूँ जहाँ हूँ मैं वही ठहरा हूँ ।
जब था दरिया तो रही कितनी रवानी मुझमें ।।"[553]

प्रेम त्याग का ही दुसरा नाम है । प्रेम में प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे के लिए समर्पण भाव रखते थे । आज प्रेम में प्रदर्शन प्रियता बढ रही है । आज प्रेम में भरोसा ही नहीं रहा है । प्रेम में भी नाटक हो रहा है । आदमी इस में भी धोखा खा रहा है । प्रेम चिरंतन होता है । परंतु आज के दौर में प्रेम का कदम–कदम पर रूप बदलता नजर आता है । डॉ.कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल के माध्यम से प्रेम के बदलते रूप को चित्रित किया है –

"तुम्हारे पास ही तो आ रही थी ।
समन्दर को नदी समझा रही थी ।।
बदलता था जो अपने रूप इतने ।

नजर हर बार धोखा खा रही थी ।

मुझे तब होश ही अपना कहाँ था ।

किसी की इतनी या आ रही थी ।।"[554]

डॉ.कुँअर बेचैन ने संयोग और वियोग श्रृंगार के दोनों अवस्थाओं का वर्णन किया है । वियोग में भी आनंद प्राप्त होता है । "प्रेम हँसाता भी है तो रूलाता भी है । प्रेम यौवन की वह अनुभूति है जो प्रत्येक हृदय को मीठी झंकार से झंकृत कर देती है । प्रेम मन की उन कोमल भावनाओं का घर है जिसमें केवल अनुभूतियाँ ही रहती है ।"[555] यह दिखाने की कोशिश की है । वियोग में जो ख्वाब देखे जाते है वे अक्सर टुट जाते है । पहले जैसे ही प्रेमी–प्रेमिका की दशा हो जाती है । प्रतिक्षा और इन्तजार में हर पल गुजरना, एक दूसरे के बिना जीवन मुश्किल बन जाता है । और यह दु:ख किसी को भी नहीं बता सकते । डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़ल में विरह भावना की अभिव्यक्ति हुई है –

"साँचे में किसी और के, ढलने नहीं दिया ।

आहों को हमने दिल से निकलने नहीं दिया ।

चेहरे को आज तक भी तेरा इन्तजार है ।

उसने गुलाल और गैर को मलने नहीं दिया ।।"[556]

डॉ.कुँअर बेचैन ने निस्वार्थ प्रेम की अभिव्यक्ति की है । प्रेम में समर्पण भाव महत्वपूर्ण है । प्रेम व्यापक और उदार होता है । 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भाव उजागर होता है । प्रेम में अहं भाव के होने से प्रेम का पतन है । प्रेमी के सारे क्रिया-कलाप प्रेमिका के लिए होते है, वह हमेशा प्रेमिका के कल्याण की बात करता है । प्रेमी अपनी प्रेमिका के खुशी में ही अपनी खुशी मानता है । यह अत्यानंद का अनुभव है । प्रेमिका के प्रेम को सर्वस्व मानने वाला प्रेमी उसके लिए जीवन समर्पित करता है । डॉ. कुँअर बेचैन ने समर्पण भाव आदि को व्यक्त करने वाली ग़ज़लों का निर्माण कार्य किया है । कुछ शेर द्रष्टव्य है—

"इस तरह मिल कि मुलाकात अधूरी न रहे ।

जिंदगी देख, कोई बात अधूरी न रहे ।।

बादलों की तरह आये हो तो खुलकर बरसो ।

देखो इस बार की बरसात अधूरी न रहे ।।

मेरा हर अस्क चला आया बराती बनकर ।

जिससे थे दर्द की बारात अधूरी न रहे ।

पास आ जाता अगर चाँद कभी छिप जाये ।।

मेरे जीवन की कोई रात अधूरी न रहे ।

मेरी कोशिश है, कि में उससे कुछ ऐसे बोलूँ ।

शब्द निकले न कोई बात अधूरी न रहे ।।

तुझे पे दिल है तो कुँअर दे दे किसी के दिल को ।

जिससे दिल की भी ये सौगात अधूरी न रहे ।।''[557]

आत्मा की विरासत प्रेम है । मानव जीवन में प्रेम का अनन्यसाधारण महत्व है । प्रेम यदि सुख की हरियाली दिखाता है तो दुःख का सागर भी दिखाता है । प्रेम भाव प्रेमी और प्रेमिका की कसौटी है । प्रेम में वेदना, दर्द और पीडा है । प्रेम में जीवन का त्याग भी होता है । इसलिए प्रेम याचक और दाता के रूप चित्रित किया है । डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से यह भाव स्पष्ट किए है –

''दर्द देता है , जान लेता है ।

प्यार याचक है, प्यार दानी भी ।।''[558]

हिन्दी ग़ज़लकारों ने शुद्ध प्रेम, पवित्र प्रेम का अपने ग़ज़लों का विषय बनाया है । उन्होंने वासनात्मक प्रेम का खण्डन किया है । प्रेम आत्मा का पवित्र भाव है, वह भाव प्रेमी और प्रेमिका को एक दूसरे प्रति गहरी आस्था निर्माण करता है । उसमें वासनात्मकता नहीं होती । परंतु कामासक्त प्रेम भी सार्वभौमिकता का समर्थन करता है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है ––

''इसमें लपटे भी है, रवानी भी ।

प्यार अगनी है, प्यार पानी भी ।।''[559]

प्रेम में विरह है । प्रेम में दिल घायल हो जाता है; लेकिन जख्म होते हुए भी दिल चाहता है कि कोई प्यार के दो शब्द बोले । ग़ज़लकार के दृष्टि से प्यार में वह ताकत है कि पत्थर दिल इन्सान भी पिघल जाता है । अब जो प्यार का शोला दिल में भडका ही दिया गया

है अब तो पत्थर रूपी प्रेमिका का मन भी बदलेगा । “जल के अभाव में हरीभरी वसुंधरा मरूभूमि बन जाती है वेसे ही प्रेम से शून्य हृदय प्रस्तर से भी कठोर हो जाता है । प्रेम के ंतर्गत लेन देन की भावना नहीं होती है । प्रेम का मंदिर तो त्याग की नींव पर ही खडा हो सकता है ।”[560] प्रेम में व्यापार नहीं होता है । व्यापारी की दृष्टि से चाँदी और सोने का महत्व है । वह हर समय हर चीज को सोने–चाँदी के भाव से तोलता है । प्यार में व्यापार नहीं होता है । प्रेम तो अमूल्य निधि है , किस्मत वालों को ही वह प्राप्त होती है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है –

“दिल में जो जख्म है उनको भी टटोले कोई ।
अब ये चाहत है , कभी प्यार से बोले कोई ।।
देखना यह है, पिघलता है , कहाँ तक पत्थर ।
दिल में भडका तो गया प्यार के शोले कोई ।।
मैने खास अश्कों को मोती की तरह रक्खा है ।
इनको एहसास के धागे में पिरों ले कोई ।।
जिनसे तुलता है जमाने का ये चाँदी सोना ।
ऐसी बातों में ‘कुँअर’ प्यार न तोले कोई ।।”[561]

प्रेमी ने अपनी प्रेमिका की तस्वीर अपनी आँखों में अंकित है । होठों से जो बात की जाती है वह नीले गगन में अदृश्य हो जाती है । लेकिन जो आँखो से जो भी देखा यादें दिल के तिजोरी में बंद है । अपनी प्रेमिका को हमेशा याद करता है । उसका मन टूट गया है फिर भी प्रियतम से गहरा लगाव है । जागते–सोते प्रियतम की प्रतिमा उसके आँखो से ओझल नहीं होती । स्वप्न में भी जो भी कहा वह अक्षर–अक्षर याद है । मन और मस्तिष्क में भाव और विचार सिर्फ प्रियतम का ही है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है – –

“साँसों की टूटी सरगम मैं, इक मीठा स्वर याद रहा ।
यूँ तो सब कुछ भूल गया में, पर तेरा घर याद रहा ।।
होठों से बात हुई वह नील गगन में जा डूबी ।
आँखो ने जो लिक्खा दिल पर अक्षर–अक्षर याद रहा है ।।
और तो ग़ज़ले जाग के लिक्खी यह भी ग़ज़ल है ऐसी ‘कुँअर’ ।

स्वप्न में मैंने जो भी कहा सब, अक्षर–अक्षर याद रहा ।।''[562]

प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे को मिले या ना मिले लेकिन एक दूसरे की भावनाओं को अच्छी तरह से समझ लेते है । एक दूसरे की पीडा को अपनी पीडा समझते है । प्रेम में शमा जलती है और परवाना समर्पित हो जाता है । न शमा को बुझने का गम है और नही परवाने को मरने का दु:ख । प्रेमी और प्रेमिका को संघर्ष भरे जीवन के रास्ते से जाना पडता है । और इस रास्ते में उनके दिवानगी पर ताने देने वाले लोग मिलते है । उनका मजाक उडाया जाता है । दुनिया तो उनके प्यार को पागलपन कहकर उनके प्रेम पथ पर काँटे बिछाने का काम करती है । फिर भी प्रेमी और प्रेमिका अपना रास्ता खुद बनाते है और अपनी मंजील को हासिल करते है । डॉ.कुँअर बेचैन ने प्रेम के इस भाव को अपनी ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है –

''साज दिल को बनाना पडता है ।

चोट खाके भी गाना पडता है ।

आइनों की नजर में आने को ।

खुद को चेहरा बनाना पडता है ।।

मंजिले यूँ नहीं मिला करती ।

रास्ता खुद बनाना पडता है ।।''[563]

माशूक और माशूका एक दूसरे प्रति अत्यंत संवेदनशील रहते है । प्रेमी अपनी प्रेमिका का ख्याल रखता है । वह उसे कष्ट देना नहीं चाहता है । ईश्वर से अपने लिए सारे कष्ट माँगता है और प्रेमिका के लिए सुख । प्रेम में जमाने का डर हमेशा सताता है । इसलिए माशूका अपने लिए फूल की जगह शूल चाहता है । डॉ.कुँअर बेचैन ग़ज़ल के माध्यम से प्रेमिका को समझाते है –

''प्यार में दु:ख की चुभन है ये समझाने को ।

उसने काँटे से हथेली पे मेरी फूल लिखा ।।''[564]

अगर प्रेमिका धोखा देती है तो प्रियतम उसके व्यवहार से पिडा का अनुभव करता है । वह उदास और निराश हो जाता है । जीवन का सुख चैन खो बैठता है । जैसी कि उसका जीवन तबाह हो गया है । जिसे अपना दिल दे बैठा उसीने ही उसका दिल तोड दिया । उसे

संसार में जीना मुश्किल हो गया है । "उर्दू के चर्चित शायर मिजी 'गालिब' ने प्रेम की कठिन राह को बयान करते हुए कहा है कि, 'यह इश्क नही. आसां तो समझ लीजै, इक आग का दरिया है डूबके जाता है ।"[565] डॉ.कुँअर बेचैन ने प्रेमी के पिडा को चित्रित किया है –

"चैन इस दिल का ले गया कोई
फिर नया दर्द दे गया कोई ।।
मन खुशियों की राह पूछी थी ।
दे के गम पते गया कोई ।।
उनको मिलना था गैर से लेकिन ।
मिलके मुझसे गले गया कोई ।
दूर जाकर मुझे डूबोने को ।
साथ मेरे बह गया कोई ।।"[566]

प्रेमी अपने प्रिय का इन्तजार करता है । उसके मिलने की आस में तडपता रहता है । प्रेमी को उसने अपना मान लिया है तब से उसका वह दिवाना हो गया है । लोग उसे शमा और प्रेमी को परवाना समझ रहे है । ग़ज़लकार डॉ. बेचैन कहते है –

"जब से एक चेहरे ने अपना आईना माना मुझे ।
जर्रा–जर्रा कह उठा है , तब से दिवाना मुझे ।।
यह जलन देगी मुझे कुछ और भी दीवानगी ।
हो सके तो आपने दिल में और तडपाना मुझे ।।
यूँ तो महफिल में जला हूँ, शम्अ के मानिंद में ।
लोग फिर भी कह रहे है, मेरा परवाना मुझे ।।"[567]

प्रेम के पथ पर अग्रसर होने वाले प्रेमियों के प्रेम को दुनिया पागलपन कहती है । रिश्तेदार प्रेमी–प्रेमिका के रास्ते में बाधाएँ उत्पन्न करते है । दुनिया का विरोध होते हुए भी प्रेमियों का प्रेम के मार्ग पर चलना मतलब आग का दरिया पार करने जैसा है । अनेक मुसीबतों को, कठिनाईयों से लड़ते–लड़ते अपने लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है । जब कोई किसी को बेहद प्रेम करने लगता है । उसकी सारी मर्यादाओं को पार कर देता है, उसे न खुद की खबर

रहती है, न जमाने की, बस उसके दिमाग में उसकी प्रेमिका का ही नाम रहता है;उसके दिलों दिमाग में उसकी प्रेमिका का ही नाम रहता है । न भूख लगती है, न प्यास लगती है,न रातों को नींद लगती है न दिन में चैन रहता है, बस एक मात्र उसकी मंजिल होती है कि उसका प्रिय से मिलना । येहन जुनून होता है । डॉ.कुँअर बेचैन ने प्रेमी और प्रेमिका के मनोदशा का चित्रण अपनी ग़ज़लों के माध्यम से किया है –

"मेरे दिल को तुम्हारे प्यार से होकर निकलना था ।
कि इक चलती हुई तलवार से होकर निकलता था ।
ठहरना था उसी के पास जिसके पास से होकर ।
मुझे इक तेजसी रफ्तार से होकर निकलना था ।।
न खिडकी थी, न दरवाजे मैं करता भी तो क्या करता ।
मुझे हर हाल में दीवार से होकर निकलना था ।।
पिघलने की इजाजत थी न जलने की इजाजत थी ।
मुझे फिर भी किसी अंगार से होकर निकलना था ।।
मेरा हर दर्द मेरी डायरी तक था 'कुँअर' जिसको ।
सभी के सामने अखबार से होकर निकलता था ।।"[568]

विरहाव्यवस्था के चित्रण हिन्दी ग़ज़लों में सर्वत्र देखने को मिलते है । यादों का सिलसिला शुरू होता है तब प्रेमी का मन आकुल–व्याकुल होता है । प्रेमिका को प्रेमी का प्रेम जानने के लिए उसके दिल में उतरना होता है । प्रियतम से मिलने की आशा खत्म हो जाती है तब प्रेमी का दिल तडपने लगता है । जीवन ही व्यर्थ और अर्थ हीन लगता है । प्रेमी की चाहत है कि एक बार प्रेमिका उसकी ओर मुस्कुराकर देख ले । वह तो प्रेमिका को अपना सर्वस्व मान रहा है । प्रेमिका का पूर्ण रूप से प्रेमी पर अधिकार है, वह चाहे तो अजमा कर देख सकती है –

"अब ये चाहत है कि तू इस दिल को आकर देख ले ।
एक पल को ही सही पर मुस्कुराकर देख ले ।।
मैं तो मेरा गीत हूँ, लय–ताल में बाँधा हुआ ।
तुझको हक है जब भी चाहे गुनगुनाकर देख ले ।।"[569]

प्रेमी अपने प्रेमिका के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देना चाहता है । “कभी कभी व्यक्ति को किसी ऐसी मनोदशा से गुजरना पड़ता है कि वह उसे व्यवहार की दृष्टि से असामान्य बना देती है । यह असामान्यता भी अचेतन में रहने वाली स्थितियों का परिणाम है ।”[570] वह किसी बहाने उसे दूर लेकर जाने के लिए कहता है । डॉ.कुँअर बेचैन अपने दिल की विवशता एवं प्रेमिका के प्रति अपनी इच्छाएँ ग़ज़ल में अभिव्यक्त की है । ग़ज़लकार कहते है कि वे एक बेनाम वसीहत है । प्रेमिका उस वसाहत को सभी के नजरों से बचाकर, चुरकार ले जाकर अपने नाम पर लिखवा सकती है । डॉ.कुँअर बेचैन ने प्रस्तुत ग़ज़ल में मन की बात कही है –

“सबसे नजर बचाकर ले जा ।
मुझसे मुझे चुराकर ले जा ।।
इक बेनाम वसीयत हूँ मैं ।
अपने नाम लिखाकर ले जा ।।
उसके लिये लिखा एक खत हूँ ।
चल री हवा उडाकर ले जा ।
जग है, ‘कुँअर’ कंटीला जंगल ।
अपना बदन बचाकर ले जा ।।”[571]

प्रेम में आनंद के साथ–साथ दु:ख भी है । सूख के साथ पीडा भी है । प्रतिक्षा में बहुत सारा जीवन का वक्त चला जाता है । और प्रेमी उसे पाने के लिए इन्तजार करता है क्योंकि वे दोनों प्रेम के धागे से जुडे हुए है । प्रेमी अपनी खुशियों को त्यागकर परेशानी उठाता रहता है । उसके लिए स्वंय कठिनाईयों का सामना करता है । इश्क में प्रेमी जितने दूर है उतने ही एक दूसरे के करिब महसूस करते है । प्रेमी ने प्रेमिका को दिल से पुकारा है और वह प्रेमिका को आँख से पुकराने की गुजारिश करता है । वह केवल आँखो से इशारा करे तो उसके कदमों में सुख के साधन अर्पित होंगें । डॉ.कुँअर बेचैन ने अपने ग़ज़लों के माध्यम से प्रेमी के दिल की बात कही है –

“सारी दुनिया का सार आँखो से ।

जिंदगी की बहार आँखो से ।।

मैंने दिल से तुझे पुकारा है ।

तू भी मुझको पुकार आँखो से ।।

हुस्न में जो कभी लगे तुझ को ।

माँग ले वो उधर आँखो से ।।"[572]

माशूक--माशूका का रिश्ता शमा--परवाने जैसे ही होता है । परवाने की तरह शमा रूपी प्रेमिका को पाने के लिए तडपता रहता है । प्रेम मन से उत्पन्न होते ही उसे प्रकट न करें तो अच्छा है । वह प्रेम अपने दिल के गहराई में जितना लम्बे समय तक छिपाकर रखेंगे । वह प्रेम और गहरा और तीव्र बनेगा । प्रेम की मेहंदी मुट्ठी में बंद करके रखेगी और जितने देर से मुट्ठी खुलेगी उतनी मेहंदी रंग लाती है । प्रेम के उजाले के लिए प्रेमी अपने अंदर के दीप को जलाता है, प्रेमिका के इंतजार में सपनों का गुलदस्ता सजाता रहता है । डॉ.कुँअर बेचैन ने बहुत खुबसूरती से प्रेमी के मन के भाव को ग़ज़ल के माध्यम व्यक्त किया है । कुछ शेर द्रष्टव्य है–

"मुहब्बत की ये मेहंदी बंद रखना दिल की मुट्ठी में ।

ये जितनी देर में खुलती है उतना रंग लाती है ।

उजाले के लिये वो अपने दिल में जलता रहता है ।

न घर में तेल है, उसके न दीपक है, न बाती है ।

अगर उसकी निगाहे तेरे रस्ते पर नहीं है तो ।

'कुँअर' क्यों जिंदगी हर रोज गुलदस्ता सजाती है ।।"[573]

प्रेम का इजहार करना बडा मुश्किल है । क्योंकि इसमें प्रेमी को डर सताता है कि सामने से इन्कार आया तो दिल को सँभालना मुश्किल है । जब प्रेमिका सज–धज कर आती है । दिल में उसके प्रति पाने की चाहत है । लेकिन प्रेम में धोखा है , प्रेम एक सपना है यह समझाते–समझाते लोग थक गए है । तुलसी, कबीर, मीराँ और गालिब ने दुनिया को बहुत कुछ दिया है । अपने अनुभव के आधार पर प्रेम के मामले में कुँअर बेचैन भी जमाने को कुछ संदेश देना चाहते है । इसी भाव को लेकर कुँअर बेचैन कहते है –

“बहुत घबरा रहे हो, होठ तक लाते हुये तुम भी ।
कही क्या चोट खा बैठे ग़ज़ल गाते हुये तुम भी ।
कि जब बादल का घूंघट डालकर वो चाँदनी उतरी ।
चले आना हमारे पास शरमाते हुये तुम भी ।
मुहब्बत एक धोखा है, मुहब्बत एक सपना है ।
किसी को थक गये हो क्या, ये समझाते हुये तुम भी ।।
बहुत कुछ दे गये तुलसी, कबीर, मीराँ और गालिब ।
जहाँ को कुछ तो दे जाना ‘कुँअर’ जाते हुये तुम भी ।।”[574]

प्रेम में मन भावुक और संवेदनाशील बनता है । प्रेम खुशबू की तरह है, खुशबू छुपाने से छुपती नहीं । उसकी महक चारों दिशाओं फैल जाती है । यह ऐसी खुशबू हे जितना उसे बंद करके रखे उतनी ही वह उभरती है । प्रेम को दिल में कितना भी छुपाकर रखे वह चेहरे से, आँखो से प्रकट होता है । “भावों का उदात्तीकरण भी मनोविज्ञान का ही अभिन्न अंग है । कभी–कभी व्यक्ति इतना उदात्त हो जाता है कि वह जिसके द्वारा सताया जा रहा है उसकी भी किसी विशेष परिस्थिति का ध्यान करते हुए प्रति उदार और करूणा प्लाविन हो जाता है ।”[575] फुलों की महक के साथ–साथ काँटो की चुभन भी होती है । अपनी प्रेमिका की स्मृति, यादगार पल को फुलों की तस्वीर के रूप में रखा जा सकता है । प्रेम से जो दो शब्द लिखे थे, उन शब्दों की खुशबू नई –नई सी है । प्रेम की खुशबू को डॉ.कुँअर बेचैन ने प्रभावशाली रूप से चित्रित किया है –

“छुपाने से नहीं छुपती मुहब्बत की नई खुशबू ।
गयी रूसवाइयों तक भी ये शोहरत की नई खुशबू ।।
लिखा था पहली पहली बार जो फूलों -से हाथों ने ।
किताबों में अभी तक, है उसी खत की नई खुशबू ।।”[576]

प्रेम भाव का आदान–प्रदान मानवी सभ्यता में होता ही है । प्रेम व्यापक कल्पना है । प्रेम पाने और देने के लिए हर एक मनुष्य प्रयत्न करता है । प्रेम में सुख से अधिक दु:ख की मात्रा ज्यादा है । प्रेम से आपसी सम्बन्ध मजूबत बनते है । मनुष्य अपने प्रेम को दिल में

संजोकर उसे परवाना चढाता है । प्रेम में ठोकरे खा कर वह खुद को सँवारता है । जिसपर हम विश्वास करते है सहसा एक दिन दिल तोड देता है, विश्वास घात करता है । हम जिनसे मिलते–जुलते है वही भरोसा तोडते है । जिसे प्रेमी बरदाश्त भी करता है । डॉ.कुँअर बेचैन ने यह भाव अपने ग़ज़ल के माध्यम से व्यक्त किया है –

‘‘पहले तो ये चुपके–चुपके यूँ ही हिलते–डुलते है ।

दिल के दरवाजे है, आखिर खुलते, खुलते है ।।

अब तो यह सोचा है , जीवन तन्हाई में काटेंगे ।

वो ही धोखा दे जाते है, जिनसे मिलते–जुलते है ।।’’[577]

प्रेमी प्रेम में दिवाना हो जाता है । प्रेम में उसकी स्थिति इस कदर बन जाती है कि ना ही हँस सकता है और रो कर आँसू बहा सकता है । एक गुँगे की तरह चूप बैठता है । प्रेमी प्रेमिका के पास जाना चाहता है । उसके साथ बैठकर मुस्कारना चाहता है । जो भी करना चाहता है उसके खुशी के लिए ही है । उसका दिल आहत हो जाता है तो उसके खुशी के लिए ही है । दिल दुखाना नहीं होता है । वह तो सुहावने मौसम का आनंद लेना चाहता है और प्रेमिका को खुशियाँ प्रदान करने की कोशिश करता है । डॉ.कुँअर बेचैन ग़ज़ल में प्रेम भाव अभिव्यक्त करते है –

‘‘तुम्हारे पास आना चाहता हूँ ।

अभी मैं मुस्कराना चाहता हूँ ।।

तुम्हारी आह कुछ अच्छी लगी थी ।

न कहना दिल दुखाना चाहता हूँ ।

‘कुँअर’ तुम बिन कहाँ क्या मिल सकेगा ।

मै जो मौसम सुहाना चाहता हूँ ।।’’[578]

प्रेमी का मन खुद को सँभल नहीं पा रहा है । उसका एक मन कह रहा है कि उसकी प्रेमिका आयेगी दूसरा मन उस पर हावी होता है और कहता है कि प्रेमिका नहीं आएगी । प्रेमी के मन में उसके आने और न आने का खेल शुरू है । विश्वास लडखडाया तो पीड़ा होगी ही जैसे कि पाँव लडखडाते है । तो पाँवों में मोचें आती है । मोचें आने से दर्द होता है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है कि थोडा फासला रखकर खुद को संभालना चाहिए । आईनों से भिड जाने से

खरोचे आएगी ही । प्रेमी इतना दिवाना हो गया है कि महेबूबा ही उसके लिए दर्पण है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है –

"वो न आयेगी कभी, कितना ही सोचो आयेगी ।
लडखडायेंगे तो पाँवों में भी मोचे आयेगी ।।
उनसे थोडा दूर रहकर ही सँवर पाओंगे तुम ।
आइनों से भिड गये तो फिर खरोंचे आयेगी ।।"[579]

प्रेम में जब दिल टूट जाता है तब प्रेमी विरह से व्याकूल हो उठाता है । जहाँ काँटे ही काँटे है गुलाब ही नहीं वहाँ जाने से सिर्फ पीडा ही मिलेगी । प्रेम में बड़ी ताकत होती है । इसमें समपर्ण भाव होता है । प्रेमी के अनुसार प्रेमिका के साथ उसका नाम जुड गया है जैसे कि वे एक दूसरे के लिए बने है । जैसे कि प्रेमी के जीवन से प्रेमिका एकरूप हो गई है । परंतु हर कोई इसका मतलब अलग ही निकाल रहा है । प्रेमी जिसे अपनी प्रेमिका समझ रहा था उसने दिल तोडने की कोशिश की है । वह कभी उसकी नहीं रही; इस बात का एहसास प्रेमी को हो जाता है । तब प्रेमी कहता है कि दिल तोडना ही है तो नाजूक फूल की तरह तोडिए, जो नाजूक रिश्ते से अर्थात नाजूक शाख से अलग हो रहा है । दिल तोडने में कोई आपत्ति नही है किन्तु उसकी कद्र की जाए और उसे फेका नहीं जाए, कोमलता से फूल की तरह अलग किया जाए । डॉ.कुँअर बेचैन इस भावना को अपनी ग़ज़ल के माध्यम से प्रकट करते है –

"जब कभी भी तुझसे मेरा नाम जोडा जाय है ।
हर कही इस बात का मतलब निचोड़ा जाय है ।
तोडियेगा दिल मगर कुछ इस तरह से तोडिये ।
जैसे नाजुक शाख से, एक फूल तोडा जाय है ।।"[580]

प्रेम में हर वक्त और हर जगह समस्याओं से लड़ना पडता है । "मन का संसार भी अजीव संसार है यदि एक जुल्म करते हुए नहीं थकता तो दूसरा इन नकारात्मक स्थितियों सें सकारातक दशाएँ निकाल देता है । व्यक्ति की अपनी परिवेशजन्य परिस्थितियाँ उसकी अपनी मूल प्रकृति को परिभाषित करती चलती है फिर उसके जीवन में आए नवीनतम मोडों को अभिव्यंजित करती है ।"[581] प्रेमी और प्रेमिका के सुखमय जीवन का रहस्य यह है कि उन्होंने

दु:ख का दरिया पार किया है । उनके जीवन में प्रेम कमल खिला है । यह आनंद के दिन खत्म होने में देर नहीं लगती । कमल कीचड में जन्म लेता है । उसी प्रकार दु:ख–दर्द रूपी कीचड में प्रेम रूपी कमल जन्म लेता है और विकसित होता है । यह मुस्कराना और रोना यह प्रेमी के जीवन की निशानी है । उनके जीवन में संकट के बादल आते है और बरस कर चले जाते है । दिल लगाया तो जालीम जमाना उसे अपराध समझता है । जो भी कहोगे वह घाव दिल पर ही लगेगा । डॉ.कुँअर बेचैन के ग़ज़लों से प्रेमाभिव्यक्ति मार्मिक रूप से व्यक्त हुई है । उनके ग़ज़ल के कुछ शेर द्रष्टव्य है –

"हमारे मुस्करानें की पूछों ।
कथा गम के घराने की न पूछों ।।
कि उसमें हादिसे ही हादिसे है ।
कहानी दिल लगाने की न पूछो ।।
हँसता है रूलाने के लिये ही ।
अदा जालिम जमाने कि न पूछो ।।
कहीं फेकों वो दिल पर ही लगेगा ।
नजर के उस निशाने की न पूछों ।।"[582]

प्रेम की राह आसान नहीं है । उस पर चलने वाला हमेशा तन्हाईयों का सामना करता है । और उसे बदले में प्रतिक्षा, दर्द, दु:ख, धोखा आदि चीजें मिलती है । प्रेमी की सदैव विरहजन्य, मनोदशा बनी रहती है । उसे गम के गीत ही मिलते है । गम जितना उससे बरदाश्त हो सकता है, उतना वह कर ही लेता है । प्रेम तो धुप–छाँव का खेल है । डॉ.कुँअर बेचैन कहते है –

"दे के तन्हाई का मेला चल दिये ।
छोडकर मुझको अकेला चल दिये ।।
इश्क करने वालों को ये क्या हुआ ।
दिल से कोई खेल खेला चल दिये ।।
उसकी महफिल में मिला जो गम हमें ।।
झेल पाये जितना झेला चल दिये ।।"[583]

एक प्रेमी दुसरे प्रेमी के दु:ख–दर्द को अच्छी तरह से समझता है । ऐसा प्रेमी अपने मन में सेवा भाव रख कर दुसरों की मदत के लिए सदैव तैयार रहता है । वह चाहता है कि अपने प्रिय को सुख मिले । प्रेम में उदारता का भाव होता है इसलिए प्रेमी अपने प्रिय का सम्मान करता है । वह प्रिय के लिए सुख रूपी प्रकाश देता है । खुद के हिस्से में दु:ख रूपी अंधेरा रखता है । इससे जाहिर होता है कि प्रेम में त्याग तथा समर्पण सर्वोपरि है । प्रेमी सब की करूण कहानी सुनता है और उनके प्रति अपनी संवेदनाएँ प्रकट करता है । लेकिन अपनी आत्मकहानी दु:ख दर्द किसी को भी कह नहीं पाया है । दुसरों का दु:ख हल्का किया अपना दर्द अपने अंदर छुपाकर रखा । प्रेमी अपने लिए दु:ख और प्रिय के लिए सुख की कामना करता है । डॉ.कुँअर बेचैन ने अपने ग़ज़ल के माध्यम से प्रेम में त्याग की भावना को केंद्र में रखकर प्रेमाभिव्यक्ति की है –

"अश्क, आहें, टीस अंदेशे, कसक और इन्तजार ।
इश्क था, ऐसे ही तोहफे साथ में लाया था वो ।।
सामने उसके चले आते थे दुनिया भर के गम ।
सबकी सुनता था, कभी अपनी न कह पाया था वो ।।"[584]

ग़ज़लकार ऐसी माशूका के तलाश में है जिसके साथ वह गुफ्तगू करें । उसके साथ रहकर शांति का अनुभव करना चाहता है । वह अपने हृदय में छिपे भावनाओं का इजहार करके अपने दु:ख–दर्द को हल्का करना चाहता है । आज तनावपूर्ण जीवन में अपना कोई हो इसलिए साथी की तलाश है । प्रेमी के जीवन में निरवता छा गई है उसके साथ गुनगुनाने वाला प्रिय हो तो जीवन में फिर से बहार आएगी । लोग उसे दिवाना कहे तो भी उसकी परवाह नहीं है । उसका जीवन सरलता से चल रहा है उसमें मुश्किल पैदा हुई तो भी बेहत्तर किन्तु प्रिय का होना जरूरी है । ग़ज़लकार कहता है कि मेरा तन–मन–धन पाने के लिए तू कातिल बनके आई तो भी तुझे एतराज नहीं है । डॉ.कुँअर बेचैन लिखते है –

"सूझती कोई न मंजिल तू ही मंजिल बन के आ ।
जिस जगह खोया मेरा दिल, तू वही दिल बन के आ ।।
दूर तक खामोशियाँ, तन्हाईयाँ, वीरानियाँ ।
कितना सन्नाटा है दिल में तू ही महफिल बन के आ ।

जिसके होने से मुझे सब लोग दीवाना कहें ।

तू मेरी आसानियों में ऐसी मुश्किल बन के आ ।।

मेरी हस्ती, मेरी हसरत, मेरी साँसे मेरा दिल ।

इनका मालिक बनना है, तो मेरा कातिल बन के आ ।।''[585]

प्रेमी और प्रेमिका एक साथ रहते है दोनों को परम आनंद की प्राप्ति होती है । ''यौन–भावना की सांकेतिक अभिव्यक्ति के कुछ शेर कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में भी मिलते है किंतु इन शेरों मे नग्नता और अश्लीलता नहीं है वरन् यौन–भावना का ऐसा उदात्तीकरण है जिसमें पूजा भाव भी दृष्टिगोचर होता है ।''[586] प्रेमी प्रिय को सुख की अनुभूति में कहता है कि तुम मेरे साथ हो तो चेहरा प्रसन्नता से खिलता है, प्रेमी अब मस्तिष्क से नहीं बल्कि मन–मस्तिष्क से प्रेम का इजहार करने लगता है । उसकी प्रेमिका अतीव सुंदर है । उसका मन झूमने और नाचने लगा है । उसके मन की सुन्दरता प्रेमी के दिल की छत पर प्रेमिका की सुन्दंरता से अठखेलियाँ कर रही है तो उसके तन रूपी कमरे में सुंगध फैल गई है । प्रेमिका का सौन्दर्य अत्यंत अद्वितिय है । प्रिय के विलोभनीय सुन्दरता में प्रेमी मुग्ध हैं । उसने प्रेम रूपी सागर में नहाया हैं, इसी कारण उसका देहरूपी सौंदर्य नमकीन हो गया है । अर्थात नमक से भी अधिक सफेद, खूबसुरत और मधुरता से युक्त, सुन्दर उसकी प्रेमिका हैं । डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़ल में प्रेमिका के खूबसूरती का वर्णन प्रस्तुत किया हैं –

''तुम मेरे साथ हो चेहरे पर दमक होगी ही ।

दिल के झूले पे झुलाने की रमक होगी ही ।।

तुम मेरे जेहन से अब दिल में उतर आये हो ।

छत पे खेलोंगे तो कमरे में रमक होगी ही ।।

लोग कहते है, ग़ज़ब की है, लुनाई तुम में ।

देह सागर में नहाए तो नमक होगी ही ।।''[587]

प्रेमी के मन में अनेक भाव की लहरे उमड़ उमड़कर आती है । मन में अनेक विचार आते है । ऐसे समय में प्रेम का सहारा ही बच जाता है । अपनी प्रियतम के ख्याल में सदैव खोया रहता है । साथ–साथ बिताए हुए पल, स्मृतियों की खिडकियाँ धीरे–धीरे खुली तो अच्छा लगता हैं । वह प्रिय के आने के दिन गिनता है, प्यास बुझने से याने मिलने से प्यार मर

जाता है । उसे जिंदा रखने के लिए नजदिकियों के साथ–साथ दूरियाँ हो तो प्रेम की उत्कटता बढ़ती है । डॉ. कुँअर बेचैन ने इस एहसास को अपने ग़ज़ल से प्रकट है –

"जब से मैं गिनने लगा इन पर तेरे आने के दिन ।
बस तभी से मुझ को अपनी उंगलिया अच्छी लगी ।।
प्यास के बुझते ही यह क्या है कि मर जाता है प्यार ।
जब बढ़ी नजदीकियाँ तो दूरियाँ अच्छी लगी ।।
बंद आँखो सी किसी के ध्यान में खोई हुई ।
धीरे–धीरे जब खुली तो खिडकियाँ अच्छी लगी ।।"[588]

प्रेम में मशगूल माशूक जमाने से बेखबर रहता हैं । उसके दिलो–दिमाखे पर प्रिय के प्रेम की धून सँवार होती है । वह उसमें ही मशगुल रहता है । गम में डूब जाना यह प्रेमी की एक साधना ही है । विरह में से प्रेम निखरता है । लेकिन यह प्रिय को पता न चले यह भी शर्त होती है । प्रेमी अपने प्रियतम के याद में रातभर सो नही पाता, इस बात का प्रिय को पता नहीं है । डॉ. कुअँर बेचैन कहते है –

"है गम भी एक तपस्या मगर ये शर्त भी है ।
तू जिसके गम में जला है, उसे पता न चले ।।
ये हो सका है, न होगा कि मेरी आँखो में ।
तू याद बन के रहे और रतजगा न चले ।।"[589]

प्रेम की पीड़ा का वर्णन कुँअर बेचैन ने बेहत्तरीन ढंग से किया है । प्रिय के आँखो का काजल देखकर वह धोखा खाता है । जो तूम आँखो का काज़ल समझ रहे हो वह काजल नही है । बल्कि विरह में जल रहे दिल का धुँआ है । चेहरे पर रौनक गायब है । उदासीन चेहरा रेगिस्तान की तरह बन गया है । आज प्रिय के विरह से जीवन रसहीन बना है । आँसू लगातार बह रहे है । विराहाग्नी में वह जल रहा है । उसका असर शारिरीक और मानसिक रूप से हुआ है । कुँअर बेचैन ने प्रस्तुत ग़ज़ल में विरह का वर्णन किया है –

"अब मेरी आँखो के काजल को न तुम काजल कहो ?
यह मेरे जलते हुये दिल का धुआँ है, दोस्तो ।।
आज तो चेहरा भी मेरा रेगिस्तान है ।

आँसूओं जब तक तुम्हारा जी करे बहते रहो ।।”[590]

निष्कर्ष –

इससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी ग़ज़लो में बहुत व्यापक रुप से प्रेमाभिव्यक्ति हुई है । उनके ग़ज़लों में प्रेमी और प्रेमिका के प्रेम को भव्य रूप से चित्रित किया है । उनके सौदंर्य के साथ–साथ प्रेम में प्राप्त अनेक अनुभूतियाँ और प्रेमी जीवन के अनेक पहलुओं को स्पर्श करके उसे उद्घाटित किया है । डॉ.कुँअर बेचैन की पैनी नजर के कारण सूक्ष्म भाव भी ग़ज़ल में परिलक्षित होते है । ग़ज़ल की नजाकत और नफासत हिंदी ग़ज़ल में लाने का सफल प्रयास किया है । श्रृंगार पक्ष के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन बेहत्तरीन बन पडा है ।कुँअर बेचैन ने प्रेमाभिव्यक्ति में संयोग अपेक्षा वियोग को ही अधिक महत्त्व दिया है । संयोग हे इंद्रधनुषी सप्तरंग ने उन्हे आकर्षित नहीं किया बल्कि ग़ज़लकार ने वियोग के अनेक चित्र खिंचे है । प्रेम को उदात्त भावना के रूप में चित्रित किया है । कामोत्तेजक, मांसल चित्रण से वे कोसो दूर रहे है । उनकी ग़ज़ल में वास्तविक प्रेम की चर्चा है । समर्पण पर आधारित प्रेम को उन्होने अधिक महत्त्व दिया है ।

4.6.3 कुँअर बेचैन की ग़ज़लो में अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति–

हिंदी ग़ज़लकारों ने लौकिक प्रेम का जैसे चित्रण किया है वैसे ही अलौकिक प्रेम का चित्रण बेहत्तरीन रूप से किया है । जीव का ब्रह्म के प्रति प्रेम अलौकिक है । उर्दू में इसे ‘इश्क–ए –हकीकी’ कहा गया है । प्रेम शब्द में वह शक्ति है जिससे सारे संसार को एकता के सूत्र बाँधा जाता है । प्रेम में न कोई छोटा होता है न बड़ा, सभी समान होते है । भक्तिकालिन संत कवियों ने प्रेम को अपने भक्ति का आधार बनाया था । संसार के सब धर्म, मजहब के लोगों ने प्रेम के महत्त्व को स्वीकारा है । प्रेम भेदा–भेद नही मानता, वह तो न धर्म जानता है और न ही जाति । संसार के सभी दर्शनकार और तत्वज्ञानियों ने प्रेम की शक्ति को पहचाना है । दुनिया में सभी लोगों ने प्रेम पर विश्वास किया है । जब आत्मा में प्रेम बसता है तब उसे परमतत्व का मार्ग मिलता है । रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने कहा है – “सिद्धान्त के लिए पहले जरूरी है कि वह नए संदर्भ को हीन केवल सामने उभारे पर अपनी नई अभिव्यक्ति या

व्याख्या की प्रेरक शक्ति के रूप में आधारभूत प्रकथन को जन्म दे । नया सिद्धान्त न केवल सम्प्रति पाई जाने वाली असंगतियों के निराकरण में समर्थ होता है ।”[591]

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने नए सिद्धान्तों का अपनाकर अर्थ संप्रेषण में विविधता लाने की कोशिश की है । उन्होंने अलौकिक प्रेम को सामाजिक परिवेश से जोड़ने का प्रयास किया है

सृष्टि के कण–कण में परमात्मा की सत्ता होती है । परमात्मा ‘प्रेम’ का ही दूसरा नाम है । यह एक ऐसा मार्ग है जिस मार्ग पर हर एक जीव चलता है, सिर्फ उसके दिल मे प्रेम रूपी भक्ति भाव हो । परमात्मा का अंश जीवात्मा है । अतः परमात्मा ही जीवात्मा का घर है । आत्मा के द्वारा अपने चिरसाथी की तलाश को ही अलौकिक प्रेम कहा गया है । मानव परमतत्व को प्राप्त करने की कोशिश आदिकाल से कर रहा है । इस परमात्मा की प्राप्ती मार्ग सिर्फ प्रेम ही है । मनुष्य का साध्य परमतत्व के दर्शन है तो साधन प्रेम ही है । ग़ज़ल का रंग प्रेम से भरा है । जब प्रेम से दिल भर जाता है तो आत्मा व्यापकता को स्पर्श करती है । ग़ज़लकार की आत्मानुभूति तथा प्रेमानुभूति से ग़ज़ल बनती है ।

“ग़ज़ल फूल की खूशबू की तरह अपनी पाँखुरी में रह कर भी अपनी पाँखुरियों की सरहद को पार कर जाने का नाम है । ग़ज़ल ह्रदय की भूमि पर लगी वह खरोंच है, जिसमें प्रेम का वीज पनपता है । ग़ज़ल हारिल पक्षी की तरह अपने इष्ट को टहनी मानकर उसे कसं कर पकडे रहने का प्रयास ही नहीं वरन् उससे भी आगे पँखो को बाँधे हुए एक ही जगह बैठे हुए अनंत आकाश में उडते रहने की कला है ।”[592] कुँअर बेचैन अपनी बात को स्पष्ट करते है –

“मैं तेरे पास यूँ ही आत्मा सा बैठा रहूँ ।
ये मेरा जिस्म कही उड़ सके तो उड जाए ।।”[593]

प्रेम की शुरूआत साधारण के स्तर पर होकर वह अनन्यसाधारण रूप धारण करता है । अर्थात लौकिक प्रेम व्यापक और उदार बन जाता है । इश्क–ए –मजाजी से प्रेम इश्क–ए –हकीकी बन जाता है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

“गज़ल ! तुम ग़ज़ल भी हो, प्रेम भी हो और प्रेमिका भी । प्रेमिका हो इसलिए तुम वह परम सत्ता भी हो, जिसने संसार को प्रेम करना सिखाया । इसलिए यदि यह कहाँ जाय, तुम प्रेम, प्रेमिका और परमसत्ता तीनों ही हो तो अनुचित नहीं ।”[594]

भारतीय काव्य के अतीत पर ध्यान दे तो पंक्तियाँ चरितार्थ करती नजर आती है । हिन्दी साहित्य के मध्य काल में भक्ति चरम सीमा पर है । तुलसीदास भक्ति स्तर पर रामदास और सूरदास कृष्णमय है । मीरा कृष्ण की दीवानी हो गई । सूफी कवि अपने परमतत्व को नारी रूप में स्वीकारते हुए प्रेम में आत्मा परमात्मा रूपी प्रेमिका का दर्शन करने का प्रयास करता है ।

अलौकिक प्रेम में प्रेमी अपने प्रिय की प्रतीक्षा करते हुए स्वयं को मिटा देता है; जिस प्रकार पतंग शमा में के प्यार में अपन आपको मिटा देता है । शमा–परवाने की तरह प्रियतम परमात्मा की आशा में, दर्शन की अभिलाषा में प्रेमी सर्वस्व समर्पित कर दुनिया से अलविदा करता है । प्रेमी की प्रतिक्षा का वर्णन डॉ.कुँअर बेचैन अपने ग़ज़ल के माध्यम से करते है –

"एक मुद्दत से था जिनका इन्तजार ।
आई जब मिलने की बेला चल दिये ।।
उसकी महफिल में मिला जो गम हमें ।
झेल पाये जितना झेला चल दिये ।।
जब नज़र में आ गई मंजिल कुँअर' ।
छोड दुनियाँ का झमेला, चल दिये ।।"[595]

जो जितना गम को लेकर प्रेम के रास्ते पर निकल पडता है उसे अपनी मंजिल हासिल होती है । विरह भाव ग़ज़ल में अभिव्यक्त हुए है । दुनिया के मायाजाल से छुटकारा पाकर अपने प्रेम को प्राप्त करना प्रेमी का लक्ष्य होता है । अलौकिक प्रेम व्यापक रूप से चित्रित हुआ है । प्रेम के अलौकिक रूप का वर्णन करना मुश्किल है । ईश्वर का गुनगान करना आसान नहीं है; उसकी महिमा अनन्त है । ईश्वर के प्रति प्रेंम का वर्णन अलौकिक रूप से किया है । वह ऐसी खुशबू है जिसके मिलने से हजारों फूलों की खुशबू फैलने लगती है । उसके महक से आत्मा को खुशी मिलती है । ग़ज़लकार स्वयं उसके द्वारपर बैठ कर अलख को प्रसन्न करने पर तुला है । वह कोई साधु-संत नहीं है लेकिन वहाँ द्वार पर बैठ्ने से सुख शांति का अनुभव करता है । डॉ. कुँअर बेचैन इस भाव को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करते है –

"हम उनसे मिलके गुलोंसे महकने लगते है ।
जरूर उनसे कही खुशबूओं का डेरा है ।।

तेरे भी दर पे कुँअर खुद अलख जगायेगा ।

‘ कुँअर’, ‘ कुँअर’है , कहाँ साधुओं का फेरा है ।।’’[596]

परमात्मा के सत्ता का बयान डॉ. कुँअर बेचैन ने अपने ग़ज़ल में किया है । ईश्वर ने हमे सब कुछ दिया है जो उसने हमें दिया है वह अनमोल है । उसे शब्दों में बयान नहीं कए सकते । प्रेमियों को खुबसुरत चेहरा दिया है और आँखे भी दिए है जिससे वह अपने ईश्वर का दर्शन कर सके । उसने मनुष्य को सुदंर दिल दिया है उसमे राग द्वेष नाम का कोई विकार नहीं है । उसमें दया और उदात्त भाव होते है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

‘‘राह दी उसने नई राहों को बंजारे दिये ।

पर न जाने क्यो सभी राही थके हारे दिये ।।

इश्क करने वाले चेहरों का हो रंग कुछ भी मगर ।

मन को भी देखा हमारे वो फकीरों सा मिजाज ।

जिसने होठों को ‘भजन’ हाथों को इकतारे दिये ।।

कोई तो होगा सबब, वर्ना तो क्यों उसने ‘ कुँअर’ ।

दी हमें मीठी हँसी, आँसू सभी खारे दिये ।।’’[597]

परमात्मा के प्रेम में आत्मा तथा भक्त ईश्वर के चारों दिशा में उसके दर्शन कर सकता है । सारे संसार में उसका भगवान व्याप्त है । घर घट में, प्रत्येक कण में वह मौजूद है । अमीर–गरीब, राजा– रंक, महल–झोपड़ी जहाँ–तहाँ परमात्मा का अस्तित्व है । डॉ. कुँअर बेचैन के मतानुसार ईश्वर मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर अथवा गुरूद्वारा में है यह मनुष्य की अपनी सोच है । किन्तु कबीर के दोहों की दृष्टि से कुँअर बेचैन अपना मंतव्य रखते है कि ईश्वर और कही भी नहीं है वह मनुष्य के अन्तरात्मा में बसता है । उसे कही भी ढूँढने की जरूरत नहीं है । वह सर्वव्यापक है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है – –

‘‘मुझ में मंदिर, मुझमें मस्जिद

गिरिजाघर, गुरूद्वारा मुझमें ।।

गीतों को गाता फिरता है ।

ऐसा है बंजारा मुझमें ।।’’[598]

वर्तमान युग में मनुष्य को इस संसार में से मोक्ष की प्राप्ति करनी है तो भक्ति के मार्ग पर अग्रसर होना पडेगा । "प्रेम एक ऐसा कोमल और प्रवित्र भाव है, जिसकी अनुभूति से आत्मा उन्मीलित होकर अतीन्द्रिय आनन्द का आस्वादन करती है । प्रेम जीवन का आधार है । प्रेम के अभाव में जीवन के समस्त कार्य व्यापार अस्तित्वहीन से प्रतीत होते है ।"[599] ईश्वर के नाम जप से मुक्ति की बात की है । यह नाम प्रिय का हो सकता है । प्रिय की भक्ति से, प्रेम से हमे गमों और संकटो से छुटकारा मिलता है । नामस्मरण से परमसत्ता और प्रिय को प्रसन्न किया जा सकता है । यह दुनिया परमात्मा की ही देन है । वही एक सत्य है बाकी सब मिथ्या है । इस भक्तिभाव को ग़ज़लकार अपनी ग़ज़ल के माध्यम से व्यक्त करते है –

"डालपर जब फूल कोई मुस्कराया तुम मिले ।
गीत मन का जब भ्रमर ने गुनगुनाया तुम मिले ।।
जब तलक थी प्यास पत्थर बस तभी तक दूर थे ।
और जब भी प्यास को पानी बनाया तुम मिले ।।
मंदिरो या मस्जिदों की बात मैं करता नहीं ।
मैने सुने में भी सिर झुकाया तुम मिले ।।
मै समझता था कि दिल में सिर्फ मैं ही हूँ 'कुँअर' ।
लेकिन जब भी दिल को अपने थपथपाया तुम मिले ।।"[600]

डॉ. कुँअर बेचैन हिन्दी ग़ज़ल क्षेत्र में प्रमुख ग़ज़लकार के रूप में पहचाने जाते है । उनकी ग़ज़लों की विशेषता यह है कि उन्होंने अपने भारतीय काव्य परम्परा का आदर्श रखकर ग़ज़ल का संसार निर्माण किया है । उन्होंने भारतीय काव्य के तत्वों को अपने ग़ज़लो में प्रस्तुत किया है । भाषा के अन्तर्गत बिम्ब, प्रतीक और मिथकों का सरसता से सफलतापूर्वक प्रयोग किया है । अलौकिक प्रेम से सम्बन्धित ग़ज़लों के माध्यम सें जीव और ब्रह्म आदि तात्वों को प्रेम भाव से उजागर करने का प्रयास किया है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है –

"जिस रात पुर्णिमा में नहा लगी चाँदनी ।
पानी को सागरों में उछालेगी चाँदनी ।।
किसको खबर थी देह की दीवार फांदकर ।
मुझसे ही कभी मुझको चुरा लेगी चाँदनी ।।

उन्मुक्त कुन्तलों की नशिली सी छाँव में ।

सो भी गया तो मुझको जगा लेगी चाँदनी ।।"[601]

अलौकिक प्रेम संसार के भी सभी सम्बन्धों से परे एक 'त्याग' भाव है । समर्पण प्रेम की पहचान है । प्रेम से जगत् कल्याण का भाव उभरता है । जिससे सम्पूर्ण संसार को एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता है । अन्तर्मन की आवाज को प्रियतमा सुनेगी और वहाँ बोलने की आवश्यकता नहीं होगी । वह जहाँ भी है वही काशी और मदीना है । ईश्वर की व्यापकता को स्वीकार कर उसके प्रति निस्वार्थ रूप से भक्ति करनी चाहिए । प्रेमी अपने आराध्य से मौन होकर कहता है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है –

"तुम अब से मौन रहकर मुझ्को सुनना ।

नहीं बोलूँगा मै, तुमसे कभी ना ।।

जहाँ तुम हो, मुझे ऐसा लगा है ।

वही काशी, वही अपना मदीना ।।"[602]

मनुष्य ईश्वर को मंदिर–मंदिर और मस्जिद–मस्जिद ढुँढता फिरता रहता है । जिसके मन में ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा है वह उसको हर जगह नजर आएगा । अर्थात ईश्वर का अस्तित्व संसार के कण–कण मे है । लोग ईश्वर को तिर्थाटन करके खोजने की कोशिश करते है । ईश्वर हमारे मन में ही स्थित है । "मानव ईश्वर को मंदिर या मस्जिद जैसे पवित्र स्थलों में खोजता है । वह उन्हें मिल्ता है । यदि उनकी श्रद्धा में विश्वास है, उसमें यदि तनिक भी खोट नहीं होगी तो वह जहाँ सिर झुका देगा वही उसे अराध्य के दर्शन हो सकते है ।"[603] मानव को ईश्वर के प्रति प्रेम होना आवश्यक है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"वो न मंदिर में, न मस्जिद में, न गुरूद्वारे में है ।

प्यार की जो गुँज मेरे मन के इकतारे में है ।।

पुछते हो वो कहाँ है, तो बताता हूँ तुम्हें ।

वो यहाँ भी है, वहाँ भी है, 'कुँअर' सारे में है ।।"[604]

मनुष्य अपने अच्छे बुरे दिनो में अपने और पराए को समझता है । मनुष्य दुःख से व्याकुल हो जाता है । दुःख–दर्द की धुप में पैर में छाले आते है । अर्थात दर्द और तकलीफ

में जब वह भगवान को याद करता है तो वह पेड की शितल छाया महसूस करता है । ईश्वर के प्रति प्रेम भाव अपनी पीडा को भूलने में सहायक सिद्ध होता है । भगवान के प्रति अटूट प्रेमभाव ही ईश्वर के दर्शन का मार्ग है । भगवान हम में ही स्थित है बस हमें उसे अपने अंदर प्रेम से खोजना है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"धूप से घबरा के नंगे पाव में छाले लिए ।
जब भी ये चाहा मिले तरूबर की छाया, तुम मिले ।
मैं समझता था कि दिल में सिर्फ मैं ही हूँ 'कुँअर' ।
द्वार लेकिन जब भी दिल का थपथपाया, तुम मिले ।"[605]

मानव हृदय की गहराई को कोई माप नहीं सकता । सागर की तरह शान्त और विशाल है । मन रूपी सागर में अनेक अमूल्य चिजें भावनाओं के रूप में छीपी है । उसमें प्रेम दया क्षमा शांति होने से दुसरों के प्रति सद्भावना रखता है । ईश्वर उन्हे की सहायता करता है जो दुसरों की मदद करता है और प्रेम देता है । परमात्मा की शक्ति ऐसी है जो आँखो से दिखाई नही देता है, लेकिन वह शक्ति जरूरतमंदो की मदद करती है । डॉ. कुँअर बेचैन ने अपने अनुभव के आधार पर ग़ज़लों के माध्यम से यह विचार अभिव्यक्त किये है–

"जिसे तू प्यार देगा, देख लेना ।
तुझे उससे ही कोई छल मिलेगा ।।
'कुँअर' दिल में बसा तू अब उसी को ।
जो तुझसे हो के भी ओझल मिलेगा ।।"[606]

ईश्वर के दर्शन का करना प्रेमी का अंतीम लक्ष्य होता है । ईश्वर के प्रति उसकी जिज्ञासा ही उसे परम सत्ता की ओर ले जाती है । जीवात्मा परमात्मा के मिलनोत्कंठा में तडपती रहती है । ऐसी अवस्था में जीवात्मा को यह जीवन नीरस, अर्थ हीन लगता है । डॉ. कुँअर बेचैन ने अलौकिक प्रेमाभिव्यक्ति में जीवात्मा का संसार के बंधनो को तोडकर परमात्मा के प्रति अपना अटूट रिश्ता स्थापित करने के प्रयास को अभिव्यक्त किया है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है–

"माना मिला न आज मगर कल तो मिलेगा ।
मुझको वो तेरे प्यार का आँचल तो मिलेगा ।।

चाहत है साये की तो किसी दिल में उतर जा ।

उपवन न मिलेगा वहाँ जंगल तो मिलेगा ।।

आकर तू मेरे सामने बस इतना बता जा ।

तू हो के मेरी आँख से ओझल तो मिलेगा ।।"[607]

डॉ. कुँअर बेचैन ने अदृश्य प्रिय को अपनी ग़ज़लों के माध्यम से चित्रित किया है । जीवात्मा रूपी प्रेमी ने परमात्मा के प्रति अनेक ख्वाब देखे है । जितने भी तुफान खडे होते है सब परमात्मा की कृपा से शांत होते है । आत्मा परमात्मा रूपी पानी में डूब गई है । अब तूफ़ानों का डर नहीं है । फूल में ऐसी खुशबू है कि वह पानी में और धरती पर भी आती है । परमात्मा का अस्तित्व सभी जगह है उसे महसूस करने की आवश्यकता है । "भगवान धरती आसमाँ और सृष्टि के कण–कण में है । हम उसे हर जगह देख सकते है, पा सकते है । भगवान कली से फूल बनने में, भवरे की गुनगुनाहट में है ।"[608] इसलिए ग़ज़लकार कहते है –

"जब से डुबे है, मेरे दिल के जिले पानी में ।

जितने तूँफ़ा थे सभी आ के मिले पानी में ।।

उसने आँखो का हरेक ख्वाब गिराकर पूछा ।

और किस किसने बनाये है किले पानी में ।।

उसमें खुशबू है, तो फिर सबको ही खुशबू देगा ।

फूल धरती पे खिले चाहे खिले पानी में ।।"[609]

प्रेम में मनुष्य अपनी सुध–बुध खो बैठता है । प्रेम के मार्ग पर चलते समय उसे अनेक पीडाओं को सहन करते हुए आगे बढ़ना होता है । बाद में उस आनंद तथा सुख प्राप्त होता है । प्रेम रूपी अमूल्य नीधी पाने के लिए उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पडता है, विरहाग्नी से गुजरना पडता है । तब उसे परमात्मा रूपी प्रेमी के दर्शन का अवसर प्राप्त होता है । डॉ. कुँअर बेचैन लिखते है – –

"गुजरना उसको अश्कों से भी होगा ।

जो खुशियों का खजाना चाहता है ।।

नजर उसकी भी तुझ पर है युगों से ।

जिसे तू आजमाना चाहता है ।।"[610]

रहस्यवादी भावना के अंतर्गत जीवन, जगत और ईश्वर के प्रति जिज्ञासा होती है । इसी रहस्यवादी कथ्य को लेकर ग़ज़ले लिखी गई है । हिन्दी ग़ज़ल में सुफी काव्य की तरह परमात्मा और आत्मा को प्रेमिका–प्रेमी के रूप में भी वर्णित किया है ––

"तमाम उम्र उसी की अदा के साथ रहा ।

मुझे लगा कि मैं जैसे खुदा के साथ रहा ।"[611]

प्रिय की याद दिल में रखेंगे तो दुनिया के गम का असर बिल्कुल नहीं होता है । यह एक प्रकार से परमात्मा का नामस्मरण है । "जीवात्मा को ऐसा लगने लगता है कि उस असीम सत्ता के बिना जीवन निरर्थक है । उसे पाने के लिए सभी बंधन तोड़ने के लिए तैयार हो जाता है ।"[612] इस संसार में परमात्मा सर्वोपरि है । बाकी सारी बाते भ्रम है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"वो ही रदीफ, वो ही काफिया ग़ज़ल वो ही ।

मैं उसकी सिर्फ नक़ल हूँ, मगर असल वो ही ।"[613]

परमात्मा के दर्शन करने के लिए अनेक इम्ताहानों से गुजरना पडता है । वह इस संसार से बहुत दूर है लेकिन यह दूरी इम्तहान तक रहती है । नश्वर शरीर मे आत्मा का वास है जैसे कि किरायेदार मकान में रहते है । आत्मा एक दिन किराये रूपी शरीर को त्याग देती है । जीव और ईश्वर में यही अन्तर है ।.ईश्वर दुनिया से परे है और आत्मा इस दुनिया तक । बेचैन ने ईश्वर की अलौकिकता का वर्णन किया है –

"वो इस जहाँ के पार है, मैं इस जहान तक ।

ये दूरियाँ रहेगी मगर इम्तहान तक ।।

हूँ जन्म से ही जिस्म में अपने किरायेदार ।

मेरा सफर है, इस मकाँ से उस मकान तक ।।"[614]

ईश्वरी स्मरण में ही मानव का कल्याण है । नामस्मरण परमात्मा की और अग्रसर होने का मार्ग है । वह अपनी बात को खुलकर नहीं सुनता उसके बारे में दिल में ही वार्तालाप जारी

है । ईश्वर हमारे दिल में बसे है वह दिल दिल की बात को समझते है । इसलिए जीव का अखण्ड नामस्मरण मन ही मन चल रहा है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"अधर चुप है, मगर मन में कोई संवाद जारी है ।
मैं खुद में लीन हूँ, लेकिन किसी की याद जारी है ।
कभी सुनता नहीं खुलकर जो मेरे दिल की बातों को ।
अभी थी सामने उसके मेरी फरियाद जारी है ।।"[615]

प्रत्येक मनुष्य की सुबह अलग अलग रूप में होती है । जिस मनुष्य को ईश्वर का ही स्मरण है, उस मन मे ईश्वर के ह ऐसा स्थिति में ही विचार है, ऐसे में अलौकिक प्रकाश भक्त के जीवन में छा जाता है । उसकी सुबह की शुरूआत परमात्मा के दर्शन से होती है । डॉ. कुँअर बेचैन के विचार दृष्ट्व्य है –

"हर लफ़्ज में रहता है, किसी नूर का आलम ।
यह सोच के हर लफ़्ज मैं बोलूँ तो सुबह हो ।"[616]

ईश्वर प्रेम में समर्पण की भूमिका होती है । ईश्वरीय प्रेम को प्राप्त करणे के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है, अहंकार विसर्जन ।[617] प्रेम रस रूपी मदिरा जो प्राशन करता है वह प्रेम में खो जाता है । जिसके दिल में ईश्वर प्रेम की खुमारी चढ जाती है वह परमात्मा का परम भक्त बन जाता है । यह खुमारी निरंतर वैसे ही रहेगी तब जब तक ईश्वर के दर्शन होते है । ईश्वर का प्रेम पाने के लिए संकटो से लडने के लिए सदैव तत्पर है, क्योंकि ईश्वर भक्ति की नशा तन–मन में छा गई हैं । डॉ. कुँअर बेचैन ने अलौकिक प्रेम को ग़ज़ल के माध्यम से व्यक्त किया है

"अपनी आँखो में ये मयखाना बना रहने दे ।
इश्क हूँ मैं मुझे दिवाना बना रहने दे ।।
जब भी गम आयेंगे तो उनकी नज़र करने को ।
तू मेरे दिल को ही नज़राना बना रहने दे ।।"[618]

प्रेमिका को यह मालूम है कि जिसे उसने अपना सर्वस्व मान लिया है वही उसका ईश्वर हैं । उसके दर्शन पाने के लिए अपना तन–मन–धन सब कुछ उसके चरणो में अर्पित हैं । सच्चा प्रेम वही है जिसमें 'मैं' और 'तू' अंतर नष्ट होता हैं । अहं भाव की गुंजाइश नहीं

होती । प्रेम की सच्चाई जानना ही प्रेमी का अंतिम लक्ष्य होता हैं । इस ईश्वरीय तत्व को अभिव्यक्त अपने ग़ज़ल के माध्यम से किया है –

"तमाम उम्र उसी की अदा के साथ रहा ।
मुझे लगा की मैं जैसे खुदा के साथ रहा ।।
रूका है वो तो फिर अंजाम पे ही जाके रूका ।
कदम जो मेरा किसी इब्तिदा के साथ रहा ।।
कि उसके अस्क भी मुझ को लगे के मेरे है ।
कि जब कभी मैं किसी गमजदा के साथ रहा ।।"[619]

हिन्दी ग़ज़ल ने अपनी संस्कृति और सभ्यता का महत्व प्रतिपादित किया है । दार्शनिकता को ग़ज़लो में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया हैं । मनुष्य के मन में हमेशा आत्मा और परमात्मा के प्रति जिज्ञासा रही हैं । इसी रहस्यवादी भावना को अपनी ग़ज़लो में उद्घाटित करने का प्रयास डॉ.कुँअर बेचैन ने किया हैं । हिन्दी ग़ज़लो में सूफ़ी कवियों की तरह प्रेमी और प्रेमिका का आत्मा और परमात्मा के रुप में चित्रण हुआ है । डॉ. कुँअर बेचैन कहते है –

"हम आज भटकते हुए मुसाफिर है ।
न कोई राह न घर है, हमारे साथ रहो ।।
तुम्हे ही छाव समझकर यहाँ चले आये ।
तुम्हारी गोद में सर है, हमारे साथ रहो ।।"[620]

जब मनुष्य संकटो को झेलते हुए परेशान हो जाता है तो वह जीवन के रास्ते से भटक़ जाता है । ऐसे समय ईश्वर ही उसका आधार होता है । उसे याद करते हुए मनुष्य कहता है कि आपकी कृपा दृष्टि हम पर हमेशा रहे ।

निष्कर्ष

ग़ज़लों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता ही कि डॉ. कुँअर बेचैन के ग़ज़लो में लौकिक और अलौकिक प्रेम को पर्याप्त स्थान प्राप्त हुआ है । अलौकिक प्रेम से अधिक लौकिक प्रेम का वर्णन ज्यादा मात्रा में हुआ है । प्रेम की विभिन्न दशाओं, विविध व्यवस्थाओं का बड़ा मौलिक चित्रण हुआ है । अलौकिक प्रेम के चित्रण में कुँअर बेचैन जी ने आत्मा की परमात्मा से मिलन की व्याकुलता, परमात्मा के प्रति जिज्ञासा, संसार की नश्वरता,

विरहावस्था, संयोग पक्ष और वियोग पक्ष, मोह, माया आदि का मार्मिक चित्रण किया हैं । कुँअर बेचैन ने प्रेमाभिव्यक्ति में प्रेम को सकारात्मक रूप से स्वीकार किया है । प्रेम मनुष्य जगत की जीवनदायिनी शक्ति है । इस प्रकार कुँअर बेचैन ने प्रेम के लौकिक और अलौकिक रूप को स्वाभाविक रूप से चित्रित किया है । वे निःसन्देह प्रेमाभिव्यक्ति में सफल रहे हैं ।

संदर्भ सूची–

1. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, ‘हिंदी ग़ज़ल उद्‌भव और विकास’, सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987, पृ. क्र. 367
2. वहीं, पृ.क्र. 369
3. वहीं, पृ. क्र. 371
4. दुर्गेश नन्दिनी, ‘भारतीय काव्यशास्त्र में हिंदी ग़ज़ल की संकल्पना’, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी,नई दिल्ली, प्र.सं. 2006 पृ. क्र. 13
5. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, ‘हिंदी ग़ज़ल उद्‌भव और विकास’, सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ. क्र. 22
6. डॉ. विनय वाईकर, ‘ग़ज़ल दर्पण’, मंगेश प्रकाशन नवापुर, प्र. सं. 2002 पृ. क्र. 5
7. सुर्यप्रकाश शर्मा, ‘ग़ज़ल एक यात्रा’, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, प्र. स. 1988, पृ. क्र.2
8. रूद्र काशिकैय, ग़ज़लिका, ‘सावित्री साहित्य सदन’, वाराणसी, प्र. सं. 1955, पृ. क्र. 3
9. मौलाना हाली, ‘मुकद्‌दमा–ए–शेर–ओ–शायरी’, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.स. पृ. क्र.97
10. फिराक गोरखपुरी, ‘उर्दू भाषा और साहित्य’, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, प्र. सं. 1979 पृ. क्र. 351
11. रामनरेश त्रिपाठी , ‘उर्दू जबान का संक्षिप्त इतिहास’, हिंदी मंदिर, प्रयाग, प्र. सं. 1940
12. मौलाना हाली, ‘मुकद्‌दमा–ए–शेर–ओ–शायरी’, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.सं. 1967, पृ. क्र. 17
13. चानन गोविंदपुरी, ‘ग़ज़ल : एक अध्ययन’, सी.आर. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्र.सं., 1980 पृ. क्र. 34
14. डॉ. नरेश, ‘आधुनिक हिंदी कविता में उर्दू के तत्व’, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1969 पृ. क्र.57

15. डॉ.नरेंद्र वशिष्ठ, 'शमशेर की कविता', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.स.1980, पृ. क्र. 57

16. सरदार मुजावर, संपा., 'हिंदी ग़ज़ल : ग़ज़लकारों की नजर में', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2001, पृ.क्र. 26

17. गिरिराजशरण अग्रवाल, संपा., 'हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें', डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, प्र.सं.1982, पृ. क्र. 11

18. अनूप, वशिष्ठ, 'हिंदी ग़ज़ल का स्वरुप और महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्र.सं. 2006, पृ. क्र. 26

19. सरदार मुजावर,संपा., 'हिंदी ग़ज़ल : ग़ज़लकारों की नजरों में', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. पृ. क्र. 31

20. अरुण कुमार, 'अन्तर्भाषित विनिमय और हिंदी ग़ज़ल', अप्रकाशित शोधप्रबंध, का.हि.वि.वि, 1991, पृ.क्र. 17

21. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल : उद्‌भव और विकास', सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1987, पृ.क्र. 362

22. कालिकाप्रसाद, संपा., ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी तृ.सं.1986 पृ.क्र.362

23. मुहम्मद मुस्तफा खाँ, संपा., 'मद्‌दाह' 'उर्दु हिन्दी शब्दकोश' (उप्र) प्र.स. 1959 पृ.क्र.177

24. नवलजी नालंदा, संपा., 'विशाल शब्द सागर', दिल्ही प्रथम सं. 2007 पृ.क्र.303

25. श्रीपाद जोशी, संपा., 'उर्दु मराठी शब्दकोश', महाराष्ट्र राज्य साहित्य एवं संस्कृति मंडल, मुंबई प्रथम सं. 1968 पृ.क्र 113

26 .संपा. धिरेन्द्र वर्मा 'हिंदी साहित्य कोश', ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी द्वितिय.सं.1985, पृ.क्र.216

27. J.A.Cuddon,Edt., A Dictonary of Literary Terms, Andre Deutsch Limited, London, F.E.1977, Page.no. 281

28. Alex Preminger, Edt., 'Princeton Encyclopedia of Poetry and Poeties', Princeton University Press, Princeton New Jersey, F.E.1972, Page.no. 323
29. C.T. Onions, Edt., 'The shorter Oxford English Dictonary', Oxford University Press, Amon House London, F.E.1972, Page. no. 790.
30. शून्य पालनपुरी, 'अरुज', सुमन प्रकाशन, मुंबई, प्र.सं. 1968, पृ.क्र. 15
31. मृदुला अरुण,'सफर बाकी है', ज्ञानभारती प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1192, पृ.क्र. 37
32. फिराक गोरखपुरी,'गुले नग्मा', सरस्वती सदन, हरदोई, प्र.स. 1992, पृ.क्र. 103
33. मुहम्मद मुस्तफा खाँ,संपा., 'उर्दू–हिंदी शब्दकोश', उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, सप्तम सं.1992, पृ. क्र. 470
34. आर. पी. घायल,'लपटों के दरमिया', सरोज प्रकाशन, पटना, प्र.स. 2004, पृ.क्र. 19
35. डॉ. नरेश,'ग़ज़ल शिल्प और संरचना', हरियाणा साहित्य अकादमी, चंड़ीगढ़, प्र.सं. 1991,पृ.क्र. 26
36. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' , प्रगीत प्रकाशन, गाज़ियाबाद, प्र.सं. 1983, पृ.क्र. 11
37. फिराक गोरखपुरी,'उर्दू भाषा और साहित्य', उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, प्र.सं.1979,पृ. क्र. 347
38. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, 'मौसम बदल गया कितना', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1999, पृ. क्र. 33
39. डॉ. विनय वाईकर,संपा., ग़ज़ल दर्पण, अमित प्रकाशन, नागपुर,प्र.सं.1983 पृ.क्र. 243
40. टी.एम.राज, संपा., 'गालिबः संगीत के साँचे में ढली ग़ज़ले', जे.एस.प्रकाशन, चंडीगढ़, प्र.सं.30
41. डॉ. साएमा बानो, संपा.,'समकालीन हिंदी ग़ज़ल' पहचान और कला प्रकाशन, वाराणसी, प्र.स. 2013,पृ.क्र. 38

42. मौलाना हाली, ‘मुकद्दमा ए–शेर–ओ–शायरी’, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.सं. 1967, पृ.क्र. 108.

43. मौलाना हाली, ‘मुकद्दमा ए –शेर –ओ –शायरी’, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली प्र.स.1967 पृ.क्र.107

44. साहिर लुधियानवी, ‘तलखिया’, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्र.स.1974, पृ.क्र.130

45. निश्चर खान ‘काही ग़ज़ल और उसका व्याकरण’, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र.स. 1999 पृ.क्र.38

46. वही, पृ.क्र.18

47. जानकीप्रसाद शर्मा, ‘उर्दू साहित्य की परंपरा’, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं: 2001, पृ.क्र. 20

48. अली सरदार जाफरी,संपा.,‘दिवाण–ए–गालिब’, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.2017, पृ.क्र.166

49. ज्ञानप्रकाश विवेक, ‘हिन्दी गज़ की विकास यात्रा’, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला, प्र.सं.2010, पृ.क्र.134

50. रुद्र काशिकेय, ‘ग़ज़लिका’, सावित्री साहित्य सदन, वाराणसी, प्र.सं. 1955, पृ.क्र. 72

51. निश्तर खानकाही, ‘गज़ल और उसका व्याकरण’, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.सं.1998, पृ.क्र. 19

52. वहीं, पृ.क्र. 18

53. रुद्र काशिकेय, ‘ग़ज़लिका’, सावित्री साहित्य सदन, वाराणसी, प्र.सं. 1955, पृ.क्र. 21

54. वहीं, पृ.क्र. 21

55. ब्रजरत्नदास, संपा.,भारतेंदु ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्र.सं. 1953 पृ.क्र. 445

56. प्रभाकेश्वर उपाध्याय,संपा., ‘प्रेम घन सर्वस्व’, हिंदी साहित्य संम्मेलन, प्रयाग, प्र.स. 1939, पृ.क्र. 465

57. दैनिक जागरण रजत जयंती अंक, 20 नवबंर 1972पृ.क्र. 111

58. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल : उद्‌भव और विकास', सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1987, पृ.क्र. 181

59. मुसाफिर कुँअर सुखलाल, 'मुसाफिर भजनावली', वैदिक पुस्तकालय, वाराणसी, प्र.स. 1968,पृ.क्र. 20

60. जयशंकर प्रसाद,संपा.,'इन्दुकला', भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र.स. 1930 पृ.क्र. 498

61. निराला, 'बेला', निरुपला प्रकाशन, प्रयाग, प्र.स. 1946, पृ.क्र. 75

62. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल : उद्‌भव और विकास', सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1987, पृ.क्र. 219

63. गिरिराजशरण अग्रवाल, 'हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले', डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, प्र.सं.1982, पृ.क्र. 112

64. बालस्वरूप राही, संपा.,'राही को समझाए कौन', किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.2009, पृ.क्र.35

65. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल : उद्‌भव और विकास', सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987, पृ.क्र. 226

66. त्रिलोचन शास्त्री,'गुलाब और बुलबुल',वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं:1985 पृ.क्र. 69

67. निश्तर खानकाही, 'ग़ज़ल और उसका व्याकरण', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.सं. 1999, पृ. क्र. 141

68. डॉ. कुँअर बेचैन,'शामियाने काँच के' ,प्रगीत प्रकाशन, गाज़ियाबाद,प्र.सं.1983, पृ.क्र. 50

69. चंद्रसेन विराट,'निर्वसनी चाँदनी',लोकचेतना प्रकाशन, जबलपुर, प्र.सं.1970, पृ.क्र. 87.

70.. गोपालदास सक्सेना नीरज, 'नीरज की पाती', हिंदी पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली, प्र.सं. 1992,पृ.क्र. 125

71. कुँअर बेचैन, 'जनगीत नदी पसीने की', अनुभव प्रकाशन गाज़ियाबाद, दिल्ली, प्र. सं. 2005,पृष्ठ–19–20

72. डॉ. रघुनाथ कश्यप, 'डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. स. 2012 पृ.17

73. कुँअर बेचैन, नदी पसीने की 'गीतों से पहले कुछ और भी लेख से', अनुभव प्रकाशन, गाज़ियाबाद प्र. सं. 2005 पृष्ठ 15

74. डॉ. रघुनाथ कश्यप, 'कुँअर बेचैन की .ग़ज़लों का चिंतन पक्ष', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. स. 2012, पृष्ठ 16

75. वही पृ. 15

76. डॉ.अभय खैरनार, 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लें संवेदना और शिल्प', विद्या प्रकाशन कानपुर प्र.स.2012 पृ.246

77. डॉ. कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2004, पृ.61

78. डॉ. रघुनाथ कश्यप, 'डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष', विद्‌या प्रकाशन, कानपुर, प्र. स. 2012 पृ.17

79. डॉ. अंजु भटनागर, 'डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2007 पृ.30

80. डॉ. कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र. सं. 2004, पृ. 41

81. डॉ. कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र. स. 2004, पृ. 110

82. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इंतजारों का', प्रगति प्रकाशन, गाज़ियाबाद. प्र. सं. 1983, पृ. 3

83. डॉ.रघुनाथ कश्यप, 'डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष', विद्‌या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स. 2012, पृ.283

84. डॉ. अभय खैरनार, ‘कुँअर बेचैन की ‘ग़ज़ले संवेदना और शिल्प’, विद्या प्रकाशन, कानपूर प्र. स. 2013 पृ.27
85. डॉ. अंजु भटनागर, ’डॉ. कुँ अर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान’, हिंदी साहित्य निकेतन,बिजनौर. प्र.स. 2007, पृ.31
86. वही पृ. 31
87. वही पृ. 32
88. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, ‘हिंदी ग़ज़ल संदर्भ और सार्थकता’, गिरनार प्रकाशन, गुजरात, प्र.स.1998, पृ. 120
89. डॉ. अंजु भटनागर, ‘डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतिक विधान’, हिंदी साहित्य निकेतन,बिजनौर, प्र.स. 2007, पृ. 35
90. वही. पृ.36
91. डॉ अंजू भटनागर ‘डॉ कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतिक विधान’, हिंदी साहित्य निकेतन,बिजनौर, प्र.स.2007, पृ.36
92. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, ‘हिंदी ग़ज़ल संदर्भ और सार्थकता’, गिरनार प्रकाशन, गुजरात, प्र.स.१९८., पृ. १२०
93. डॉ कुँअर बेचैन, ‘पिन बहुत सारे’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.11
94. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ. रंजना शर्मा, ‘हिंदी नवगीत संदर्भ और सार्थकता बनवीर प्रसाद शमी के लेख से उदधृत’, गिरनार प्रकाशन, गुजरात प्र. स. 1989 पृ 243
95. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘भीतर साँकल, बाहर साँकल’, प्रगीतम प्रकाशन, गाज़ियाबाद, प्र. स. 1983, पृ. 83
96. वही पृ. 41
97. डॉ कुँअर बेचैन, ‘उर्वशी हो तुम’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.66
98. वही. पृ.76
99. वही. पृ. 23

100. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ. रंजना शर्मा, 'हिंदी नवगीत संदर्भ और सार्थकता बनवीर प्रसाद शर्मा के लेख से उदधृत', गिरनार प्रकाशन, गुजरात, प्र.स.1989, पृ.244

101. डॉ कुँअर बेचैन, 'झुलसो मत मोरपंख' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1990, पृ.103

102. वही. पृ.104

103. वही. पृ. 105

104. वही. पृ.101

105. डॉ कुँअर बेचैन, 'एक दीप चौमुखी', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.66 (भूमिका से)

106. डॉ कुँअर बेचैन, 'नदी पसीने की', अनुभव प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2005, पृ.20

107. वही. पृ.25

108. वही पृ. 31

109. डॉ. कुँअर बेचैन, 'दिन दिवंगत हुये', हिंदी साहित्य निकेतन,बिजनौर प्र.स.2005,पृ.31

110. वही. पृ. 19

111. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.6

112. वही पृ. 6

113. वही पृ. 43

114. वही पृ. 42

115. वही पृ. 44

116. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इंतजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1990, पृ.6

117. वही. पृ. 6

118. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इंतजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.60

119. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्स्याँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ. 35

120. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्स्याँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ. 7

121. वही. पृ. 12

122. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्स्याँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ. 32

123. डॉ. कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसूरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990 पृ.5

124. वही पृ. 10

125. वही पृ.38

126. वही पृ.29

127. डॉ. कुँअर बेचैन, 'दीवारों पर दस्तक', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ. 6

128. वही पृ. 7

129. वही पृ.13

130. वही पृ.7

131. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ काग़ज़', अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1990, पृ.8

132. वही पृ. 12

133. वही. पृ. 18

134. वही. पृ. 22

135. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. स. 1990, प्लैप से उद्धृत

136. वही. पृ. 22

137. वही. पृ. 15

138. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड', प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद, प्र. स. 1983, पृ. 15

139. वही. पृ. 9

140. वही. पृ. 12

141. वही. पृ. 19

142. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी', प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद, प्र.स. 1983, पृ. 19

143. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी', प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद, प्र.स. 1983, पृ. 58

144. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो', अमृत प्रकाशन, गाज़ियाबाद, प्र.स. 1983, पृ. 9

145. वही पृ. 7

146. डॉ. कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स 2004, पृ. 144

147. डॉ. कुँअर बेचैन, ' आँधियों धीरे चलो ', अयन प्रकाशन, नई दिल्ली. 1990, पृ. 64

148. डॉ. कुँअर बेचैन 'नदी तु रुक क्यों गई?, प्रगीत प्रकाशन, गाज़ियाबाद, 1996,पृ. 67

149. वही पृ. 67

150. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शब्द एक लालटेन', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स. 1996, पृ. 42

151. डॉ कुँअर बेचैन, 'मरकत द्वीप की नीलमणि' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1996, पृ.42

152. डॉ कुँअर बेचैन, 'ग़ज़ल का व्याकरण', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, 1996, (भूमिका से)

153. दुष्यंन्तकुमार, 'सारिका' स्मृति अंक, नई दिल्ली, पृ.36 मई 1976

154. डॉ.नवाब सादिका असलम,'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल शिल्प और संवेदना','सहर' प्र.स. 1981, पृ.64

155. दुष्यंतकुमार, 'सायें में धूप', रामकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.स.1977, पृ.13

156. डॉ. नवाब सादिका असलम, 'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल शिल्प और संवेदना', प्र.स.1981, पृ.65

157. दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप', रामकृष्ण प्रकाशन, दरियागँज, नई दिल्ली, प्र.स.1976, पृ.49

158. वही पृ.30

159. डॉ. शेरजंग गर्ग –'ग़ज़ले ही ग़ज़लें', सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स. 1977, पृ.79

160. बेबस श्याम, 'महलों में कैद रोशनी' इंदू प्रकाशन, अलीगढ़, प्र.स.1983

161. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल संपादक, 'हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले' सामायिक प्रकाशन, दरियागँज, नई दिल्ली, प्र.स.1980, पृ.158

162. जिगर मुरादाबादी सं प्रकाशपंडित, 'उर्दू ग़ज़ल', हिंदी पॉकेट बुक, दिल्ली, प्र.स.1976, पृ.30

163. जहीर कुरेशी, 'एक टुकडा धूप', इन्दप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1979, पृ.16

164. दुष्यंतकुमार, 'साये में धूप', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1980, पृ.23

165. श्री.अनिल 'असिम' के काव्यसंग्रह 'मरूथल में झील' की कुँअर बेचैन कृत भूमिका से उद्धृत प्रथम संस्करण, 1 जुलाई 1995

166. डॉ. सुधिर पालीवाल, 'सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़ले', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.33

167. डॉ. सुधिर पालीवाल, 'सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़ले', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.165

168. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.75

169. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल : उद्भव और विकास' सामायिक प्रकाशन, दरियागँज, नई दिल्ली, प्र.स.1987, पृ.233

170. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983 पृ.50

171. डॉ. सुधिर पालीवाल, 'सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़ले', अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली प्र.स.2010, पृ.165

172. डॉ. अनिलकुमार शर्मा, 'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल डी.गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र.स.2009, पृष्ठ 39

173. दुष्यन्त कुमार, 'साये में धूपः', रामकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली प्र.स.1976, पृ.13

174. वही पृ.18

175. डॉ. कुँअर बेचैन 'शामियाने कांचे के'(भूमिका से), प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद उ.प्र. प्र.स.1983 पृ.29

176. डॉ.अनंतराम मिश्र 'अनंत',संपा.,'विराट विमर्श' लोकवाणी संस्थान, दिल्ली, प्र.स.2004, पृ.181

177. वही पृ.125

178. चंद्रसेन विराट , 'हमने कठिण समय देखा है', दिशा प्रकाशन, त्रिनगट, दिल्ली, प्र.स.2002, पृ.45

179. गोपालदास सक्सेना 'नीरज', 'नीरज की पाती' हिंदी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्र.स.1992 पृ.125

180. गोपालकृष्ण कौल, संपा., 'ग़ज़ल सप्तक', सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1991 पृ.110

181. रामावतार त्यागी, 'नया जमाना नयी ग़ज़ले', सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स.1987, पृ.191

182. रामावतार त्यागी, लहू के चंद कतरे, सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स.1987, पृ. 11

183. अवधनारायण मुद्गल, 'सारिका', 16 अगस्त 1980, पृ.47

184. जहीर कुरेशी, 'चाँदनी का दुःख', पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1986, पृ.18

185. वही, पृ.22

186. जहीर कुरेशी, समंदर ब्याहने आया नहीं है, अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1996, पृ.74

187. गोपालकृष्ण कौल, 'ग़ज़ल सप्तक', सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1991, पृ.90

188. वही, पृ.99

189. ज्ञानप्रकाश विवेक, 'धूप के हस्ताक्षर', प्राक्कथन से, कादाम्बिनी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1989 , पृ.26

190. ज्ञानप्रकाश विवेक, 'धूप के हस्ताक्षर', कादाम्बिनी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1989, पृ.26

191. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, 'सन्नाटे में गूँज', प्रतीभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, प्र.स.1987, पृ.28

192. वही, पृ.34

193. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, 'भीतर शोर बहुत है', हिंदी साहित्य निकेतन, प्र.स. 1995, पृ.34

194. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, संपा., 'नवीनतम हिंदी ग़ज़ले', सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, प्र.स.1989, पृ.97

195. मिश्र रामदरश, 'बाजार को निकले है लोग', विकास पेपर बैक्स, दिल्ली, प्र.स.1986, पृ.54

196. रामदरश मिश्र, 'पेड़ नहीं तो निकले है लोग', विकास पेपर बैक्स, दिल्ली, प्र.स.1986, पृ.32

197. शिव ओम अंबर, 'आराधना अग्नि की' (भूमिका से),असन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.7

198. शिव ओम अंबर, 'सम्भावनाओं का क्षितीज', असन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.37

199. वही पृ.32

200. शिव ओम अंबर, 'आराधना अग्नि की', असन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.36

201. डॉ. देवेश ठाकूर, 'समीचीन : हनुमन्त नायडू की ग़ज़ले', युगान्तर प्रकाशन, शारदा रोड, नई दिल्ली, प्र.स.1973 पृ.22

202. वही पृ.35

203. हनुमन्त नायडू, ‘जलता हुआ सफर’, विश्व भारती प्रकाशन, नागपूर, प्र.स.2003, पृ.21

204. शेरजंग ग़र्ग, ‘गज़लें ही ग़ज़लें’, सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स.1977, पृ.45

205. रोहिताश्व अस्थाना, हिंदी ग़ज़ल उद्‌भव और विकास, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1987, पृ.304

206. मनोहर श्याम जोशी,संपा., ‘साप्ताहिक हिन्दुस्तान’, 29 अगस्त 1978 , पृ.13

207. रामकुमार कृषक, ‘नीम की पतियाँ’, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.स.1984, पृ.20

208. अवधनारायण मुद्‌गल, ‘सारिका’ 8 जुलाई, 1997 ई., नई दिल्ली, पृ.39

209. वही पृ.39

210. अजय प्रसून, ‘नवनीत’, फरवरी, 1980 ई., पृ.39

211. कोमल केदारनाथ, ‘कोहरे से निकलते हुए’, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1975, पृ.65

212. अजय प्रसुन, नवनीत फरवरी 1980 ई., पृ.64

213. अवधकिशोर सक्सेना, ‘वातावरण खराब होता चला’, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, प्र.स. 1991, पृ.93

214. रोहिताश्व अस्थाना, ‘हिंदी ग़ज़ल उद्‌भव और विकास’, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली प्र.स.1980,पृ. 304

215. वही पृ. 309

216. वही पृ.309

217. डॉ. शेरजंग ग़र्ग (संपा.),‘दूसरा ग़ज़ल सप्तक’, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.2006, पृ.53

218. डॉ. सुमेरसिंह ‘शैलेश’, ‘हिंदी ग़ज़ल का विवेचनात्मक अनुशीलन’, नई कहानी प्रकाशन, इलाहाबाद प्र.स.1984, पृ.23

219. संपा वेदप्रकाश अरोडा सिंह धनंजय,‘आजकल’, पटियाला पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 18 मई 1981, पृ.23

220. ‘बैरागी’ बालकवि(संपा.), ‘सारिका’,नई दिल्ली पृ.26

221. संपा विनोद तिवारी, ग़ज़ल विशेषांक, शिवम्, नवबंर 2000, नई दिल्ली पृ.45

222. डॉ. सुमेरसिंह ‘शैलेश’, ‘गीतों के रश्मिद्वार’ राजश्री प्रकाशन, मथुरा प्र.स.1984, पृ.41

223. तारादत्त ‘निर्विरोध’, ‘सारिका’, नई दिल्ली पृ.38

224. डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल (संपा.), ‘हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले’ हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र.स.1982, पृ.146

225. डॉ. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, ‘जयशंकर प्रसाद वस्तु और कला’, नेशनेल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.स.1968, पृ.69

226. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली नई दिल्ली प्र.स.1990, पृ.10

227. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘तो सुबह हे’,अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद , प्र.स.2010, पृ. 45

228. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘महावर इन्तजारों का’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद,. प्र.स.1983, पृ.61

229. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘दीवारों पर दस्तक’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.13

230. डॉ. विमल कुमार, ‘सौन्दर्यशास्त्र के तत्व’, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1999, पृ.195

231. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.53

232. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.53

233. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.53

234. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.41

235. डॉ. बेचैन कुँअर, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.13

236. डॉ. बेचैन कुँअर, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद,. प्र.स.1983, पृ.72

237. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.54

238. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘कोई आवाज देता है’, हिन्दी साहित्य प्रकाशन, निकेतन, बिजनौर प्र.स.2001, पृ.34

239. डॉ. मधुकर खराटे, ‘साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल’, पृ.190

240. डॉ. कुँअर बेचैन,‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987 पृ.58

241. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987 पृ.61

242. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद,प्र.स.1983, पृ.61

243. डॉ.मुहम्मद फरीदुद्दीन, ‘राही मातूम रजा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय विवेचन’, ऋषभचर जैन एवं सन्तनी, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.स.1984, पृ.17.

244. वही, पृ.21

245. Lowie Robert Harcourt, ‘Are we civilized ?’ Brace, New York F.E./ 1929, page. 3

246. श्री शम्भुरत्न त्रिपाठी, ‘समाजशास्त्र के मूलाधार’, ऋषभचर जैन एवं सन्तनी, दरियागंज, नई दिल्ली प्र.स.1984, पृ.103

247. डॉ. कुँअर बेचैन, 'दीवारों पर दस्तक', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990,-पृ.29

248. डॉ. कुँअर बेचैन,'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.91

249. डॉ.मधु खराटे 'हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकार' विद्या प्रकाशन,कानपुर, प्र.स. 2012, पृ.क्र.26

250. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.43

251. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.5

252. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.47

253. डॉ. कुँअर बेचैन,'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.35

254. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.87

255. डॉ. आर.पी. भोसले, 'कुसुम अंसल के हिंदी साहित्य में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर प्र.स.2012, पृ.133

256. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.32

257. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.43

258. जयराम सूर्यवंशी 'हिंदी ग़ज़ल अंतिम दशक' सारंग प्रकाशन, सारनाथ, वाराणसी प्र.स.2017, पृ.क्र 127

259. डॉ. कुँअर बेचैन,'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.61

260. डॉ. कुँअर बेचैन,'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.19

261. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.73

262. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.27

263. डॉ. कुँअर बेचैन,‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.66

264. कामिनी कामायनी भारतीय जीवन मूल्य, ज्ञानगंगा, चावडी बाजार, दिल्ली ,प्र.स.2001, पृ.7

265. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.35

266. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.48

267. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.52

268. प्रतिमा सक्सेना ‘आधुनिक हिंदी ग़ज़ल और आधुनिकता बोध’, पृ.158

269. डॉ. जयराम सुर्यवंशी ‘हिंदी गज़ल : अंतिम दशक’ सारंग प्रकाशन, सारनाथ वाराणसी, प्र.स.2017 पृ.122

270. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.70

271. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँगन की अलगनी’ प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.35

272. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.61

273. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.61

274. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद,. प्र.स.1983, पृ.49

275. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.45

276. डॉ. अंजनी कुमार दुबे, ‘समकालिन कविता के विविध आयाम’, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली प्र.स.1996, पृ.109

277. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.63

278. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.१९९०, पृ.25

279. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.१९९०, पृ.42

280. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.39

281. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘आग पर कंदील’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.92

282. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.63

283. डॉ.बी.एफ्.शेख ‘समकालिन हिन्दी कविता और कवि’ चन्द्रलोक, प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2011, पृ.28-29

284. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.35

285. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.64

286. डॉ.अनिलकुमार शर्मा ‘साठोत्तरी हिन्दी गज़ल डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान’, हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर प्र.स.2009 पृ.90

287. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.86

288. डॉ. कुँअर बेचैन,‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.57

289. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.42

290. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘महावर इन्तजारों का’, प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.83

291. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.57

292. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.41

293. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.45

294. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.58

295. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.66

296. डॉ. कुँअर बेचैन,'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.19

297. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.66

298. डॉ.अनिलकुमार शर्मा 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान', हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर प्र.स. 2009, पृ.90

299. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.70

300. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.23

301. डॉ.यतिंद्र तिवारी, संपा., 'नवे दशक की हिंदी कविता', साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.1989, पृ.37

302. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.56

303. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.67

304. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.63

305. डॉ.भावना कुँअर 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, द्वि.सं. 2009, पृ.क्र.111

306. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली प्र.स.1990, पृ.13

307. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली प्र.स.1990, पृ.16

308. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली प्र.स.1990, पृ.38

309. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.9

310. डॉ.मधु खराटे ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’ विद्‌या प्रकाशन, कानपुर,प्र.स. 2011 पृ.80

311. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.65

312. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘महावर इन्तजारों का’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.14

313. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.79

314. डॉ.विद्याशंकर राय, ‘आधुनिक हिंदी उपन्यांस और अजनबीपन’, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, प्र.स 1985, पृ.24

315. डॉ.रघुनाथ कश्यप ‘कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष’ विद्‌या प्रकाशन, प्र.स.2012,पृ.91

316. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘आग पर कंदील’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.17

317. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘आग पर कंदील’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.62

318. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.19

319. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.39

320. श्री. गणेश अष्टेकर ‘दुष्यंतः रचनाँए और रचनाकार’, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र.स.1981, पृ.149

321. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘तो सुबह हो’, अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.41

322. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘तो सुबह हो’, अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010,

पृ.73

323. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो', अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010,पृ.32

324. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.83

325. डॉ. मधु खराटे 'दुष्यंत्तोत्तर हिन्दी ग़ज़ल', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स. 2013, पृ.20

326. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.१९९०, पृ.29

327. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.47

328. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.87

329. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.18

330. डॉ.अविनाश कासांडे 'ग़ज़लकार दुष्यन्त कुमार', समता प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2010,पृ.47

331. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज',अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.19

332. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010,पृ.51

333. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.49

334. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.23

335. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.39

336. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.63

337. डॉ. मधु खराटे 'हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकार' विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2012, पृ.55

338. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.65

339. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.23

340. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.62

341. डॉ.अभय खैरनार 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लें संवेदना और शिल्प', प्र.स.2012,पृ.88

342. डॉ.कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसुरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.75

343. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.13

344. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.43

345. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.25

346. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.51

347. डॉ.आर.पी. भोसले 'कुसुम अंसल के हिंदी साहित्य में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम', पूजा पब्लिकेशन, कानपुर,प्र.स.2012, पृ.41

348. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,पृ.87

349. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.92

350. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.71

351. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.70

352. डॉ. अनिल कुमार शर्मा 'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान' हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2009 पृ.104

353. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.74

354. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.52

355. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.70

356. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ. 42

357. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.19

358. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.56

359. डॉ.आर.पी.भोसले. 'कुसुम अंसल के हिंदी साहित्य में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम' पूजा पब्लिकेशन, कानपुर, प्र.स.2012, पृ.68

360. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.38

361. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.56

362. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.62

363. डॉ.रघुनाथ कश्यप 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष' विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2012, पृ.95

364. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.72

365. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.37

366. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.19

367. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.18

368. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो',अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010,पृ.70

369. डॉ. कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.22

370. डॉ.धीरेन्द्र शुक्ल, 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी एकांकी' (सामाजिक संदर्भो की जाँच पडताल) साहित्य रत्नालय, कानपुर, प्र.स.2000, पृ.154

371. डॉ. अंजनी कुमार दुबे, 'समकालिन कविता के विविध आयाम',-पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली प्र.स.1996, पृ. 118

372. डॉ.मधु खराटे, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल,' विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.1999, पृ. 104

373. 'सुलभ इंडिया', नयी दिल्ली, अप्रैल 1987,पृ. 17, 18

374. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड़', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.34

375. डॉ.जे.पी.गंगवार, 'हिंदी कविता में ग़ज़ल : संवेदना और शिल्प', प्रकाश बुक डिपो, बरेली प्र.स.1991, पृ. 98

376. डॉ रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास' सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1987, -पृ. 233

377. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, .प्र.स.1983, पृ. 50

378. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 57

379. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 61

380. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो,'अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2001, पृ.92

381. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 44

382. नवभारत टाईम्स, नई दिल्ली, 11 अक्तूबर 1981, पृ.4

383. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड़,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.19

384. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाश, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 64
385. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक,' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, -पृ. 29
386. डॉ.कुँअर बेचैन 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 55
387. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो,'अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स. 2001, पृ.36
388. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो,'अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स. 2001, पृ.18
389. डॉ.कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.17
390. डॉ. अनिल कुमार शर्मा, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल : डॉ गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान' हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2009, पृ.143
391. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 43
392. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.68
393. 'नईं दुनियाँ' दिपावली विशेषांक,-दिसम्बर 1999, पृ.251
394. डॉ.एस.गंभीर, 'साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना', विदयाविहार प्रकाशन, गाँधीनगर, कानपुर, प्र.स.1992, पृ.66
395. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 55
396. डॉ.कुँअर बेचैन,'नाव बनता हुआ कागज,' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990,-पृ. 68
397. डॉ.कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र. स. 1983, पृ. 28
398. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 52
399. डॉ.मधु खराटे, 'दुष्यंतोत्तर हिन्दी ग़ज़ल' विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2013, पृ.39
400. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983,

पृ. 85
401. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आग पर कन्दील,' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, -पृ.74
402. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990,-पृ. 48
403. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 43
404. डॉ.कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.81
405. डॉ.मधु खराटे, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल' विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, पृ.108
406. डॉ.कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.62
407. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990 पृ.61
408. डॉ.मधु खराटे, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल' विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, पृ.108
409. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आग पर कन्दील,' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.64
410. डॉ.कुँअर बेचैन,'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990,-पृ.56
411. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, -पृ.58
412. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो,'अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2001, पृ.8
413. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड़,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, -पृ.34
414. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक,' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.20
415. डॉ किशोर, 'रचनाकार दुष्यंत कुमार' विनय प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2007, पृ.117

416. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 57
417. डॉ.कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की,'प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.18
418. डॉ.कुँअर बेचैन 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 44
419. डॉ.कुँअर बेचैन 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 49
420. डॉ. अंजनी कुमार दुबे, 'समकालिन कविता के विविध आयाम', पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1996, -पृ. 133, 134
421. डॉ.कुँअर बेचैन ,'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 44
422. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 498
423. ओमप्रकाश वाल्मिकी, 'मुख्यधारा और दलित साहित्य', सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.121
424. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 75
425. डॉ.कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 23
426. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990,-पृ. 92
427. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ. 23
428. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, -पृ..23
429. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, -पृ. 23
430. डॉ.मधु खराटे 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल' विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, पृ. 109
431. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आग पर कन्दील,' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, -पृ.85

432. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक,’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.37

433. डॉ.मधु खराटे ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’, विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, पृ.108

434. डॉ.कुँअर बेचैन ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 69

435. डॉ.कुँअर बेचैन ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 63

436. डॉ.कुँअर बेचैन ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.61

437. डॉ.कुँअर बेचैन ‘शामियाने काँच के’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.79

438. डॉ.एस गंभीर,‘साठोत्तरी हिंदी काव्य में राजनीतिक चेतना‘, विद्या विहार प्रकाशन, गाँधीनगर, कानपूर, प्र.स. 1992, -पृ.28

439. डॉ.मधु खराटे ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’ विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, -पृ.103

440. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘तो सुबह हो,’अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2001, पृ.32

441. डॉ.मधु खराटे ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’ विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, पृ.117

442. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड़,’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.43

443. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड़,’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.43

444. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज,’अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, -पृ.68

445. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड़,’ प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.9

446. डॉ.कुँअर बेचैन ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 86

447. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘कोई आवाज देता है’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.24

448. वनयसिंह, ‘दुष्यंत कुमार और नई कविता’, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, प्र.स.2000, पृ.90

449. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘कोई आवाज देता है’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.26

450. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.27
451. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.29
452. डॉ.कुँअर बेचैन,'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.19
453. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.18
454. डॉ.कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.85
455. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आग पर कन्दील,'अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.17
456. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आग पर कन्दील,' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.62
457. डॉ.मधु खराटे, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल', विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, पृ.114
458. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 85
459. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.54
460. डॉ.गिरीश ज. त्रिवेदी, 'दुष्यंत कुमार व्यक्तित्व एवं कृतित्व', शान्ति प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.2003, पृ.135
461. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद प्र.स.1983, पृ. 67
462.डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 48
463.. डॉ.कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.27
464. डॉ.कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का,' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.14

465. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.34

466. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.40

467. डॉ किशोर, 'रचनाकार दुष्यंत कुमार', विनय प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2007, पृ.118

468. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.49

469. डॉ.कुँअर बेचैन,'कोई आवाज देता है',अयन प्रकाशन,महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.57

470. डॉ.मधु खराटे, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल', विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.2002, पृ.114

471. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.60

472. डॉ.कुँअर बेचैन,'कोई आवाज देता है', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.61

473. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, -पृ.83

474. डॉ.कुँअर बेचैन,'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 58

475. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.94

476. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 43

477. डॉ.कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो', अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2001, पृ.36

478. डॉ.कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983 पृ. 50

479. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990 पृ.38

480. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँगन की अलगनी’, प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.11
481. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 49
482. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 49
483. डॉ.मधुकर खराटे, ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’ विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.1999, पृ.190
484 डॉ. कुँअर बेचैन, ‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987 पृ.62
485. डॉ.गिरीराजशरण अग्रवाल, संपा., ‘हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले’ हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1982 पृ. 47
486. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.61
487. दैनिक ‘लोकमत समाचार’, दि.29 जानेवारी,2012.
488. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.61
489. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘आँधियों में पेड’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.11
490. डॉ.मधुकर खराटे, ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.1999, पृ.181
491. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘शामियाने काँच के’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ. 72
492. डॉ. बेचैन कुँअर, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली ,नई दिल्ली प्र.स.1990, पृ.54
493. डॉ. कुँअर भावना, ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2000, पृ. 111
494. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.15

495. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.35
496. डॉ. कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.34
497. डॉ. कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.6
498. डॉ. कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.16
499. डॉ.रघुनाथ कश्यप, 'कुँअर बेचैन की गजलों का चिंतन पक्ष', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2012, पृ.224
500. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.40
501. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.72
502. डॉ. उद्धव महाजन, 'थोडा–सा–आसमान', बिस्मिल आमैक साहित्य प्रचार योजना, 2/3 गांधी रोड, पुणे, प्र.स.1997, पृ.16
503. संपा. पुष्पलाल सिंह, 'कबीर ग्रंथावली', अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स. 2014, पृ. 213
504. स्वामी रामतीर्थ, 'हार्ट ऑफ लिविंग', सरस्वती सदन, हरदोई, प्र.स.1966, पृ.130
505. रामचंद्र शुक्ल, 'चिंतामणी (भाग–1)', इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र.स.1970, पृ.48
506. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिन्दी ग़ज़ल: उद्‌भव और विकास', सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987, पृ.23
507. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, 'ग़ज़ल और उसका व्याकरण', निश्तर खानकाही, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1999, पृ.13-14

508. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.11
509. डॉ. मधु खराटे, ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2002, पृ.126
510. डॉ.नगेन्द्र, ‘बिचार और विवेचन’, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्र.स.1949 पृ.21
511. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.21
512. राकेश सूद, संपा.,‘साधना–पथ’ डायमण्ड मॅग्जीन लिमिटेड, नई दिल्ली, (प्रेम विशेषांक), मई 2017, पृ.30
513. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, ‘निश्तर खानकाही’, गज़ल और उसका व्याकरण, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1999, पृ.19
514. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, ‘निश्तर खानकाही’, गज़ल और उसका व्याकरण, हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर, प्र.स.1982, पृ.17
515. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, ‘हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले’, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1982, पृ.113
516. दुष्यंत कुमार, ‘साये में धूप’, रामकृष्ण प्रकाशन, आंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.स.1976, पृ.46
517. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, ‘हिन्दी ग़ज़ल उद्भव और विकास’, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1987, पृ.201
518. चंद्रसेन विराट, ‘बूँद-बूँद पारा’, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स.1986, पृ.121
519. डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल,संपा., ‘हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले’, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1982, पृ.98

520. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, संपा., ‘हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले’, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1982, पृ.32

521. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल,संपा., ‘हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले’, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1982, पृ.50

522. डॉ.रोहिताश्व अस्थाना, संपा., ‘बहुरंगी हिन्दी ग़ज़ले’, सुनील साहित्य सदन, दिल्ली, प्र.स.1993, पृ.118

523. जहीर कुरेशी, ‘चाँदनी का दु:ख’, पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, प्र.स.1988, पृ.15

524. डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल, संपा., ‘हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़ले’, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1982, पृ.168

525. डॉ.सविता मिश्र, ‘डॉ.कुँअर बेचैन सृजन के विविध आयाम’, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स. 2012, पृ.86

526. डॉ.अभय खैरनार, ‘डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़ले: सवेदना और शिल्प’, विद्या प्रकाशन, नागपूर, प्र.स.2012, पृ.70

527. डॉ. कुँअर बेचैन,‘महावर इन्तजारों का’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.72

528. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.28

529. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.34

530. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘रस्सियाँ पानी की’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.22

531. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.26

532. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.26

533. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘महावर इन्तजारों का’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.25

534. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘तो सुबह हे’, अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.29

535. डॉ. श्याम सुंदरदास, ‘कबीर ग्रंथावली’, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स.2009, पृ.34

536. रोहिताश्व अस्थाना, ‘हिन्दी ग़ज़ल उद्‌भव और विकास’, सुनिल साहित्य सदन, दिल्ली, प्र.सं.2010, पृ.28

537. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘तो सुबह हे’, अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.21

538. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘दिवारों पर दस्तक’ अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.52

539. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.34

540. डॉ.सुधीर पालीवाल, ‘सौंदर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ.कुअँर बेचैन की ग़ज़ले’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.63

541. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.46

542. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘पत्थर की बाँसुरी’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990,पृ.44

543. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.29

544. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘महावर इन्तजारों का’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.26

545. डॉ. कुँअर बेचैन, ‘महावर इन्तजारों का’, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.11

546. डॉ.कुँअर बेचैन, ‘नाव बनता हुआ कागज’, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.46

547. डॉ.रमा सिंह, 'हिंदी ग़ज़ल नवम दशक', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1996, पृ.37
548. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.31
549. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.14
550. डॉ.कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसुरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.49
551. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.61
552. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.36
553. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.37
554. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.17
555. डॉ.रमा सिंह, 'हिंदी ग़ज़ल नवम दशक', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1996, पृ.37
556. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.22
557 डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.50
558. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.80
559. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.80
560. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास' सुनिल साहित्य सदन, दिल्ली, प्र.स.28
561. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.47
562. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.60
563. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.10
564. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हे', अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.39

565. प्रकाश पंडित, संपा., 'उर्दू के लोकप्रिय शायर जिगर मुरादाबादी' राजपाल एन्ड सन्स, दिल्ली, प्र.स.2011, पृ.56
566. डॉ.कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसुरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.49
567. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.57
568. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.66
569. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.48
570. डॉ.अंजू भटनागर, 'डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2007, पृ.273
571. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.25
572. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.33
573. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हे', अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010,पृ.11
574. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.96
575. डॉ.अंजू भटनागर, 'डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2007, पृ.265
576. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.52
577. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.36
578. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.61
579. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.18
580. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हे', अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.13
581. डॉ.अंजू भटनागर,. 'डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2007, पृ.273
582. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.20

583. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.9
584. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.30
585 डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.37
586. डॉ.अंजू भटनागर, 'डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2007, पृ.26
587. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.19
588. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.55
589. डॉ.कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसुरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.50
590 डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.70
591. रविन्द्र श्रीवास्तव (संपा.), हिंदी सामाजिक संदर्भ', केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, प्र.सं. 1976, पृ.2
592. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.12
593. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.43
594. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.11
595. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी' प्रगती प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.9
596. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.28
597. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.50
598. डॉ.कुँअर बेचैन, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.43

599. डॉ.सुधीर पालीवाल, 'सौंदर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ.कुअँर बेचैन की ग़ज़ले' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.62
600. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.15
601. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स. 1983, पृ.39
602. डॉ.कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.50
603. डॉ.रघुनाथ कश्यप, 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष', विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2012, पृ.212
604. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.59
605. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.15
606. डॉ.कुँअर बेचैन, 'दिवारों पर दस्तक' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.37
607. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.61
608. डॉ.अभय खैरनार, 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लें संवेदना और शिल्प', विद्या प्रकाशन, कानपूर,(उ.प्र.) प्र.स., 2012, पृ. 83
609. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987, पृ.23
610. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हे', अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.101
611. डॉ.कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसुरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.79
612. डॉ.मधु खराटे, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल' विद्या प्रकाशन, कानपूर, प्र.स., 2011, पृ. 83
613. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.32

614. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.34

615. डॉ.कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है' अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स. 1990, पृ.40

616. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हे', अमृत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2010, पृ.8

617. डॉ.अनिलकुमार शर्मा, 'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल डॉ.गिरिराजशरन अग्रवाल का योगदान', हिन्दी साहित्य निकेतन प्र.सं.2009, पृ.253

618. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983, पृ.84

619. डॉ.कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसुरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990, पृ.79

620 डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इन्तजारों का', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स. 1983, पृ.23

पंचम अध्याय
निष्कर्ष और सिफारिशें

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 'डॉ.कुँअर बेचैन के हिन्दी ग़ज़ल साहित्य का अनुशीलन' पर छह अध्यायों का अध्यन करने से यह परिलक्षित होता है कि डॉ.कुँअर बेचैन जी ने ग़ज़ल साहित्य में अपनी ओर से पूरा योगदान दिया है । सैद्धान्तिक एवं विवेचनात्मक रूप से सभी अध्यायों का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्षत: यह स्पष्ट होता है कि ग़ज़ल ने जितनी लोकप्रियता प्राप्त की है उतनी हिन्दी कविता की अन्य विधा ने हिंदी यह सर्वविदित है कि ग़ज़ल आज काव्य की महत्त्वपूर्ण विधा है । ग़ज़ल पर लाखों काव्य–रसिक प्राण न्यौछावर करते है । हिन्दी ग़ज़ल आज के समय में हिन्दी–जगत् में सर्वमान्य होने के साथ अगणित रसिकों की कंठहार बनी है । वर्तमान हिन्दी ग़ज़ल आधुनिक जीवन की वास्तविकता से संघर्षरत एक सफल अभिव्यक्ति की है । ग़ज़ल साहित्य की धरातल पर अपनी सार्थकता की कसौटी पर खरी उतरकर स्थापित हो चुकी है ।

भारतवर्ष में ग़ज़ल की लम्बी एवं उज्ज्वल परंपरा रही है । ग़ज़ल उर्दू शायरी की आत्मा है । ग़ज़ल की विकास का सफर फारसी से शुरू होकर उर्दू में पहुँचकर प्रधान– काव्य विधा के रूप में विराजमान हो गई है । विविध शब्दकोशों में ग़ज़ल को 'प्रेमिका से वार्तालाप', नारियों से प्रेम की बाते करना, प्रियतमा से इश्क की बात करना', 'हुस्न की गुफ्तगू करना', 'औरतों से इश्क की तारीफ' कहा गया है ।

उर्दू–फारसी के समान हिंदी ग़ज़ल की मौजुदगी आदिकाल में भी दिखाई देती है । ग़ज़ल प्रारंभ अमीर खुसरो से ही अत्यंत सीमित रहा है । लेकिन बीज रूप में रही ग़ज़ल भारतेंदु ने पल्लवित की है । भारतेंन्दु हरिशचंद्र को ग़ज़ल ने आकर्षित किया । उनके समकालिन कवियों ने ग़ज़ल विधा में योगदान दिया है । युगप्रर्वतक महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा उनके समकालीन कवियों ने ग़ज़ल–शैली में काव्य लिखा । छायावादी काल में ग़ज़ल की विकास यात्रा जारी रही है । ग़ज़ल का आदर्श रूप 1960 के पश्चात शुरू हुआ दृष्टिगोचर होता है । जिसमें शमशेर, दुष्यंत कुमार, डॉ. कुँअर बेचैन, चंद्रसेन 'विराट', भवानी शंकर, गोपालदास सक्सेना 'नीरज' आदि ने ग़ज़ल क्षेत्र में पदार्पण करके योगदान दिया है । ग़ज़ल के समन्बध में यह मत है कि ग़ज़ल गेय मुक्तक विधा है जिसके अंतर्गत प्रेम की विभिन्न

स्थितियों और परिणामों का प्रभावशाली वर्णन किया है । ग़ज़ल का अपना एक शिल्प–विधान है । इसमें ग़ज़ल के अंग, भाषा, अलंकार विधान, रस परिपाक, प्रतीक विधान, छंद–विधान गेयता, आदि महत्त्वपूर्ण है । अरबी–फारसी तथा उर्दू–के ग़ज़लकारों ने शिल्प–विधान को अत्याधिक महत्व दिया है ।

हिन्दी ग़ज़ल संवेदना की दृष्टि से सब से आगे है । हिन्दी ग़ज़ल में आधुनिक भावबोध, सर्वहारा वर्ग की पीडा, संघर्षशील जीवन आदि विभिन्न संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है । हिन्दी ग़ज़ल में संप्रेषणियता, प्रभोत्पादकता, वर्ण्य विषय की व्यापकता, संक्षिप्तता, मौलिकता, अनुभूति की तीव्रता है । हिन्दी ग़ज़ल आमजन के जीवन से जुड गई है । जीवन के विभिन्न पहलू हिन्दी ग़ज़ल में उद्घाटित हुए है ।

हिन्दी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर दुष्यन्त कुमार के बाद हिन्दी ग़ज़ल को समृद्ध और व्यापक धारा को प्रवाहित करने में डॉ. कुँअर बेचैन का नाम महत्त्वपूर्ण माना जाता है । उनकी ग़ज़लों ने हिंदी साहित्य में अलग पहचान निर्माण की है । उन्होंने जीवन में दु:ख–दर्द का अनुभव किया है । यही दु:ख–दर्द उनकी काव्य की प्रेरणा बनी । बचपन में माता–पिता कृपाछत्र छिन गया । देश विभाजन ने झकझोर दिया । उन्होंने विषम परिस्थितियों से अपने आपको बनाया, स्वयं को सजाया और सँवारा भी । आपने पहली ग़ज़ल उर्दू में लिखी थी ।

डॉ.कुँअर बेचैन की ग़ज़लों की संवेदनाओं पर ध्यान देने से यह दृष्टिपात होता है कि आपने जीवन में बचपन से स्वयं को संभाला हमेशा दु:ख–दर्द और संकटों से संघर्ष करते रहे है । आपने जीवन में गरीबी को महसूस किया है । अपनी अनुभूतियों को जिंदा रखने के लिए ग़ज़लों का आश्रय लिया है । ग़ज़लों में अर्थ की गहराई को अधिक महत्त्व दिया है । साहित्य की विविध विधाओं में रचना करने के बावजूद भी उन्होंने ग़ज़ल को ही पसंदीदा माना है । आपने ग़ज़ल साहित्य में नई सोच, युगीन तथा समसामायिक चिंतन, नए अर्थ, नए संदर्भ स्थापित किए है । आज साहित्य क्षेत्र में सिद्धहस्त ग़ज़लकार के साथ–साथ अच्छे गीतकार, कहानीकार, उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध है । ग़ज़लकार के रूप में ग़ज़ल पर जो प्रेम है वह ‘मरकत द्वीप की नीलमणि’ उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है । उपन्यास का नायक अपनी प्रेमिका को ‘ग़ज़ल’ की उपमा देता है । कुँअर बेचैन का व्यक्तित्व बहुआयामी है । आपने ‘ग़ज़ल का व्याकरण’ पुस्तक लिखकर नव ग़ज़लकारों को मार्गदर्शन किया है । यह

समीक्षात्मक ग्रंथ है । आपने ग़ज़ल रचना प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया है । ग़ज़लों के विदेशी रूप में भारतीयता की आत्मा को प्रतिस्थापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । आप हिंदी साहित्य में विशेषकर हिंदी ग़ज़ल के मर्मज्ञ विद्वान है । आपने तेरह ग़ज़ल संग्रह, सात गीत संग्रह, दो कविता संग्रह, एक उपन्यास और समीक्षात्मक ग्रंथ 'ग़ज़ल का व्याकरण' लिखकर अपनी हिंदी साहित्य में पहचान बनाई है ।

इन ग़ज़ल संकलन में प्रेम के विरहावस्था में बहाएं जानेवाले आँसू भी है साथ-साथ अपनी ग़ज़लों का कथ्य पेट की आग को बनाया है । आज हम देख रहे है कि वर्तमान अर्थव्यवस्था में रोटी के लिए संघर्ष करता हुआ इन्सान जल रहा है । राजनीतिक व्यवस्था के शामियाने तैयार है परंतु उनमें वह सामर्थ्य नहीं जिससे गर्मी और लू में झुलसते हुए इंसान को आग बरसाती हुई सूर्य किरणों की ताप से छूटकारा मिले, वे शीशे के ऐसे शामियाने है जिनसे किरणों की तीव्रता कम होने के बजाय वह अधिक उग्र रूप धारण कर निकलती है और सब को जलाती है । ऐसे शामियाने हारे-थके आदमी की शरण है जो आराम देने के बजाय तकलीफ देते है ।

डॉ. कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल क्षेत्र में सम्पूर्ण योगदान दिया है । आपने ग़ज़ल पर उत्कृष्ट काम किया है । देश-विदेश के अनेक संस्थाओं ने पुरस्कार से सम्मानित किया है । आपको भुतपुर्व 'राष्ट्रपति महामहीम ग्यानी झैलसिंह तथा महामहीम डॉ. शंकरदयाल शर्मा जी के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया है । विविध ग़ज़ल संस्थाओं ने पुरस्कार एवं मानचिह्नों को प्रदान कर गौरवान्वित किया है ।

आप मूलरूप से ग़ज़लकार है । तेरह ग़ज़ल -संग्रह की ग़ज़ल यात्रा के संसार में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । कुँअर बेचैन जी का व्यक्तित्व आकर्षक और बहुआयामी है । आपने हिंदी ग़ज़ल को निश्चित स्वरूप ही नहीं अपितु नई पहचान और नई अस्मिता भी दी है । आप की रचनाओं में ग़ज़ल का सही रूप, शिल्प, मिजाज के साथ हिंदी का रंग है । सचमुच बेचैन जी ग़ज़ल विकास यात्रा के मील के पत्थर है । आपका साहित्य समाज के अंधकार रूपी अज्ञान दूर करने में तथा तत्कालिक अनेक समस्याओं को, ज्वलंत प्रश्नों को उजागर करता है । डॉ. कुँअर बेचैन के व्यक्तित्व में स्नेह और प्रेम, मानवता, दया, करूणा सहृदयता परिपूर्ण रूप से झलकती है । आपके ग़ज़ल संग्रहों में राजनैतिक, सामाजिक

विसंगतियाँ, व्यवस्था विरोध, विद्रुपताएँ, महानगरीय जीवन, देश विभाजन, प्राकृतिक वर्णन,अलगाव वाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, नारी शोषण जैसी समस्याओं को अपनी ग़ज़लों के द्वारा आपने हिंदी के तमाम गज़लकारों के हृदय में स्थान प्राप्त किया है । आपकी ग़ज़ल व्याप्त विभिन्न संवेदनाओं के बिंदुओं का निरीक्षण और परीक्षण कर उसे उजागर तथा प्रकाशित करना और ग़ज़ल में विविध जीवन के आयामों को ढूँढकर प्रस्तुत करना, इस शोध प्रक्रिया का प्रामाणिक हेतु है ।

वास्तव में ग़ज़ल का मूल कथ्य शृंगार ही रहा है । अत: ग़ज़ल साहित्य में प्रेम को व्यापक रूप से विशद किया गया है । शृंगार और प्रेम को उर्दू ग़ज़लकारों ने मुख्य विषय वस्तु मानकर उसकी सशक्त रूप से अभिव्यक्ति की है । डॉ.कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में प्रेम निरूपण, सौंदर्य बोध एवं नारी चित्रण व्यापक किया है । प्रेम और सौंदर्य भाव ही उपेक्षा कहीं भी नहीं हुई है ग़ज़ल के परंपरा के अनुसार विविध प्रेम के रंग और रूपों को अपनी ग़ज़ल का कथ्य बनाने का सशक्त रूप से प्रयास किया है । आपने अपनी ग़ज़लों में प्रेमभाव के अंतर्गत संयोग एवं वियोग को लेकर ग़ज़ल का सृजन किया है । आपने ग़ज़ल के लौकिक पक्ष को महत्व दिया है । प्रेम की विविध स्थिति, अवस्था और दशाओं का मौलिक और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है । प्रेम एक ऐसी स्थिति है जिसे लौकिक प्रेम और भावना को जीवन दायिनी शक्ति माना है । बदलते हुए समाज और जीवनमूल्यों के दौर में डॉ.कुँअर बेचैन जी ग़ज़लों में प्रेम को स्थान प्राप्त हुआ है । अलौकिक प्रेम के चित्रण में आत्मा और परमात्मा का चित्रण के द्वारा आत्मा परमात्मा मिलन की अकुलाहट को उजागर किया है । वियोग शृंगार के अन्तर्गत आशा, निराशा, स्मृति, सुनापन, याचना, त्याग, वेदना आदि के माध्यम से ग़ज़लों को व्यापकता प्राप्त हुई है ।

अलौकिक प्रेम में ग़ज़लकार परमात्मा से एकरूप होना चाहता है । इस जगत में परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ और उदारता का रूप दिखाई देता है । वह संसार के कण–कण में मौजूद है । वह मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, गिरजाघर में नहीं है । जहाँ भी श्रद्धा से, विनम्रता से सर झुकाया वहाँ उसके दर्शन मिलते है । हमारे शरीर के अंग–अंग में व्याप्त है । परमात्मा के लिए हमारे दिल में उसके प्रति असीम श्रद्धा अटूट विश्वास और अगाध प्रेम की जरूरत है । डॉ. कुँअर बेचैन का मन अलौकिक प्रेम से अधिक लौकिक प्रेम में केवल वियोगपक्ष में उभारा है ।

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़लों में बहुत बड़ी व्यापकता और मार्मिकता के साथ समाज के विविध पहलू को उद्घाटित किया है । सामाजिक जीवन में जीवन–मूल्यों का पतन हो रहा है । संस्कृति की आड़ में भारतीय समाज में सामाजिक संदर्भ स्वार्थ का तक ही सीमित हो चुके है । भारत के संविधान में भारत की गणतंत्र प्रदान किया था जिसमें समाज के सभी वर्गों के लोगों को समान रूप में विकसित होने का हक प्राप्त हो। संविधान में अभिव्यक्ति स्वांतत्र्य, आर्थिक और सामाजिक समता, धर्मनिरपेक्षता, जातिवाद का उन्मूलन आदि की व्यवस्था की है । संविधान के कारण ही नारी को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का मजबूत कवच प्राप्त हुआ है । बालविवाह जैसी रूढि परंपरा पर रोक लगाकर सामाजिक स्वास्थ की ओर ध्यान देकर सामाजिक सुरक्षा प्रदान की है । परंतु यह सारे प्रयत्न केवल पुस्तकों तक मर्यादित है । वर्तमान समय में नारी का मानसिक और शारीरिक शोषण लगातार जारी है । आज अनास्था, अविश्वास, अराजकता, अन्याय, गरीबी, शोषण दिन–ब–दिन बढता ही जा रहा है । डॉ. कुँअर बेचैन सामाजिक विकास के बीच आने वाले तत्वों से संघर्ष करने की प्रेरणा देते है । इस दृष्टि से ग़ज़लकारने तत्कालीन ज्वलंत समस्याओं से संवेदना के स्तर पर संघर्ष किया

है ।

आधुनिक युग में युद्ध, आंतकवाद, अलगाववाद, हिंसाचार मानव की बहुत बडी समस्या बन गई है । दुनिया तीसरे महायुद्ध के कगार पर खडी है । भ्रष्टाचार ने उग्र रूप धारण किया है । भ्रष्टाचार ने देश को बरबाद किया है । ऐसी विषम व्यवस्था को दिखाने का प्रयास डॉ.कुँअर बेचैन ने प्रामाणिकता से किया है । समाज में मानवी मूल्यों का ऱ्हास हो रहा है । वर्तमान समय में जाति के नामपर, धर्म के नामपर गुण्डागर्दी हो रही है । सामाजिक वातावरण बिगड़ गया है । आज देश में अफसरशाही, कालाबाजारी, मिलावट, बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, आंतकवाद, साम्प्रदायिक हिंसाचार, बलात्कार जैसी अनेक समस्या ने व्यापक रूप धारण किया है । डॉ. कुँअर बेचैन इन सारी बातों से अच्छी तरह से वाकीब है । आपने जो देखा, जो सहा है, अनुभव किया है उसी बलबुते पर अभिव्यक्त किया है । आमजन सदैव संघर्ष करता आ रहा है उसी आमजन के समर्थन में और शोषकों के विरोध में डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी कलम चलाई है । आज परिवार से लेकर समाज तक आपसी रिश्तें ठंडे बनते जा

रहे है । ग़ज़लकार आपसी रिश्तों को जोडकर उसे मजबूत बनाना चाहते है । आप राष्ट्रीय एकता बनाए रखना चाहते है ।

सत्ता प्राप्त होने तक ही हमारी राजनीति सीमित है । कानून के रखवाले कानून को तोड रहे है । चुनावी मौसम में बरसाती मेंढको जैसे संसद और सभाओं में सुखद आश्वासन देकर पाँच वर्षों के लिए चले जाते है । अगले चुनाव में वोट की राजनीति के लिए प्रकट होते है । स्वार्थी एवं भ्रष्ट राजनीति की वजह से देश का भविष्य खतरे में जान पडता है । राजनीति में चारों तरफ भ्रष्टाचार तथा घुसखोरी का माहौल तैयार हो गया है । इसमें आदमी का शोषण होता है । धनवान लोग राजनीतिक हथकण्डों का इस्तेमाल करके देश में दंगा –फसाद करवा रहे है । आज की राजनीति में लूट–खसोट बडे पैमाने में हो रही है । साहित्य और राजनीति का सम्बन्ध है ।अतः राजनीति स्पष्ट रूप से साहित्यिक विधाओं के द्वारा उजागर होकर सामने आती है । राजनेताओं की पदलोलुपता, स्वार्थपरता और उद्देश्यहीनता ने आम आदमी के मन में राजनीति के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण निर्माण हो रहा है । जन सेवा का भाव नष्ट हो गया है । अपने–अपने स्वार्थ को लेकर हर एक अपने हक मांग रहे है । कर्तव्य से मुँह मोड लेते है । पहले एक उक्ति प्रचलित थी–'यथा राजा तथा प्रजा' यही बात राजनीति से लेकर समाज तक दिखाई दे रही है ।

डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से वर्तमान की राजनीति, फरेब, दिखावटीपन, पदलोलूपता को दर्शाने का प्रयास किया है । आज जनता इसे पहचानने लगी है । हिंदी ग़ज़लकारों ने राजनीति को पहचानकर उसके नेता अपने आदर्शों से, नीतिमुल्यों से कैसे हटते गए है इसे दिखाकर उनकी आँखें खोलने की चेष्टा की है । राजनेताओं की कूटनीतियों को आम आदमी तक लाने का प्रयास किया है । राजनीतिक बोध ग़ज़लकारों का मुख्य कथ्य रहा है । जिसमें राजनीतिक व्यवस्था और भ्रष्टनीति पर कडा तमाचा लगाया है । स्वातंत्र्योत्तर काल से आज तक व्यापक स्तर पर डॉ. कुँअर बेचैन जी ने अपने ग़ज़लों में विचार किया है ।

डॉ. कुँअर बेचैन जी ने राष्ट्रीय अखण्डता एवं सामंजस्य को अपने ग़ज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । देश के उत्थान की दृष्टि से एकता और सामंजस्य महत्त्वपूर्ण विषय है । देश के प्रत्येक नागरिक में देश के प्रति–प्रेम भावना तथा आस्था होना अत्यावश्क है ।

संप्रदाय, जाति, वर्ग, वर्ण से बढकर राष्ट्र होता है । डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में राष्ट्रीयता, एकता और सामंजस्य का स्वर मुखरित कर इन भावों का समर्थन किया है । समसामयिक संवेदनाओं के संदर्भ में बेचैन जी ने कहा है कि प्रतिभाओं का सम्मान होने बजाय अनादर हो रहा है । आतंकवाद की गतिविधियाँ बढ रही है । मानवी–मूल्यों का पतन हो रहा है । पारिवारिक आपसी रिश्तें टूटते जा रह है । हमारी संस्कृति और सभ्यता को भूल चुके है । पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिन–प्रति–दिन बढता जा रहा है । नारी प्रगति के पथ पर भले ही अग्रसर हो पुरूष व्यवस्था से उसे सम्मान नहीं मिल पा रहा है । आज भी उसपर अन्याय––अत्याचार हो रहे है । उसे दहेज के नाम पर प्रताडित किया जाता है । इस प्रकार कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में अनेकानेक संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है । डॉ. कुँअर बेचैन ने धार्मिक प्रवृत्तियों के कारण उत्पन्न होने वाले अराजकता को विशद किया है । समाज, देश में होने वाले दंगा–फसाद, साम्प्रदायिक–हिंसा आदि तनाव से ग्रस्त परिस्थितियों का वर्णन करके पर्दाफाश करने का प्रयास किया है । आज के समय में राजनेता धर्म का आधार लेकर राजनीतिक खिलवाड करके अपनी रोटियाँ सेंकते है । साम्प्रदायिकता के नाम पर देश का माहौल खराब किया जाता है । कुँअर बेचैन ने विषम परिस्थितियों को विशद करते हुए साम्प्रदायिक सद्भाव, धार्मिक बोध का वास्तविक वर्णन करने का प्रामाणिक प्रयत्न किया है ।

डॉ. कुँअर बेचैन जी के ग़ज़लों में शिल्प पक्ष का योगदान भी महत्त्वपूर्ण है । शिल्पविधान की दृष्टि से आपकी ग़ज़ले लोकप्रिय बन गई है । उनकी ग़ज़लों की भाषा सहज और कथ्य के अनुकूल है । शब्द चयन और प्रयोग उत्तम और लाजबाब बन गया है । कुँअर बेचैन की ग़ज़ले रोचक प्रभावशाली और प्रेरक भी है । बेचैन की ग़ज़लों की विशेषता यह भी है कि पाठक ग़ज़ल पढ़कर सोचने के लिए मजबूर होता है और साथ ही स्वयं बैचेन हो जाता है । ग़ज़ल के अंग–शेर, मतला, मकता, काफिया, रदीफ आदि का आपने सफलता के साथ प्रयोग किया है । भाषा पर कुँअर बेचैन का जबरदस्त अधिकार है । भाषा का उच्चतम रूप है वह भी विषयानुकूल है । डॉ.कुँअर बेचैन जी की ग़ज़ल की भाषा स्वाभाविक और प्रभावशाली है । उसमें प्रौढता, प्रभावत्मकता; भावात्मकता, मौलिकता, व्यंग्यात्मकता, उर्दू––अरबी फारसी शब्दों का प्रयोग भी मिलता है । शुद्ध हिन्दी के साथ–साथ संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग

दिखाई देता है मुहावरें और कहावतों से ग़ज़ल में स्वाभाविकता आ गई है । विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग जिनमें बोल–चाल, देशज, अंग्रेजी का बहुत ही यथायोग्य प्रयोग हुआ है । आपकी भाषा आमजन की भाषा है इसलिए ग़ज़ल लोकप्रिय बन गई है ।

वर्तमान युग के जीवन के नैतिक मूल्यों, आदर्शो में जो बदलाव आए हुए है उसे उन्होंने अपने ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है । मनुष्य आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृतिक मूल्य के प्रभाव में आकर अपने आपको बदल रहा है । जिससे सांस्कृतिक मूल्य और नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है । आज के सांस्कृतिक और नैतिक जीवन की विद्रुपताओं को, विकृतियों को ग़ज़लों में विशद किया है । इनके खिलाफ आक्रोश तथा विद्रोह प्रकट किया है । डॉ.कुँअर बेचैन जी समाज और देश का सूक्ष्मता से निरीक्षण करते है और सम्पूर्ण परिस्थिति को समझकर अपने अनुभूति के आधारपर विचार व्यक्त करते है । बेचैन जी उन रचनाकारों में अन्यतम है जो अपनी रचनाओं में आडम्बर, सस्ती भावुकता, कृत्रिमता आदि को स्थान नहीं देते । अतीत को वर्तमान से और वर्तमान को भविष्य को जोडने का सफल प्रयास किया है । उनके ग़ज़लों में अनुभव की सचाई परिलक्षित होती है ।

मनुष्य के जीवन में संघर्ष है, उसे लडने की ताकद होनी चाहिए । निराश होकर हाथ पर हाथ रखकर चूप बैठना नहीं है । नई उम्मीदों के साथ जीवन को अधिक प्रयत्नशील बनाकर समृद्ध बनाना चाहिए । डॉ. कुँअर बेचैन जी के ग़ज़लों में विद्रोह भी व्यक्त हुआ है । व्यवस्था में बेईमानी, विद्रुपताएँ जहाँ भी दिखाई दी वहाँ पर उन्होंने आपने ग़ज़ल के माध्यम से प्रखर विरोध दर्शाया है । इस व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए आम आदमी को जागृत करने का प्रयास किया है । आम आदमी की समस्याओं का निराकरण हो यह लक्ष्य रहा है ।

डॉ.कुँअर बेचैन जी अनुभवसिद्ध रचनाधार्मिता के क्षमता पर हिन्दी ग़ज़ल–साहित्य के मुख्य आधारशिला बन चुके है । जीवन के सुंदर मधुर एवं कोमल भावों के प्रति आकृष्ठ रहते हुए भी बेचैन ने सामाजिक कर्तव्य–परायणता का धर्म निभाया है । विविध रचनाओं की भूमिका में प्रखर विचार प्रस्तुत हुए है । बेचैन का ग़ज़ल साहित्य हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य धरोहर है । उनकी ग़ज़लों मे मानव के आसक्ति–अनासक्ति, राग–विराग आदि मनोदशों का मार्मिक चित्रण हुआ है । बेचैन ने सौन्दर्य और कल्पना के समन्वय से सुख–समृद्धता साथ ही आनन्द की मधुर भावसरिता को अखण्ड रूप से प्रभावित किया है । डॉ.कुँअर बेचैन अपनी पीढ़ी के

सुप्रसिद्ध लोकप्रिय ग़ज़लकार है । उन्हें हिन्दी ग़ज़ल साहित्य के क्षेत्र का जगमगाता नक्षत्र कहना समुचित होगा ।

सिफारिशें

- ग़ज़ल में प्रेमाभिव्यक्ति और समर्पण भाव दिखाई देता है । इसमें गागर में सागर भरने का प्रयास किया है । गज़ल के माध्यम से समाज में प्रेम का संदेश देना है ।
- गज़लकार ने बड़ी गंभीरता, गहनता और व्यापकता से ग़ज़लों का सृजन किया है ।उसे जन–जन तक पहुँचना है ।
- गज़ल की परिभाषा को अलग–अलग रूपों में रूपायित करने का प्रयास दृष्टिगोचर होता है । नव ग़ज़लकार ग़ज़ल के रूप को समझना है ।
- डॉ.कुँअर बेचैन जी ने जो दुःख देखा और भोगा उसकी अभिव्यक्ति ग़ज़ल में दिखाई देती है । यह कुँअर बेचैन अंतर्मन को समझने में उपयोगी है ।
- डॉ.कुँअर बेचैन जी ने ग़ज़ल का व्याकरण निर्माण करके नव ग़ज़लकारों का रास्ता सुलभ किया है । नव ग़ज़लकार इसका अध्ययन कर प्रयोग करें ।
- डॉ.कुँअर बेचैन जी के व्यक्तित्व में मानवता, स्नेह और प्रेम दृष्टिगोचर होता है । हर साहित्यकार में इन गुणों का होना आवश्यक है ।
- गज़लकार ने रिश्तों को जोड़कर राष्ट्रीय एकात्मता को मजबूत किया है । नव कवि इसी उद्देश को लेकर ग़ज़ल का अध्ययन हों ।
- राष्ट्रीय एकात्मता, दार्शनिक, आशावाद, मानवी मूल्य, नैतिकता आदि पर चिंतन होना हुआ है ।
- जीवन की नश्वरता का सच बतलाकर मानव को प्रेम का महान संदेश देना है ।
- ग़ज़लों के माध्यम से अव्यवस्था के विरोध में अपना संघर्ष दर्शाने की कोशिश होनी चाहिए ।
- नैतिक मूल्यों का ऱ्हास, दुःख, यातना आदि से उत्पन्न निराशा को व्यक्त करना भी जरूरी है ।

- साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना, मानवी मूल्यों के साथ विकास, आशावाद, दार्शनिकता, प्रेमभाव आदि के दृष्टि से सफलतापूर्वक योगदान देने का प्रयास करें ।
- डॉ.कुँअर बेचैन उम्मीदों के सहारे जीवन की ओर सकारात्मकता रूप से देखकर उसे आनंदमयी बनाने की कोशिश की है । अन्य ग़ज़लकार भी जीवन को सकारात्मक रूप को उजागर करें । धर्म–जाति से बढ़कर देश तथा राष्ट्र होता है यह ग़ज़लों में उजाग़र किया है । अतः राष्ट्रप्रेम की भावना का प्रसार करना आवश्यक है ।
- ग़ज़ल के माध्यम से अव्यवस्था के विरोध में अपना संघर्ष दर्शाकर ग़ज़लों में आशावाद और परिवर्तन की चाहत है । इस काम में अन्य साहित्यकार योगदान दे सकते है ।
- डॉ.कुँअर बेचैन जी ने मानवतावादी जीवनदृष्टि को महत्त्व देकर दूसरों को मदद का संदेश दिया है । मानवता का संदेश दुनिया में पहुँचाना चाहिए ।
- बैचेन जी ग़ज़ल के माध्यम से देश की अखण्डता निर्माण करने का प्रयत्न करते है । देश की एकता को बनाए रखने में योगदान दें ।
- डॉ.कुँअर बेचैन जी ने ग़ज़ल को नई भाषा प्रदान की है, साथ ही भाषा पर युगीन परिस्थितियों का प्रभाव परिलक्षित होता है । बदलते परिवेश की और ध्याय देना जरूरी है ।
- डॉ.कुँअर बेचैन संवेदनशील ग़ज़लकार के साथ जनवादी भावनाओं के क्रांतिकारक ग़ज़लकार है । पाठक इनसे प्रेरणा ग्रहण कर सकता है ।
- जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, आंबेडकरवाद, अस्तित्वाद इन दर्शनों का प्रभाव ग़ज़ल पर परिलक्षित होता है । अनेक दर्शनों का अध्ययन करने से साहित्य में मौलिकता आएगी ।
- मानव की दृष्टप्रवृत्ति की ओर ध्यानाकर्षित कर बदलते हुए मानवी जीवनमूल्यों को उज़ागर किया है । ऐसे ही ने जीवनमूल्यों को साहित्य में स्थान देना चाहिए ।
- डॉ. कुँअर बेचैन जी ने ग़ज़ल के माध्यम से सामाजिक वातावरण को अभिव्यक्त करके सामाजिक मानवी मूल्यों के प्रति अपने विचार विशद किए है । इस प्रकार समाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए ।

- परिवार और समाज के साथ यथायोग्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास ग़ज़ल के माध्यम से किया है । रिश्ते मजबूत होने के लिए प्रयत्नशील रहना होगा ।
- वर्तमान का सच डॉ.कुँअर बेचैन जी ने विशद किया है कि समाज का सर्वहारा वर्ग तथा आम आदमी उस विकास के लाभ से कोसो दूर है । यह राजनेता तक संदेश पहुँचना चाहिए ।
- डॉ. कुँअर बेचैन जी सामाजिक विषमताओं की पीडा को झेलते हुए सर्वहारा के दुःख-दर्द को व्यक्त किया है । विषमता को खत्म करके समता स्थापित करने में योगदान आवश्यक है ।
- पूँजीपति, राजनेता अपराधी गतिविधियों में लिप्त है, समाज की डरावनी स्थिति को अपनी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है । ऐसा ही हमेशा बुराई का पर्दाफाश करके अच्छाई को स्थापित करें ।
- महानगरीय जीवन का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत हुआ है । महानगरीय जीवन बदल रहा है जीवन मूल्य स्थापित करने की आवश्यकता है ।
- समाज को सहयोग देने के लिए, ज्ञान प्रदान करने के लिए मानव संस्कृति को उन्नत बनाने के साथ आंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए ग़ज़ल में विचार उभरकर आने चाहिए ।
- कुँअर बेचैन प्रेम के उदात्त और व्यापक भावना को स्वीकार करते है । इस प्रकार हर एक साहित्यकार जीवन में सकारात्मक और व्यापक भावना को लेकर आगे बढाना चाहिए ।
- सुख-दुःख , आशा-निराशा, त्याग, प्रेम, समर्पण ग़ज़ल का भावपक्ष है, जिसके आधारपर मानवी मूल्यों को लेकर मानवता का मंदिर स्थापित होना चाहिए ।
- आतंकवाद का वास्तविक चित्रण उभरकर आया है । आतंकवाद को खत्म करना आवश्यक है ।
- डॉ.कुँअर बेचैन जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से मानव मुक्ति तथा उसके उत्थान को महत्व प्रदान किया है ।

- आर्थिक विषमताओं का व्यापक चित्रण प्रस्तुत किया है । गरीब–अमीरी का अंतर खत्म करने के लिए राजनेता की भूमिका महत्वपूर्ण है, राजनेता का इन समस्याओं की ओर साहित्यकार ध्यानकर्षित करता है ।
- सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों एवं परम्पराओं को सामान्य जन तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए ।
- अपनी ग़ज़लों के माध्यम से मनुष्य को पर्यावरण के प्रति जागृत रहने का संदेश दिया है । पर्यावरण बनाए रखने से मानवी जीवन सुखी बनेगा । हर एक मनुष्य ने पर्यावरण के प्रति सजग रहना चाहिए ।
- वृक्ष संवर्धन और उसका संरक्षण एक मिशन बनाने की बात होनी चाहिए ।
- डॉ.कुँअर बेचैन ने ग़ज़लों के माध्यम से संदेश देते है कि धर्मान्धिता और मतभेदों को कम नहीं किया गया तो समाज के साथ मानवता को नुकसान हो सकता है । मानवता ही जीवन का आधार है उसका प्रचार-प्रसार हो ।
- प्रेम की विभिन्न दशाओं का बड़ा मौलिक चित्रण हुआ है । प्रेम के विभिन्न दशाओं का वर्णन अधिक व्यापक होना चाहिए ।
- अलौकिक प्रेम के चित्रण में परमात्मा के प्रति जिज्ञासा, संसार की नश्वरता, विरहावस्था को समझकर धर्म का सही अर्थ ग्रहण करना चाहिए ।
- छात्रों को ग़ज़ल के अध्ययन से ग़ज़ल लिखनें में सहायता मिल सकती है ।
- मौलिक ग़ज़ल कैसे लिखी जाती है इसकी प्रेरणा छात्रों को प्राप्त हो सकती है ।
- सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक आदि विषयों पर कैसे ग़ज़ल प्रभावी रूप से लिखी जाती है, इसकी जानकारी छात्रों को प्राप्त हो सकती है ।

संदर्भ सूची

क. आधार ग्रंथ सूची

१.गजल संग्रह

1. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शामियाने काँच के' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1983

2. डॉ. कुँअर बेचैन, 'महावर इंतजारों का', प्रगति प्रकाशन, गाज़ियाबाद. प्र. सं. 1983

3. डॉ. कुँअर बेचैन, 'पत्थर की बाँसुरी', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990

4. डॉ. कुँअर बेचैन, 'दीवारों पर दस्तक', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990

5. डॉ. बेचैन कुँअर, 'नाव बनता हुआ कागज', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.1990

6. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आँधियों में पेड', प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद, प्र. स. 1983

7. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आग पर कंदील', अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. स. 1990,

8. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आँगन की अलगनी', प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद, प्र.स. 1983

9. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आठ सुरों की बाँसुरी', प्रगीत प्रकाशन गाज़ियाबाद, प्र.स. 1983

10. डॉ. कुँअर बेचैन, 'तो सुबह हो', अमृत प्रकाशन, गाज़ियाबाद, प्र.स. 1983

11. डॉ. कुँअर बेचैन, 'कोई आवाज देता है', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र. स. 2004

12. डॉ. कुँअर बेचैन, 'आँधियों में धीरे चलो', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.2006

13. डॉ. कुँअर बेचैन, 'रस्सियाँ पानी की', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987

2. गीत नवगीत संग्रह

1. डॉ कुँअर बेचैन, 'पिन बहुत सारे' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987

2. डॉ कुँअर बेचैन, 'भीतर साँकल :बाहर साँकल', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987

3. डॉ कुँअर बेचैन, 'उर्वशी हो तुम', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987

4. डॉ कुँअर बेचैन, 'झुलसो मत मोरपंख' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1990

5. डॉ. कुँअर बेचैन, 'शब्द एक लालटेन', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स. 1996

6. डॉ. कुँअर बेचैन 'नदी तु रुक क्यों गई?, प्रगीत प्रकाशन, गाज़ियाबाद, 1996

7. डॉ कुँअर बेचैन, 'एक दीप चौमुखी', प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1987

8. डॉ कुँअर बेचैन, 'नदी पसीने की', अनुभव प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.2005

9. डॉ. कुँअर बेचैन, 'दिन दिवंगत हुये', हिंदी साहित्य निकेतन,बिजनौर प्र.स.2005

3. **उपन्यास**

1. डॉ कुँअर बेचैन, 'मरकत द्वीप की नीलमणि' प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.स.1996

4.**इतर**

1. डॉ कुँअर बेचैन, 'ग़ज़ल का व्याकरण', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, 1996

ख. सहायकग्रंथ सूची

1. अनूप वशिष्ठ, 'हिंदी ग़ज़ल का स्वरुप और महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्र.सं. 2006

2.अरुण कुमार, 'अन्तर्भाषित विनिमय और हिंदी ग़ज़ल', अप्रकाशित शोधप्रबंध, का.हि.वि.वि,1991

3. अली सरदार जाफरी,संपा., 'दिवाण–ए–गालिब', राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.2017

4.डॉ.अभय खैरनार, 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लें संवेदना और शिल्प', विद्या प्रकाशन कानपुर प्र.स.2012

5.अनिल 'असिम' के काव्यसंग्रह 'मरूथल में झील' की कुँअर बेचैन कृत भूमिका से उद्धृत प्रथम संस्करण, 1 जुलाई 1995

6.डॉ. अनिलकुमार शर्मा,'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल डी.गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर प्र.स.2009

7. डॉ.अनंतराम मिश्र,संपा., 'अनंत', 'विराट विमर्श' लोकवाणी संस्थान, दिल्ली, प्र.स.2004

8.अवधकिशोर सक्सेना,'वातावरण खराब होता चला', आराधना ब्रदर्स, कानपुर, प्र.स. 1991,

9. डॉ.अविनाश कासांडे 'ग़ज़लकार दुष्यन्त कुमार', समता प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2010

10. आर. पी. घायल, 'लपटों के दरमिया', सरोज प्रकाशन, पटना, प्र.स.2004
11.डॉ. आर.पी. भोसले, 'कुसुम अंसल के हिंदी साहित्य में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर प्र.स.2012
12.डॉ. उद्धव महाजन, 'थोडा–सा–आसमान', बिस्मिल आमैक साहित्य प्रचार योजना,2/3गांधी रोड, पुणे, प्र.स.1997
13.डॉ.एस.गंभीर, 'साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना', विदयाविहार प्रकाशन, गाँधीनगर, कानपुर, प्र.स.1992
14. ओमप्रकाश वाल्मिकी, 'मुख्यधारा और दलित साहित्य', सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.2010
15. डॉ. अंजनी कुमार दुबे, 'समकालिन कविता के विविध आयाम',–पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली प्र.स.1996
16.डॉ. अंजु भटनागर, 'डॉ. कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.2007
17. कामिनी कामायनी,'भारतीय जीवन मूल्य',ज्ञानगंगा, चावडी बाजार, दिल्ली,प्र.स.2001,
18. डॉ किशोर, 'रचनाकार दुष्यंत कुमार', विनय प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2007
19. डॉ.कुँअर भावना, 'साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर', अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2000
20. कोमल केदारनाथ,'कोहरे से निकलते हुए', पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1975,
21. गणेश अष्टेकर 'दुष्यंतःरचनाँए और रचनाकार', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्र.स.1981,
22. गिरिराजशरण अग्रवाल, संपा., 'हिंदी की सर्वश्रेष्ठग़ज़लें', डायमंड पाकेट बुक्स,नई दिल्ली,प्र.सं.1982
23. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, 'मौसम बदल गया कितना', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.स.1999
24. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल,'सन्नाटे में गूँज',प्रतीभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, प्र.स.1987
25. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल,'भीतर शोर बहुत है', हिंदी साहित्य निकेतन, प्र.स. 1995

26. डॉ.गिरीश ज. त्रिवेदी, 'दुष्यंत कुमार व्यक्तित्व एवं कृतित्व', शान्ति प्रकाशन, दिल्ली, प्र. स. 2003

27. डॉ.गिरिराजशरण अग्रवाल, 'निश्तर खानकाही', ग़ज़ल और उसका व्याकरण,हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर, प्र.स.1982

28. गोपालदास सक्सेना 'नीरज', 'नीरज की पाती', हिंदी पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली, प्र.सं.1992

29. गोपालकृष्ण कौल, संपा.,'ग़ज़ल सप्तक', सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1991

30. चानन गोविंदपुरी, 'ग़ज़ल : एक अध्ययन', सी.आर. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्र.सं., 1980

31. चंद्रसेन विराट,'निर्वसनी चाँदनी',लोकचेतना प्रकाशन, जबलपुर, प्र.सं.1970

32.चंद्रसेन विराट , 'हमने कठिण समय देखा है', दिशा प्रकाशन, ब्रिनगट, दिल्ली, प्र.स.2002,

33. चंद्रसेन विराट, 'बूँद-बूँद पारा',चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स.1986

34. जयशंकर प्रसाद, संपा.,'इन्दुकला', भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र.स.1930

35. जहीर कुरेशी,'एक टुकडा धूप', इन्दप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1979

36. जहीर कुरेशी,'चाँदनी का दु:ख', परागप्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1986

37. जहीर कुरेशी,'समंदर ब्याहने आया नहीं है', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1996

38. डॉ. जयराम सुर्यवंशी 'हिंदी गज़ल : अंतिम दशक', सारंग प्रकाशन, सारनाथ वाराणसी, प्र.स.2017

39. जानकीप्रसाद शर्मा, 'उर्दू साहित्य की परंपरा', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं: 2001

40. जिगर मुरादाबादी सं प्रकाशपंडित,'उर्दू ग़ज़ल', हिंदी पॉकेट बुक, दिल्ली, प्र.स.1976

41. डॉ.जे.पी.गंगवार,'हिंदी कविता में ग़ज़ल : संवेदना और शिल्प', प्रकाश बुक डिपो, बरेली प्र.स.1991

42. टी.एम.राज, संपा., 'गालिबः संगीत के साँचे में ढली ग़ज़ले', जे.एस.प्रकाशन, चंडीगढ़, प्र.सं.30

43. दुर्गेश नन्दिनी, 'भारतीय काव्यशास्त्र में हिंदी ग़ज़ल की संकल्पना', क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी,नई दिल्ली, प्र.सं.2006

44. दुष्यंन्तकुमार, 'सारिका' स्मृति अंक, नई दिल्ली, पृ.36 मई 1976

44. दुष्यंत कुमार, 'साये में धूप', रामकृष्ण प्रकाशन, आंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.स.1976

45. डॉ.देवेश ठाकूर,'समीचीन : हनुमन्त नायडू की ग़ज़ले', युगान्तर प्रकाशन, शारदा रोड, नई दिल्ली, प्र.स.1973

46. डॉ.धीरेन्द्र शुक्ल, 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी एकांकी' (सामाजिक संदर्भो की जाँच पडताल) साहित्य रत्नालय, कानपुर, प्र.स.2000

47. डॉ. नरेश, 'ग़ज़ल शिल्प और संरचना', हरियाणा साहित्य अकादमी, चंड़ीगढ़, प्र.सं.1991

48. डॉ.नवाब सादिका असलम,'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल शिल्प और संवेदना','सहर' प्र.स. 1981

49. निराला, 'बेला', निरुपला प्रकाशन, प्रयाग, प्र.स.1946

50. निश्तर खानकाही, 'ग़ज़ल और उसका व्याकरण', हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्र.सं.1999

51. डॉ.नगेन्द्र, 'बिचार और विवेचन', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्र.स.1949

52. डॉ. नरेश, 'आधुनिक हिंदी कविता में उर्दू के तत्व', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1969

53. प्रतिमा सक्सेना 'आधुनिक हिंदी ग़ज़ल और आधुनिकता बोध', पृ.158

54. डॉ.नरेंद्र वशिष्ठ, 'शमशेर की कविता', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.स.1980

55. पुष्पलाल सिंह, संपा., 'कबीर ग्रंथावली', अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.2014

56. प्रकाश पंडित,संपा., ‘उर्दू के लोकप्रिय शायर जिगर मुरादाबादी’ राजपाल एन्ड सन्स, दिल्ली, प्र.स.2011

57.प्रभाकेश्वर उपाध्याय, संपा., ‘प्रेम घन सर्वस्व’, हिंदी साहित्य संम्मेलन, प्रयाग,प्र.स.1939

58. फिराक गोरखपुरी, ‘उर्दू भाषा और साहित्य’, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, प्र. सं.1979

59. फिराक गोरखपुरी, ‘गुले नग्मा’, सरस्वती सदन, हरदोई, प्र.स.1992

60. बालस्वरूप राही, ‘राही को समझाए कौन’, किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.2009

61. ब्रजरत्नदास, संपा., भारतेंदु ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्र.सं.1953

62. डॉ.बी.एफ्.शेख ‘समकालिन हिन्दी कविता और कवि’ चन्द्रलोक, प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.2011

63. बेबस श्याम,‘महलों में कैदरोशनी’ इंदू प्रकाशन, अलीगढ़, प्र.स.1983

64. मौलाना हाली, ‘मुकद्दमा–ए–शेर–ओ–शायरी’, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली,प्र.सं. 1967

65. मुसाफिर कुँअर सुखलाल, ‘मुसाफिर भजनावली’, वैदिक पुस्तकालय, वाराणसी, प्र.स.1968

66. डॉ.मधु खराटे, ‘साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल’ विद्या प्रकाशन, कानपुर,प्र.स.2011

67. डॉ.मधु खराटे, ‘हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकार’ विद्या प्रकाशन,कानपुर, प्र.स.2012

68. डॉ.मुहम्मद फरीदुद्दीन, ‘राही मातूम रजा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय विवेचन’,ऋषभचर जैन एवं सन्तनी, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.स.1984

69. मृदुला अरुण, ‘सफर बाकी है’, ज्ञानभारती प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1192

70. डॉ.यतिंद्र तिवारी, संपा., ‘नवे दशक की हिंदी कविता’, साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.1989,

71.डॉ. रघुनाथ कश्यप, 'कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का चिंतन पक्ष', विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र. स. 2012

72. डॉ.रमा सिंह, 'हिंदी ग़ज़ल नवम दशक', अयन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1996

73. रविन्द्र श्रीवास्तव, संपा., 'हिंदी सामाजिक संदर्भ', केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, प्र.सं. 1976

74. रामावतारत्यागी, 'नया जमाना नयी ग़ज़ले', सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स.1987

75. रामावतारत्यागी, 'लहू के चंद कतरे',सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स.1987

76. रामदरश मिश्र, 'पेड़ नहीं तो निकले है लोग', विकास पेपर बैक्स, दिल्ली, प्र.स.1986

77. रामदरश मिश्र, 'बाजार को निकले है लोग',विकास पेपर बैक्स, दिल्ली, प्र.स.1986

78. रामनरेश त्रिपाठी , 'उर्दू जबान का संक्षिप्त इतिहास', हिंदी मंदिर, प्रयाग, प्र. सं.1940

79.डॉ.रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, 'जयशंकर प्रसाद वस्तु और कला', नेशनेल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.स.1968

80. रामचंद्र शुक्ल, 'चिंतामणी (भाग–1)',इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र.स.1970

81. रामकुमार कृषक , 'नीम की पतियाँ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.स.1984

82 . रूद्र काशिकैय, 'ग़ज़लिका', सावित्री साहित्य सदन, वाराणसी, प्र. सं.1955

83. रोहिताश्व अस्थाना, 'हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास',सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1987

84. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, संपा.,'नवीनतम हिंदी ग़ज़ले', सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, प्र.स.1989

85. डॉ.रोहिताश्व अस्थाना,संपा.,'बहुरंगी हिन्दी ग़ज़ले', सुनील साहित्य सदन, दिल्ली, प्र.स.1993

86. रामकुमार कृषक , 'नीम की पतियाँ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.स.1984

86. वनयसिंह, 'दुष्यंत कुमार और नई कविता', साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, प्र.स.2000

87. डॉ. विनय वाईकर, 'ग़ज़ल दर्पण', मंगेश प्रकाशन नवापुर, प्र. सं. 2002

88. डॉ.विद्याशंकर राय, 'आधुनिक हिंदी उपन्यांस और अजनबीपन', सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, प्र.स 1985

89. डॉ. विमल कुमार,'सौन्दर्यशास्त्र के तत्व', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1999

90. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, 'हिंदी ग़ज़ल संदर्भ और सार्थकता', गिरनार प्रकाशन, गुजरात, प्र.स.1998

90. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ. रंजना शर्मा, 'हिंदी नवगीत संदर्भ और सार्थकता बनवीर प्रसादशमी के लेख से उदधृत', गिरनार प्रकाशन, गुजरात प्र. स. 1989

91. श्री शम्भुरत्न त्रिपाठी, 'समाजशास्त्र के मूलाधार', ऋषभचर जैन एवं सन्तनी, दरियागंज, नई दिल्ली प्र.स.1984

92. शिव ओमअंबर, 'आराधना अग्नि की' (भूमिका से),असन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1990

93. शिव ओमअंबर, 'सम्भावनाओं का क्षितीज', असन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.1990

94. शून्य पालनपुरी, 'अरुज', सुमन प्रकाशन, मुंबई, प्र.सं.1968

95. डॉ.शेरजंगगर्ग –'ग़ज़ले ही ग़ज़लें', सुबोध पॉकेट बुक, नई दिल्ली, प्र.स. 1977

96. डॉ.शेरजंगग़र्ग (संपा.),'दूसरा ग़ज़ल सप्तक', किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.2006,

97. डॉ.श्यामसुंदरदास, 'कबीर ग्रंथावली',लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स.2009

98. डॉ. सरदार मुजावर(संपा), 'हिंदी ग़ज़ल : ग़ज़लकारों की नजरों में', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2001

99. डॉ.सविता मिश्र, 'डॉ.कुँअर बेचैनसृजन के विविध आयाम', नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स. 2012

100. डॉ. साएमा बानो, 'समकालीन हिंदी ग़ज़ल' पहचान और कला प्रकाशन, वाराणसी, प्र.स.2013

101. साहिर लुधियानवी, 'तलखिया', हिंदी बुक सेंटर,नई दिल्ली, प्र.स.1974

102. डॉ. सुमेरसिंह 'शैलेश','हिंदी ग़ज़ल का विवेचनात्मक अनुशीलन',नई कहानी प्रकाशन, इलाहाबाद प्र.स.1984

103. डॉ. सुमेरसिंह 'शैलेश','गीतों के रश्मिद्वार' राजश्री प्रकाशन, मथुरा प्र.स.1984

104. सुर्यप्रकाश शर्मा, 'ग़ज़ल एक यात्रा', विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, प्र. स.1988

105. डॉ.सुधिर पालीवाल,'सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़ले',अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.स.2010

106. स्वामी रामतीर्थ, 'हार्ट ऑफ लिविंग', सरस्वती सदन, हरदोई, प्र.स.1966

105. हनुमन्त नायडू,'जलता हुआ सफर',विश्व भारती प्रकाशन, नागपूर, प्र.स.2003

106. त्रिलोचन शास्त्री,'गुलाब और बुलबुल',वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं:1985

107. ज्ञानप्रकाश विवेक, 'हिन्दी गज़ की विकास यात्रा', हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला, प्र.सं.2010

108. ज्ञानप्रकाश विवेक, 'धूप के हस्ताक्षर', कादाम्बिनी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स.1989,

ग.अग्रेंजीग्रंथ सूची

1. Alex Preminger, Edt.,'Princeton Encyclopedia of Poetry and Poeties', Princeton University Press, Princeton New Jersey, F.E.1972
2. C.T. Onions, Edt.,'The shorter Oxford English Dictonary', Oxford University Press, Amon House London, F.E.1972.
3. J.A.Cuddon, Edt., A Dictonary ofLiterary Terms, Andre Deutsch Limited, London, F.E.1977
4.Lowie Robert Harcourt, 'Are we civilized ?' Brace, New York F.E./ 1929

घ. साहित्य कोश

1. कालिका प्रसाद, संपा.,'बृहत हिंदी कोश'ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी तृ.स.2010

2. कृष्णाजी कुलकर्णी, 'मराठी व्युत्पत्ति विश्वकोश',श्री.समर्थ सदन 2, मुंबई–2,प्र.स.1946

3. धीरेन्द्र वर्मा, 'हिंदी साहित्य कोश भाग1'ज्ञानमंडल, वाराणसीतृ.स.1958

4. नवलजी,संपा., 'नालंदा विशाल शब्द सागर'न्यु एम्पीरियल बुक डेपो, दिल्लीप्र.स.2007
5. नगेंद्रनाथ वसु, संपा., 'हिंदी विश्वकोश भाग6'बी.आर.पब्लिसिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली प्र.स.2008
6. मुहम्मद मुल्तफा खाँ, संपा., 'उर्दू हिंदी शब्दकोश'प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग उत्तर प्रदेशप्र.स.1959
7. श्रीपाद जोशी,संपा.,'उर्दू मराठी शब्दकोश',महाराष्ट्र राज्य एवं संस्कृति मंडल, मुंबई,प्र.स.1968

च. पत्र –पत्रिकाओं सूची

1. अवधनारायण मुद्गल, 'सारिका', 16 अगस्त 1980
2. अवधनारायण मुद्गल, 'सारिका' 8जुलाई, 1997 ई.,नई दिल्ली
3. अजय प्रसून, 'नवनीत',फरवरी, 1980ई.
4. तारादत्त 'निर्विरोध', 'सारिका',नई दिल्ली
5. दैनिकजागरण(रजतजयंतीअंक, 20नवबंर1972)
6. दैनिक 'लोकमत समाचार', दि.29जानेवारी,2012
7. नवभारत टाईम्स, नई दिल्ली, 11 अक्तूबर 1981
8. 'नईं दुनियाँ' द्विपावली विशेषांक,-दिसम्बर 1999
9. 'बैरागी'बालकवि,संपा., 'सारिका',नई दिल्ली
10. मनोहर श्याम जोशी,संपा.,'साप्ताहिक हिन्दुस्तान',29 अगस्त 1978
11. राकेश सूद, संपा., 'साधना–पथ'डायमण्ड मॅग्जीन लिमिटेड, नई दिल्ली, (प्रेम विशेषांक), मई 2017
12. विनोद तिवारी,संपा., ग़ज़ल विशेषांक, शिवम्,नवबंर 2000, नई दिल्ली
13. वेदप्रकाश अरोडा सिंह धनंजय,संपा.,'आजकल', पटियाला पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली,18 मई 1981
14. 'सुलभ इंडिया', नयी दिल्ली, अप्रैल 1987